...ार माइंडस्केप्स ...म के साथ 200 ...नुबंध पर हस्ताक्षर ... साथ ही उन्होंने ...न तेंदुलकर को ... ब्रांड के रुप में ...दिया है। मास्टर ...6 में आइकनिक्स ...ड़ रुपए का करार ... यह करार तीन



वर्ष के लिए किया है। इस दौरान कंपनी धोनी के विज्ञापनों सहित सभी व्यावसायिक हितों का प्रबंधन देखेगी। कंपनी ने साथ ही आफ स्पिनर हरभजन सिंह और तेज गेंदबाज आर.पी. सिंह के साथ भी करार किया है। धोनी इस समय देश के सबसे बड़े ब्रांड

3.2 V2

...डेकर ...ड़ेगी

...र कोच तैयार किया ... मार्ग पर अभी भी ...ल रही है, लेकिन ...ीं है। इसके अलावा ... भी समस्या है। ...ने कहा कि संगठन ...यी डबल डेकर ट्रेन ...ी रफ्तार से दौड़ेगी ... सामान डिब्बों से ...गी। इस ट्रेन के एक ...त्री बैठ सकेंगे, जो ...प्रतिशत ज्यादा है। ...ोधी संयंत्र भी लगाये ... स्टेनलेस सटील से ...नहाजा इसमें जंग भी ...न को ग्रांड ट्रंक रास्ते ...दिल्ली के बीच चलाये ...है।

...नयी दिल्ली, ... के गरीबी की सीमा रेखा के नीचे जीवन यापन कर रहे परिवारों को 1400 रुपये की रियायती दर पर रसोई गैस कनेक्शन मिलेगा। पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस राज्य मंत्री जतिन प्रसाद ने आज यहां एक संवाददाता सम्मेलन में बताया कि सरकार इस आशय की स्कीम को अंतिम रुप देने जा रही है। उन्होंने बताया कि देश के ग्रामीण क्षेत्रों में रसोई गैस पहुंचाने के उद्देश्य से स्कीम शुरु की जा रही है, जिसे योजना आयोग ने मंजूरी दे दी है।

... गया है। पीजीआई के चिकित्सकों ने मंत्री की हालत स्थिर और खतरे से बाहर बतायी है। इलाहाबाद के पुलिस महानिरीक्षक सुबेश कुमार सिंह ने बताया कि इस जघन्य वारदात में हालांकि अभी कोई गिरफ्तारी नहीं हुई है, लेकिन सात लोगों को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है। मृतक राकेश मालवीय श्री नंदी का समर्थक बताया गया है। वह किसी काम से मंत्री के घर मिलने आया था। उन्होंने बताया कि इस हादसे में घायल

घटना की जांच में आतंकवाद निरोधक दस्ता (एटीएस) और स्पेशल टास्क फोर्स (एसटीएफ) भी लगायी गई है। श्री नन्दी पर हुए हमले में उनके निजी सचिव, एक पत्रकार और गनर समेत पांच लोग गंभीर रुप से घायल हो गये थे। इस हमले में घायल पत्रकार और मंत्री के अंगरक्षक (गनर) जीवन मृत्यु से संघर्ष कर रहे हैं। इलाहाबाद के जिलाधिकारी संजय प्रसाद ने बताया कि हमले में घायल इंडियन एक्सप्रेस के पत्रकार विजय प्रताप सिंह और गनर की हालत इतनी नाजुक है कि उन्हे इलाहाबाद से कहीं और ले ही नहीं जाया जा सकता। पत्रकार श्री सिंह का यकृत, अग्नाशय समेत कुछ अन्य आंतरिक अंग बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गये हैं, जबकि गनर के मस्तिष्क का एक हिस्सा बुरी तरह चोटहिल है। उन्होंने कहा कि यदि इन दोनों की स्थिति में सुधार नजर आयेगा तो एयर एम्बुलेंस की व्यवस्था करके इन्हें चिकित्सा के लिए लखनऊ या दिल्ली भेजा जायेगा। मुख्यमंत्री मायावती अपने मंत्रिमंडल के घायल काबीना मंत्री को कल देर रात लखनऊ के अमौसी हवाई अड्डे पर देखने पहुंची। इससे पहले राज्य के अपर पुलिस महानिदेशक (कानून व्यवस्था) बृजलाल ने कहा कि यह पता नहीं चल सका है कि हमले का कारण क्या है। आगरा से फारेंसिक प्रयोगशाला के लोगों को बुलाया गया है, ताकि यह पता लगाया जा सके कि विस्फोटक किस तरह का था। जांच के बाद ही इसका पता चल सकेगा कि विस्फोट के लिये टाइमर या रिमोट का इस्तेमाल किया गया या नहीं। विस्फोट

वाराणसी से ... पास क्वींस बे...

कर्ण...

लाख...

काशी, 13 ... कर्णघंटा के स... गोदाम में खाद्य ... अधिकारियों ने ... लाख की नकली ... अधिकारियों ने ... को जब्त कर म... मालिक के खिल... दर्ज करायी। इ... इंस्पेक्टर के. रा... से सूचना मिल... के साथ कर्णघ... सी के 60/19...

92, Licence to post without prepayment, Licence No Vsi-E/006/2009-

ता. 14 जुलाई 2010 ● [पृष्ठ सं. 8 - मूल्य 2 रुपया

...करोड़ का करार

एम्बेसडर हैं और पेप्सिको, रीबॉक, एयरसेल और गोदरेज सहित 22 ब्रांडों से जुड़े हैं। वह औसतन हर विज्ञापन...

हमले में घायल मंत्री स्थिरः सात हिर...

लखनऊ, 13जुलाई-वार्ता। उत्तर प्रदेश ... पत्रकार ...

देश की ... ट्रेन ...

लखनऊ, 13जुलाई-वार्ता ... अनुसंधान अभिकल्प ... (आरडीएसओ) ... की पहली वातानुकूलित ... से कुछ खास ... सूत्रों ने आज ... डिजायन संगठन ... गया है और ... परीक्षण भी ... गातानुकूलित ... किलोमीटर ...

...गोदाम से 5 ...दवा बरामद

...के पूर्व सारनाथ में धमेक स्तूप के ...सायटी के सचिव सुमेध थेरो

...लिलाफ रिपोर्ट

...ल्टी और वहां रखे पैकिंग मशीन को ...बों में लेकर 8 ट्रालियों पर लादकर ... ...दवाने लायी। उन्होंने बताया कि बरामद ...सुगम प्रसव के लिये है, लेकिन ...न दिनों इसका प्रयोग दुधारु पशुओं ...लगाकर ज्यादा दूध निकालने के लिये ...आता है। श्रीराम ने बताया कि बरामद ... दूध धारा, कामधेनु ...म का स्टीकर ...कोई ब्रांड ...मकान


महर्षि-पाणिनि-प्रज्ञा-अनुसन्धान
तिथी......
पु०सं० 457
भारती पुस्तकालय



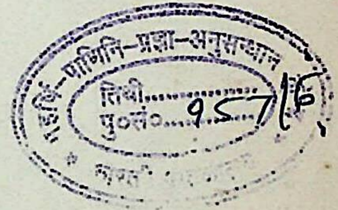
॥ श्रीः ॥

चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला

२८२

ऋतुसंहारम्

(संस्कृत-हिन्दीव्याख्यासंवलितम्)



व्याख्याकारः

शिवप्रसाद द्विवेदी

प्राचार्य : श्री हनुमत् संस्कृत महाविद्यालय, हनुमानगढ़ी

अयोध्या-फ़ैज़ाबाद



चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन

वाराणसी

प्रकाशक

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन

(भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के प्रकाशक तथा वितरक)

के० ३७/११७, गोपालमन्दिर लेन

पो० बा० नं० ११२९, वाराणसी २२१००१

दूरभाष : ३३३४३१

प्रथम संस्करण १९९८

मूल्य रु. ७५-००

अन्य प्राप्ति स्थान

चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान

३८ यू० ए० बंगलो रोड, जवाहरनगर

पो० बा० नं० २११३, दिल्ली ११०००७

दूरभाष : २३६३९१

प्रमुख वितरक

चौखम्बा विद्याभवन

चौक (बनारस स्टेट बैंक भवन के पीछे)

पो० बा० नं० १०६९, वाराणसी २२१००१

दूरभाष : ३२०४०४

अक्षर संयोजक

एस० पी० कम्प्यूटर्स

कटरा, अयोध्या, ✆ ३२६०३

मुद्रक

ए० के० लिथोग्राफर

आत्मनिवेदन

संस्कृत साहित्य के प्रख्यात महाकवियों में महाकवि कालिदास का नाम सर्वोपरि है। महाकवि कालिदास के स्थितिकाल के विषय में प्रधान रूप से तीन प्रकार के विचार पाये जाते हैं।

एक मत के अनुसार कालिदास छठी शताब्दी में विद्यमान थे। इस मत के मानने वालों का कहना है कि चूँकि कालिदास ने अपने नाटक 'मालविकाग्नि मित्र' का नायक विक्रमपूर्व द्वितीय शती के शुंगवंशीय राजा अग्निमित्र को बनाया है; अतएव सिद्ध होता है कि महाकवि कालिदास अग्निमित्र के कुल में विद्यमान थे। यह भी माना जाता है कि महाकवि कालिदास राजा विक्रमादित्य की सभा के नवरत्नों में. सर्वश्रेष्ठ थे। अतएव महाकवि कालिदास का समय विक्रमपूर्व द्वितीय शतक से लेकर विक्रम के सप्तम शतक के मध्य तक स्वीकार करना चाहिए।

दूसरे मत के अनुसार महाकवि कालिदास का समय गुप्तकाल है। इस मत के मानने वाले महाकवि कालिदास को महाकवि अश्वघोष के पश्चाद्वर्ती मानते हैं।

तीसरे मत के मानने वाले विद्वान महाकवि कालिदास का स्थितिकाल विक्रमसंवत् का आरम्भकाल मानते हैं।

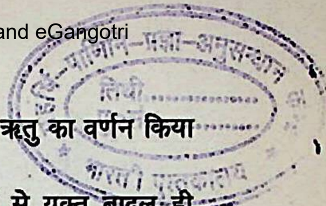
कालिदास के स्थितिकाल के विषय में जिस प्रकार से विचारकों का मतभेद पाया जाता है, उसी तरह से उनकी कृतियों के विषय में भी विचारकों का मतभेद है। इधर विद्वानों ने बहुत गवेषणा के पश्चात् निश्चित कर दिया है कि महाकवि कालिदास प्रणीत- ऋतुसंहार, कुमारसंभव, रघुवंश तथा मेघदूत ये चार काव्य एवं अभिज्ञान शाकुन्तल, विक्रमोर्वशीय, तथा मालविकाग्निमित्र ये तीन नाटक हैं।

महाकवि कालिदास के अन्य ग्रन्थों के विषय में चर्चा न करके यहाँ पर केवल ऋतुसंहार के विषय में हम चर्चा करने जा रहे हैं। ऐसा माना जाता है कि ऋतुसंहार महाकवि कालिदास की सर्वप्रथम काव्य कृति है। यह काव्य छह सर्गों में निवद्ध है। इस काव्य में महाकवि ने छह ऋतुओं का हृदयग्राही वर्णन किया है। सहृदयों के मनोविनोदार्थ यहाँ पर सर्ग क्रम से ऋतुसंहार काव्य का सारांश दिया जा रहा है।

प्रथम सर्ग का सारांश— ऋतुसंहार में महाकवि ने ग्रीष्म ऋतु का वर्णन किया है। महाकवि ने बतलाया है कि इस ऋतु में सूर्य की प्रचण्ड किरणें सब को संतप्त करने लग जाती हैं। इन दिनों लोग खूब स्नान करते हैं, सायंकाल की बेला कुछ मनोरम होती है। इस ऋतु में लोग चन्द्रमा की चाँदनी की शीतलता का सुखद अनुभव करते हैं। इस ऋतु में लोग चन्द्रमा की चाँदनी, जलयन्त्र के अधोभाग तथा सुगन्धित चन्दन के छिड़काव का सेवन करते हैं। कामी पुरुष वीणा की ध्वनि

सुनते-सुनते अपनी प्रियतमा के साथ मदिरा पान करके छतों पर शयन करते हैं। वे रमणियों के नितम्बमण्डल, हारालंकृत एवं चन्दनरस-सिक्त स्तनमण्डल तथा उनके सुगन्धित कुन्तलकलाप का सेवन करके अपने संताप को दूर करते हैं। इस ऋतु में अपने मनोज्ञ चरणों में मणिमञ्जीर डालकर जब रमणियाँ मन्दगति से चलती हैं तो नूपुर से आकृष्ट हंस मनोहर ध्वनि करते हैं। रमणियों के चन्दन चर्चित एवं हारालंकृत पयोधरमण्डल तथा सुवर्णनिर्मित काञ्चीकलाप से मण्डित श्रोणिमण्डल को देखकर पुरुषों का मन अपने वश में नहीं रह जाता। इस ऋतु में रमणियाँ अपने स्तनों को पतले वस्त्रों से सजाती हैं। चन्दन मिश्रित जल से सिक्त पंखों की वायु, हारालंकृत रमणियों के स्तनमण्डल तथा वीणावाद्य पर मधुर ध्वनि से गाये गये गीत कामोद्दीपन का काम करते हैं। रात्रि में छतों पर सोयी हुई रमणियों के मनोहर मुखमण्डल को देखकर लज्जित चन्द्रमा मानो प्रातःकाल में पीला पड़ जाता है। प्रियतमा के वियोग से विषण्ण अन्तःकरण वाले प्रवासी पुरुष तो सूर्य के संताप से संतप्त एवं उड़ी हुई धूल से व्याप्त भूमि को देख भी नहीं पाते हैं। इस ऋतु में प्यास के कारण शुष्क तालु वाले मृग पानी की खोज में मृगमरीचिका को देखकर एक वन से दूसरे वन तक दौड़ रहे हैं। सायंकाल में सजधज कर निकलने वाली सुन्दरियाँ अपनी तिरछी नजरों से परदेशियों के मन को लुभा रही हैं। सूर्य की गर्मी से संतप्त साँप छाया पाने के लिए आकर इस ऋतु में मयूर के बर्ह के नीचे बैठ जाता है। प्यास से व्याकुल सिंह सन्निकट में विद्यमान हाथी को देखकर भी उस पर आक्रमण नहीं कर रहा है। प्यास से आकुल हाथी भी सिंह को देखकर नहीं डरता है। प्यासे मयूर अपने नीचे बैठे सर्प को भी नहीं मारते। इस तरह इस ऋतु में सभी जीव गर्मी से व्याकुल होकर मानो अपने स्वभाव का परित्याग कर दिए हैं।

वनैले सूकर छोटे-छोटे जलाशयों में मुस्ताक्षति कर रहे हैं। कीचड़ भरे पानी से निकलकर प्यासा मेढ़क साँप के फण के नीचे बैठ जाता है। धूप से संतप्त गज-समूह सरोवर में प्रवेश करके कमल समूह को क्षतिग्रस्त तथा पानी को मटमैला बना रहा है। धूप से संतप्त विषैले मणिवाले सर्प सन्निकट के मेढ़कों को नहीं मारते हैं, वनैले भैंस जल की खोज में इधर-उधर घूमते हैं। दवाग्नि से दग्ध निष्प्रभ वृक्षों वाला वन देखने में भयावह लगता है। इस ग्रीष्म ऋतु में पशु-पक्षी सब के सब प्यास एवं धूप से व्याकुल हैं। वन में चारो ओर दवाग्नि लग गयी है। उस आग से पर्वत कन्दराओं में बाँसों की गाँठ चट-चट करके फटती है, वनैले पशु परेशान हैं। सेमर के वनों में लगी आग सुवर्ण के समान चमक रही है। हाथी, गवय, सिंह आदि समस्त पशु वनाग्नि से संतप्त होकर एक साथ नदी के तट में उतर रहे हैं। इस तरह के इस ग्रीष्म ऋतु में कमल विकसित हो रहे हैं, गुलाब खिल गये हैं स्नान करना अच्छा लगता है। इस प्रकार का ग्रीष्म ऋतु आप सबों का कल्याणकारी बने।



द्वितीय सर्ग का सारांश— इस सर्ग में महाकवि ने वर्षा ऋतु का वर्णन किया है। इस सर्ग का उपक्रम करते हुए उन्होंने कहा कि-

यह वर्षा ऋतु एक राजा के समान है, जल के फुहारों से युक्त बादल ही इसके मतवाले गजेन्द्र हैं, विद्युत् की चमक पताका है, मेघ की गर्जना ही इसके नगाड़े की ध्वनि है। इस प्रकार का यह ऋतु कामी पुरुषों को अत्यन्त प्रिय है। इस ऋतु में आकाश में अनेक प्रकार के काले-काले मेघ भर जाते हैं। लगता है कि गर्मी के दिनों की चातकों की प्रार्थना से प्रसन्न मेघ गरज-गरज कर वर्षा कर रहे हैं। मेघरूपी योद्धा मेघ ध्वनि रूपी नगाड़े को बजाते हुए इन्द्रधनुष रूपी धनुष् पर तथा विद्युत्रूपी डोरी को चढाकर वर्षा रूपी तीक्ष्ण बाणों से प्रवासियों को अत्यधिक दुःखी बनाते हैं। इस ऋतु में अंकुरित तृण, कन्दली तथा इन्द्रगोपों से सजी पृथिवी रत्नालंकृत वराङ्गना के समान सुशोभित होती है। आज मयूर अपने पंखों को फैलकार नृत्य कर रहे हैं। मटमैले जल से भरी नदियाँ बड़ी तेजी से समुद्राभिमुख बह रही हैं। आज विन्ध्याचल के वन हरी घासों तथा वृक्षों के हरे पत्तों से लोगों के मन को मोह लेते हैं। वलुआही वनस्थली में बैठी हुई बड़े-बड़े नेत्रों वाली मृगपंक्ति लोगों के मन को आकृष्ट कर लेती है। बरसात की अन्धेरी रात में चमकने वाली बिजली के प्रकाश में रास्ता देखकर अभिसारिकाएँ अपने प्रेमियों से मिलने के लिए जाती हैं। रात्रि में जब मेघ गरजते हैं और बिजली चमकती है, तो मानवती रमणियाँ अंपने अपराधी पतियों का भी गाढालिङ्गन करने लग जाती हैं, किन्तु इस ऋतु में प्रवासियों की पत्नियाँ अपने समस्त अलंकारों का परित्याग करके निराश हो जाती हैं। वर्षा के मटमैले तथा तेजी से टेढे-मेढे बहते पानी को देखकर मेढक सर्प के भय से भयभीत हो जाते हैं। नाचते हुए मयूरों के वर्ह को देखकर भौरें उन्हें नीलकमल समझ लेते हैं। वनैले हाथियों के कपोल से इस समय दानवारि चूने लगती है और उन पर भौंरे टूट पड़ते हैं। श्वेत कमल के समान उजले मेघों से चुम्बित तथा अनेक झरनों से सुशोभित पर्वतों पर नाचते हुए मयूरों को देखकर लोगों का मनमोहित हो जाता है। कदम्ब, सर्ज आदि अनेक वृक्षों के पुष्पों से सुगन्धित तथा जलकण मिश्रित, वायु लोगों के मन को उत्कण्ठित बना देती है। रमणियों के कमर पर्यन्त लटकने वाले तथा सुगन्धित फूलों से सजाए गये केशों, हारों से युक्त स्तनमण्डल, तथा मदिरा की सुगन्धि से युक्त मुखमण्डल को देखकर कामी पुरुषों की कामाग्नि उद्दीप्त हो जाती है। इस ऋतु में बहती हुई नदियाँ, बरसते हुए मेघ, चिग्घाड़ते हुए हाथी, चमकते हुए वनान्त, दुखी प्रवासी, नाचते हुए मयूर, छिपते हुए वन्दरसमूह, इन्द्रधनुष से समलंकृत आकाश, विद्युत् जल के भार से झुके हुए मेघ तथा सुवर्ण मणि मेखला से अलंकृत रमणियाँ लोगों के मन को आकृष्ट कर लेते हैं। इन दिनों में रमणियाँ केसर, कदम्ब और केतकी की माला से अपने केशों को सजाती हैं और अपने कानों को ककुभ के पुष्पों से सजाती हैं। कालागरु तथा चन्दन से चर्चित अंगों वाली एवं अपने केशों को पुष्पों से सजाने वाली रमणियाँ मेघध्वनि को सुनकर शाम को बहुत जल्दी अपने गुरुजनों

के गृह से निकलकर शयन-कक्ष में प्रवेश कर जाती हैं। जल के भार से झुके हुए तथा इन्द्रधनुष् से सुशोभित मेघों को देखकर प्रोषित पतिकाएँ अपनी सुध-बुध खो बैठती हैं। समपूर्ण वन में कदम्ब एवं केतकी के पुष्प विकसित हो जाते हैं। सारा वन जुही की कलियों मौलिश्री तथा मालती के पुष्पों से भर जाता है। रमणियाँ अपने स्तनों को मोती की मालाओं तथा नितम्बों को महीन रेशमी साड़ी से सजाती हैं। वनों में पुष्प विकसित हो जाते हैं, सारा वातावरण सुगन्धित हो जाता है। बरसते हुए मेघों को देखकर लगता है कि मेघ अपनी वर्षा से विन्ध्याचल की तपन शान्त करना चाहते हैं।

तृतीय सर्ग का सारांश— ऋतुसंहार के तीसरे सर्ग में महाकवि ने शरद् ऋतु का वर्णन किया है। इस ऋतु के वर्णन का उपक्रम करते हुए महाकवि ने कहा-शरद् ऋतु एक नवबधू के समान है। विकसित काश ही उसके उजले वस्त्र हैं, खिले कमल उसके मुखमण्डल हैं, उन्मत्त हंसों का कलरव ही उसकी नूपुर ध्वनि है। इन दिनों काशों से पृथ्वी, चाँदनी से रातें, मालती पुष्पों से उपवन, हंसों से नदियों के जल, कुमुदों से सरोवर तथा पुष्पों के भार से झुके हुए सप्तच्छद के वृक्षों से वनप्रदेश, उजले बन गये हैं। नदियों में मछलियाँ तथा उजले पक्षी दिखायी देने लगे हैं। मेघ जल से रहित होने के कारण उजले दिखायी देते हैं, आकाश नीला-नीला दिखायी देता है, चारो ओर दुपहरिया के फूल खिल गये हैं और खेतों में धान पकने लगे हैं। फूलों से लदे कोविदार को देखकर युवकों का मन उत्कण्ठित हो जाता है। तारा समूह रूपी भूषणों से भूषित, स्वच्छ चन्द्रमा रूपी मुखमण्डल वाली तथा स्वच्छ चाँदनी रूपी वस्त्र को धारण करने वाली रात्रि रमणी प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। कमल के पराग से परिपूर्ण नदी के तरङ्गों को कारण्डव पंक्षी चोंच मारते हैं, उसके तट में कादम्ब तथा सारस आदि पक्षियों का निवास है तथा नदी में हंसों की ध्वनि सुनायी पड़ती है। सबों के नेत्रों को आनन्द देने वाले चन्द्रमा की किरणें प्रोषित पतिकाओं के अंगों को जलाने का काम करता है। अब ठंढी-ठंढी हवा चलने लगी है। जलाशयों के तट पर मस्त हंसों के जोड़े विहार करने लगे हैं, सरोवरों में नील एवं श्वेत कमल सुशोभित हो रहे हैं। अब हंसों की बोली में मिठास आ गयी है और छितवन के पुष्प विकसित हो गये हैं। उपवन में विकसित शेफालिक की सुगन्धि, चिड़ियों की चहकन और निश्चिन्त बैठी हुई मृगियों की आँखों की शोभा मन को बरबश अपनी ओर आकृष्ट कर लेती है। प्रातःकाल में ओस कणों को विखेरने वाली शीतल मन्द वायु सबों के मन में उत्कण्ठा पैदा कर देती है। सीमाओं के अन्तराल जो पके धानों, शान्तचित्त से बैठी हुई गायों तथा हंसों से प्रतिध्वनित होते हैं; अत्यन्त आनन्दप्रद प्रतीत होते हैं। हंसों की मन्दगति रमणियों की मन्दगति को, सरोवरों में विकसित कमल उनके मुखचन्द्र की कान्ति को, नीलकमल उनके नेत्रों की शोभा को तथा नदियों की छोटी-छोटी तरङ्गे उनके कटाक्षपात को तिरस्कृत कर रही हैं। पुष्पों से परिपूर्ण विष्णुकान्ता लता के समक्ष रमणियों के अलंकृत भुजाओं की शोभा फीकी प्रतीत

होती है और कंकोली पुष्प की शोभा के सामने रमणियों के मुसुकान की शोभा फीकी प्रतीत होती है।

इस शरद् ऋतु में रमणियाँ अपने घुंघराले काले केशों को नवमालती के पुष्पों से सजाती हैं और सुवर्ण निर्मित कुण्डलों से मण्डित कानों को नीलकमलों से सजाती हैं। वे चन्दन रस सिक्त हारों से अपने स्तनमण्डल, को काञ्ची कलाप से अपने विस्तृत श्रोणितट को एवं अपने चरणकमलों को मणि मञ्जीरों से सजाती हैं। सरोवरों में कुमुद विकसित हो गए हैं, उनके घाट मरकत मणि से बने हैं और उनमें हंस भी जलक्रीड़ा करने लगे हैं। कुमुद पुष्प के संसर्ग से हवा ठंढी हो गयी है, मेघों से रहित दिशाएँ मनोहर लगने लग गयी हैं। जल स्वच्छ हो गया है, पृथिवी सुख गयी है, तारों से आकाश भर गया है और चाँदनी स्वच्छ हो गयी है। कुछ रमणियाँ संगीत के प्रेम को छोड़कर अपने प्रियतम के हाथ में हाथ डालकर पुष्प की सुगन्धि से युक्त गृह में प्रवेश कर रही हैं। शरद् ऋतु में सुरत सुख का अनुभव करने वाली रमणियाँ जब अपनी प्यारी सखियों से मिलती हैं तो एक दूसरे को रात्रि में अनुभूत समस्त रमणसुख को कह डालती हैं। प्रातःकाल होते ही कमल तो सूर्य की किरणों के संस्पर्श से विकसित हो जाता है और चन्द्रमा के विप्रयोग कष्ट के कारण कुमुदिनी संकुचित हो जाती है। परदेशी पुरुषों को नीलकमल को देखकर अपनी प्रियतमा की आँखों की, हंसों की ध्वनि को सुनकर प्रियतमा की मेखला ध्वनि की, दुपहरिया के पुष्पों को देखकर प्रियतमा के अधर के सौन्दर्य की याद आ जाती है और उनके आँखों से आंसू बहने लग जाते हैं। यह शरद् ऋतु एक नायिका के समान विकसित कमल ही जिसका मुखमण्डल है, नीलकमल ही जिसके नेत्र हैं, खिले काश ही जिसके श्वेत वस्त्र हैं तथा कुमुद पुष्प ही जिसकी मनोज्ञ कान्ति है।

चतुर्थ सर्ग का सारांश— नवीन अंकुरों से मनोहर लगने वाला; जिसमें लोघ्र के पुष्प विकसित हो गए हैं, धान पक गए हैं, तथा कमल विलीन हो गए हैं, इस प्रकार का तुषारपात करने वाला हेमन्त ऋतु का काल आ गया है। इस समय बड़े-बड़े स्तनों वाली रमणियाँ चन्दन रस सिक्त हारों से अपने स्तनों को नहीं अलंकृत करती हैं। इस समय वे न तो कंगन पहनती हैं और न बाजूबन्द, न तो वे अपने श्रोणिमण्डल को रेशमी वस्त्रों से सजाती हैं और न स्तनों को पतले वस्त्रों से। वे अपने नितम्बों पर सुवर्ण एवं रत्नों से निर्मित काञ्ची कलाप को नहीं धारण करती हैं। वे अपने चरणकमलों में नूपुर नहीं पहनतीं। अब वे अपने अंगों पर कालीयक का लेप लगाती हैं। मुखकमल पर पत्रलेख रचाती हैं, तथा सुरतोत्सव के लिए अपने बालों को कालागुरु के धूप से सुगन्धित बनाती हैं। रात्रि के रतिश्रम से श्रान्त तरुणियाँ प्रातःकाल इसलिए जोर से नहीं हसती हैं कि उनके रमणों ने उनके अधरों पर दन्तक्षत कर दिया है। इस समय अधिक धानों से खेत भर जाते हैं, वे मृगियों के समूह से समलंकृत हैं तथा मनोहर क्रौञ्च निनाद कर रहे हैं। सरोवरों में नीलकमल विकसित हो रहे हैं, और उनमें मदमत्त हंस बैठे हुए हैं।

उनके जल अत्यन्त शीतल हैं और अपनी शोभा से लोगों के मन को आकृष्ट कर रहे हैं। सुखे हुए सुन्दर मार्ग को देखकर अपने हृदय में पतियों को धारण करने वाली प्रोषित पतिकाएँ उनके आने का बाट जोहने लगी हैं।

ठंढी हवाओं के झोकों से पीली बनी हुई प्रियंगुलता पतिविप्रयुक्ता कामिनी के समान सुशोभित होती है। पुष्पासव पान के कारण सुगन्धित मुख वाले, अपने निःश्वास वायु से अंगों को सुगन्धित करने वाले तथा अपनी प्रियतमाओं के अंगों के साथ अपने अंगों को सटाकर सोने वाले कामी पुरुष इस समय सुखपूर्वक सोते हैं। ओष्ठों के दन्तक्षत तथा स्तनों के नखक्षतों के द्वारा नवयुवतियों के रात्रि में किये गये निर्दय रतोपभोग की सूचना मिलती है। कामिनियाँ प्रातः काल में बाल सूर्य की धूप में बैठकर तथा हाथ में दर्पण लेकर अपने ओठों की रंगती हैं तथा हाथ से ओष्ठ के दन्तक्षतभाग को खींचकर देखती हैं। बहुत अधिक सुरतश्रम करने से श्रान्त, रात्रि में बहुत अधिक जगने के कारण लाल-लाल नेत्रों वाली, तथा खुले हुए केश जिनके कन्धों पर गिर पड़े है इस प्रकार की कुछ रमणियाँ बाल सूर्य की धूप में सो रही हैं। कुछ रमणियाँ अपने काले घुंघराले केशों से रात्रि में केशों में सजायी गयी सुगन्धित पुष्पों की माला को उतारकर अपने बालों को सँवार रही हैं। नखक्षत से युक्त अंगों वाली तथा लटकते अलकों से ढँकी आँख वाली अन्य रमणी प्रियतम से उपभुक्त अपने शरीर को देख-देखकर प्रसन्न होती हैं और अपने अधरों को सजाकर चोली पहनने लगी हैं। दीर्घकाल तक सुरतकेलि करने के कारण श्रान्त, जिनका शरीर शिथिल हो गया है, जिनके जंघों और स्तनों पर रोमाञ्च हो रहा है, इस प्रकार की अन्य रमणियाँ अपने शरीर में तेल मलवा रही हैं। इस प्रकार का हेमन्तकाल अनेक गुणों से मनोहर रमणियों के मन को आकृष्ट करने वाला तथा क्रौञ्चपक्षियों के निनाद से युक्त है।

पञ्चम सर्ग का सारांश— पाँचवें सर्ग में महाकवि कालिदास ने शिशिर ऋतु का वर्णन किया है। इसका उपक्रम करते हुए महाकवि कहते हैं कि शिशिर ऋतु में धान पक जाते हैं और इक्षु प्ररूढ हो जाते हैं, क्रौञ्च पक्षियों का निनाद सुनायी पड़ने लगता है, रमणियों को प्रिय इस ऋतु में काम का आवेग बढ़ जाता है। लोग गृहों की खिड़कियों को बन्द रखते हैं तथा अग्नि एवं सूर्य की धूप का सेवन करते हैं। इस ऋतु में रमणियाँ चन्दन एवं चाँदनी का सेवन नहीं करती हैं। इस समय ठंढी हवा अच्छी नहीं लगती है। इस समय लोग हिमपात के कारण शीतल बनी हुई चन्द्रमा की किरणों से और अधिक ठंढी बनी हुई तथा चमकते तारे ही जिनके भूषण हैं, उन रात्रियों का सेवन नहीं करते हैं। ताम्बूल-लेपनद्रव्य एवं मालाओं को धारण करने वाली, जिनके मुखकमल फूलों के आसव की सुगन्धि से सुगन्धित हैं वे रमणियाँ प्रचुर कालागुरु के धूप से सुगन्धित शय्या गृह में सोत्साह प्रवेश करती हैं। जिन मदमाती रमणियों ने अपराध करने पर अपने पतियों को बहुत अधिक डाँटा था, वे जब काँपते हुए तथा भयभीत होकर उनके पास सम्भोग

की इच्छा से आते हुए अपने पतियों को देखती हैं, तो उनके अपराधों को भूलकर उनके साथ सम्भोग करती हैं।

जिन नवयुवतियों के साथ उनके रमणों ने लम्बी रातों में निर्दयता पूर्वक रमण किया है, वे प्रातःकाल श्रान्त जंघों वाली होने के कारण धीरे-धीरे चलती हैं। मनोहर चोलियों से अपने स्तनों को कसने वाली, रंगीन साड़ी पहनने वाली तथा पुष्पों से अपने केशों को सजाने वाली रमणियाँ मानो शिशिर ऋतु का शृंगार करती हैं। इन दिनों कामी पुरुष केसर के रंग से रंगे स्तनों वाली तथा जिनकी जवानी की गर्मी का सेवन सुखपूर्वक किया जा सकता है, उन रमणियों को अपनी छाती से लगाकर ठंढी की परवाह किए विना ही सोते हैं। इस ऋतु में कामिनियाँ सुगन्धित तथा निःश्वास वायु से जिनमें पड़े हुए नीलकमल काँपते हैं, इस प्रकार की मनोहर तथा काम वासना को जगाने वाली एवं मदमस्त बना देने वाली मदिरा को रात में अपने पतियों के साथ प्रसन्नता पूर्वक पीती हैं। जिसका मदराग समाप्त हो गया है, तथा पति के आलिङ्गन करने के कारण जिसके स्तन का अग्रभाग कड़ा हो गया है, ऐसी कोई रमणी प्रातःकाल प्रियतम से परिभुक्त अपने देह को देखती हुई तथा हँसती हुई अपनी शय्यागृह से निकलकर दूसरे गृह में प्रवेश कर रही है। अगुरु के सुगन्धित धूप से वासित जिसकी माला गिर पड़ी है एवं जिनके अग्रभाग मुड़े हुए हैं, इस प्रकार के केशपाशों वाली, कोई भारी नितम्बों वाली तथा गहरी नाभि वाली मनोहर रमणी अपनी शय्या का परित्याग कर रही है। आज सुवर्णनिर्मित कमल के समान कान्ति वाली, लाल-लाल मनोहर ओष्ठों वाली, बड़ी-बड़ी लाल आँखों वाली, तथा कन्धों पर गिरे बालों वाली रमणियों को प्रातःकाल में देखकर लगता है कि प्रत्येक गृह में लक्ष्मी आ वसी हैं। मोटी जंघों के भार से आर्त बनी हुई जिनके शरीर के बीच का भाग स्तन के भार से कुछ झुका है, ऐसे धीरे-धीरे चलने वाली कुछ युवतियाँ रात्रि के सुरतक्रीडा-कालीन वेश का परित्याग करके दिन में धारण करने योग्य वस्त्रों को धारण करती हैं।

प्रियतम के नखक्षत से भरे अपने स्तनों के मध्यभाग को देखती हुई, तथा दन्तक्षत से युक्त अपने ओठों का स्पर्श करती हुई तरुणियाँ अपने प्रियतम के कार्य का अभिनन्दन करती हुई सूर्योदय के समय अपने मुखड़े को सजाती हैं। इस प्रकार का यह शिशिर काल काम दर्प को बढ़ाने वाला, सुरतकेलि में संलग्न करने वाला है, किन्तु प्रियजन विप्रयुक्तों के चित्त को संतप्त करने वाला है।

षष्ठ सर्ग का सारांश— इस सर्ग में महाकवि कालिदास ने ऋतुराज वसन्त का वर्णन किया है। इस ऋतु के वर्णन का उपक्रम करते हुए महाकवि ने कहा कि वसन्त ऋतु एक योद्धा के समान है, जिसका विकसित आम्रमञ्जरी ही तीक्ष्ण बाण है, भ्रमर पंक्ति ही उसके धनुष् की डोरी है और वह कामी पुरुषों के मन को भेदन करने का कार्य करता है। इस ऋतु में वृक्षों के पुष्प विकसित हो जाते हैं, जलाशयों में कमल विकसित हो जाते हैं, स्त्रियों में काम का आवेश बढ़ जाता है, वायु सुगन्ध से भर जाती है, दिन मनोहर लगता है, तथा सायंकाल सुखद लगता है।

इस तरह इस ऋतु में सभी चीजें अच्छी लगती हैं। थोड़ी ओस पड़ने से छतें ठंढी हो जाती हैं, चम्पा के पुष्प विकसित हो जाते हैं और इस समय रमणियाँ अपने स्तनों को फूलों के मनोहर हारों से सजाती हैं। यह वसन्त ऋतु बावली के जल, रमणियों की मणिमेखला, चन्द्रमा की चाँदनी, मदमत्त रमणियों, तथा विकसित आम के वृक्षों के सौभाग्य को प्रदान करता है। इस ऋतु में रमणियाँ अपने नितम्बमण्डल को कुसुम्भ के रंग में रंगे रेशमी वस्त्रों से तथा कुकुभ के रंग से रंगे पतले वस्त्रों से स्तन-मंडल को अलंकृत करती हैं। इस समय वे अपने कानों को नवीन कर्णिकार पुष्पों से, चंचल काले बालों को अशोक पुष्पों से तथा नवमल्लिका के पुष्पों से सजाती हैं। कामातुर रमणियाँ उजले चन्दन के रस से सिक्त हारों से अपने स्तनमण्डल को तथा अपने श्रोणिमण्डल को काञ्ची कलाप से सजाती हैं। स्वर्णिम कमल के समान रमणियों के पत्रलेख से युक्त मुखमण्डल पर निकला हुआ पसीना रत्नों के बीच मोती के दानों के समान मनोहर लगता है। आज-कल रमणियाँ अपने कामावेश के कारण शिथिल अंगों को अपने समीपवर्ती प्रियतमों के समक्ष प्रदर्शित करके कामाकुल हो जाती हैं। कामदेव रमणियों के दुबले, पीले, अलसाये तथा बार-बार जंभाई लेने वाले अंगों को सौन्दर्य से परिपूर्ण कर देता है। इस समय दिन में लोग वृक्षों की छाया चाहते हैं और रात्रि में चाँदनी, सुखपूर्वक सोने के लिए वे छत पर जाते हैं और शीतल शरीर वाली कान्ता का गाढालिङ्गन करते हैं। इन दिनों कामदेव मदमाती रमणियों के नेत्रों में चञ्चलता, गालों में पीलापन, स्तनों में कठोरता, कमर में गहराई तथा जंघों में मोटापा बनकर स्थित रहता है। कामद्रेव रमणियों के अंगों को निद्रा एवं आलस्य से युक्त बना देता है, उनके वाक्यों को कुछ आलस्य युक्त तथा चितवन को तिरछी बना देता है। रमणियाँ अपने गोरे स्तनों पर प्रियङ्गु, कालीयक; कुंकुभ एवं कस्तूरी से युक्त चन्दन को लगाती हैं। लोग इस समय मोटे कपड़ों को त्यागकर लाक्षारस रंजित एवं सुगन्धित पतले कपड़े को धारण करते हैं। आम्रमञ्जरी के रस का पान करके मदमत्त नरकोकिल अपनी प्रियतमा का चुम्बन करता है, कमल पर बैठा हुआ यह भौंरा भी अपनी प्रियतमा की चाटुकारिता कर रहा है। लाल-लाल कोपलों के गुच्छों से झुके हुए तथा सुन्दर मंजरियों से युक्त शाखा वाले आम्रवृक्ष जब पवन के झोंकों से झूमते हैं तो उन्हें देखकर रमणियों का हृदय भी झूम उठता है। पल्लवों से युक्त आमूल-चूल लाल पुष्प समूह को धारण करने वाले अशोकवृक्ष, देखने वाली नवयुवतियों के हृदय को दुखी बना देते हैं। जिनके पुष्पों का चुम्बन-मदमस्त भौंरे कर रहे हैं तथा वायु के झोंके जिन्हें झुमा रहे हैं इस प्रकार की छोटी-छोटी अतिमुक्तलताओं को देखकर कामीपुरुषों का मन कामाविष्ट हो जाता है। प्रियतमा के मुख की कान्ति के समान कान्ति वाली, नयी नयी निकली हुई कुरबक वृक्ष की मंजरियों की उत्तम शोभा को देखकर किसका मन कामाकुल नहीं होगा ? पवन के झोंकों से झूमते हुए, जलती हुई आग के समान कान्तिवाले, फूलों से झुके हुए पलाश वन से आवृत पृथिवी इस समय लाल साड़ी पहनी हुई

रमणी के समान सुशोभित होती है। अपनी प्रेयसी के मुखमण्डल पर रीझे हुए प्रेमियों के अन्तःकरण को शुकमुख के समान प्रतीत होने वाले पलाश पुष्प टुकड़े-टुकड़े कर डालते हैं और कर्णिकार पुष्प उन्हें जला डालते हैं। कोयल अपनी मधुरवाणी से उन प्रेमियों को और मारे जा रही है। इस समय कोयल की वाणी और भौंरों के गुञ्जन को सुनकर सती नारियों का भी हृदय अधीर हो जाता है। इस ऋतु की वायु कोयल की आवाज और आम्रमञ्जरी की सुगन्ध को दूर दूर तक फैलाती हुई लोगों के अन्तःकरण को उन्मत्त बना देती है। नवयुवतियों की मुसुकान के समान मनोहर कुन्द पुष्प की पंक्ति मुनियों कें भी मन को वेवश बना देती है। लटकने वाली सुवर्ण मेखला को धारण करने वाली, स्तनों पर हार धारण करने वाली तथा कामावेश के कारण शिथिल शरीर वाली रमणियाँ युवकों के अन्तःकरण को अपनी ओर आकृष्ट कर लेती हैं। पुष्पित वृक्षों तथा भौंरों के गुञ्जन से युक्त पर्वत को देखकर सबों का मन उत्कण्ठित हो जाता है। पुष्पित आम्रवृक्षों को देखकर अपनी कान्ता से वियुक्त परदेशी पुरुष जोर-जोर से रोने लगते हैं। वसन्त में विकसित आम और कर्णिकार वृक्षों को देखकर तथा कोयल की कूक एवं भौंरों की गूँज को सुनकर; मानवती रमणियों को बड़ा ही कष्ट होता है। आम्रमञ्जरियों को कँपाने वाली वासन्ती हवा तीक्ष्ण बाणों के समान परदेशियों के हृदय में लगकर उनको मुर्छित कर दे रही हैं। इस ऋतु में हार आदि से अलंकृत गौरवर्ण की सुन्दरियों को देखकर मुनियों का भी मन बेकाबू हो जाता है। आसव की गन्ध से मँहकता हुआ सुन्दरियों का कमल के समान मुख, लोघ्र जैसी लाल-लाल आँखें, कुरबक पुष्प से अलंकृत उनके केशपाश; ये सब के सब कोमोद्दीपन का काम किया करते हैं। विकसित आम्रवृक्षों में निवास करने वाली वासन्ती वायु कोयल की कूक तथा भौंरो के गुञ्जन के साथ मिलकर मानवती रमणियों के मान को तोड़ देने का काम करती है। इस समय सायंकाल की मनोज्ञता, चन्द्रमा की स्वच्छ चाँदनी, कोयल की ध्वनि तथा वायु की सुगन्धि ये सबके सब काम के वेग को बढाने वाले होते हैं।

महाकवि कालिदास द्वारा प्रणीत होने पर भी ऋतुसंहार काव्य व्याख्याकारों तथा समालोचकों की दृष्टि में उपेक्षित ही रहा है। इस ग्रन्थ पर आज तक कोई भी अच्छी व्याख्या संस्कृत अथवा हिन्दी में नहीं प्राप्त होती है। इस ग्रन्थ के तीन संस्करण मुझे प्राप्त हुए (१) चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी का (२) प्रकाशन केन्द्र लखनऊ का तथा (३) चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी का। इसमें कालिदास ग्रन्थावली में यह काव्य संगृहीत है। उपर्युक्त तीनों संस्करणों में प्रकाशन केन्द्र एवं सीरीज के संस्करणों में सबसे बड़ी न्यूनता यह है कि इन संस्करणों में बहुत से श्लोक छोड़ दिए गये हैं। प्रकाशन केन्द्र के संस्करण के पाठ का आधार भी सीरीज का ही मूल पाठ प्रतीत होता है।

प्रस्तुत संस्करण को छात्रों की दृष्टि से उपयोगी बनाया गया है। श्लोक के साहित्यिक विशेषताओं की यथाशक्य चर्चा भी की गयी है।

ऋतुसंहार काव्य का वक्ता कविनिवद्ध है। वह अपनी प्रेयसी के समक्ष सभी ऋतुओं का सुन्दर ढंग से वर्णन करता है। इस काव्य में सम्भोग शृंगार रस की प्रधानता है। यद्यपि कवि ने अधिक श्लोकों का निबन्धन उपजाति छन्द में किया है, इसके अतिरिक्त वसन्ततिलका, मालिनी तथा शार्दूलविक्रीडित छन्दों का भी इस काव्य में सन्निवेश किया गया है।

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी के संचालक महोदय का मन था कि ऋतुसंहार काव्य की एक ऐसी व्याख्या प्रकाशित की जाय जो हिन्दी तथा संस्कृत दोनों भाषाओं के अध्येताओं के लिए उपयोगी हो, और इस कार्य को पूरा करने के लिए इन लोगों ने मुझको इस कार्य में लगाया। इस कार्य को करने में यद्यपि अनेक प्रकार के अन्तराल आये फिर भी श्रीभगवन् की कृपा से इस कार्य को पूरा करने में मुझे सफलता प्राप्त हुई।

प्रयास किया गया है कि इस संस्करण को एक आदर्श संस्करण रूप में पाठकों के समक्ष उपस्थित किया ज़ाय, फिर भी गच्छतः स्खलनं क्वापि के अनुसार इस संस्करण में भी स्खलन संभव है। विज्ञ-पाठकों से अनुरोध है कि समयानुसार सम्प्राप्त त्रुटियों से अवगत कराकर अपनी निरवग्रहा कृपा का पात्र मुझे अवश्य बनायें।

विनयावनत-
शिवप्रसाद द्विवेदी
१४५ श्याम सदन, कटरा,
अयोध्या,
२२४ १२३,
दूरवाणी (०५२७६) ५२६०३

।। श्रीः ।।

महाकविकालिदासविरचितम्

ऋतुसंहारम्

प्रथमः सर्गः

ग्रीष्म-वर्णनम्

प्रचण्डसूर्यः स्पृहणीयचन्द्रमाः सदावगाहक्षतवारिसञ्चयः।
दिनान्तरम्योऽभ्युपशान्तमन्मथो निदाघकालोऽयमुपागतः प्रिये ।। १ ।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अयं श्लोकः महाकविना कालिदासेन प्रणीतस्य ऋतुसंहार-काव्यस्यादिमः श्लोको विद्यते। अनेन श्लोकेन महाकविः ग्रीष्मर्तोः वर्णनमुपस्थापयति। कश्चनापि शृंगाररसरसिको जनः स्वकीयां स्नेहास्पदां प्रियतमां वक्ति ग्रीष्मर्तुमुद्दिश्य यत् साम्प्रतं सूर्यो भृशं तपति, चन्द्रस्य चन्द्रिका अतीव सुखमयी अनुभूयते। जनाः दीर्घकालपर्यन्तं स्नानं कुर्वन्ति; तेन सञ्चितस्यापि जलस्य भण्डार अपचीयते। अस्मिनृतौ सायंकालो रमणीय आभाति। कामोद्वेग अपि शान्तिं गतो वर्त्तते समेषां जनानाम्।

अन्वयः— हे प्रिये प्रचण्डसूर्यः स्पृहणीयचन्द्रमाः सदावगाहक्षतवारिसञ्चयः दिनान्तरम्यः अभ्युपशान्तमन्मथः अयम् निदाघकालः उपागतः।

व्याख्या— हे प्रिये= हे प्रियतमे! प्रिया शब्दस्य सम्बुद्धावेकचने इदं रूपम्। प्रचण्डसूर्यः= प्रचण्डः= अत्यन्तसंतापकरः सूर्यः= भास्करो यस्मिन्नसौ तथाविधः। भीषणतापसम्पन्न इत्यर्थः। स्पृहणीयचन्द्रमाः=स्पृहणीयः अभिलषणीयः चन्द्रमाः यस्मिंस्तथाविधः। चन्द्रमसः शैत्यप्रदत्वात्, सुखमयत्वाच्च स्पृहणीयता भवति ग्रीष्मर्तौ। सदावगाहक्षतवारिसञ्चयः= सदा= सर्वदा, अवगाहनेन= स्नानकरणेन, क्षतः= नैयून्यं गतः व्ययित इति यावत्, वारिणाम्= जलानां सञ्चयः= भण्डारो यस्मिन्नसौ। दिनान्तरम्यः= दिनान्तः= सायंकालः रम्यः= मनोज्ञः यस्यासौ तथाविधः। अभ्युप-शान्तमन्मथः= अभितः= सर्वतः पूर्णतः, उपशान्तः= शान्तिं गतः अनुद्वेगक रत्वात्, मन्मथः= मदनः 'मदनो मन्मथो मारः प्रद्युम्नो मीनकेतनः' इत्यमरः। यस्मिन् सः। अयम्= एषः निदाघकालः= निदाघस्य= ग्रीष्मर्तोः कालः= समयः, उपागतः= समागतो वर्त्तते।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छलोके प्रचण्डसूर्यः इत्यारभ्य अभ्युपशान्त-मन्मथः इत्यन्तम् सर्वाणि पदानि निदाघकालस्य विशेषतां गतानि सन्ति।

(२) अस्मिञ्छ्लोके उपजातिवृत्तम्। तथा चोपजातेर्लक्षणम्-
उपेन्द्रवज्रापदसंगतानि यदीन्द्रवज्राचरणानि च स्युः।
तदोपजातिः कथिता कवीन्द्रैः भेदा भवन्तीह चतुर्दशास्याः।। इति

(३) वैदर्भी रीतिः, (४) प्रसादाख्योगुणः (५) मध्यमसमासवती संघटना चात्र सन्ति।

समासः— प्रचण्डसूर्यः प्रचण्डः सूर्यो यस्मिन्नसौ (ब० ब्री० स०) स्पृहणीयचन्द्रमाः- स्पृहणीयः चन्द्रमाः यस्मिन्नसौ। (ब० ब्री० स०) सदावागहक्षतवारिसञ्चयः- सदा अवगाहनेन क्षतः वारेः सञ्चयो यस्मिन् सः (ब० बी० स०) दिनान्तरम्यः- दिनस्य अन्तः दिनान्तः (ष० त० पु०) दिनान्तो रम्यो यस्याऽसौ (ब० व्री० स०) निदाघकालः- निदाघस्य कालः। (ष० त०)

हिन्दी शब्दार्थ— प्रचण्डसूर्यः- अत्यधिक तपने वाले सूर्य वाला, स्पृहणीयचन्द्रमाः= जब चन्द्रमा की चाँदनी प्राप्त करने की अभिलाषा बढ़ जाती है ऐसा ग्रीष्म ऋतु। सदावगाहक्षतवारिसंचयः= हमेशा स्नान करते रहने के कारण जब सञ्चित जल का भण्डार समाप्त हो जाता है। दिनान्तरम्यः= जब कि संध्याकाल का समय अच्छा लगता है। अभ्युपशान्तमन्मथः- जब काम का आवेश शान्त हो जाता है। प्रिये= हे प्रिये, अयम्= इस प्रकार का यह, निदाघकालः- ग्रीष्म ऋतु का समय। समुपागतः= आ गया है।

उपस्थापन— यह ऋतुसंहार काव्य का प्रथम श्लोक है। इस श्लोक में महाकवि वस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण करते हैं। इस श्लोक में कोई प्रेमी पुरुष अपनी प्रेमिका से ग्रीष्म ऋतु के दिन की स्वाभाविक स्थिति का वर्णन करते हुए ग्रीष्म ऋतु की पाँच विशेषताओं को बतलाता है— (१) इस समय सूर्य अत्यधिक तप रहा है (२) चन्द्रमा की चाँदनी बहुत अच्छी लगती है (३) लोगों के स्नान करते रहने से जल का सञ्चित भण्डार भी समाप्त हो जाता है (४) सायंकाल में दिन अच्छा लगने लगता है (५) इस समय काम का वेग शान्त हो जाता है।

भावार्थ— हे प्रिये! यह ग्रीष्म ऋतु की बेला आ गयी है। अब सूर्य अत्यधिक तपने लग गया है। इस समय चन्द्रमा की चाँदनी का सुख प्राप्त करने की सबको इच्छा होती है, हमेश स्नान करते रहने के कारण एकत्रित किये गए जल का भण्डार भी खर्च हो जाता है, इस ऋतु में संध्या काल का समय अच्छा लगता है तथा काम का उद्वेगशान्त हो जाता है।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में उपजातिवृत्त (२) वैदर्भी रीति (३) मध्यम समास वाली संघटना तथा (४) प्रसाद नामक गुण के सद्भाव हैं।

निशाः शशांकक्षतनीलराजयः क्वचिद्विचित्रं जलयन्त्रमन्दिरम्।
मणिप्रकाराः सरसं च चन्दनं शुचौ प्रिये यान्ति जनस्य सेव्यताम्।। २।।

सन्दर्भप्रसंङ्गौ— अस्मिन् श्लोके कान्तास्नेहार्द्रमनाः पुरुषो वक्ति स्वप्रियतमां यदेतस्मिन् ग्रीष्मर्तौ चन्द्रमसः ज्योत्स्नया रात्रीणां तमांस्यपाकृतानि भवन्ति, तथाविधा

रात्र्यः, जलयन्त्रमन्दिरभवनानि, मणीनां प्रकारा, चन्दनपङ्कश्च सुखप्रदानि भवन्ति। अत एव जना इमानि वस्तूनि कामयन्ते।

अन्वय— हे प्रिये, शुचौ शशांकक्षतनीलराजयः निशा क्वचित् विचित्रम् जलयन्त्र-मन्दिरम्। मणिप्रकाराः सरसम् चन्दनम् च जनस्य सेव्यताम् यान्ति।

व्याख्या— प्रिये= हे प्रियतमे! शुचौ= ग्रीष्मर्तौ- 'शुचिः शुद्धे सितेऽनले। ग्रीष्माषाढानुपहतेषूपधाशुद्धमन्त्रिणि' इति हैमः। शशाङ्कक्षतनीलराजयः शशाङ्केन= चन्द्रमसा 'शशाङ्कश्चन्द्रमाश्चन्द्र इन्दुः कुमुदबान्धवः' इत्यमरः। क्षताः= विनाशिताः नीलाः= कृष्णवर्णाः अन्धकारस्य राजयः= समूहा यासां तथाविधाः निशाः= रात्र्यः, 'निशा निशीथिनी रात्रिः' इत्यमरः। चन्द्रज्योत्स्नया धवलिता रात्र्यः इत्यर्थः। क्वचित्= विचित्रम्= अद्भुतम् अतएव मनोज्ञम्, जलयन्त्रमन्दिरम्= जलस्य= पानीयस्य, यद् यन्त्रम् तस्य मन्दिरम्= गृहम्। मणिप्रकाराः= मणीनाम्=चन्द्रकान्तादिंमणीनाम्, प्रकाराः= भेदा सरसम्= रसेन= जलेन सहितम् 'रसः स्वादे जले वीर्ये' इति हैमः। चन्दनम्= गन्धसारो मलयजो भद्रश्रीश्चन्दनोऽस्त्रियाम्।' इत्यमरः। च जनस्य= लोकस्य सेव्यताम्= सेवनीयताम्, यान्ति= प्राप्नुवन्ति।

साहित्यिकविशेषताः— अस्मिञ्छ्लोके (१) उपजातिवृत्तम्, (२) वैदर्भी रीतिः (३) सम्भोगश्रृंगाररसस्यविभवानां वर्णनम् (४) अल्पसमासवती संघटना (५) माधुर्यप्रसादगुणौ च सन्ति।

समासः— 'शशाङ्कक्षतनीलराजयः'= शशाङ्केन क्षताः नीलाः राजयः यासां ताः (ब० ब्री० स०), जलयन्त्रमन्दिरम्-जलस्य यन्त्रम्= जलयन्त्रम्। तस्य मन्दिरम्। (ष० त० पु०) मणिप्रकाराः=मणीनाम् प्रकाशाः (ष० त० पु०)

हिन्दी शब्दार्थ— शुचौ= ग्रीष्म ऋतु में। शशाङ्कक्षतनीलराजयः= चन्द्रमा की चाँदनी से जिनका अन्धकार मिट गया है ऐसी, निशाः= रातें। जलयन्त्रमन्दिरम्= जिनमें जल के फौबारे लगे हों इस प्रकार का गृह। विचित्रम्= आश्चर्य जनक होने के कारण मनोहर। मणिप्रकाराः= विविध प्रकार की मणियाँ। सरसं चन्दनम्= जल मिलाकर घिसा हुआ चन्दन। सेव्यताम्= सेवन करने योग्य। यान्ति= बन जाते हैं।

उपस्थापन— इस श्लोक में नायक अपनी नायिका से उन साधनों का वर्णन कर रहा है, जिनसे ग्रीष्म ऋतु में शीतलता प्राप्त होती है और जो वस्तुएँ लोगों को शीतलता प्रदान कर उन्हें सुख देती हैं। ऐसी वस्तुएँ हैं (१) चाँदनी रातें (२) फौब्बारों से युक्त भवन (३) चन्द्रकान्त आदि विविध प्रकार की मणियाँ (४) जलमिलाकर धिसा हुआ चन्दन।

भावार्थ— प्रियतमे! ग्रीष्म ऋतु में चाँदनी से उजली बनी रातें, इस ऋतु में मनोहर एवं अद्भुत फौब्बारे लगे गृह, अनेक प्रकार की मणियाँ तथा सरस चन्दन लोगों के लिए सेवनीय बन जाते हैं।

सुवासितं हर्म्यतलं मनोहरं प्रियामुखोच्छ्वासविकम्पितं मधु।
सुतन्त्रिगीतं मदनस्य दीपनं शुचौ निशीथेऽनुभवन्ति कामिनः।। ३।।

सन्दर्भ— अस्मिञ्छ्लोके नायकः नायिकायाः समक्षं तेषामेव वस्तूनां वर्णनं करोति यानि वस्तूनि ग्रीष्मर्तोः रात्रिषु कामिनां जनानामानन्दप्रदानि भवन्ति। तानि च सन्ति पटवासादिकानां सौगन्ध्येन समन्वितं हर्म्यतलं, प्रियतमामुखस्वादसमान्वितं मधु, सुतन्त्रिगीतञ्च।

अन्वयः— (हे प्रिये) शुचौ कामिनः निशीथे सुवासितं मनोहरं हर्म्यतलं प्रियामुखोच्छ्वासविकम्पितं मधु मदनस्य दीपनं सुतन्त्रिगीतं अनुभवन्ति।

व्याख्या— शुचौ= ग्रीष्मर्तौ, कामिनः= कामुकाः जनाः, निशीथे= अर्द्धरात्रौ सुवासितम्= पटवासादिसुगन्धिना सौगन्ध्यसमन्वितम्, मनोहरम्= मनोज्ञम् हर्म्यतलम्= चन्द्रशालाम्, प्रासादपृष्ठं वा, प्रियामुखोच्छ्वासविकम्पितम्= प्रियायाः= प्रियतमायाः, मुखस्य= आननस्य उच्छ्वासेन= पानावसरे निस्सृतेन वायुना, विकम्पितम्= कम्पितम्, मधु= आसवम्, मदनस्य= कामस्य, दीपनम्= उत्तेजकम्, सुतन्त्रिगीतम्= समीचीनं वीणागीतम्, अनुभवन्ति= सेवन्ते।

साहित्यिकविशेषताः— अस्मिञ्छ्लोके (१) सम्भोगशृंगारस्यानुभावानां वर्णनम् (२) गीष्मर्तोः मनोज्ञं वर्णनम् (३) वैदर्भी रीतिः (४) प्रसादमाधुर्याख्यौ गुणौ (५) अल्पसमासवती संघटना च सन्ति।

समास— हर्म्यतलम्= हर्म्यस्य तलम्, (ष० त० पु०) प्रियामुखोच्छ्वासविकम्पितम्= प्रियायाः, मुखम्= प्रियामुखम् (ष० त० पु०) तस्य उच्छ्वासः= प्रियामुखोच्छ्वासः (ष० त० पु०) तेन विकम्पितम् (तृ० त० पु०) सुतन्त्रिगीतम्= तन्त्र्याः गीतम्= तन्त्रिगीतम् (ष० त० पु०) सुष्ठुचेदं तन्त्रिगीतम् सुतन्त्रिगीतम् (कर्मधारयः)

हिन्दीशब्दार्थ— शुचौ= ग्रीष्म ऋतु में, कामिनः= कामी पुरुष, निशीथे= रात्रि में, सुवासितम्= सुगन्धित, हर्म्यतलम्= अट्टालिका जिसमें चन्द्रशाला विद्यमान हो; प्रियामुखोच्छ्वास विकम्पितम्= प्रियतमा के मुख की वायु से कम्पित, मधु= मदिरा अथवा आसव, मदनस्य= कामदेव को, दीपनम्= उद्दीप्त करने वाला, सुतन्त्रि गीतम्= वीणा का सुन्दर गीत का, अनुभवन्ति= आनन्द लेते हैं, अथवा सेवन करते हैं।

उपस्थापन— इस श्लोक में नायक अपनी नायिका के समक्ष उन वस्तुओं का वर्णन करता है, जिन वस्तुओं का सेवन कामी पुरुष ग्रीष्म ऋतु की रात्रियों में किया करते हैं।

भावार्थ— हे प्रिये! ग्रीष्म ऋतु की रात्रियों में कामी पुरुष सुगन्धित चन्द्रशालाओं, प्रियतमा के मुख मारुत से कम्पित आसव, तथा वीणा पर गाएं गए सुन्दर कामोद्दीपन गीतों का सेवन किया करते हैं।

नितम्बबिम्बैः सदुकूलमेखलैः स्तनैः सहाराभरणैः सचन्दनैः।
शिरोरुहैः स्नानकषायवासितैः स्त्रियो निदाघं शमयन्ति कामिनाम्।। ४।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिन् श्लोके नायकः तेषामुपकरणानां वर्णनं करोति येषामुपकरणानां प्रयोगं कृत्वा कामिन्यः स्वप्रियतमानां सन्तापमपाकुर्वन्ति। तथाहि—

ग्रीष्मर्तौ ताः स्वक्षौमवस्त्रमेखलामण्डितैः नितम्बमण्डलैः, चन्दनचर्चितैः हारालंकृतैः पयोधरैः, स्नानीयचूर्णसौगन्ध्यसुगन्धितैः कुन्तलकलापैश्च कामिनां पुरुषाणां निदाघ-मपाकुर्वन्ति।

अन्वयः— (हे प्रिये शुचौ) स्त्रियः सदुकूलमेखलैः नितम्वबिम्बैः सहाराभरणैः सचन्दनैः स्तनैः स्नानकषायवासितैः शिरोरुहैः कामिनां निदाघं शमयन्ति।

व्याख्या— हे प्रिये समागतेऽस्मिन् निदाघकाले स्त्रियः= रमण्यः सदुकूलमेखलैः, दुकूलञ्च= क्षौमवस्त्रञ्च, 'दुकूलं सूक्ष्मवाससि। क्षौमवस्त्रं' इति हैमः। मेखला च= रसना च 'मेखलादिनितम्बे स्याद्रसना खड्गबन्धयोः।' इति हैमः। दुकूलमेखले ताभ्यां सहिता ये ते तैः= सदुकूलमेखलैः= क्षौमवस्त्ररसनाभ्यां मण्डितैः, नितम्ब-बिम्बैः= नितम्बानाम्= स्वकटिपश्चभागानाम्, बिम्बैः= मण्डलैः, बिम्बं तु प्रतिबिम्बे स्यान्म- ण्डले, बिम्बिकाफले' इति हैमः, सहाराभरणैः= हाराः= मुक्तावल्य एवाभ-रणानि= आभूषणानि हाराभरणानि तैः सहितानि यानि तानि तैः, सहाराभरणैः, सचन्दनैः= चन्दनचर्चितैः, स्तनैः= वक्षोजैः, स्नानकषायवासितैः= स्नानस्य= मज्ज-नस्य, कषायैः= चूर्णैः, वासिताः= सौगन्ध्यसमन्विताः कृता ये ते तैः, शिरोरुहैः= कुन्तलकलापैः, कामिनाम्= कामावेशसमन्वितानाम्, जनानाम्, निदाघम्= सन्तापम्, शमयन्ति= शान्तिं नयन्ति।

साहित्यिकविशेषताः— अस्मिन् श्लोके सन्ति (१) उपजातिवृत्तम्। लक्षणं चास्य वृत्तस्य प्रथमश्लोकव्याख्यायामुक्तम्। (२) वैदर्भी रीतिः (३) अल्पसमासवती संघटना (४) सम्भोग शृंगाररसस्य विभावानां वर्णनम् (५) माधुर्यप्रसादख्यौ च गुणौ।

समासः— सदुकूलमेखलैः= दुकूलानि च मेखलाश्च= दुकूलमेखलानि (स० द्वन्द्वः) तैः सहितानि यानि तैःसदुकूलमेखलैः (ब० ब्री०) नितम्बबिम्बैः= नितम्बानां बिम्बाः तैः= (ष० त० पु०) सहाराभरणैः= हारा एवाभरणानि (कर्मधारयः) तैः सहितानि यानि तानि तैः (ब० ब्री०) सचन्दनैः= चन्दनेन सहितानि यानि तानि तैः (ब०ब्री०) स्नानकषायवासितैः= स्नानस्य कषायैः वासिताः ये ते तैः (ब० ब्री०)

हिन्दी शब्दार्थ— सदुकूलमण्डितैः= रेशमी वस्त्रों तथा करधनी से मण्डित, नितम्बबिम्बैः= (स्त्रियों के कटिभाग के पिछले हिस्से को नितम्ब कहते हैं) नितम्ब समूह के द्वारा, सहाराभरणैः= मोती की माला रूपी आभूषण से मण्डित, सचन्दनैः= चन्दन चर्चित, स्नानकषायवासितैः= स्नानीय द्रव्यों की सुगन्धि से सुगन्धित, शिरोरुहैः= बालों द्वारा, निदाघम्= सन्ताप को, शमयन्ति= दूर करती हैं।

उपस्थापन— इस श्लोक में नायक अपनी नायिका से उन साधनों का वर्णन करता है जिन साधनों को अपनाकर गर्मी के दिनों में कामिनियाँ कामी पुरुषों के सन्ताप को शान्त किया करती हैं। ऐसे तीन साधनों का उल्लेख इस श्लोक में किया गया है। (१) कामिनियाँ सूक्ष्म रेशमी वस्त्रों तथा करधनी से मण्डित अपने नितम्ब समूह से कामी पुरुषों के सन्ताप को अपाकृत करती हैं। (२) वे मोती की माला से मण्डित तथा चन्दन चर्चित अपने स्तनों से उनके सन्ताप को दूर करने

का काम करती हैं। (३) स्नानीय सुगन्धित द्रव्यों की सुगन्धि से सुवासित कुन्तलकलाप से वे कामी पुरुषों को शीतल बनाने का कार्य करती हैं।

भावार्थ– हे प्रिये! गर्मी के दिनों में कामिनियाँ रेशमी वस्त्र से सुशोभित अपने नितम्बों, मोती की माला से समलंकृत तथा चन्दन चर्चित स्तनों एवं स्नानीय द्रव्यों की सुगन्धि से सुवासित अपने कुन्तल कलापों के द्वारा कामी पुरुषों के सन्ताप का अपाकरण किया करती हैं।। ४।।

साहित्यिक विशेषताएँ– इस श्लोक में (१) उपजाति वृत्त (२) सम्भोग शृंगाररस के अनुभवों के वर्णन (३) वैदर्भी रीति तथा (४) अल्पसमासवती संघटना के सद्भाव हैं।

नितान्तलाक्षारसरागरञ्जितैर्नितम्बिनीनां चरणैः सनूपुरैः।
पदे-पदे हंसरुतानुकारिभिर्जनस्य चित्तं क्रियते समन्मथम्।। ५।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ– अस्मिञ्छ्लोके नायकः स्वनायिकां वक्ति यत् यदा जनाः कामिनीनां यावकरसरञ्जितं हंसरुतानुकारिध्वनिकरिनूपुरमण्डितं मनोज्ञं चरणं पश्यन्ति तदा तेषां कामिनीचरणमनोहरतां नूपुरध्वनिमादकताञ्च मनस्सु आकलय्य कामस्य सञ्चारो भवति।

अन्वय– नितान्तलाक्षारसरागरञ्जितैः सनूपरैः पदे पदे हंसरुतानुकारिभिः नितम्बनीनां चरणैः जनस्य चित्तं समन्मथं क्रियते।

व्याख्या– नितान्तलाक्षारसरागरञ्जितैः= नितान्तम्= गाढम् 'तीव्रैकान्तनितान्तानि गाढबाढदृढानि च।' इत्यमरः। लाक्षायाः= जतोः लाक्षा-रक्षा जतु क्लीबे यावोलक्तोद्रमामयः। इत्यमरः। रसस्य= द्रवस्य, रागेण= लौहित्येन 'रागः स्याल्लोहितादिषु' इत्यमरः, रञ्जिताः= मण्डिताः ये ते तैः। सनूपुरैः= नूपुरेण= मञ्जीरेण, सहितैः= समलंकृतैः, पदे-पदे= प्रतिपदम्, हंसरुतानुकारिभिः= हंसानाम्= मानसौकसाम् 'हंसास्तु श्वेतगरुतश्चक्राङ्गाः मानसौकसः।' इत्यमरः। यानि रुतानि= ध्वनयः तान्यनुकुर्वन्ति ये ते तथाविधैः, नितम्बिनीनाम्= नितम्बा एव प्रधानाः यासां तथाविधानाम् गुरुनितम्बवतीनां युवतीनामित्यर्थः, चरणैः= पादैः, जनस्य= कामिलोकस्य, चित्तम्= अन्तःकरणम्, समन्मथम्= कामावेशसमन्वितम्, क्रियते= विधीयते।

यावकरसरागरञ्जितान् कामिनीजनानां चरणान् विलोक्य युवजनानां चित्तम् सपदि समन्मथं भवतीति भावः।

साहित्यिकविशेषताः– अस्मिञ्छ्लोके सन्ति (१) उपजातिवृत्तम्। (२) शृंगाररसविभावानां वर्णनम् (३) वैदर्भी रीतिः (४) माधुर्यप्रसादाख्यौ गुणौ (५) माध्यमसमासवती संघटना च।

समासः– नितान्तलाक्षारसरागरञ्जितैः= नितान्तम् लाक्षायाः रसस्य रागेणरञ्जिताः ये ते तथाविधैः (ब० ब्री०) सनूपुरैः= नूपुरेण सहिताः ये ते तथाविधैः (ब० ब्री०) हंसरुतानुकारिभिः हंसानाम् रुतानि अनुकुर्वन्ति ये ते तैः (ब० ब्री०)

हिन्दी शब्दार्थ– नितान्तलाक्षारसरागरञ्जितैः= महावर के रंग से गाढा लाल

रंगे हुए। सनूपुरैः= नूपुर (पायल) से अलंकृत, हंसरुतानुकारिभिः= हँसों की ध्वनि के समान मनोज्ञ ध्वनि करने वाले, नितम्बिनीनाम्= बड़े-बड़े अतएव युवजन मनोमोहक नितम्बों वाली, समन्मथम्= कामावेश युक्त, क्रियते= बना दिया जाता है।

उपस्थापन— इस श्लोक में नायक अपनी प्रियतमा को बतलाता है कि गर्मी के दिनों में रमणियों के पैरों में लगा हुआ गाढा महावर का रंग, उनके पैरों की पायल की रुन-झुन की आवाज तथा उनकी मस्ती भरी चाल सब के सब कामी पुरुषों के लिए उन्मादक होते हैं। उनके हृदय में काम का आवेश भर देने में सक्षम होते हैं।

भावार्थ— (प्रिये! इस ग्रीष्म ऋतु में) रमणियाँ जब अपने पैरों को गाढे रंग से रंगकर हंसों की ध्वनि के समान रुन-झुन की ध्वनि करने वाली पायल को अपने पैरों में डालकर धीरे-धीरे चलती हैं तो उसे देखकर कामी पुरुषों का हृदय कामाविष्ट हो जाया करता है।

पयोधराश्चन्दनपङ्कचर्चितास्तुषारगौरार्पितहारशेखराः।
नितम्बदेशाश्च सहेममेखलाः प्रकुर्वते कस्य मनो न सोत्सुकम्।। ६।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके नायको वक्ति स्वप्रियतमां यत् रमणीनां वक्षोजाः सुवर्णरसनया मण्डिताः नितम्बभागाश्चावलोकनमात्रेणैव कामिनां हृदयेषु कामाग्निं संवर्द्धयन्ति।

अन्वयः— चन्दनपङ्कचर्चिताः तुषारगौरार्पितहारशेखराः पयोधराः सहेममेखलाः नितम्बदेशाः च कस्य मनः सोत्सुकम् न प्रकुर्वते।

व्याख्या— चनदनपंकचर्चिताः- चन्दनस्य मलयजस्य पङ्केन= कर्दमेन 'निषद्वरस्तु जम्बालः पङ्कोऽस्त्री शादकर्दमौ।' इत्यमरः। चर्चिताः= अनुलेपिताः, तुषारगौरार्पितहारशेखराः तुषारवत्= हिमवत् गौरवर्णाः अर्पिताः= स्थापिताः न्यस्ताः इत्यर्थः, हाराः मुक्तावल्यः, शेखरे= उपरि भागे येषां ते तथाभूताः पयोधराः= स्तनाः रमणीनां कुचमण्डलमिति भावः, सहेममेखलाः= हेम्नः= सुवर्णस्य 'स्वर्णं सुवर्णं कनकं हिरण्यं हेम हाटकम्।' इत्यमरः। मेखला= रसना= हेममेखला, तया सहिताः सहेममेखलाः= काञ्चनकाञ्चीकलापमण्डिता इति यावत्। नितम्बदेशाः= रमणीनां पश्चभागाः, कस्य= पुरुषस्य मनः= चित्तं, सोत्सुकम्= सम्भोगोत्साहसमन्वितम्, न= नाहि प्रकुर्वते= सम्पादयन्ति।

अस्मिन् श्लोके रमणीनां हारमण्डितपयोधराणं काञ्चीकलापमण्डित श्रोणिप्रदेशानाञ्चकामोद्वेगविजृम्भकत्वमभिहितम्।

साहित्यिकविशेषताः— अस्मिन् श्लोके सन्ति (१) उपजातिवृत्तम्। तल्लक्षणञ्चाभिहितं प्रथमश्लोकस्य व्याख्यायाम्। (२) सम्भोगश्रृंगाररसानुभावस्य वर्णनम् (३) वैदर्भी रीतिः (४) माधुर्यप्रसादाख्यौ गुणौ (५) अल्पसमासवती संघटना च।

समासः— चन्दनपङ्कचर्चिताः= चन्दनस्य पङ्केन चर्चिताः ये ते तथाभूताः (ब० व्री०) तुषारगौरार्पितहारशेखराः= तुषारवद् गौराः= तुषारगौराः (उपमितसमासः)

तथाभूता अर्पिताः हाराः येषां शेखरे ते= तुषारगौरार्पितहारशेखराः (ब० ब्री०) सहेममेखलाः= हेम्नो मेखला हेममेखला (ष० त० स०) हेममेखलया सहिता ये ते= सहेममेखलाः (ब० ब्री०) नितम्बदेशाः= नितम्बस्य देशाः (ष० त० पु०)।

उपस्थापन— इस श्लोक में नायक कह रहा है कि बर्फ के समान धवल वर्ण की मोतियों से निर्मित हार से अलंकृत तथा चन्दन पंक से चर्चित रमणियों के स्तन तथा सुवर्ण निर्मित करधनी से सुशोभित उनके श्रोणि भाग पुरुषों के मन को सहसा समाकृष्ट करने में समर्थ हो जाते हैं। इन सबों को देखकर युवकों का मन सहसा समुत्सुक हो जाता है। प्रेमी अपनी प्रियतमा से कहता है-

भावार्थ— प्रिये! चन्दन पंक से अनुलिप्त तथा बर्फ के समान उजले वर्ण के हार से सुशोभित रमणियों के पयोधर तथा सुवर्ण निर्मित काञ्ची कलाप मण्डित नितम्बभाग को देखकर किस पुरुष का मन उत्कण्ठित नहीं हो जाता?

साहित्यिक विशेषताएँ— इस श्लोक में (१) उपजातिवृत्त (२) सम्भोग शृंगार के विभावों का वर्णन, (३) माधुर्य गुण तथा (४) वैदर्भी रीति के सद्भाव हैं।

समुद्गतस्वेदचिताङ्गसन्धयो विमुच्य वासांसि गुरूणि साम्प्रतम्।
स्तनेषु तन्वंशुकमुन्नतस्तना निवेशयन्ति प्रमदाः सयौवनाः।। ७।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिन् श्लोके नायकः स्वप्रियतमां वक्ति यत् ग्रीष्मर्तौ स्वेदविन्दूनां शरीरान्निस्सरणात् उन्नतपयोधरवत्यो युवतयः गुरूणि वस्त्राणि परित्यज्य सूक्ष्माणि वस्त्राणि धारयति।

अन्वय— समुद्गतस्वेदचिताङ्गसन्धयः सयौवनाः उन्नतस्तनाः प्रमदाः साम्प्रतम् गुरूणि वासांसि विमुच्य स्तनेषु तन्वंशुकम् निवेशयन्ति।

व्याख्या— समुद्गतस्वेदचिताङ्गसन्धयः= समुद्गतः= समुत्पन्नः यो हि स्वेदः= घर्मोदकम्, तेन अचिताः= परिपूर्णाः अङ्गानाम्= अवयवानाम्, सन्धयः= संघटनस्था-नानि यासां ताः तथाविधाः, सयौवनाः= यौवनेन= युवावस्थया सहिताः= समलंकृताः युवतय इत्यर्थः, उन्नतस्तनाः= उन्नतौ= समुन्नतिं गतौ स्तनौ यासां ताः= उन्नत-स्तनाः, प्रमदाः= नितम्बिन्यः 'प्रमदामानिनी कान्ता ललना च नितम्बिनी' इत्यमरः। सम्प्रतम्= अस्मिन् ग्रीष्मकाले, गुरूणि= स्थूलानि वासांसि= वस्त्राणि विमुच्य= परित्यज्य, स्तनेषु= पयोधरेषु तन्वंशुकम्= तनु= सूक्ष्मं अंशुकम्= वस्त्रम्, निवेशयन्ति= स्थापयन्ति।

अस्मिन् श्लोके वर्णितम् यत् ग्रीष्मर्तौ यतः स्थूलानां वस्त्राणां धारणेन घर्मोदबिन्दव अत्यधिकम् शरीरान्निस्सरन्ति, अतएव वैकल्यमनुभूयमानाः ताः स्थूलानि वस्त्राणि नहि धारयन्ति।

साहित्यिकविशेषताः— अस्मिन् श्लोके सन्ति (१) उपजातिवृत्तम्। तथा च तल्लक्षणम् (२) वैदर्भी रीतिः (३) प्रसादाख्यो गुणः (४) अल्पसमासवती संघटना च।

उपेन्द्रवज्रापदसंगतानि, यदीन्द्रवज्रा चरणानि चस्युः।
तदोपजातिः कथिता कवीन्द्रैः भेदाः भवन्तीह चतुर्दशास्याः।। इत्युपजतिलक्षणम्

समासः— समुद्गतस्वेदचिताङ्गसन्धयः= समुद्गतश्चाऽसौ स्वेदः (कर्मधारयः) तेन अचिताः अङ्गानां सन्धयो यासां ताः (ब० ब्री०) उन्नतस्तनाः= उन्नताः स्तनाः यासां ताः (ब० ब्री०) तन्वंशुकम्= तनु चेदमंशुकम्= तन्वंशुकम् (कर्मधारयः)

उपस्थापन— इस श्लोक में नायक नायिका से कहता है कि ग्रीष्म काल में रमणियाँ मोटे कपड़े का परित्याग कर देती हैं क्योंकि उनके धारण करने से उनके शरीर से बहुत अधिक पसीना निकलता है। उससे वे बहुत अधिक कष्ट का अनुभव करने लगती हैं। फलतः वे गर्मी के दिनों में अपने स्तनों को पतले वस्त्रों से सजाती हैं। उनका यह कार्य भी युवकों के मन को कामोद्दीप्त करने का काम करता है।

भावार्थ— प्रिये! पसीने के निकलने से अस्त-व्यस्त अङ्गसन्धियों तथा ऊँचे-ऊँचे स्तनों वाली युवति रमणियाँ इस समय अपने स्तनों पर पतला कपड़ा धारण करती हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ— इस श्लोक में (१) उपजाति वृत्त (२) प्रसाद गुण (३) वैदर्भी रीति (४) तथा अल्पसमासवती संघटना के सद्भाव हैं।

सचन्दनाम्बुव्यजनोद्भवानिलैः सहारयष्टिस्तनमण्डलार्पणैः।
सवल्लकीकाकलिगीतनिःस्वनैर्विबोध्यते सुप्त इवाद्य मन्मथः।। ८।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिन् श्लोके कविकल्पितो नायकः स्वप्रेयसीं प्रति तेषां वस्तूनामुल्लेखं करोति यानि वस्तूनि ग्रीष्मर्तौ कामावेगविजृम्भकाणि भवन्ति। स वक्ति यत् साम्प्रतम् चन्दनमिश्रितजलेनार्द्रीकृतानां व्यजनानां वायुभिः हारमण्डित-कुचमण्डलसमर्पणैः वीणा मधुरध्वनेः मिश्रणेन मसृणसंगीतकध्वनिभिः ग्रीष्मर्तौ सुप्तोऽपि कामभावः विवोध्यते इव।

अन्वयः— सचन्दनाम्बुव्यजनोद्भवानिलैः सहारयष्टिस्तनमण्डलार्पणैः सवल्ल-कीकाकलिगीतानिःस्वनैः सुप्तः मन्मथः अद्य विबोध्यते इव।

व्याख्या— सचन्दनाम्बुव्यजनोद्भवानिलैः= चन्दनेन सहितम् सचन्दनम्= मलयजपङ्कयुक्तम् सचन्दनं यदम्बु= जलम्, तेन युक्तं यद् व्यजनम्= तालवृन्तम्, तस्माद्भवैः= उत्पन्नैः, अनिलैः= वायुभिः= चन्दनमिश्रितजलार्द्रीकृततालवृन्त-मरुद्भिः, सहारयष्टिस्तनमण्डलार्पणैः= हारस्य= मुक्तावल्याः, या यष्टिः, तया सहितं यत् स्तनमण्डलम्= कुचद्वयम्, तस्य समर्पणैः= असकृत् वल्लभाय समर्पणेन द्वारा, सबल्लकीकाकलिगीतानिःस्वनैः= वल्लक्या सहितं सबल्लाके= वीणा युक्तं, यत् काकलिगीतम्= मधुरं गीतम् 'काकली तु कले सूक्ष्मे' इत्यमरः। तस्य निःस्वनैः= ध्वनिभिः, वीणाध्वनिमिश्रितमधुरगीतनिनादैः, सुप्तः= मन्दतां गतः मन्मथः= मदनः, अद्य= साम्प्रतम्, विवोध्यते= प्रबोध्यते इव= इति मन्ये।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिंन् श्लोके उत्प्रेक्षालंकारः तैः तैः साधनैः कामदेवस्य प्रबोधनस्योत्प्रेक्षणात्। 'भवेत् संभावनोत्प्रेक्षा' (२) अत्रोपजाति नामकं वृत्तम्। तल्लक्षणमुक्तं प्रथमस्य श्लोकस्य व्याख्यायाम्। (३) अत्र कामोद्दीपनस्य

त्रीणि साधनानि प्रोक्तानि सन्ति। (४) दीर्घसमासा संघटना, माधुर्यं च गुणो वर्त्तते। (५) सम्भोगशृंगाररसस्य प्रधानता।

समासः— सचन्दनाम्बुव्यजनोद्भवानिलैः= चन्दनेन सहितं सचन्दनं, सचन्दनं यदम्बु= सचन्दनाम्बु (कर्मधारयः) सचन्दनाम्बु यद् व्यजनम्= सचन्दनाम्बुव्यजनम् (कर्मधारयः) सचन्दनाम्बुव्यजनात् भवाः= सचन्दनाम्बुव्यजनभवाः (प० त० पु०) सचन्दनाम्बुव्यजनभवाश्चेमे अनिलाः तैः (कर्मधारयः) सहारयष्टिस्तनमण्डलार्पणैः= हारस्य यष्टिः= हारयष्टिः (ष० त० पु०) हारयष्टि सहितम् यत् स्तनमण्डलम्= सहायष्टिस्तनमण्डलम् (कर्मधारयः) तस्य अर्पणैः (ष० त० पु०) सबल्लकीकाकलि-गीतनिःस्वनैः= बल्लक्या सहितं सबल्लकि। सबल्लकि चेदं काकलिगीतम्= सबल्लकी काकलिगीतम् (कर्मधारयः) तस्य निःस्वनैः। (ष० त० पु०)

उपस्थापन— इस श्लोक में कविकल्पित नायक अपनी प्रियतमा के समक्ष कहता है कि यद्यपि ग्रीष्म ऋतु में काम सुप्त सा हो जाता है, किन्तु रमणियों द्वारा उन तीन साधनों को अपनाया जाता है, जिनसे वे मानों सोए हुए काम को जगाने का काम करती हैं। वे साधन हैं-

(१) चन्दन मिश्रित जल से आर्द्र किये गए पंखों की ठंढी-ठंढी हवा।
(२) हारमण्डित स्तनमण्डल का रमणियों द्वारा नायक को बार-बार समर्पण। अर्थात् स्पर्श कराना।
(३) वीणा की आवाज से युक्त मधुर गीतध्वनि।

भावार्थ— आज मानों चन्दन मिश्रित जल से आर्द्र बने पंखों की हवा, हार मण्डित स्तनों के असकृत् समर्पण तथा बीणा की ध्वनि मिश्रित मधुर गीत की ध्वनि से, सोया हुआ काम जगाया जाता है।। ८।।

सितेषु हर्म्येषु निशासु योषितां सुखप्रसुप्तानि मुखानि चन्द्रमाः।
विलोक्य नूनं भृशमुत्सुकश्चिरं निशाक्षये याति ह्रियेव पाण्डुताम्।। ९।।

सन्दर्भप्रसंङ्गौ— अस्मिन् श्लोके कविनिवद्धो नायकः स्वप्रियतमां वक्ति यत् रात्रौ रमण्यः धवलवर्णासु चन्द्रशालासु शेरते। तासां सुखसुप्तानां रमणीनां मनोज्ञानि मुखानि विलोक्य, नाहमासां मुखमण्डलवन्मनोज्ञो भवामीति लज्जितश्चन्द्रः पाण्डुतां विभर्तीति मन्ये।

अन्वयः— निशासु सितेषु हर्म्येषु भृशमुत्सुकः चन्द्रमाः योषितां सुखप्रसुप्तानि मुखानि विलोक्य निशाक्षये ह्रिया इव नूनं पाण्डुतां याति।

व्याख्या— निशासु= रात्रिषु 'निशा निशीथिनी रात्रिस्त्रियामा क्षणदाक्षपा।' इत्यमरः। सितेषु धवलवर्णेषु, हर्म्येषु= अट्टालिकासु भृशम्= अत्यर्थम्- 'अतिबेल-भृशात्यर्थातिमात्रोद्गाढ़ निर्भरम्।' इत्यमरः। उत्सुकः= उत्कण्ठितः, चन्द्रमाः= चन्द्रः 'हिमांशुश्चन्द्रमाश्चन्द्रः' इत्यमरः। योषिताम्= सुन्दरीणाम्, सुखप्रसुप्तानि= सुखपूर्वकं सानन्दं, प्रसुप्तानि= प्रकर्षेण निद्रितानि, मुखानि= वदनानि, विलोक्य= निरीक्ष्य,

निशाक्षये= रात्र्याः समाप्तेरवसरेआसां मुखसदृशो न भवामीति, ह्रिया= लज्जया इव नूनम्= निश्चितरूपेण, पाण्डुताम्= पाण्डुवर्णताम् याति= प्राप्नोति।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिन् श्लोके लज्जायाः संभावनाकरणात् उत्प्रेक्षालंकारः। 'भवेत् संभावनोत्प्रेक्षा विषये निरुपह्नवे।' इति ह्युत्प्रेक्षालक्षणम्। (२) अत्र उपजाति वृत्तम् (३) अत्र प्रसादमाधुर्ययोः गुणयोः सद्भावः (४) वैदर्भी रीतिश्च सन्ति।

समासः— सुखप्रसुप्तानि= सुखेन प्रसुप्तानि (तृ० त० पु०) निशाक्षये= निशायाः क्षये (ष० त० पु०)

हिन्दी शब्दार्थ— निशासु= रात्रियों में, सितेषु= उजली, हर्म्येषु= अट्टालिकाओं पर, योषिताम्= रमणियों के, सुखप्रसुप्तानि= सुखपूर्वक सोए हुए, मुखानि= मुखों को, भृशम्= अत्यन्त, उत्सुकः= उत्कण्ठापूर्वक, विलोक्य= देखकर, निशाक्षये= रात ढलने पर प्रातः काल की बेला में, चन्द्रः= चन्द्रमा, ह्रिया= लज्जा के कारण, पाण्डुतां याति= पीला पड़ जाता है।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिबद्ध नायक अपनी प्रियतमा से कह रहा है कि लगता है कि ग्रीष्म ऋतु की रात्रियों में जब रमणियाँ अपनी अट्टालिकाओं पर रात्रि में सुख पूर्वक सो जाती हैं, तो उस समय चन्द्रमा बड़ी ही उत्सुकता पूर्वक रमणियों के मनोहर मुखमण्डल को देखता है, किन्तु जब उसके मन में यह बात जम जाती है कि मेरा सौन्दर्य वैसा नहीं है, जैसा कि इन रमणियों के मुखमण्डल का है, तो वह रात ढलते-ढलते लज्जा से मानो पीला पड़ जाता है।

भावार्थ— प्रिये! रात्रि में जब रमणियाँ अपनी सफेद अट्टालिकाओं पर चाँदनी में सोती हैं तो चन्द्रमा बड़ी उत्सुकता पूर्वक उनके मनोहर मुखमण्डल को देखता है और रात ढ़लते-ढ़लते वह लज्जा से पीला पड़ जाता है।

असह्यवातोद्धतरेणुमण्डला प्रचण्डसूर्यातपतापिता मही।
न शक्यते द्रष्टुमपि प्रवासिभिः प्रियावियोगानलदग्धमानसैः।।१०।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके कविनिबद्धो नायकः स्वप्रेयसीं वक्ति यत् ग्रीष्मर्तौ तीव्रेण वायुना साकं पृथिव्यां रेणवः उद्धताः भवन्ति। सूर्यस्य संतापेनापि पृथिवीसंतप्ता भवति तथा प्रियावियोगाग्निना दग्धान्तः करणाः प्रवासिनः तु अवलोकयितुमपि समर्था नो भवन्ति।

अन्वयः— प्रियावियोगानलदग्धमानसैः प्रवासिभिः असह्यवातोद्धतरेणुमण्डला प्रचण्डसूर्यातपतापिता मही द्रष्टुमपि न शक्यते।

व्याख्या— प्रियावियोगानलदग्धमानसैः= प्रियायाः= प्रेयस्याः, वियोगेन= विप्रयोगेन जन्यो योऽनलः= अग्निः, तेन दग्धः= ज्वलितः, मानसः= मनो येषां ते तथाभूतैः, प्रवासिभिः= दूरदेशवासिभिः, असह्यवातोद्धतरेणुमण्डला= असह्यः= सोढुमशक्यः यो हि वातः वायुः, ग्रीष्मर्तौ वायोः नैसर्गिकतया खरतरत्वात् उष्णत्वाच्च, तेन उद्धतः= उत्थितः, रेणूनाम्= धूलीनां मण्डलः= समूहो यस्यां तथाविधा, प्रचण्ड-

सूर्यातपतापिता= प्रचण्डः= प्रखरश्चासौ सूर्यः= दिनकरः, तस्य आतपेन= घर्मेण, तापिता= संतापिता अतीवोष्णेति भावः, मही= पृथिवी, द्रष्टुमपि= अवलो- कितुमपि न= नहि शक्यते ।।

तेषां कण्ठाश्लेषप्रणयिजनस्य विप्रयोगजन्येन विरहाऽग्निना पूर्वत एवान्तः करणस्य दग्धत्वात्, पृथिव्यां पांसुपटलेन पाटितत्वात्, सूर्यातपसंबन्धेन तस्याः संतप्त- त्वाच्च वियोगिनः प्रवासिनः तामवलोकयितुमपि समर्था नो भवन्ति ।

साहित्यिक विशेषताः— (१) अस्मिन् श्लोके उपजातिवृत्तम् । (२) अत्र मध्यम- समासा संघटना । (३) प्रसादाख्यो गुणः ।

समासः— प्रियावियोगानलदग्धमानसैः- प्रियायाः वियोगः= प्रियावियोगः (ष० त० पु०) प्रियावियोगस्य अनलः= प्रियावियोगानलः (ष० त० पु०) तेन दग्धः मानसो येषां ते तथाभूतैः (ब० ब्री०) असह्यवातोद्धतरेणुमण्डला न सह्यः असह्यः (पर्युदासो नञ्) असह्यश्चासौ वातः= असह्यवातः (कर्मधारयः) तेन उद्धतम् रेणुनां मण्डलं यस्यां सा (ब्र० ब्री०) प्रचण्डसूर्यातपतापिता- प्रचण्डश्चासौ सूर्यः= प्रचण्डसूर्यः (कर्मधारयः) तस्य आतपः= प्रचण्डसूर्यातपः (ष० त० पु०) तेन तापिता या सा तथाविधा (ब० ब्री०)

हिन्दी शब्दार्थ— प्रियावियोगानलदग्धमानसैः= प्रियतमा के वियोग रूपी अग्नि से जिनका अन्तः करण जल चुका है ऐसे, प्रवासिभिः= परदेशियों द्वारा, असह्यवातोद्धतरेणुमण्डला= असह्यवायु के द्वारा जिस पर धूलि पटल उड़ाए गए हैं । प्रचण्डसूर्यातपतापिता= प्रचण्ड सूर्य की धूप से संतप्त, मही= पृथिवी, द्रष्टुमपि न शक्यते= देखी भी नहीं जा सकती है ।

उपस्थापन— इस श्लोक का कविनिवद्ध वक्ता है । वह अपनी प्रियतमा से कह रहा है कि इस ग्रीष्म ऋतु की हवा असह्य हो गयी है । वह तेजी से चलकर पृथिवी पर धूल उड़ाती है । सूर्य भी बहुत अधिक तपता है । उसकी धूप से पृथिवी संतप्त हो जाती है । इस तरह की पृथिवी को तो प्रवासी जन देख भी नही सकते हैं, क्योंकि उनका हृदय तो प्रियतमा की वियोगाग्नि से पहले ही जल चुका होता है । अतएव वे उस पृथिवी की ओर देखने में भी असमर्थ हैं ।

भावार्थ— हे प्रिये! अपनी प्रियतमाओं की वियोगाग्नि से जिनका हृदय दग्ध हो चुका है वे प्रवासी जन तो असह्य वायु के वेग से उड़ायी गयी धूलि-समूह वाली तथा सूर्य की धूप से संतप्त पृथिवी को देख भी नहीं सकते हैं ।

साहित्यिक विशेषताएँ- इस श्लोक में (१) उपजाति वृत्त, (२) विप्रलम्भ शृंगार के अनुभाव के वर्णन (३) वैदर्भी रीति (४) अल्प समासवती संघटना तथा (५) माधुर्य एवं प्रसाद गुण के सद्भाव हैं ।

मृगाः प्रचण्डातपतापिता भृशं तृषा महत्या परिशुष्कतालवः ।
वनान्तरे तोयमिति प्रधाविता निरीक्ष्य भिन्नाञ्जनसन्निभं नभः ।। ११ ।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके कविनिबद्धो वक्ता स्वप्रियतमां ग्रीष्मर्तौ निदाघस्य

विभीषिकाम् वर्णयन् वक्ति यत् सूर्यस्य तापातिशयेन वनेषु मृगाः पिपासिता भवन्ति। पिपासातिशयेन तेषां तालवः शुष्का जायन्ते। जलान्वेषणतत्परास्ते वनाद्वनान्तरं धावन्ति।

अन्वयः— महत्या तृषा परिशुष्कतालवः भृशं प्रचण्डातपतापिताः मृगाः भिन्नाञ्जनसन्निभं नभः निरीक्ष्य वनान्तरे तोयमिति प्रधाविताः।

व्याख्या— महत्या= अत्यधिकया, तृषा= पिपसया, परिशुष्कतालवः= परि= परितः=सर्वतः शुष्कः=शुष्कतां गतः, तालुः=आस्याभ्यन्तो विद्यमानः ताल्वाख्यो भागो येषां ते तथाभूताः, भृशम्=अतीवगाढं 'भृशमत्यन्तं गाढनिर्भरम्' इत्यमरः। प्रचण्डातपतापिताः=प्रचण्डस्य=सूर्यस्य, आतपेन=घर्मेण तापिता=संतापिताः ये ते तथाभूताः, मृगाः=हरिणाः, भिन्नाञ्जनसन्निभम्=चूर्णीकृताञ्जनसदृशम्, नभः= गगनं 'नभोन्तरिक्षं गगनमनन्तं सुरवर्त्मखम्।' इत्यमरः। निरीक्ष्य विलोक्य, वनान्तरे= अपरस्मिन् वने, तोयम्= पानीयम् वर्त्तते, इति= इत्यनया बुद्ध्या, प्रधाविताः धावमानाः सन्ति।

अयमाशयो यत् यदा निदाघातिशयेन तृड्व्याकुलाः मृगाः भवन्ति, तदा जलान्वेषणतत्परास्ते दूरे विद्यमानं नीलं नभो विलोक्य तत्र वनान्तरे नीलं जलमेव विद्यते इति बुद्ध्या वनाद्वनान्तरं यान्ति। तत्रैव जलं लप्स्यते इति बुद्ध्या धावन्ति। मरीचिकायां मृगाणां जलबुद्धेः लोकेऽपि प्रसिद्धिः।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिन् श्लोके उपजातिवृत्तम्। (२) निदाघस्याति भयंकरं रूपवर्णनम् (३) भयानकरसाभासः (४) प्रसादाख्योऽत्र गुणः, (५) मध्यमसमावती संघटना च।

समासः— प्रचण्डातपतापिताः- प्रचण्डश्चासौ आतपः= प्रचण्डातपः (कर्मधारयः) तेनतापिताः, (तृ० त० पु०) भिन्नाञ्जनसन्निभम्- भिन्नं चेदमञ्जनम्= भिन्नाञ्जनम्। (कर्मधारयः) तस्य सन्निभम्= भिन्नाञ्जनसन्निभम् (ष० त० पु०) परिशुष्कतालवः- परिशुष्कः तालुः येषां ते (ब० ब्री०)

हिन्दी शब्दार्थ— महत्या= बहुत अधिक, तृषा= प्यास से, परिशुष्कतालवः= जिनके तालु सूख गए हैं। भृशम्= अत्यन्त, प्रचण्डातपतापिताः= प्रखर धूप से संतप्त, मृगाः= हरिण, भिन्नाञ्जनसन्निभम्= जिसमें मानो आञ्जन मिला दियां गया हो इस तरह का नीला नीला, नभः= आकाश को, निरीक्ष्य= देखकर, वनान्तरे= दूसरे वन में, तोयम्= जल है, इति= यह सोचकर, प्रधाविताः= दौड़ रहे हैं।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविकल्पित नायक अपनी नायिका से कहता है कि इस ग्रीष्म ऋतु में सर्वत्र गर्मी का साम्राज्य है। वनों में जल का मिलना असंभव सा हो गया है, प्यास से व्याकुल मृगों के तालु सूख गए हैं। सूर्य की प्रचण्ड किरणें उन्हें सन्तप्त बना रही हैं। मृगमारिचिका में जल प्राप्त करने की आशा से वे एक वन से दूसरे वन में दौड़ रहे हैं।

भावार्थ— प्रिये! बहुत अधिक प्यास से जिनके तालु सूख गए हैं, ऐसे अत्यन्त तीव्र सूर्य की किरणों से संतप्त मृग नीले आकाश को देखकर दूसरे वन में जल है, इस आशा से दौड़ रहे हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ— इस श्लोक में (१) उपजाति वृत्त (२) भयानक रसाभास (३) मध्यसमासवाली रचना तथा (४) ओजोगुण के सद्भाव हैं।

सविभ्रमैः सस्मितजिह्मवीक्षितैर्विलासवत्यो मनसि प्रवासिनाम्।
अनङ्गसन्दीपनमाशु कुर्वते यथा प्रदोषाः शशिचारुभूषणाः।। १२।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके महाकविना कल्पितो नायकः स्वप्रियतमां वक्ति यत् साम्प्रतम् विलासवत्यो रमण्यः स्मितपूर्वकेण कटाक्षपातेन द्वारा प्रवासिनां पुरुषाणां हृदये कामसंधुक्षणं तेनैव प्रकारेण प्रकुर्वन्ति येन प्रकारेण चन्द्रचारुभूषणा सन्ध्या।

अन्वयः— विलासवत्यः सविभ्रमैः सस्मितजिह्मवीक्षितैः शशिचारुभूषणाः प्रदोषाः यथा प्रवासिनाम् मनसि आशु अनङ्गसन्दीपनम् कुर्वते।

व्याख्या— विलासवत्यः= विलासिन्यः रमण्यः। सविभ्रमैः= विभ्रमसहितैः। तथा चोक्तं विभ्रमलक्षणं साहित्यदर्पणकारेण।

'त्वरया हर्षरागादेर्दयितागमनादिषु।
अस्थाने विभ्रमादीनां विन्यासो विभ्रमो मतः।।' इति।

सस्मितजिह्मवीक्षितैः-स्मितेन= ईषद् हासेन सहितं सस्मितम्। सस्मितं यत् जिह्मवीक्षितम्= तीर्यगवलोकनम् तैः, मन्दस्मितपुरस्सरं कटाक्षपातैरिति भावः। शशिचारुभूषणा= शशी= चन्द्र एव चारु= मनोज्ञं भूषणं यस्याः सा, तथाविधा प्रदोषा= यथा सन्ध्याकालः तामिव। प्रवासिनाम्='स्वनिवासस्थानाद् दूरदेशेषु निवासं कुर्वतां जनानाम्; अतएव स्वप्रियतमाविप्रयोगविधुराणां मनसि= अन्तः करणे, आशु= शीघ्रमेव, अनङ्गदीपनम्= कामोद्दीपनम् कुर्वते कुर्वन्ति।

साहित्यिकविशेषताः— अस्मिन् श्लोके सन्ति (१) उपजातिवृत्तम्। (२) 'शशिचारुभूषणा प्रदोषा यथा' इत्यत्रोपमालंकारः। (३) सम्भोगशृंगाराभासः। (४) प्रसादमाधुर्यगुणौ। (५) रमणीनां विभ्रमादिकानां कामाग्निसंधुक्षणे साधनत्ववर्णनम्। (६) मध्यमसमासा संघटना च।

समासः— सस्मितजिह्मवीक्षितैः- स्मितेन सहितानि सस्मितानि। सस्मितानि च जिह्मवीक्षितानि तैः= सस्मित जिह्मवीक्षितैः। शशिचारुभूषणा- शशी एव चारुभूषणं यस्याः सा (ब० ब्री०) अनङ्गसन्दीपनम्- नाहि सन्ति अङ्गानि यस्याऽसौ अनङ्गः। (ब० ब्री०) अनङ्गस्य सन्दीपनम् (ष० त० पु०)

हिन्दी शब्दार्थ— विलतिसवत्यः= विलासिनी कामिनियाँ। सविभ्रमैः= विभ्रमों से युक्त। सस्मितजिह्मवीक्षितैः= स्मित पूर्वक तिरछी चितवनों के द्वारा, शशिचारुभूषणा= जिसका चन्द्रमा ही सुन्दर आभूषण है। प्रदोषा यथा= ऐसे सन्ध्या काल के समान। प्रवासिनाम्= परदेशियों के, मनसि= मन में, आशु= शीघ्र ही, अनङ्गसंदीपनम्= कामाग्नि को सुलगाने का काम, कुर्वते= करती हैं।

उपस्थापन— कविकल्पित नायक अपनी प्रियतमा से कहता है कि जिस तरह चमकते हुए चन्द्रमा रूपी आभूषण से सजी हुई सन्ध्या अत्यन्त आकर्षक

होती है, उसी तरह चमकते हुए आभूषणों से सजी हुई रमणियाँ जब मुस्कराती हुई तिरछी नजरों से विभ्रम पूर्वक देखती हैं तो प्रवासी पुरुषों के मन में कामाग्नि प्रदीप्त हो जाती है।

लगता है कि यहाँ पर महाकवि कालिदास ने विभ्रम शब्द का रमणियों के उन समस्त चेष्टाओं के अर्थ में प्रयोग किया है जो नायक को अनुरुक्त करने का काम करती हैं।अतएव विभ्रम शब्द का अर्थ रणियों के हाव, भाव, हेला, औदार्य, किलकिञ्चितु, लीला, विलास विच्छित्ति आदि सबों को लेना चाहिए, न कि विभ्रम मात्र।

विभ्रम तो प्रियतम के आगमन आदि के समय हर्ष एवं अनुराग आदि के कारण जल्दी करने की धुन में भूषण आदि को और के और अंगों में धारण कर लेने को कहते हैं। आचार्य विश्वनाथ ने कहा भी है-

'त्वरया हर्षरागादेर्दयितागमनादिषु।
अस्थाने विभ्रमादीनां विन्यासो विभ्रमो मतः।।'

भावार्थ— विलासिनी रमणियाँ अपने हाव-भावों से युक्त मुसकुराकर तिरछी निगाहों से देखती हुई चाँदनी युक्त संध्याकाल के समान प्रवासियों के मन में कामाग्नि को प्रदीप्त कर देती हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ— इस श्लोक में (१) उपमालंकार (२) उपजाति वृत्त (३) अल्पसमासवती संघटना (४) शृंगाररस (५) वैदर्भी रीति तथा (६) माधुर्य एवं प्रसाद गुण के सद्भाव हैं।

रवेर्मयूखैरभितापितो भृशं विदह्यमानः पथि तप्तपांसुभिः।
अवाङ्मुखो जिह्मगतिः श्वसन्मुहुः फणी मयूरस्य तले निषीदति।। १३।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिन् श्लोके कविनिवद्धो वक्ता स्वप्रेयसीं वक्ति यत् साम्प्रतम् ग्रीष्मस्यात्यन्ताद्भुतः प्रभावो दृश्यते। तस्य सन्तापातिशयेन प्राणिनः स्वस्वभावमपि परित्यजन्ति। सर्पमयूरयोरतिदीर्घकालादेव भक्ष्यभक्षकभावः ख्यातो वर्त्तते मयूरमवलोक्य भीतिभीतः सर्पः पलायते। सर्पमवाप्य मयूरस्तं खादति। किन्तु अयं सर्पः निदाघातिशयेन सन्तप्तः सन् पथि तप्तपांसुभिरतीव दग्ध इव केनापि प्रकारेण कुटिलगत्या मुहुः श्वसन्नागत्य मयूरस्याधस्तात् कुण्डलं कृत्वा निषीदति। निदाघातिशयेन क्लान्तः सन् मयूरोऽपि तं नहि तुदति।

अन्वयः— रवेः मयूखैः अभितापितः पंथि तप्तपांसुभिः भृशं विदह्यमानः फणी अवाङ्मुखः जिह्मगतिः मुहुः श्वसन् मयूरस्य तले निषीदति।

व्यख्या— रवेः= सवितुः "भानुर्हंसः सहस्रांशुस्तपनः सविता रविः।" इत्यमरः। मयूखैः= किरणैः 'किरणोस्रमयूखांशु गभस्तिघृणि रश्मयः।' इत्यमरः। अभितापितः= सर्वतः संतापितः पथि= मार्गे, तप्तपांसुभिः= तप्ताः= सूर्यातपेन संतप्ताः ये पांसवः= धूलयः तैः, 'रेणुर्द्वयोः स्त्रियां धूलिः पांशुर्ना न द्वयोरजः।' इत्यमरः। भृशम्= अत्यन्तम् विदह्यमानः= अत्यन्तं संताप्यमानः, फणी= सर्पः, अवाङ्मुखः= अधोमुखः,

जिह्मगतिः= कुटिलगतिः सन् मुहुः= असकृत् श्वसन्= निःश्वसन् मयूरस्य= वर्हिणः, तले= अधस्तात्, निषीदति= उपविशति।

साहित्यिकविशेषताः— अस्मिन् श्लोके सन्ति (१) उपजातिवृत्तम्। (२) ग्रीष्मर्तोः स्वाभाविकं वर्णनम्। (३) ग्रीष्मस्य भूम्ना महिम्ना प्राणिनां स्वभावव्यतिरेकः। (४) असमासा संघटना, (५) वैदर्भी रीतिः, (६) प्रसादगुणश्च।

समासः— तप्तपांसुभिः= तप्ताश्चेमे पांसवः तैः (कर्मधारयः) जिह्मगतिः= जिह्मागतिर्यस्य सः (ब० ब्री०)

हिन्दी शब्दार्थ— रवेः= सूर्यकी, मयूखैः= किरणों से, अभितापितः= बहुत संतप्त किया गया, पथि= रास्ते में, तप्तपांसुभिः= जलती हुई धूल से, भृशम्= बहुत अधिक, विदह्यमानः= जलता हुआ, फणी= सर्प, अवाङ्मुख= नीचे मुँह किए हुए, जिह्मगतिः= कुटिलगति से चलता हुआ, मुहुः= बारम्बार, श्वसन्= श्वास लेते हुए, मयूरस्य= मयूर के, तले= नीचे, निषीदति= बैठ जाता है।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिवद्ध वक्ता कहता है कि ग्रीष्मकाल रूपी राजा का चारो ओर इतना प्रभाव बढ़ गया है कि स्वाभाविक रूप से आपस में बैर रखने वाले जीव भी परस्पर के बैर को त्याग दिए हैं। सर्प और मयूर में वध्य-घातक भाव स्वाभाविक है; किन्तु देखो इस सर्प को जो गर्मी के प्रभाव से झुलस गया है, रास्ते की गर्म धूल से जलता हुआ सा टेढी गति से आकर अपना मुख नीचे करते हुए दीर्घ श्वाँस लेकर लेटे हुए मयूर के नीचे बैठ गया है। मयूर भी ग्रीष्म के प्रभाव से अत्यन्त क्लान्त है। वह बैठै हुए सर्प को देखकर भी कुछ नहीं कर रहा है।

भावार्थ— प्रिये! इस ग्रीष्म काल में सूर्य की किरणों से अत्यन्त संतप्त रास्ते की धूलि से जलता हुआ सा सर्प नीचे मुँह करके टेठी चाल वाला बार-बार श्वाँस लेते हुए मयूर के नीचे (छाया में) बैठ रहा है।

साहित्यिक विशेषताएँ— इस श्लोक में (१) उपजाति वृत्त (२) वैदर्भी रीति, (३) समासरहित संघटना (४) तथा प्रसाद गुण के सद्भाव हैं।

तृषा महत्या हतविक्रमोद्यमः श्वसन् मुहुर्दूरविदारिताननः।
न हन्त्यदूरेऽपि गजान् मृगेश्वरो विलोलजिह्वश्चलिताग्रकेसरः।। १४।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके कविनिवद्धो वक्ता वक्ति स्वप्रियतमां यत् साम्प्रतम् ग्रीष्मस्य तथाविधो निरुपप्लवमयः प्रभावो दृश्यते, यत्र सर्वेषु नैसर्गिकतया वैरवद्धेष्वपि प्राणिषु स्वाभाविकी मैत्री संजाता। स वक्ति यत् सविधे विद्यमानेऽपि सिंहः समक्षं स्थितस्य गजस्योपरि निदाघत्वादाक्रमणं नहि करोति।

अन्वयः— महत्या तृषा हतविक्रमोद्यमः दूरविदारिताननः विलोलजिह्वः चलिताग्रकेसरः मुहुः श्वसन् अदूरे अपि गजान् न हन्ति।

व्याख्या— महत्या= अतिभीषणया, तृषा= पिपासया, हतविक्रमोद्यमः= हतः= विनाशितः विक्रमस्य= पराक्रमस्य, उद्यमः= प्रयासो यस्याऽसौ तथाविधः, दूरविदारिताननः= दूरम्= सुदूरं यावत् विदारितम्= स्फारितम् विस्तारितमिति यावत्,

निदाघेनातिक्लान्तत्वात् आननम्= मुखं येनाऽसौ तथाविधः। विलोलजिह्वः= विलोला= अतीव चञ्चला जिह्वा यस्याऽसौ तथाविधः, चलिताग्रकेसरः= चलितः= चञ्चलः, अग्रकेसरः= केसराग्रभागो यस्याऽसौ तथाविधः, मुहुः= बहुबारम्, श्वसन्= निश्श्वासं गृह्णन्, मृगेश्वरः= सिंहः, अदूरेऽपि= सविधे विद्यमानानपि गजान्= हस्तिनः, न= नहि, हन्ति= निहन्ति।।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके उपजाति वृत्तम्। (२) ग्रीष्मस्य प्रभावातिशयवर्णनम्। (३) वैदर्भी रीतिः, (४) प्रसादगुणः, (५) मध्यमसमासा संघटना वैदर्भी रीतिश्च।

समासः— हतविक्रमोद्यमः= हतो विक्रमस्य उद्यमो यस्याऽसौ तथाविधः (ब० ब्री०) अथवा- हतौ विक्रमोद्यमौ यस्याऽसौ तथाविधः (ब० ब्री०) दूरविदारिताननः= दूरं विदारितम् आननं येन सः (ब० ब्री०) विलोलजिह्वः= विलोला जिह्वा यस्यासौ तथाविधः (ब० ब्री०) चलिताग्रकेसरः- चलितः अग्रकेसरो यस्याऽसौ तथाविधः (ब० ब्री०)

हिन्दी शब्दार्थ— महत्या= भीषण, तृषा= प्यास से, हतविक्रमोद्यमः= जिसके विक्रम तथा प्रयास विनष्ट हो गए हैं। दूरविदारिताननः= जिसने अपना मुख बहुत अधिक फैला रखा है। विलोलजिह्वः= बहुत अधिक हाँफने के कारण जिसकी जीभ बहुत अधिक चञ्चल हो गयी है। चलिताग्रकेसरः= जिसके अग्रभाग के आयाल चंचल हो उठे हैं। मुहुः श्वसन्= बार-बार श्वांस लेता हुआ, मृगेश्वरः= सिंह, अदूरे अपि= सन्निकट में विद्यमान भी, गजान्= हाथियों को, न नहीं, हन्ति= मारता है।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिबद्ध वक्ता अपनी प्रियतमा से ग्रीष्म काल के भीषण प्रभाव का वर्णन करते हुए कहता है कि इस समय अत्यधिक गर्मी पड़ने के कारण सिंह ने भी अपना खुंखार स्वभाव छोड़ दिया है। गर्मी के प्रभावातिशय के कारण उसके विक्रम और प्रयास विनष्ट हो गए हैं। अधिक हाँफने के कारण उसकी निकली हुई जीभ बहुत चंचल हो गयी है। वह सन्निकट में विद्यमान गजों को देखकर भी उनको मारने का काम नहीं करता है। लगता है जैसे उसने गजों के प्रति अपने स्वाभाविक बैर को त्याग दिया है।

भावार्थ— हे प्रिये! अत्यधिक प्यासे होने के कारण जिसके वल और प्रयास विनष्ट हो गए हैं, जिसने अपना मुँह फैला रखा है और जिसकी जीभ बहुत चंचल हो गयी है। जिसके गरदन के आयाल काँप रहे हैं, वह सिंह सन्निकट में विद्यमान भी हाथियों को नहीं मारता।

साहित्यिक विशेषताएँ— इस श्लोक में (१) उपजाति वृत्त (२) वैदर्भी रीति (३) प्रसाद गुण तथा (४) मध्यम समासवती संघटना के सद्भाव हैं।

विशुष्ककण्ठाहृतसीकराम्भसो गभस्तिभिर्भानुमतोऽनुतापिताः।
प्रवृद्धतृष्णोपहता जलार्थिनो न दन्तिनः केसरिणोऽपि बिभ्यति।। १५।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके कविनिबद्धो वक्ता स्वप्रियतमां वक्ति यत् साम्प्रतम् हस्तिनोऽपि ग्रीष्मर्तौः उष्मणाऽति संतप्ताः संजाताः सन्ति। तेषामपि कण्ठः शुष्कः संजातः। तेन पिपासातिशयमनुभूयमानाः जलान्वेषणं कुर्वन्तश्च समक्षं सिंहमपि विलोक्य तस्मान्न विभ्यति। निर्भीकतया सिंहस्य समक्षमपि यान्ति ते।

अन्वयः— भानुमतः गभस्तिभिः अनुतापिताः विशुष्ककण्ठाहृतसीकराम्भसः प्रवृद्धतृष्णोपहताः जलार्थिनः दन्तिनः केसरिणः अपि न बिभ्यति।

व्याख्या— भानुमतः= सन्ति भानवः= किरणानि यस्याऽसौ भानुमान् सूर्य इति यावत् तस्य= भानुमतः= सूर्यस्य। गभस्तिभिः= किरणैः अनुतापिताः= संतापिताः, विशुष्ककण्ठाहृतसीकराम्भसः= विशेषेण शुष्कः= विशुष्कः= नीरसः तेन आहृतम्= आनीतं सीकराम्भः= जलकणं यैः ते, प्रवृद्धतृष्णोपहताः= प्रवृद्धा= अतीव वृद्धिं गता या तृष्णा तया, उपहताः= अभिभूताः, पिपासयातिपीडितत्वात्, जलार्थिनः= जलं कांक्षमाणाः, दन्तिनः= हस्तिनः, केसरिणः अपि= सिंहादपि न= नहि, विभ्यति= भीतिं अनुभवन्ति।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके सन्ति उपजातिवृत्तम्। (२) ग्रीष्मस्याति भीषणप्रभावस्य वर्णनम्। ३- मध्यमसमासा संघटना। ४- प्रसादाख्योगुणोः (५) वैदर्भीरीति

समासः— भानुमतः= सन्तिभावो यस्याऽसौ तथाविधः तस्य (ब० ब्री०) विशुष्ककण्ठाहृतसीकराम्भसः= विशुष्केन कण्ठेन आहृतं सीकराम्भो यैः ते। (ब० ब्री०) प्रवृद्धतृष्णोपहताः= प्रवृद्धा चासौ तृष्णा= प्रवृद्धतृष्णा (कर्मधारयः) तया उपाहताः ये ते (ब० ब्री०)।

हिन्दी शब्दार्थ— भानुमतः= सूर्य के, गभस्तिभिः= किरणों द्वारा, अनुतापिताः= संतप्त, विशुष्ककण्ठाहृतसीकराम्भसः= बिलकुल सूखे हुए कण्ठ से जलकण का ग्रहण करने वाले, प्रवृद्धतृष्णोपहताः= बहुत अधिक प्यास के कारण जिनका स्वभाव अभिभूत हो गया है, वे जलार्थिनः= जल चाहने वाले, दन्तिनः= हाथी, केसरिण अपि= सिंह से भी, न= नहीं; विभ्यति= डरते हैं।

उपस्थापन— कविनिवद्ध वक्ता अपनी प्रेयसी से कहता है कि ग्रीष्म ऋतु के दिनों में अत्यधिक गर्मी पड़ने के कारण हाथियों का भी स्वभाव बदल गया है। सूर्य की किरणों की गर्मी से उनका गला सूख जाता है। वे उसके द्वारा जलकण को ग्रहण करते हैं, यह उनका स्वभाव होता है। बहुत अधिक प्यासे हुए होने के कारण वे जल खोजते हुए सिंहों के सामने से ही बिना किसी भय के निकल जाते हैं।

भावार्थ— (हे प्रिये! इस ग्रीष्मकाल में) सूर्य की किरणों से अत्यन्त सन्तप्त तथा सूखे हुए कण्ठ से जलकण को ग्रहण करने वाले, अत्यन्त प्यासे हाथी सिंह से भी नहीं डरते हैं।

हुताग्निकल्पैः सवितुर्गभस्तिभिः कलापिनः क्लान्तशरीरचेतसः।
न भोगिनं घ्नन्ति समीपवर्तिनं कलापचक्रेषु निवेशिताननम्।। १६।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके कविनिबद्धो वक्ता नायकः स्वप्रियतमां वक्ति यद् ग्रीष्मस्य प्रभावात् मयूरस्यापि स्वभावपरिवर्तनं जातम्। स अग्निकल्पानां सूर्यकिरणानां उष्मणातिसंतप्तः सन् कण्ठस्य शुष्कत्वाद् वैयाकुलीमनुभूयमानः स्वबर्हभारेषु प्रवेशिताननमपि सर्पमवलोक्य तं नहि हन्ति।

अन्वयः— हुताग्निकल्पैः सवितुः गभस्तिभिः क्लान्तशरीरचेतसः कलापिनः कलापचक्रेषु निवेशिताननम् समीपवर्तिनं भोगिनं न घ्नन्ति।

व्याख्या— हुताग्निकल्पैः= कृतहोमाग्निसदृशैः अत्युष्णैः, सवितुः= सूर्यस्य, गभस्तिभिः= किरणैः, क्लान्तशरीरचेतसः= क्लान्ते= संतप्ते शरीरचेतसी= देहान्तः-करणे यस्याऽसौ तथाविधः तस्य, कलापिनः= मयूराः, कलापचक्रेषु= कलापानां= बर्हाणां, चक्रेषु= समूहेषु निवेशिताननम्= निवेशितम्= प्रवेशितम्, आननम्= मुखम् येनाऽसौ तथाविधम्, समीपवर्तिनम्= समीपे= सविधे, वर्तते= विद्यते य असौ तथा- विधं भोगिनम्= सर्पम् न= नहि घ्नन्ति= मारयन्ति।

उष्मणाक्रान्तत्वादेव ते सविधे विद्यमानमपि स्वभक्ष्यभूतं सर्पमुपेक्षन्ते।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिन् श्लोके उपजातिवृत्तम् वर्त्तते। (२) ग्रीष्मोष्मणाक्रान्तस्य मयूरस्यापि स्वभावपरिवर्तनं जातमिति वर्णितम्। (३) अत्र वैदर्भी रीतिः (४) मध्यमसमासा संघटना, (५) प्रसादाख्यो गुणश्च।

समासः— हुताग्निकल्पैः- हुतश्चासावग्निः हुताग्निः (कर्मधारयः) तस्य कल्पैः (ष० त० पु०) क्लान्तशरीरचेतसः- क्लान्ते शरीरचेतसी येषां ते तथाविधाः (ब० ब्री०) कलापचक्रेषु- कलापानां चक्रम् तेषु (ष० त० पु०) निवेशिताननम्- निवेशितमाननं येन सः (ब० ब्री०) समीपवर्तिनम्- समीपे वर्त्तते य असौ तथाविधम् (ष० त० पु०)

हिन्दी शब्दार्थ— हुताग्निकल्पैः= होम की गयी अग्नि के समान गर्म, सवितुः= सूर्य की, गभस्तिभिः= किरणों द्वारा, क्लान्तशरीरचेतसः= जिनके शरीर और बुद्धि शिथिल हो गए हैं, ऐसे, कलापिनः= मयूर, कलापचक्रेषु= अपने पंखों में, निवेशिताननम्= छाया प्राप्त करने के लिए जिसने अपने मुख को छिपा लिया है, ऐसे, समीपवर्तिनम्= सन्निकट में विद्यमान, भोगिनम्= सर्प को , न= नहीं, घ्नन्ति= मारते हैं।

उपस्थापन— इस श्लोक में कवि निबद्ध नायक अपनी प्रियतमा से कहता है कि, ग्रीष्म का इस समय इतना प्रकोप बढ़ गया है कि मयूर के भी स्वभाव में परिवर्तन आ गया है। आग की तरह जलती हुई सूर्य की किरणों से मयूरों का कण्ठ सूख गया है। कड़ी धूप के कारण उनके शरीर और बुद्धि दोनों शिथिल पड़ गए हैं। वे किंकर्त्तव्य विमूढ हो गए हैं। इसीलिए यदि कोई साँप आकर छाया प्राप्त करने के लिए अपना मुँह उनके पंखों में भी घुसा कर बैठ जाता है तो उसे वे मारते नहीं हैं। जैसे उन दोनों में वैर का भाव समाप्त हो गया हो दोनों जैसे एक दूसरे के भक्ष्य-भक्षक न रहकर परस्पर में रक्ष्य-रक्षक हो गए हों।

भावार्थ— हे प्रिये! होम की आग के समान जलती हुई सूर्य की किरणों से

मयूरों के कण्ठ सूख गए हैं। उनके शरीर और मन शिथिल हो गए हैं; अतएव अपने पंख के भीतर मुँह घुसा कर बैठे हुए सर्प को भी वे नहीं मारते हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ— इस श्लोक में (१) उपजातिवृत्त (२) वैदर्भी रीति (३) प्रसाद गुण तथा (४) मध्यम समासवती संघटना कै सद्भाव हैं।

सभद्रमुस्तं परिशुष्ककर्दमं सरः खनन्नायतपोतृमण्डलैः।
रवेर्मयूखैरभितापितो भृशं वराहयूथो विशतीव भूतलम्।। १७।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ- अस्मिन् श्लोके कविनिबद्धो वक्ता नायकः स्वनायिकां वक्ति यत् ग्रीष्मातिशयेन वराहयूथोऽप्यत्यन्तामाकुलीमनुभवति। अयं शुष्ककर्दमयुक्तेषु सरस्सु मुस्ताक्षतिं कर्तुं स्वमुखाग्रभागेन सरः खनन् पातालं प्रविविक्षतीति मन्ये।

अन्वयः— रवेः मयूखैः भृशं अभितापितः वराहयूथः आयतपोतृमण्डलैः सभद्रमुस्तं परिशुष्ककर्दमं सरः खनन् भूतलं विशति इव।

व्याख्या— रवेः= सूर्यस्य, मयूखैः= गभस्तिभिः, भृशम्= अतिगाढम्, अभितापितः= संतापितः, वराहयूथः= वराहाणां= शूकराणां यूथः= समूहः, आयतपोतृमण्डलैः= आयतानि= विस्तृतानि यानि, पोतृणाम्= मुखाग्रभागानाम् 'पोत्रं वस्त्रे मुखाग्रे च सूकंरस्य हलस्य च।' इति हैमः। मण्डलानि=समूहाः तैः, भद्रमुस्तया=गुन्द्रया सहितम्= सभद्रमुस्तम् नागरमोथेति लोके प्रसिद्धा भद्रमुस्ता। 'स्याद्भद्रमुस्तको गुन्द्रा' इत्यमरः। परिशुष्ककर्दमम्= परिशुष्कम्= सर्वतः शुष्कम् कर्दमम्= पङ्को यस्य तथाविधम्, सरः= कासारम् 'कासारः सरसीसरः' इत्यमरः, खनन्= उत्खनन् भूतलम्= पाताललोकम्= विशति इव= प्रवेशं करोति, इव= इति मन्ये।

पुराकालेऽपि भगवान् वराहः अवतीर्य पृथिव्या उद्धारं चिकीर्षुः पाताललोकं प्रविवेश इति स्मर्यते। तथैवायं वराहसमूहोऽपि पल्वलेषु मुस्ताक्षतिं कर्तुम् सरसः अन्त उत्खनन् पाताललोकं यियासुरिवाभातीति उत्प्रेक्षते।

साहित्यिकविशेषताः— (१) श्लोकेऽस्मिन् उपजाति वृत्तम् वर्त्तते। (२) अत्रोत्प्रेक्षा- लङ्कारो वर्त्तते। भवेत् संभावनोत्प्रेक्षा विषये निरूपह्नवे। इत्युत्प्रेक्षा लक्षणम्। (३) अत्र ग्रीष्मर्तौ वराहैः पल्वलेषु क्रियमाणायाः मुस्ताक्षतेः स्वाभाविकं वर्णनमस्ति कृतम्। (४) मध्यमसमासा संघटनास्य श्लोकस्य विद्यते। (५) अस्मिन् श्लोके वैदर्भी रीतिः (६) प्रसादश्च गुणः। (७) सूकर मुखस्यार्थे कोशेषु यद्यपि पोत्र शब्दस्य प्रयोगः समुपलभ्यते, किन्त्वत्रतु तदर्थं पोतृशब्दस्य प्रयोगः कृतो वर्त्तते।

समासः— आयतपोतृमण्डलैः- आयतानि यानि पोतृमण्डलानि तैः (कर्मधारयः) परिशुष्ककर्दमम्= परिशुष्कं कर्दमं यस्य तत् (ब० व्री०)

हिन्दी शब्दार्थ— रवेः= सूर्य के, मयूखैः= किरणों द्वारा, भृशम्= अत्यधिक, अभितापितः= संतप्त किया गया, वराहयूथः= बनैले सूकरों का समूह, आयतपोतृमण्डलैः= अपने चौड़े मुख के द्वारा, सभद्रमुस्तम्= नागरमोथा युक्त, परिशुष्ककर्दमम्= जिसका कीचड़ सूख गया है ऐसे, सरः= सरोवर को, खनन्= खनते हुए, भूतलम्= पाताल में, विशतीव= मानो प्रवेश करना चाह रहा हो।

उपस्थापन— कविनिबद्ध वक्ता नायक अपनी प्रियतमा से कह रहा है कि सूर्य की गर्मी से बनैले सूकरों का समूह अत्यन्त व्याकुल हो गया है। वह अपने चौड़े थूथनों से सूखे हुए सरोवर को मुस्ताक्षित करने के लिए खन रहा है। ये सूखे सरोवर नागरमोथा से भरे हुए हैं। वनैले सूकर उसको खोदकर खाना अत्यन्त पसन्द करते हैं। इसीलिए वे सरोवर को खन रहे हैं। उनके इस कार्य को देखकर ऐसा लगता है कि वे मानों पाताल में प्रवेश करना चाहते हों।

यहाँ पर कवि को वराहावतार की कथा को व्यञ्जित करना अभिप्रेत है। वराहावतार धारण करके श्री भगवान् पृथ्वी का उद्धार करने के लिए और हिरण्याक्ष का विनाश करने के लिए पाताल में प्रवेश कर गये थे। यह कवि के द्वारा उत्प्रेक्षित अर्थ की व्यंजना है।

भावार्थ— हे प्रिये! सूर्य की किरणों से संतप्त वराह समूह अपने चौड़े थूथनों से भद्रमुस्त से परिपूर्ण तथा सूखे कीचड़ वाले सरोवर को खोदते हुए ऐसा लग रहा है, जैसे वह पाताल में प्रवेश कर रहा हो।

साहित्यिक विशेषताएँ— इस श्लोक में (१) उपजाति वृत्त (२) उत्प्रेक्षालंकार (३) प्राकृतिक विभीषिका (४) अल्पसमासवती संघटना तथा (५) प्रसाद गुण के सद्भाव हैं।

विवस्वता तीक्ष्णतरांशुमालिना सपङ्कतोयात्सरसोऽभितापितः।
उत्प्लुत्य भेकस्तृषितस्य भोगिनः फणातपत्रस्य तले निषीदति।। १८।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिन् श्लोके कविनिबद्धो वक्ता नायको वक्ति स्वप्रियतमां यत् ग्रीष्मस्य प्रभावात् सर्वत्र स्वाभाविकी वद्धवैरता विनष्टा सञ्जाता। सर्पो भेकान् खादति इति लोकप्रख्यातो नियमः। भेकसर्पयोः भक्ष्य-भोक्तृनियमः स्वाभाविकः। किन्तु निदाघसंतप्तस्य सर्पस्य फणाया अधस्तात् पङ्कयुक्तात् जलान्निसृत्य भेकः निषीदति। नहि विभेति सः सर्पात्।

अन्वयः— तीक्ष्णतरांशुमालिना विवस्वता अभितापितः भेकः सपङ्कतोयात् सरसः उत्प्लुत्यः तृषितस्य भोगिनः फणातपत्रस्य तले निषीदति।

व्याख्या— तीक्ष्णतरांशुमालिना-अंशव= गभस्तयः, माला= स्रक् यस्याऽसौ अंशुमाली= गभस्तिमाली, तीक्ष्णतरः= अति तीव्रश्चाऽसावंशुमालीतीक्ष्णतरांशुमाली, तेन तिग्मतर गभस्तिमता, विवस्वता= सूर्येण द्वारा, अभितापितः= संतापितः, भेकः= मण्डूकः, सपङ्कतोयात्= पङ्केन सहितम्= कर्दमान्वितम्, तोयम्= जलम् यस्य तत् तस्मात् कर्दममिश्रितजलवतः, सरसः= कासारात्, उत्प्लुत्य= उत्प्लवनं कृत्वा, तृषितस्य= पिपासितस्य, भोगिनः= सर्पस्य फणातपत्रस्य= फटाटोपस्य, तले= अधस्तात्, निषीदति= उपविशति।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके उपजातिवृत्तमास्ते। (२) ग्रीष्मस्यातिप्रचण्डत्वात् पङ्कमयत्वाज्जलस्य मण्डूकः तस्मानिस्सृत्य शैत्यं कामयमानः सर्पफटाया अधस्तात् उपविशति सर्पोऽपि तं न खादतीति आश्चर्यस्य विषयः। (३) अत्र वैदर्भी रीतिः, (४) प्रसादाख्यो गुणः, (५) असमासा रचना च विद्यते।

समासः— तीक्ष्णतरांशुमालिना- तीक्ष्णतराः अंशवः एव माला यस्याऽसौ तीक्ष्णतरांशुमाली, तेन (ब० ब्री०) फणातपत्रस्य फण एव आतपत्रं यस्याऽसौ तस्य (ब० ब्री०)

हिन्दी शब्दार्थ— तीक्ष्णतरांशुमालिना= तीव्र किरणों की माला धारण करने वाले, विवस्वता= सूर्य के द्वारा, अभितापितः= बहुत अधिक संतप्त किया गया, भेकः= मेढक, सपङ्कतोयात्= कीचड़ मिश्रित जल से, उत्प्लुत्य= उछलकर, तृषितस्य= प्यासे हुए, भोगिनः= सर्प के, फणतपत्रस्य= फणाके, तले= नीचे, निषीदति= बैठता है।

उपस्थापन— इस श्लोक में नायक अपनी प्रियतमा से कहता है कि इस प्रचण्ड गर्मी के कारण संतप्त मेढक भी कीचड़मिश्रित जल से बाहर निकलकर, फण काढ़कर बैठे हुए सर्प की फणा की छाया में बैठा है, किन्तु सर्प उसे इसलिए नहीं खाता है कि वह प्यासा हुआ है। उसे पानी की चाह है भक्ष्य की नहीं। इस गर्मी की भीषणता ने सर्प और मेढक के परस्पर भक्ष्य-भक्षक भाव को मिटा-सा दिया है, और वे परस्पर में रक्ष्य-रक्षक के तरह प्रतीत होने लग गए हैं। उनका परस्पर का बैर समाप्त हो गया है, ऐसा मालूम पड़ रहा है।

भावार्थ— प्रिये! तीक्ष्ण किरणों वाले सूर्य से संततप्त मेढक पंक भरे जल से निकलकर फण काढे हुए तथा प्यासे सर्प की फणा की छाया में बैठता है।

साहित्यिक विशेषताएँ— इस श्लोक में (१) उपजातिवृत्त (२) वैदर्भी रीति (३) अल्पसमासवती संघटना तथा (४) प्रसाद गुण के सद्भाव हैं।

समुद्धृताशेषमृणालजालकं विपन्नमीनं द्रुतभीतसारसम्।
परस्परोत्पीडनसंहतैर्गजैः कृतं सरः सान्द्रविमर्दकर्दमम्।। १६।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके कविनिवद्धो वक्ता नायकः स्वप्रियतमां ग्रीष्मकाले, गजसमूहेन सरसः क्रियमाणां दुर्दशां दर्शयन् वक्ति यत् अत्र सरसि परस्परं पीडयन्तैः गजैः सरसः सम्पूर्णमृणालदण्डमुत्खातितम्,एतेषामुत्पातेन जलस्था मीनाः विपन्नाः संजाताः, सरसि विद्यमानाः निखिला सारसपंक्तिश्चोत्पातिता वर्त्तते। इत्थं गजानामुपद्रवेण कासारस्य सम्पूर्णा श्रीरेव विनष्टप्राया वर्त्तते। सम्पूर्णः कासार एव कर्दममयः संजातः।

अन्वयः— परस्परोत्पीडनसंहतैः गजैः समुद्धृताशेषमृणालजालकं विपन्नमीनं द्रुतभीतसारसं सान्द्रविमर्दकर्दमम् सरः कृतम्।

व्याख्या— परस्परोत्पीडनसंहतैः-परस्रम्= मिथः, उत्पीडने= समुत्पीडने संहताः= व्यापृतां ये ते तैः, गजैः= हस्तिभिः, समुद्धृताशेषमृणालजालकम्= समुद्धृतम्= सम्यक्तया उत्पाटितम्, अशेषम्= सम्पूर्णम्, मृणालजालंकम्= कमलनालसमूहो यस्याऽसौ तथाविधम्, विपन्नमीनम्= विपन्नाः= विनष्टाः 'विपन्नो भुजगे नष्टे' इति हैमः। मीनाः= मत्स्याः यस्य तथाभूतम्, द्रुतभीतसारसम्= द्रुताः= उत्पतिताः पलायितेत्यर्थः, भीताः= भयग्रस्ताश्च, सारसाः= पुष्कराह्वाः 'पुष्कराह्वस्तु सारसः'

इत्यमरः यस्यासौ तथाविधम्, सान्द्रविमर्दकर्दमम्= सान्द्रः= अतीव सघनः, विमर्देन= आलोडनेन, कर्दमः= पङ्को यस्यासौ तथाविधम्। सरः= कासारः, कृतम्= विहितम्।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिन् श्लोके हस्तिभिः क्रियमाणा कासारस्य दुर्दशा वर्णिता वर्त्तते। (२) अत्र उपजाति वृत्तम्। (३) मध्यमसमासाऽत्र संघटना कृता वर्त्तते। (४) वैदर्भी रीतिः (५) प्रसादश्च गुणः।

समासः— परस्परोत्पीडनसंहतैः= परस्परम् उत्पीडने संहता ये ते तथाभूतैः (ब० ब्री०) समुद्धृताशेषमृणालजालकम्= समुद्धृतम् अशेषम् मृणालजालं यस्याऽसौ तथाविधम् (ब० ब्री०) द्रुतभीतसारसम्= द्रुताः भीताश्च सारसा यस्याऽसौ तथाविधम् (ब० ब्री०) विपन्नमीनम्= विपन्नाः मीना यस्याऽसौ तथाभूतम् (ब० ब्री०) सान्द्रविमर्दकर्दमम्= सान्द्रः विमर्देन कर्दमो यस्याऽसौ तत् (ब० ब्री०)

हिन्दी शब्दार्थ— परस्परोत्पीडनसंहतैः= परस्पर में एक दूसरे को उत्पीड़ित करने में लगे हुए, गजैः= हाथियों ने सरः= सरोवर के, समुद्धृताशेषमृणालजालकम्= सम्पूर्ण कमलनाल को उखाड़ लिया है, विपन्नमीनम्= उसके मछलियों को विपद्ग्रस्त बना दिया है। द्रुतभीतसारसम्= उसके सारस पक्षी डर कर भाग गए हैं, सान्द्रविमर्दकर्दमं कृतम्= और उसके कीचड़ को मथकर गाढ़ा कर दिया है।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिवद्ध वक्ता अपनी प्रियतमा को गर्मी के दिनों में हाथियों द्वारा सरोवर की की जाने वाली दुर्दशा का वर्णन करते हुए कहता है कि इस समय, हाथी सरोवर में आकर एक दूसरे को उत्पीड़ित कर रहे हैं। उन सबों ने सरोवर के सम्पूर्ण कमल नाल को उखाड़ दिया है। हाथियों के उत्पात के कारण सरोवर की मछिलयाँ विपद्ग्रस्त हो गयी हैं। सरोवर में निवास करने वाले सारस पक्षी हाथियों के उत्पात को देखकर डरकर भाग गए हैं। इन हाथियों ने कीचड़ भरे सरोवर को इतना मथा है कि कीचड़ भी गाढ़ा हो गया है। इस तरह हाथियों ने सरोवर की सम्पूर्ण शोभा को ही विनष्ट कर दिया है। अब उसमें न तो कमल रह गए हैं और न तो मछली। उसके सारस पक्षी भाग चुके हैं। अब तो उसमें केवल गाढ़ा कीचड़ मात्र अवशिष्ट है।

भावार्थ— हे प्रिये! सरोवर में आकर हाथियों का समूह एक दूसरे को उत्पीड़ित कर रहा है। सरोवर के कमल को उखाड़ फेंका है। मछलियाँ मर रही हैं, सारस पक्षी डरकर भाग गए हैं और उन सबों ने कीचड़ को मथ कर गाढ़ा कर दिया है।

रविप्रभोद्भिन्नशिरोमणिप्रभो विलोलजिह्वाद्वयलीढमारुतः।
विषाग्निसूर्यातपतापितः फणी न हन्ति मण्डूककुलं तृषाकुलः।। २०।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके कविनिवद्धो वक्ता नायकः स्वप्रियतमां वक्ति यत् साम्प्रतम् निदाघोष्मणा पीडितः पिपासाकुलः सर्प अतीव क्लान्तो विद्यते। तस्य शिरस्थो मणिः सूर्यकिरणानां सम्पर्केण प्रदीप्ततरो भवति। सः स्वलोलया जिह्वया पवनस्य पानं करोति। सः आतपस्य संतापेन स्वविषस्योष्मणा च व्याकुलः संजातः सन् भेकान् नहि हन्ति।

अन्वयः— रविप्रभोद्भिन्नशिरोमणिप्रभः विलोलजिह्वाद्वयलीढमारुतः, विषाग्निसूर्यातपतापितः तृषाकुलः फणी मण्डूककुलं न हन्ति।

व्याख्या— रविप्रभोद्भिन्नशिरोमणिप्रभः-रवेः= सूर्यस्य, प्रभया= कान्त्या उद्भिन्नः= उद्गतः, शिरोमणेः= सर्पस्य मूर्ध्नि विद्यमानस्य नागमणेः प्रभा= कान्तिः यस्याऽसौ तथाभूतः, विलोलजिह्वाद्वयलीढमारुतः= विलोलम् अत्यन्तं चञ्चलं यत् जिह्वायाः= रसनायाः द्वयम्= युगलम्, तेन आलीढः= आस्वादितः= मारुतः= वायुः येनाऽसौ तथाभूतः, विषाग्निसूर्यातपतापितः= विषस्य= गरलस्य 'गरलं विषम्' इत्यमरः। अग्निः संतापः, तेन, सूर्यस्य= भास्करस्य च, आतपः= द्योतः 'प्रकाशो द्योत आतपः' इत्यमरः तेन च तापितः= संतापितः, तृषाकुलः, तृषा= पिपासया 'उदन्या तु पिपासा तृट्' इत्यमरः। आकुलः= व्याकुलः, फणी= सर्पः मण्डूककुलम्= मण्डूकानाम्= भेकानाम्, कुलम्= समूहम्, न= नहि, हन्ति।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके उपजातिवृत्तम्। तल्लक्षणञ्चोक्तम् प्रथम श्लोकस्य व्याख्यायाम्। (२) अत्र मध्यमसमासा संघटना विद्यते। (३) वैदर्भी रीतिः। (४) मणिसम्पन्नस्याहेः महाविषस्यापि निदाघोष्मणातिक्लान्तता वर्णिता वर्त्तते। (५) अत्रोजो गुणश्च।

समासः— रविप्रभोद्भिन्नशिरोमणिप्रभः= रवेः प्रभा= रविप्रभा (ष० त० पु०) रविप्रभया उद्भिन्नः= रविप्रभोद्भिन्नः शिरोमणेः प्रभा यस्याऽसौ तथाविधः (ब० ब्री०) विलोलजिह्वाद्वयलीढमारुतः= जिह्वायाः द्वयम्= जिह्वाद्वयम् (ष० त० पु०) विलोलं चेदं जिह्वाद्वयम्= विलोलजिह्वाद्वयम् (कर्मधारयः) विलोलजिह्वाद्वयेन लीढः मारुतो येनाऽसौ तथाविधः (ब० ब्री०) विषाग्निसूर्यातपतापिताः= विषस्याग्निः विषाग्निः (ष० त० पु०) सूर्यस्यातपः= सूर्यातपः (ष० त० पु०) विषाग्निश्च सूर्यातपश्च विषाग्निसूर्यातपौ (समाहारद्वन्द्वः) विषाग्निसूर्यातपाभ्यां तापितो य असौ (ब० ब्री०) तृषाकुलः= तृषा आकुलः= तृषाकुलः (तृ० त० पु०) मण्डूककुलम्= मण्डूकानां कुलम् (ष० त० पु०)

हिन्दीशब्दार्थ— रविप्रभोद्भिन्नशिरोमणिप्रभः= सूर्य की किरणों के सम्पर्क से जिसके शिर की मणियाँ चमक उठती हैं। विलोलजिह्वाद्वयलीढमारुतः= जो अपनी चञ्चल दोनों जीभों से वायु पी रहा है। विषाग्निसूर्यातपतापितः= जो अपने विष की आग तथा सूर्य की किरणों से सुतप्त है, तृषाकुलः= प्यास से व्याकुल, फणी= सर्प, मण्डूककुलम्= मेढक समूह को, न हन्ति= नहीं मारता है।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिवद्ध वक्ता नायक अपनी नायिका से कहता है कि इस ग्रीष्म ऋतु में मणिहारे सर्पों की बड़ी ही दुर्दशा है। एक ओर तो वह अपने विष की गर्मी से संतप्त रहता है और दूसरी ओर वह सूर्य की गर्म किरणों से संतप्त है। इस तरह प्यास से व्याकुल वह अपनी दोनों चंचल जीभों से वायु पी रहा है। जब सूर्य की किरणें उसके शिर पर पड़ती हैं तो उसकी शिर की मणियाँ चमक उठती हैं। वह उस समय अपने भक्ष्यभूत मेढकों को नहीं मारता है।

भावार्थ— हे प्रिये! सूर्य की किरणों से संक्रान्त होने पर जिसकी शिरोमणि

चमक उठती है, अपने विष की आग तथा सूर्य की किरणों से संतप्त प्यासा सर्प अपनी चंचल दोनों जीभों से वायु पीने का काम किया करता है, वह मेढकों को नहीं मारता।

सफेनलालावृतवक्त्रसम्पुटं विनिःसृतालोहितजिह्ममुन्मुखम्।
तृषाकुलं निःसृतमद्रिगह्वरादवेक्षमाणं महिषीकुलं जलम्।। २१।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके कविनिवद्धो वक्ता नायकः स्वप्रियतमां वक्ति यत् ग्रीष्मोष्मणा व्याकुलं, फेनान्वितमुखं मुखान्निस्सृतचञ्चललोहितजिह्मम् पिपासाकुलं महिषीकुलं पर्वतकन्दरान्निस्सृत्य जलाभिमुखं याति साम्प्रतम्।

अन्वयः— सफेनलालावृतलावृतवक्त्रसम्पुटं विनिःसृतालोहितजिह्मम् तृषाकुलं उन्मुखं महिषीकुलं जलं अवेक्षमाणं अद्रिगह्वरात् निःसृतम्।

व्याख्या— सफेनलालावृतवक्त्रसम्पुटम्- फेनेन= डिण्डीरेण लालया= सृकिण्या च ताभ्यां सहितं= सफेनलालाभ्याम् आवृतम्= परिगतम् वक्त्रस्य= मुखस्य सम्पुटम् तथाविधम्। विनिःसृतालोहितजिह्वम्= विनिःसृता= बहिर्निर्गता लोहिता= रक्तवर्णा, जिह्वा= रसना यस्य तत्= विनिः सृतालोहितजिह्वम्, उन्मुखम्= उत्= उपरिकृतं मुखम्= वदनं यस्य तत्= उन्मुखम्। तृषाकुलम्= तृषा= पिपासया, आकुलम्= व्याकुलम् यत् तत् महिषीकुलम्= महिषीणां= सैरभीनाम्, कुलम्= समूहः जलम्= पानीयम् 'पानीयं जीवनं जलमि' त्यमरः। अवेक्षमाणम्= निरीक्षमाणम् अद्रिगह्वरात्= आद्रेः= पर्वतस्य, गह्वरात्= कन्दरात्, निस्सृतम्= बहिरागतम् वर्त्तते साम्प्रतम्। प्रथमश्लोकादारभ्य इमं श्लोकं यावत् सर्वे श्लोकाः उपजातिवृत्ते निवद्धाः सन्ति।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके उपजातिवृत्तम्।
उपेन्द्रवज्रापदसंगतानि यदीन्द्रवज्राचरणानि च स्युः।
तदोपजातिः कथिता कवीन्द्रैः भेदाः भवन्तीह चतुर्दशास्याः। इति तस्य लक्षणम्।
(२) अस्मिन् श्लोके ग्रीष्मोष्मणा पिपासाकुलस्य महिषीकुलस्य स्वाभाविकं वर्णनम्। (३) मध्यमसमासा संघटना वर्त्तते ऽस्मिन् श्लोके।

समासः— सफेनलालावृतवक्त्रसम्पुटम्= लोलञ्च, आग्रतञ्च यत् तत् सफेनलोलायतम् (द्वन्द्वगर्भो ब० ब्री०) अथवा- सफेनं किनञ्च लाला च ताभ्यां सहितम् आवृतं वक्त्रस्य सम्पुटं यस्य तत् (ब० ब्री०) विनिस्सृतालोहितजिह्वम्= विनिःसृता आलोहिता जिह्वा यस्य तत् (ब० ब्री०) तृषाकुलम्= तृषा आकुलं यत् तत् (ब० ब्री०) महिषीकुलम्= महिषीणां कुलम् (ष० त० पु०)।

हिन्दी शब्दार्थ— सफेनलालावृतवक्त्रसम्पुटम्= जिसका मुख फेन तथा लार से युक्त है। विनिस्सृतालोहितजिह्वम्= जिसकी लाल-लाल जीभ मुख से बाहर निकल आयी है, उन्मुखम्= जो अपना मुँह ऊपर की ओर उठाए हुए है, तृषाकुलम्= प्यास से व्याकुल, महिषीकुलम्= भैसों का समूह, जलम्= जल को अवेक्षमाणम्= देखते हुए, अद्रिगह्वरात्= पर्वतों की कन्दरा से, निस्सृतम्= निकल पड़ा है।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिवद्ध वक्ता अपनी प्रेयसी से गर्मी के दिनों में प्यास से व्याकुल भैंस समूह का वर्णन कर रहा है। वह कहता है कि

जुगाली करने के कारण भैसों के मुख से फेन निकल आया है, उनका मुख प्यास के अधिक लगने से अत्यन्त चञ्चल हो गया है। उन वनैली भैसों का मुख चौड़ा है। उनकी चञ्चल और लाल-लाल जीभ मुँह से बाहर निकल रही है। वे जल की खोज में पर्वत की कन्दरा से निकल रही हैं। वे जल खोज रही हैं ताकि प्यास मिटायी जाय।

भावार्थ— हे प्रिये! फेन तथा लार से भरे मुख वाली; प्यास से व्याकुल अपना मुँह ऊपर की ओर उठाए हुए भैंसें पर्वत की कन्दरा से जल की खोज में निकल पड़ी हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ— इस श्लोक में (१) उपजातिवृत्त (२) मध्यमसमास वाली संघटना (३) पाञ्चाली रीति तथा (४) ओज गुण का सद्भाव है।

पटुतरदवदाहोच्छुष्कसस्यप्ररोहाः
परुषपवनवेगोत्क्षिप्तसंशुष्कपर्णाः।
दिनकरपरितापक्षीणतोयाः समन्ता
द्विदधति भयमुच्चैर्वीक्ष्यमाणा वनान्ताः।। २२।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके कविनिवद्धो वक्ता नायको वक्ति स्वप्रियतमां यत् साम्प्रतंम वनेषु दावाग्निः प्रसृमरो विद्यते। अत्यधिकवेगवता वायुना शुष्काणि पत्राणि उत्क्षिप्तानि संजातानि सन्ति। सूर्यस्य अत्युष्णानि किरणानि सर्वत्र पत्राणि शोषयन्ति। इत्थं भूतानि वनानि वीक्ष्य नीरसानि, निष्पत्राणि भयभीतं भवति चेतः।

अन्वयः— पटुतरदवदाहोच्छुष्कसस्यप्ररोहाः परुषपवनवेगोत्क्षिप्तसंशुष्कपर्णः दिनकरपरितापक्षीणतोयाः वनान्ताः वीक्ष्यमाणाः उच्चैः भयम् विदधति।

व्याख्या— अतिशयेन पटुः पटुतरः, सामान्यापेक्षयाधिकवैशिष्ट्ययुक्तो योहि दवदाहः= दावाग्निः, दवम् वनं दहतीति दवदाहः= वनाग्निरित्यर्थः तेन शुष्काः= नीरसतां गताः, सस्यानाम्= घासादिकानां प्ररोहः= समृद्धिः येषां ते तथाभूताः, परुषपवनवेगोत्क्षिप्तसंशुष्कपर्णाः= परुषस्य= रूक्षस्पर्शवतः, पवनस्य= वायोः वेगेन= रयेण, उत्क्षिप्तानि= दूरीकृतानि संशुष्कानि= नीरसानि, पर्णानि= पत्त्राणि येषां ते तथाभूताः, वनान्ताः= वनस्य= काननस्य, अन्ताः पर्यन्तभागाः, वीक्ष्यमाणाः= अवलो- क्यमानाः उच्चैः= अत्यधिंकम भयम= भीतिम्, विदधति= उत्पादयन्ति।

साहित्यिकविशेषताः— (१) ग्रीष्मर्तौ वनानां स्वाभाविकं वर्णनमत्र कृतमस्ति। (२) अस्मिन् श्लोके मालिनीवृत्तम्। 'ननमयययुतेयं मालिनी कीर्तनीया' इति हि मालिनी वृत्तस्य लक्षणम्। (३) अत्र पाञ्चाली रीतिः, (४) दीर्घसमासा संघटना च विद्यते।

समासः— पटुतरदवदाहोच्छुष्कसस्यप्ररोहाः- पटुतरश्चासौ दवदाहः= पटुतरद- वदाहः (कर्मधारयः) तेन उच्छुष्कः सस्यानां प्ररोहो येषां ते तथाभूताः (ब० ब्री०) परुषपव- नवेगोत्क्षिप्तसंशुष्कपर्णाः= परुषश्चासौ पवनः= परुषपवनः (कर्मधारयः) परुषपव- नस्यवेगः= परुषपवनवेगः। (ष० त० पु०) तेन उत्क्षिप्तानि संशुष्कानि पर्णानियेषांतेतथाभूताः।(ब०ब्री०)दिनकरपरितापक्षीणतोयाः= दिनकरस्यपरितापः=

दिनकर-परितापः (ष०त०पु०) दिनकरपरितापेन क्षीणानि तोयानि येषां ते तथाभूताः (ब०व्री०)

हिन्दी शब्दार्थ— पटुतरदवदाहोच्छुष्कसस्यप्ररोहाः- प्रबलदावाग्नि के कारण जिनके घास सुख चुके हैं, परुषपवनवेगोत्क्षिप्तसंशुष्कपर्णाः= रुक्षवायु के वेग के कारण जिनके सूखे पंत्ते उड़ चुके हैं, दिनकरपरितापक्षीणतोयाः= सूर्य की गर्मी के कारण जिनके जल सूख गए हैं ऐसे वनान्ताः= वनों के भीतरी भाग, वीक्ष्यमाणाः= देखने में, उच्चैः= अत्यधिक, भयम्= भय, विदधति= उत्पन्न करते हैं।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिवद्ध नायक अपने प्रियतमा के समक्ष वनान्त की भयंकरता का वर्णन कर रहा है। वह बतला रहा है कि ग्रीष्म ऋतु में वनों में वनाग्नि लग चुकी है जिसके कारण उसके घास-फूस जल गये हैं। हवा तीव्र गति से चल रही है, उसका स्पर्श रुक्ष है। इसके कारण वृक्षों के सूखे पत्ते भी उङ चुके हैं। सूर्य की तीक्ष्ण किरणों के कारण वन में विद्यमान जल सूख गया है। इस तरह के वनान्त देखने में बड़े ही डरावने लग रहे हैं।

भावार्थ— हे प्रिये! इस ग्रीष्म ऋतु में वनों में लगी दावाग्नि के कारण वनों की घास जल गयी है, तेज चलने वाली रुक्ष वायु के स्पर्श के कारण वृक्षों के सूखे पत्ते उड़ चुके हैं, सूर्य की तीक्ष्ण किरणों से वनों के प्रान्तभाग का जल सूख चुका है, इस तरह के वनों को देखने में बहुत डर लगता है।। २२।।

साहित्यिक विशेषता— (१) इस श्लोक में कवि ने ग्रीष्म ऋतु में वन की स्वाभाविकता वर्णन किया है। (२) इस श्लोक में मालिनी छन्द है। (३) इस श्लोक में समास बड़े-बड़े हैं। (३) श्लोक में ओज गुण तथा पाञ्चाली रीति है।

श्वसिति विहगवर्गः शीर्णपर्णद्रुमस्थः
कपिकुलमुपयाति क्लान्तमद्रेर्निकुञ्जम्।
भ्रमति गवययूथः सर्वतस्तोयमिच्छञ्
छरभकुलमजिह्मं प्रोद्धरत्यम्बुकूपात्।।२३।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके महाकविः कालिदासः ग्रीष्मर्तोः स्वाभाविकं वर्णनं प्रस्तौति। कविनिवद्धो नायकः स्वप्रियतमां वक्ति यत् औष्ण्यस्याधिक्येन संतप्तो विहगवर्ग शाखोपर्युपविशन् श्वसिति। कपयो घर्मविक्लान्ताः अद्रिनिकुञ्जं प्रविशति शैत्यमवाप्तुम्। जलमिच्छन् गवयसमूहः इतस्ततो भ्रमति शरभसमूहश्च जलं कूपात् निष्कासयति।

अन्वयः— शीर्णपर्णद्रुमस्थः विहगवर्गः, निःश्वसिति। क्लान्तम्, कपिकुलम्, अद्रेः, निकुञ्जम्, उपयाति। गवययूथः, तोयम्, इच्छन्, सर्वतः, भ्रमति। अजिह्मम्, शरभकुलम्, कूपात्, अम्बु, प्रोद्धरति।

व्याख्या— शीर्णपर्णद्रुमस्थः= शीर्णानि= पतितानि शुष्कत्वात्, पर्णानि= पत्राणि, यस्याऽयासौ तथाविधः द्रुमः= वृक्षः, तत्र तिष्ठति इति शीर्णपर्णद्रुमस्थः, निष्पत्र-वृक्षशाखोपर्युपविष्ट इति भावः, विहगवर्गः विहगानाम्= पक्षिणां वर्गः= समूहः,

श्वसिति= निःश्वासं गृह्णाति क्लान्तम्= पीडितम्, ग्रीष्मोष्मणा, कपिकुलम्= कपीनाम्= वानराणाम्, कुलम्= समूहः, अद्रेः= पर्वतस्य, निकुञ्जम्= कुञ्जस्थानम्, उपयाति= प्रविशति शैत्यमधिगन्तुम्। गवययूथः= गवयानाम्= गोसदृशानां पशुविशेषाणां यूथः= समूहः, तोयम्= जलम्, इच्छन्= वाञ्छन्, सर्वतः= सर्वत्र भ्रमति= भ्रमणं करोति। अजिह्मम्= सरलस्वभावयुक्तं शरभकुलम्= शरभनामकस्य पशुविशेषस्य, कुलम्= समूहः, कूपात्= अन्धोः, अम्बु= जलम्, प्रोद्धरति= निष्कासयति।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके मालिनी वृत्तम्। 'ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोके' इति हि मालिनीवृत्तस्य लक्षणम्। (२) ग्रीष्मर्तौ वनपक्षिणां पशूनां च स्वाभाविकं वृत्तम्। (३) वैदर्भी रीतिः (४) प्रसादाख्यो गुणः, (५) अल्पसमासा वृतिश्च।

समासः— शीर्णपर्णद्रुमस्थः- शीर्णानि, पर्णानि यस्याऽसौ तथाविधो द्रुमः= शीर्णपर्णद्रुमः (ब० ब्री०) शीर्णपर्णे द्रुमे स्थितः= शीर्णपर्णद्रुमस्थः (स० त०), विहगवर्गः- विहगानां वर्गः। (ष० त०) कपिकुलम्= कपीनां कुलम् (ष० त०) गवययूथः- गवयानां यूथः (ष० त०) शरभकुलम्= शरभाणां कुलम्। (ष० त०)।

हिन्दी शब्दार्थ— शीर्णपर्णद्रुमस्थः= पत्तों से रहित वृक्षपर बैठा हुआ, विहगवर्गः= पक्षियों का समूह, श्वसिति= लम्बी श्वाँस ले रहा है। क्लान्तम्= गर्मी से व्याकुल, कपिकुलम्= वानरों का समूह, अद्रेः= पर्वत की, निकुञ्जम्= निकुञ्ज में, उपयाति= प्रवेश कर रहा है। गवययूथः= नीलगायों का समूह, तोयमिच्छन्= जल प्राप्त करने की इच्छा से, सर्वतः= चारों ओर, भ्रमति= घूम रहा है। अजिह्मम्= सीधा-सादा, शरभकुलम्= शरभनामक पशुओं का समूह, कूपात्= कुएँ से, अम्बु= जल, प्रोद्धरति= खींच रहा है।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिबद्ध नायक अपनी नायिका के समक्ष, गर्मी के दिनों में वनैले पशु-पक्षियों की दयनीय दशा का वर्णन करते हुए बतला रहा है कि गर्मी के कारण जिसके पत्ते सूखकर गिर गए हैं, ऐसे वृक्ष की डाली पर बैठा हुआ पक्षी, लम्बी श्वाँस ले रहा है। गर्मी से घबराकर बानरों का समूह पर्वत के निकुञ्जों में ठंढी पाने की इच्छा से घुस रहा है। प्यास से व्याकुल नीलगायों का समूह पानी की खोज में चारों ओर घूम रहा है। सीधा-सादा शरभ नामक पशुओं का समूह कुएँ से पानी निकाल रहा है।

भावार्थ— प्रिये! निष्पत्र वृक्ष की शाखा पर बैठा हुआ पक्षी वर्ग हाँफ रहा है, वानरों का समूह पर्वत निकुञ्जों में प्रवेश कर रहा है, नीलगाएँ पानी की खोज में चारों ओर घूम रही हैं और शरभ समूह कुएँ से पानी निकाल रहा है।

विशेष— (१) इस श्लोक में मालिनी नामक छन्द है।

मालिनी छन्द के प्रत्येक पाद में क्रमशः दो नगण(।।।) एक मगण (ऽऽऽ) और दो यगण (।ऽऽ) होते हैं। इसके प्रत्येक पाद में पन्द्रह वर्ण होते हैं। इस छन्द का लक्षण है 'ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोके।' (२) इस श्लोक में अल्पसमासावृत्ति है। (३) प्रसाद नामक गुण है। (४) और वैदर्भी रीति है।

विकचनवकुसुम्भस्वच्छसिन्दूरभासा
प्रबलपवनवेगोद्भूतवेगेन तूर्णम्।
तटविटपलताग्रालिङ्गनव्याकुलेन.
दिशि दिशि परिदग्धा भूमयः पावकेन।। २४।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके कविनिवद्धो नायकः स्वप्रियतमायाः समक्षम् ग्रीष्मर्तौ वने प्रदीप्तस्याग्नेः भीषणतायाः वर्णनं कुर्वन् वक्ति यत् दावाग्निशिखा रक्त- वर्णा वायोः साहाय्यमवाप्याति उद्दीप्ता भवति। सा पुष्पितवनवृक्षशिखां चुम्बितुमिव अत्युन्नता भवतीति प्रतीयते। तेन सर्वत्र धरित्री वनप्रान्तस्य भवति परिदग्धा।

अन्वयः— विकचनवकुसुम्भस्वच्छसिन्दूरभासा प्रवलपवनवेगोद्भूतवेगेन तूर्णां तटविटपलताग्रालिङ्गनव्याकुलेन पावकेन दिशि-दिशि भूमयः परिदग्धाः।

व्याख्या— विकचनवकुसुम्भस्वच्छसिन्दूरभासा= विकचः= विकसितः, यः नवः= नवीनः कुसुम्भः= महारजनम् तद्वत्, स्वच्छम्= निर्मलम्, यत् सिन्दूरम्= नागसम्भवम्, तस्य या-भाः= कान्तिः, तामिव भाः= दीप्तिर्यस्याऽसौ तथाविधः तेन= विकचनवकुसुम्भस्वच्छसिन्दूरभासा, प्रबलपवनवेगोद्भूतवेगेन= प्रबलः= अतीववेगसम्पन्नो, यो हि पवनः= वायुः, तस्य वेगेन= रयेण, उद्भूतः= उत्पन्नः, वेगो यस्याऽसौ तथाविधेन, तटविटपलताग्रालिङ्गनव्याकुलेन= तटस्य= प्रान्तभागस्य, याः लताः बल्लयः, तासामग्रः= अग्रभागः शिखेति यावत् तस्य आलिङ्गने= स्पर्शकरणे, व्याकुलः= व्यग्रः य असौ तथाविधस्तेन, पावकेन= अग्निना, तूर्णम्= शीघ्रम्, दिशि दिशि= सर्वासु दिक्षु, भूमयः= भुवः, परिदग्धाः= सर्वतो दग्धा इव सञ्जाता इति मन्ये।

साहित्यिक विशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके मालिनी वृत्तम्। 'ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोके' इति हि मालिनी लक्षणम्। (२) अत्रोत्प्रेक्षालङ्कारः, वायुवेगादुच्छिख अग्निः लतानामग्रभागं स्प्रष्टुं कामयते इवेतिं उत्प्रेक्षणात्। 'भवेत् संभावनोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य परात्मना।' इति ह्युत्प्रेक्षालक्षणम्। (३) उपमालंकारश्च (४) अत्र दीर्घसमासा वृत्तिः। (५) ओजोगुणः, (६) पाञ्चाली रीतिश्च।

समासः— विकचनवकुसुम्भस्वच्छसिन्दूरभासा- नवश्चासौ कुसुम्भः= नवकुसुम्भः (कर्मधारयः) विकचश्चासौ नवकुसुम्भः= विकचनवकुसुम्भः। (कर्मधारयः) विकचनवकुसुम्भ इव स्वच्छम्= विकचनकुसुम्भस्वच्छम् (उपमितःसमासः) विकचनवकुसुम्भस्वच्छस्य सिन्दूरस्य भा इव भाः यस्याऽसौ तथा विधस्तेन= विकचनकुसुम्भस्वच्छसिन्दूरभासा। प्रबलपवनवेगोद्भूतवेगेन= प्रबलश्चासौ पवनः= प्रबलपवनः (कर्मधारयः) प्रबलपवनस्य वेगः= प्रबलपवनवेगः (ष० त०) तेन उद्भूतो वेगो यस्याऽसौ तथाविधस्तेन (ब० ब्री०) तटविटपलताग्रालिङ्गनव्याकुलेन= तटस्य विटपाः= तटविटपाः (ष० त०) तेषां लताः= तटविटपलताः (ष० त०) तासामग्रम्= तटविटपलताग्रम् (ष० त०) तस्य आलिङ्गनम्= तटविटपलताग्रालिङ्गनम् (ष० त०) तस्मै व्याकुलो य असौ तेन= तटविटपलताग्रालिङ्गनव्याकुलेन (ब० ब्री०)।

हिन्दी शब्दार्थ— विकचनकुसुम्भस्वच्छसिन्दूरभासा= नवीन विकसित कुसुम्भ के समान स्वच्छ सिन्दूर के समान कान्ति वाले, प्रबलपवनवेगोद्दीप्तवेगेन= तेज हवा के वेग से जिसका वेग बढ़ गया है, तथा तटविटपलताग्रालिङ्गनव्याकुलेन= तट के वृक्षों की लताओं के अग्रभाग को चूमने के लिए मानो व्याकुल, पावकेन= अग्नि के द्वारा, दिशि-दिशि= प्रत्येक दिशाओं में, भूमयः= भूमि, परिदग्धाः= जला सी दी गयी है।

उपस्थापन— इस श्लोक में वन में लगी हुई आग की विकरालता तथा उसके द्वारा की जाने वाली विनाशलीला का वर्णन किया गया है। कविनिवद्ध वक्ता नायक अपनी प्रियतमा से कह रहा है कि, वन में लगी हुई आग की लपटें नवीन विकसित कुसुम्भ पुष्प के समान बिल्कुल लाल तथा सिन्दूर के समान लाल-लाल दिख रही है। हवा तेज चल रही है। ऊँची-ऊँची उठने वाली लपटें ऐसी लग रही हैं जैसे वृक्षों के ऊपर चढ़ी हुई लताओं के अग्रभाग को वे चूम लेना चाह रही हों। इन आगों की लपटों से वन की भूमियाँ झुलस सी गयी हैं।

भावार्थ— हे प्रिये! नवीन विकसित कुसुम्भ के समान स्वच्छ सिन्दूर के समान कान्ति वाली, तेज वायु के झोकों से उदीर्ण वेग वाली तथा तट के वृक्षों की लताओं को चूम लेने के लिए मानों व्याकुल; वन की आग ने भूमि की सारी दिशाओं को मानो झुलसा दिया है।। २४।।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में मालिनी छन्द है। 'ननमयययुतेयं मालिनीभोगिलोके' यह मालिनी छन्द का लक्षण है। (२) इस श्लोक में दीर्घ समासों वाली वृत्ति है। (३) ओज नामक गुण तथा (४) पाञ्चाली रीति है। (५) उत्प्रेक्षा एवं उपमालंकार हैं।

ज्वलति पवनवृद्धः पर्वतानां दरीषु
स्फुटति पटुनिनादैः शुष्कवंशस्थलीषु।
प्रसरति तृणमध्ये लब्धवृद्धिः क्षणेन
ग्लपयति मृगवर्गं प्रान्तलग्नो दवाग्निः।। २५।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके कविनिवद्धो वक्ता नायकः स्वप्रियतमायाः सविधे ग्रीष्मर्तोः समृद्धस्य दवाग्नेः विनाशलीलायाः, तस्य सर्वजीवसन्तापकत्वं सर्वत्र प्रसृमरत्वं च वर्णयति।

अन्वयः— पवनवृद्धः दवाग्निः-पर्वतानां दरीषु ज्वलति शुष्कवंशस्थलीषु पटुनिनादैः स्फुटति। क्षणेन लब्धवृद्धिः तृणमध्ये प्रसरति। प्रान्तलग्नः मृगवर्गं ग्लपयति।

व्याख्या— पवनवृद्धः= पवनेन= वायुना, वृद्धः= समृद्धः, वर्द्धित इति यावत्। दवाग्निः= दवस्याग्निः= वनाग्निः, पर्वतानाम्= शिखरीणाम्, दरीषु= शुष्कानां= नीरसानाम्, वंशानाम्= वेणूनाम्, स्थलीषु= प्राकृतभूमिषु, पटुनिनादैः= पटवः= अतीव तीव्राः ये, निनादाः= चटचटेति ध्वनयः, तैः साकम्, स्फुटति= व्यक्तीभवति। क्षणेन= क्षणकालेनैव, अत्यल्पेनैव समयेनेति भावः। लब्धवृद्धिः= लब्धा= सम्प्राप्ता, अधिगतेति भावाः, वृद्धिः= समृद्धिः येनाऽसौ तथाविधः, तृणमध्ये= तृणानाम्=

सस्यादिकानां मध्ये, प्रसरति= प्रसृमरो भवति। प्रान्तलग्नः= प्रान्ते= वनस्योपान्तभागे, लग्नः= संगतः सन्, मृगवर्गम्= मृगाणाम्= वनपशूनाम्, वर्गम्= समूहम्, ग्लपयति= दुःखाकरोति।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके मालिनीवृत्तम्। 'ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोके' इति हि मालिनीवृत्तस्य लक्षणम्। (२) ग्रीष्मर्तौ दवागनेः सर्वत्रलब्धप्रसरत्ववर्णनम्। (३) प्रसादाख्यो गुणः (४) वैदर्भी रीतिः (५) अल्पसमासावृत्तिश्च।

समासः— पवनवृद्धः= पवनेन वृद्धः (तृ० त०) दवाग्निः= दवस्य अग्निः (ष० त०) शुष्कवंशस्थलीषु= शुष्कानां वंशानां स्थलीषु (कर्मधारय गर्भितः (ष० त० पु०) पटुनिनादैः= पटवश्चेमे निनादाः तैः (कर्मधारयः) लब्धवृद्धिः= लब्धावृद्धिः येनाऽसौ (ब० ब्री०) तृणमध्ये= तृणानां मध्ये (ष० त० पु०) प्रान्तलग्नः= प्रान्ते लग्नः (सप्तमी तत्पुरुषः) मृगवर्गम्= मृगानां वर्गम् (ष० त० पु०)।

हिन्दी शब्दार्थ— पवनवृद्धः= वायु का संयोग पाकर बढ़ी हुई, दवाग्निः= वन की अग्नि, पर्वतानाम्= पर्वतों की, दरीषु= कन्दराओं में, ज्वलति= जल रही है। शुष्कवंशस्थलीषु= सूखे वासों की स्थली में, पटुनिनादैः= जोर-जोर से आवाज करती हुई, स्फुटति= विस्फोट कर रही है। क्षणेन= क्षण भर में ही लब्धवृद्धिः= समृद्ध होकर, तृणमध्ये= घासों के बीच, प्रसरति= फैल जाती है। प्रान्तलग्नः= वन की प्रान्तभूमि में लगी हुई यह आग, मृगवर्गम्= हरिण आदि वनैले जीवों को, ग्लपयति= दुःखी बना रही है।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिवद्ध वक्ता अपनी प्रियतमा के समक्ष ग्रीष्म ऋतु में वनों में फैली हुई आग की विनाशलीला का वर्णन कर रहा है। वह कहता है कि वनों की आग वायु का संयोग पाकर और बढ़ जाती है और पर्वत की कन्दराओं में जल रही है, जहाँ पर सूखे बाँस हैं वहाँ पर जोर-जोर से चट-चट की आवाज करती हुई यह आग जैसे विस्फोट कर रही हो, बड़ी जोर से आवाज करती है। वायु के झोंके को पाकर यह घासों के बीच में जलने लगती है, इस तरह से इस आग से वनैले जीव-जन्तु अत्यन्त दुखी हैं।

भावार्थ— प्रिये! वायु का संयोग पाकर बढ़ी हुई यह आग पर्वतों की कन्दराओं में जल रही है, बाँसों को जलाती हुई यह जोर-जोर से आवाज कर रही है। कभी-कभी तो यह घासों को जलाने लग जा रही है, इस तरह यह वन के पशु-पक्षियों को दुःख दे रही है।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में मालिनी छन्द है। 'ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोके' यह मालिनी छन्द का लक्षण है। मालिनी छन्द के प्रत्येक पाद में पन्द्रह-पन्द्रह अक्षर होते हैं। जिनका गण के रूप में क्रम इस प्रकार से होता है- दो नगण (।।।) एक मगण (ऽऽऽ) और दो यगण (।ऽऽ)। (२) इस श्लोक में अल्पसमासा वृत्ति है। (३) प्रसाद नामक गुण है। (४) वैदर्भी रीति है।

बहुतर इव जातः शाल्मलीनां वनेषु
स्फुरति कनकगौरः कोटरेषु द्रुमाणाम्।

परिणतदलशाखानुत्पतन्प्रांशुवृक्षान्
भ्रमति पवनधूतः सर्वतोऽग्निर्वनान्ते ।।२६ ।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके महाकविः कालिदासः वनाग्नेः विशदं वर्णनं प्रस्तौति। कविनिवद्धो वक्ता नायकः स्वप्रियतमां वक्ति यत् साम्प्रतं ग्रीष्मर्तौ शाल्मलीनां वनेषु तु अग्निरयमतीव समृद्धिं गतो वर्त्तते।

अन्वयः— पवनधूतः अग्निः शाल्मलीनां वनेषु बहुतर इव जातः द्रुमाणां कोटरेषु कनकगौरः स्फुरति। परिणतदलशाखान् वृक्षान् आशु उत्पतन् वनान्ते सर्वतः भ्रमति।

व्याख्या— पवनधूतः= पवनेन= वायुना धूतः= प्रेरितः, अग्निः= वनाग्निः शाल्मलीनाम्= शाल्मलीवृक्षाणाम्, वनेषु= काननेषु, वर्द्धते इव= अत्यधिक इव, जातः= संजातो, वर्त्तते। द्रुमाणाम्= वृक्षाणाम्, कोटरेषु= कोटरप्रदेशेषु, कनकगौरः= कनकेन तुल्यः= सुवर्णसदृशः, गौरः= गौरवर्णः, स्फुरति= चकास्ति। परिणतद-लशाखान्= परिणतानि= शुष्कानि, दलानि= पत्राणि, शाखाश्च येषां वृक्षाणाम् तान् वृक्षान्= द्रुमान्, आशु= शीघ्रम्, उत्पतन्= उद्गच्छन्, वनन्ते= वनस्योपान्तभागे, सर्वतः= सर्वत्र, भ्रमति= भ्रमणं करोति।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके मालिनीवृत्तम्। (२) शाल्मलीनां वनेषु अग्नेर्बहुलीभवनस्योत्प्रेक्षणात् उत्प्रेक्षालंकारः। तथा चोत्प्रेक्षालक्षणम्- 'भवेत् संभावनोत्प्रेक्षा प्रकृतस्यपरात्मना।' इति। (३) कनकगौरः इत्यत्र उपमालंकारः। (४) असमासावृत्तिः (५) प्रसादाख्यो गुणः। (६) वैदर्भी रीतिश्च।

समासः— कनकगौरः= कनकवत् गौरः (उपमितसमासः) परिणतदलशाखान्= परिणतानि दलानि शाखाश्च येषां तान् (ब० ब्री०)

हिन्दी शब्दार्थ— पवनधूतः= वायु के द्वारा प्रेरित, अग्निः=आग, शाल्मलीनाम्= सेमर के, वनेषु=वनों में, बहुतर इव= मानो बहुत अधिक, जातः= हो गयी है। द्रुमाणाम्= वृक्षों के; कोटरेषु= खोंखले में, कनकगौरः= सोने के समान गौर वर्ण स्फुरति= चमक रही है। परिणतदलशाखान्= जिनके पत्ते तथा डालियाँ सूख गयी हैं, ऐसे, वृक्षान्= पेड़ों के, प्रांशु= ऊपर उत्पतन्= उड़ती हुई यह आग, वनान्ते= वन के उपान्त भाग में, सर्वतः= चारो ओर, भ्रमति= फैल रही है।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिवद्ध वक्ता नायक अपनी नायिका को बतला रहा है कि गर्मी के दिनों में जब वायु तेज बहती है तो सेमर के वनों में वन की आग बहुत अधिक फैल जाती है वह सूखे पेड़ों को जला डालती है।

भावार्थ— हे प्रिये! वायु से प्रेरित होकर वन की आग सेमर के वनों में मानों बहुत अधिक बढ़ गयी है। वह पेड़ों के खोंखलों में सोने की भांति चमकती है। सूखे हुए पेड़ों में तो वह आपादमस्तक व्याप्त हो गयी है। इस तरह वनों के उपान्त भाग में लगी हुई आग चारो ओर फैल गयी है।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में मालिनी छन्द है। 'ननमयययुतेयं

मालिनी भोगिलोके' यह मालिनी छन्द का लक्षण है। इस छन्द के प्रत्येक पाद में १५-१५ अक्षर होते हैं और उनके गणों का क्रम होता है- दो नगण (।।।) एक मगण (ऽऽऽ) और दो यगण (।ऽऽ)। (२) इस श्लोक में यह उत्प्रेक्षा की गयी है कि ग्रीष्म ऋतु में वनों में फैली हुई आग सेमर के वनों में मानों बहुत अधिक बढ़ जाती है। अतएव इस श्लोक में उत्प्रेक्षा अलंकार है। 'भवेत् संभावनोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य परात्मना' यह उत्प्रेक्षाऽलंकार का लक्षण है। (३) कनकगौरः पद में उपमालंकार है। (४) इस श्लोक में समास रहित वृति, (५) वैदर्भी रीति तथा (६) प्रसाद नामक गुण हैं।

गजगवयमृगेन्द्रा वह्निसन्तप्तदेहाः
सुहृद इव समेता द्वन्द्वभावं विहाय।
हुतवहपरिखेदादाशु निर्गत्य कक्षा
द्विपुलपुलिनदेशान्निम्नगां संविशन्ति।। २७।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके महाकविः ग्रीष्मर्तौ दावाग्नेः प्रचण्डतां वर्णयति। अत्र कविनिबद्धो वक्ता नायकः नायिकां वक्ति यत् वनवासिनः समे पशवः वनाग्निना संतप्तशरीरास्सन्ति। ते परस्परं स्वाभाविकं वैरभावं विहाय मित्रवत् समकालमेव शैत्यं कामयमानाः नदीं सेवन्ते। सिंहानां गजानाञ्च स्वाभाविको वैरो विद्यते; किन्तु ते वनाग्निना संतप्तशरीरत्वात् विस्मृतवैराः सन्तः साकमेव सरित् सेवन्ते।

अन्वयः— वह्निसन्तप्तदेहाः गजगवयमृगेन्द्राः द्वन्द्वभावं विहाय सुहृद इव समेताः हुतवहपरिखेदात् विपुलपुलिनदेशात् कक्षात् आशु निर्गत्य निम्नगां संविशन्ति।

व्याख्या— वह्निसंतप्तदेहाः= वह्निना= अग्निना, संतप्ताः= पावकेन परितप्ताः देहाः= शरीराणि येषां ते= वह्निसंतप्तदेहाः= वनाग्नि संतापपरिक्लान्तवर्ष्माण इति भावः, गजगवयमृगेन्द्राः= गजाश्च= हस्तिनश्च, गवयाश्च= एतन्नामकाः वनपशवश्च, मृगेन्द्राश्च= सिंहाश्च गजगवयमृगेन्द्राः, सुहृद इव= मित्राणि सदृशाः समेताः= एकत्रिताः, द्वन्द्वभावम्= द्वन्द्वस्य= वैरस्य, भावम्= स्वभावम्, विहाय= परित्यज्य, हुतवहपरिखेदात्= हुतवहस्य= अग्नेः, परिखेदात्= संतापहेतोः, अत्र हेतौ पञ्चमी, आशु= शीघ्रमेव, विपुलपुलिनदेशात्= विपुलः= विस्तृतः= प्रसृमरश्च, योहि पुलिनदेशः= नद्यास्तटप्रदेशः तस्मात् कक्षात्= बाहुमूलात्। अत्र नद्यास्तटे कक्षत्वारोपात् रूपकम्; तटकक्षयोरभेदाध्यवसायात्। निर्गत्य= निस्सृत्य, निम्नगां= नदीम्, संविशन्ति= प्रविशन्ति। नद्याः संतापत्रासनिर्वापकत्वात्।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके मालिनीवृत्तम् 'ननमयययुतेयं मालिनीभोगिलोके' इति मालिनी लक्षणम्। (२) अत्र कविरुत्प्रेक्षते यत् ग्रीष्मप्रभावात् समे जीवाः परित्यक्तपरस्परवैरभावाः संजाता इव। अतएवात्र उत्प्रेक्षाऽलंकारः। 'भवेत् संभावनोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य परात्मना' इति हि उत्प्रेक्षालक्षणम्। (३) 'विपुलपुलिनदेशात् कक्षात्' इत्यत्र पुलिने कक्षत्वारोपात् रूपकम्। 'रूपकं रूपितारोपो विषये निरुपह्नवे' इति लक्षणानुसारेणात्र रूपकम्। (४) अल्पसमासा चात्र वृत्तिः, (५) माधुर्यप्रसादा- वत्र गुणौ। (६) वैदर्भी चात्र रीतिः।

समासः— वह्निसंतप्तदेहाः= वह्निना संतप्तो देहो येषां ते (ब० ब्री०) हुतवहपरिखेदात्हुतवेन परिखेदात् (तृ० त०) गजगवयमृगेन्द्राः= गजाश्च गवयाश्च मृगेन्द्राश्च (द्वन्द्वः) द्वन्द्वभावम्= द्वन्द्वस्य भावम् (ष० त० पु०) विपुलपुलिनदेशात्= विपुलश्चासौ पुलिनदेशः तस्मात् (कर्मधारयः)।

हिन्दी शब्दार्थ— वह्निसन्तप्तदेहाः= वनाग्नि से संतप्त शरीर वाले, गजगवयमृगेन्द्राः= हाथी, नीलगाय तथा सिंह, सुहृद इव समेताः= मित्र के समान एकत्रित होकर, द्वन्द्वभावम्= वैरभाव को, विहाय= त्यागकर, हुतवहपरिखेदात्= अग्नि से संतप्त होकर, आशु= शीघ्र ही, विपुलपुलिनदेशात् कक्षात्= विस्तृत तटरूपी कक्ष प्रदेश से, निर्गत्य= निकलकर, निम्नगाम्= नदी में संविशन्ति= प्रवेश करते हैं।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिवद्ध नायक वक्ता अपनी प्रियतमा से कह रहा है कि गर्मी के दिनों में वन में जब आग लग जाती है तो वन के सभी जीव अत्यन्त संतप्त हो जाते हैं। वे अपने स्वाभाविक वैरभाव को भूल जाते हैं। उन्हें तो एक मात्र चिन्ता होती है कि कहाँ पानी मिले कि अपने शरीर का संताप मिटाया जाय ? वन के हाथी, नीलगाय तथा शेर सभी एक साथ मिलकर बैठते हैं और शीतलता की खोज में नदी के किनारे से उतर कर नदी में प्रवेश करते हैं। एक दूसरे को परस्पर में कोई भी नहीं सताता है। जिस तरह किसी प्रभाव सम्पन्न राजा के राज्य में राजाज्ञा के उल्लंघन के भय से कोई भी किसी दूसरे को नहीं सताता है, सभी एक दूसरे से स्नेह करते हैं; उसी तरह से ग्रीष्म ऋतु रूपी राजा का इतना प्रभाव है कि सभी जीव अपने परस्पर के वैरभाव को भूल गए हैं।

भावार्थ— हे प्रिये! दवानल से संतप्त शरीर वाले हाथी, नीलगाय और सिंह परस्पर के वैरभाव को त्यागकर मित्र के समान एक साथ नदी के कछार से नदी में प्रवेश करते हैं।। २७।।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में मालिनी छन्द है। 'ननमययुतेयं मालिनी भोगिलोके।' यह मालिनी छन्द का लक्षण है (२) इस श्लोक में उत्प्रेक्षा और रूपकालंकार की संसृष्टि है। (३) इसमें अल्पसमासावृत्ति संघटना है। (४) वैदर्भी रीति और प्रसादगुण का इस श्लोक में सद्भाव है।

कमलवनचिताम्बुः पाटलामोदरम्यः
सुखसलिलनिषेकः सेव्यचन्द्रांशुहारः।
व्रजतु तव निदाघः कामिनीभिः समेतो
निशि सुललितगीते हर्म्यपृष्ठे सुखेन।।२८।।

इति महाकविकालिदासकृतौ ऋतुसंहारे ग्रीष्मवर्णनंनाम प्रथमः सर्गः।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अनेन श्लोकेन साकं कविनिवद्धो वक्ता नायकः स्वप्रियतमां प्रति ग्रीष्मर्तोः वर्णनस्योपसंहारं करोति। बहुषु श्लोकेषु वनेषु प्रसृमरस्य दवाग्नेः विनाशलीलायाः वर्णनं कृत्वाऽन्ते सः ग्रीष्मकाले यानि वस्तूनि सुखकराणि भवन्ति तेषां वर्णनं करोति। स वक्ति यत् साम्प्रतं पाटलपुष्पाणि विकसितानि सन्ति मधुरा-

मोदभराणि, कमलान्यपि पुष्करिणीषु सन्ति विकसितानि; अतएव त्वम् चन्द्रहारेणाञ्चितसौभाग्यसम्पन्नविलासिनीभिः साकं सुललितानि गीतानि गायन्ती सती क्षपाः क्षपयस्व।

अन्वयः— हे सुललितगीते! कमलवनचिताम्बुः पाटलामोदरम्यः सुखसलिलनिषेकः सेव्यचन्द्रांशुहारः तव निदाघः निशि हर्म्यपृष्ठे कामिनीभिः समेतः सुखेन व्रजतु।

व्याख्या— सुललितगीते= सुष्ठूनिलललितानि गीतानि यस्याः सा तथाविधे मम प्रियतमे। कमलवनचिताम्बुः= कमलानाम्= पद्मानां वनेन= समूहेन, चितम्= अचितं व्याप्तमिति यावत् तथाविधं अम्बु= जलं यस्मिंस्तथाविधः, फुल्लपंकजपरिपूर्णजल इति भावः, पाटलामोदरम्यः= पाटलानाम्= पाटलपुष्पाणां आमोदेन= सुगन्धेन रम्यः= मनोहरः, सुखसलिलनिषेकः, सुखम्= सुखकरम्, सलिले= जले, निषेकः= अवगाहनं यस्मिंस्तथविधः, सेव्यचन्द्रांशुहारः= सेव्याः= सेवनीयाः, चन्द्रांशवः= चन्द्रकिरणानि ज्योत्स्नेति भावः, हाराश्च यस्मिंस्तथाविधः अथवा युवतिभिः धारणीयाः चन्द्रहाराः यस्मिंस्तथाविधः, तव= भवत्याः, निदाघः= ग्रीष्मर्तुः शारीरिकः संतापो वा, निशि= रात्रौ हर्म्यपृष्ठे= हर्म्याणाम्= अट्टालिकानां पृष्ठे= उपरिभागे, कामिनीभिः= काम्यन्ते युवकैः यास्ताः ताभिः, समेतः= सहितः सुखेन= सुखपूर्वकम्, व्रजतु= यातु।। २८।।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिन् श्लोके मालिनीवृत्तम्। 'ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोके।' इति हि मालिनी छन्दसो लक्षणम्। (२) ग्रीष्मर्तोः सुखप्रदानां वस्तूनां वर्णनम्। (३) अल्पसमासावृत्तिः। (४) माधुर्याख्यो गुणः (५) वैदर्भी रीतिश्च।

समासः— सुललितगीते= सुललितानि गीतानि यस्याः सा तत्सम्बुद्धौ। कमलवनचिताम्बुः= कमलानां वनम्= कमलवनम् (ष० त०) कमलवनेन चितम्= कमलवनचितम् (तृ० त०) कमलवनचितमम्बु यस्मिंस्तथाविधः= (ब० ब्री०) पाटलामोदरम्यः= पटलानाम्= आमोदः= पाटलामोदः। (ष० त०) तेनरम्यः यअसौ तथाविधः (ब० ब्री०) सुखसलिलनिषेकः= सुखं सलिले निषेको यस्मिंस्तथाविधः (ब० ब्री०) सेव्यचन्द्रांशुहारः-सेव्यः: चन्द्रांशवो हाराश्च यस्मिंस्तथाविधः (ब० ब्री०) हर्म्यपृष्ठे= हर्म्याणां पृष्ठे= (ष० त०)।

हिन्दी शब्दार्थ— सुललितगीते= हे सुन्दर तथा मनोज्ञ गीतों को गाने वाली, कमलवनचिताम्बु= जिसमें जलाशय कमल वनों से परिपूर्ण हो गया है, पाटलामोदरम्यः= जो गुलाबों की सुगन्धि से मनोमोहक हो गया है, सुखसलिलनिषेकः= जिसमें जल में स्नान करना सुखद है, सेव्यचन्द्रांशु हारः= जिसमें चाँदनी और चन्द्रहार कामिनियों के लिए धारणीय हैं, इस प्रकार का तव= तुम्हारा, निदाघः= ग्रीष्मऋतु, निशि= रात्रि में, हर्म्यपृष्ठे= छत के ऊपर, कामिनीभिः समेतः= कामिनियों के साथ, सुखेन= सुखपूर्वक, व्रजतु=व्यतीत होए।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिवद्धवक्ता नायक अपनी प्रियतमा के समक्ष ग्रीष्म ऋतु की उन वस्तुओं का वर्णन कर रहा है, जिनका सेवन इस ऋतु में सुखप्रद होता है। जलाशयों में विकसित कमलवन, पाटल पुष्प की मधुर सुगन्ध,

शीतल जल में स्नान, तथा कामिनियों द्वारा छत के ऊपर बैठकर चन्द्रहार तथा चाँदनी का सेवन ये सब के सब सुखद हैं। नायक इन्हीं वस्तुओं का वर्णन अपनी नायिका के समक्ष कर रहा है।

भावार्थ— हे मधुर तथा मनोज्ञ गीत गाने वाली प्रियतमे! कमल वन से परिपूर्ण जलाशयों वाला, गुलाब की सुगन्धि से मनोहर, जिसमें जल स्नान आनन्दप्रद होता है तथा जिसमें चन्द्रिका एवं चन्द्रहार धारणीय हैं, इस प्रकार का तुम्हारा ग्रीष्म ऋतु कामिनियों के साथ छत के ऊपर सुखपूर्वक व्यतीत होए।। २८।।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में मालिनीवृत्त है। इस छन्द का लक्षण है- 'ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोके।' (२) इसमें अल्पसमासा वृत्ति है। (३) माधुर्यगुण तथा (४) वैदर्भी रीति का सद्भाव है।

इस तरह ऋतुसंहार काव्य का ग्रीष्मवर्णन नामक प्रथम सर्ग सम्पूर्ण हुआ।

अथ द्वितीयः सर्गः

वर्षावर्णनम्

ससीकराम्भोधरमत्तकुञ्जरस्तडित्पताकोऽशनिशब्दमर्दनः।
समागतो राजवदुद्धतद्युतिर्घनागमः कामिजनप्रियः प्रिये।। १।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ– अस्मिञ्छ्लोके कविनिबद्धो नायको वक्ता स्वप्रियतं यत् साम्प्रतं वर्षर्तुः समगतो वर्त्तते। ऋतुरयं कामिजनानां प्रियतमो वर्त्तते। येन प्रकारेण राज्ञां कुञ्जरा भवन्ति तेनैव प्रकारेण राज्ञो वर्षर्तोः मेघा एव सीकराम्भःकणाञ्चिताः हस्तिनःसन्ति। राज्ञो ध्वजपताका इव विद्योतते विद्युत्। घनध्वनिस्तथैवातिचण्डो भवति यथा राज्ञो भेरिध्वनि र्भवति स्वेतराणां सर्वेषां ध्वनी-नाममिभवकर्ता।

अन्वयः– हे प्रिये! ससीकराम्भोधरमत्तकुञ्जरः तडित्पताकः अशनिशब्दमर्दनः कामिजनप्रियः उद्धतद्युतिः घनागमः राजवत् समागतः।

व्याख्या– प्रिये! ससीकराम्भोधरमत्तकुञ्जरः= सीकरेण सहिताः ससीकराः, जलबिन्दुयुक्तेति यावत् तथा हि अम्भोधराः= अम्भांसि जलानि विभ्रति ये ते अम्भोधराः= मेघाःससीकराम्भोधरा एव मत्ताः= मदमत्ताः, कुञ्जराः= हस्तिनो यस्याऽसौ तथाविधः= ससीकराम्भोधरमत्तकुञ्जरः, ताडित्पताकः= तडित्= विद्युदेव, पताका= ध्वजपताका यस्य सः, अशनिशब्दमर्दनः= अशनेः= पवेः वज्रस्येति यावत्– 'ह्रादिनी वज्रमस्त्री स्याद्भिदुरं कुलिशं पविः' इत्यमरः। शब्दम्= ध्वनिम्, मर्दयति= अभिभवति= न्यक्करोतीत्यर्थः यः सः अशनिशब्दमर्दनः। कामिजनप्रियः= कामी चासौ जनः= कामिजनः, तस्मै प्रियः= मनोहरः, उद्यतद्युतिः= उद्यता उन्नता, द्युतिः= कान्तिर्यस्य सः घनागमः= घनानाम्= मेघानाम्, आगमः मेघागमः= वर्षर्तुरिति भावः, राजवत्= राज्ञा तुल्यं राजवत् 'तेनतुल्यं क्रिया चेद्वतिः' समागतः= सम्प्राप्तः।

साहित्यिकविशेषताः– (१) अस्मिञ्छ्लोके उपजातिवृत्तम्। तथा च लक्षणम्–

उपेन्द्रवज्रापदसंगतानि, यदीन्द्रवज्राचरणानि च स्युः।
तदोपजातिः कथिता कवीन्द्रैः, भेदाः भवन्तीह चतुर्दशास्याः इति।।

(२) अत्रोपमारूपकयोः संसृष्टिरलंकारः राजवदिति पदे उपमा, तौल्यार्थत्वाद् वतेः। साम्यं वाच्यमवैधर्म्यं वाक्यैक्ये उपमा द्वयोः। इत्युपमायाः लक्षणम्। वर्षर्तौ राजत्वारोपात् रूपकालङ्कारः।

'रूपकं रूपितारोपो विषये निरुपह्नवे।' इति रूपकस्य लक्षणम्।

(३) अत्र प्रसादो गुणः, (४) वैदर्भी रीतिः, (५) अल्पसमासा संघटना च।

समासः— ससीकराम्भोधरमत्तकुञ्जरः= सीकरेण सहितं ससीकरम्, ससीकरश्चासावम्भोधरः, ससीकराम्भोधरः (कर्मधारयः) ससीकराम्भोधरा एव मत्तकुञ्जराः यस्य सः= ससीकराम्भोधरमत्तकुञ्जरः। (ब० ब्री०) तडित्पताकः= तडिदेव पताका यस्य सः (ब० ब्री०) अशनिशब्दमर्दनः= अशनेः शब्दः= अशनिशब्दः (ष० त० पु०) अशनिशब्दं मर्दयति यः सः। (ब० ब्री०) कामिजनप्रियः- कामी चासौ जनः कामिजनः (कर्मधारयः) तेभ्यः प्रियः= कामिजनप्रियः (च० त० पु०) उद्धतद्युतिः- उद्धता द्युतिः कान्तिः यस्य सः (ब० ब्री०) घनागमः= घनस्य आगमः (ष० त० पु०)।

हिन्दी शब्दार्थ— ससीकरम्भोधरमत्तकुञ्जरः= जल से भरे मेघ ही जिसके मतवाले हाथी हैं, तडित्पताकः= बिजली ही जिसकी पताका है, अशनिशब्दमर्दनः= वज्र की भी ध्वनि को अभिभूत कर देने वाला, कामिजनप्रियः= कामी पुरुषों को प्रिय, उद्धताद्युतिः= उद्धत कान्ति वाला, घनागमः= वर्षा ऋतु राजवत्= राजा के समान, समागतः= आ गयी है।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिवद्ध नायक अपनी प्रियतमा से कह रहा है कि यह वर्षा ऋतु आ गयी है। यह ऋतु एक राजा के समान है। जिस तरह राजा के साथ उसके मदमत्त हाथी होते हैं, वर्षा ऋतु राजा के भी जल भरे मेघ ही मदमत्त हाथी हैं। इस राजा की विद्युत् ही पताका है। राजा की रणभेरी की आवाज जिस तरह अन्य सभी ध्वनियों को अभिभूत कर देती है, उसी तरह मेघ की भी ध्वनि वज्र की भी ध्वनि को अभिभूत कर देने वाली है। यह ऋतु कामी पुरुषों को प्रिय है। इसकी कान्ति उद्धत है, इस तरह यह एक राजा के समान आयी हुयी ऋतु है।

भावार्थ— हे प्रिये जिसके जल भरे मेघ ही मतवाले हाथी हैं। विद्युत् ही जिसकी पताका है, वज्र के भी शब्द को अभिभूत कर देने वाली, कामी पुरुषों को प्रिय, उद्धत कान्ति वाली वर्षा ऋतु राजा के समान आ गयी है।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में उपजातिवृत्त है। (२) उपमा और रूपक अलंकार की संसृष्टि है। राजवत् शब्द में तुल्यार्थक वति प्रत्यय का प्रयोग किया गया है। अतएव वर्षा ऋतु पर राजत्व का आरोप किया गया है। यह सांङ्ग रूपक है, क्योंकि रूपक के समस्त अंगों का उपस्थापन किया गया है। (३) इस श्लोक में प्रसाद गुण, वैदभी रीति और अल्पसमास वाली संघटना है। (४) रूपक के माध्यम से वर्षा ऋतु की विभिन्न विशेषताओं को उपस्थापित किया गया है।

नितान्तनीलोत्पलपत्रकान्तिभिः कवचित्प्रभिन्नाञ्जनराशिसंनिभैः।
क्वचित्सगर्भप्रमदास्तनप्रभैः समाचितं व्योम घनैः समन्ततः।। २।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छूलोके महाकविना कालिदासेन निबद्धो वक्ता वक्ति स्वप्रियतमां वर्षर्तुं वर्णयन् यत् सम्प्रति आकाशोऽयमखिलो कृष्णवर्णैः जलपरिपूर्णैः मेघैराच्छन्नः सन् शोभतेतराम्। ते च मेघाः नीलपत्रवत्, नीलाञ्जनसन्निभास्तत्र तत्र विकीर्णाः, क्वचिच्चान्तर्वत्नीनारीस्तनाग्रभागवदाभन्ति।

अन्वयः— क्वचित् नितान्तनीलोत्पलपत्रकान्तिभिः क्वचित् प्रभिन्नाञ्जनराशिसंनिभैः क्वचित् सगर्भप्रमदास्तनप्रभैः घनैः समन्ततः व्योम समाचितम्।

व्याख्या— कवचित्= कुत्रचित् स्थलविशेषे नितान्तनीलोत्पलपत्रकान्तिभिः, नितान्तम्= अतिगाढम् 'तीव्रैकान्तनितान्तानि गाढबाढदृढानि च' इत्यमरः नीलानि= नीलवर्णानि यानि उत्पलानि= कमलानि तेषां पत्राणाम्= दलानां, कान्तिरिव कान्तिर्येषां, तथाभूतैः, नीलाम्बुजदलवन्मनोज्ञैः, कवचित्= कुत्रचित्, प्रभिन्नाञ्जनराशिसन्निभैः= प्रभिन्नम्= प्रकृष्टतया पिष्टम् यत् अञ्जनम्, तस्य या राशिः= पुञ्जः तेन सन्निभैः= सदृशैः, सगर्भप्रमदास्तनप्रभैः= सगर्भाः= अन्तर्वत्न्यः, याः प्रमदाः= रमण्यः, तासां स्तनानाम्= पयोधराणाम् प्रभा इव= कान्तिरिव प्रभा= कान्तिर्येषां ते तथाभूतैः, अन्तर्वत्नीनां नारीणां स्तनाग्रभागोऽधिकं श्यामायत इति लोकेऽपि दृश्यते, घनैः= मेघैः, व्योम=अम्बरम् 'व्योमपुष्करमम्बरम्' इत्यमरः ।समन्ततः सर्वतः समाचितम्= व्याप्तम् ।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके उपजातिवृत्तम् । (२) उपमालंकारः मेघानां प्रगाढ़नीलाम्बुजदलैः, भिन्नाञ्जनपुञ्जैः, सगर्भस्त्रीपयोधराग्रभागैश्च साम्य वर्णनात् । तथा चोक्तं साहित्यदर्पणकरेण- 'साम्यं वाच्यमवैधर्म्यं वाक्यैक्ये उपमा-द्वयोः ।' इति । (३) मध्यमसमासवती संघटना । (४) प्रसादाख्यो गुणः । (५) वैदर्भी रीतिश्च ।

समासः— नितान्नीलोत्पलपत्रकान्तिभिः= नितान्तानि यानि नीलानि उत्पलानि तेषां पत्राणां कान्तिरिव कान्तिर्येषां तथाविधैः उपमित समासगर्भो बहुब्रीहिः समासः । प्रभिन्नाञ्जनराशिसन्निभैः= प्रभिन्नानि यानि अञ्जनानि तेषां सन्निभानि तैः= (कर्मधारयगर्भितो बहुब्रीहिसमासः ।) सगर्भप्रमदास्तनप्रभैः= गर्भेण सहिताः सगर्भाः तथाविधाः याः प्रमदाः= सगर्भप्रमदाः= (कर्मधारयः) सगर्भप्रमदानां स्तनानि= सगर्भप्रमदास्तनानि= (ष० त० पु०) सगर्भप्रमदास्तनानां प्रभा इव प्रभा येषां तैः= (उपमितः समासः) ।

हिन्दी शब्दार्थ— क्वचित्= कहीं पर, नितान्तनीलोत्पलपत्रकान्तिभिः= गाढनील कमल दल के सदृश कान्ति वाले, क्वचित्= कहीं पर 'प्रभिन्नाञ्जनराशिसन्निभैः= पिसे हुए अंजन की राशि के समान' सगर्भप्रमदास्तनप्रभैः= गर्भवती स्त्रियों के स्तन के समान कान्ति वाले, घनैः= मेघों से, व्योम= आकाश, समन्ततः= सब ओर से, समाचितम्= व्याप्त हो गया है ।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिवद्ध नायक अपनी प्रियतमा से कह रहा है कि इस वर्षा ऋतु में आकाश काले-काले मेघों से पूरी तरह से भर गया है । उन मेघों की कान्ति गाढ़े नील कमल दल के समान है, लग रहा है कि चूर्ण करके अञ्जन पुञ्ज आकाश में विखेर दिया गया है ।

भावार्थ— हे प्रिये! इस समय प्रगाढ़ नील कमल दल के समान कान्ति वाले, चूर-चूर करके आकाश में विकीर्ण अञ्जनपुञ्ज के समान तथा गर्भवती रमणियों के स्तन के अग्रभाग की कान्ति के समान कान्ति वाले मेघ आकाश में भर गए हैं ।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में उपजाति वृत्त है । (२) मेघ की कान्ति की प्रगाढ नील कमल के दल की कान्ति से, चूर-चूर करके फैलाए गए अञ्जन पुञ्ज से तथा गर्भवती रमणियों के स्तनों के अग्रभाग की कान्ति से साम्य

बतलाए जाने के कारण उपमालङ्कार है। (३) भाषा प्रसाद गुण युक्त एवं माधुर्यमयी है। (४) इसमें वैदर्भी रीति तथा अल्प समास वाली संघटना का सन्निवेश है।

तृषाकुलैश्चातकपक्षिणां कुलैः प्रयाचितास्तोयभरावलम्बिनः।
प्रयान्ति मन्दं बहुधारवर्षिणो बलाहकाः श्रोत्रमनोहरस्वनाः।। ३।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके महाकविः कालिदासो वर्षर्तुवर्णनं कुर्वन् वक्ति यत् साम्प्रतं आकाशे जलपरिपूर्णाः श्रोत्रपेयशब्दकारिणो मेघाः शनैः-शनैः सञ्चरणं कुर्वन्ति तेनातिशयेन मनोज्ञमाभाति व्योम।

अन्वयः— तृषाकुलैः चातकपक्षिणां कुलैः प्रयाचिताः तोयभरावलम्बिनः बहुधा-रवर्षिणः श्रोत्रमनोहरस्वनाः बलाहकाः मन्दं प्रयान्ति।

व्याख्या— तृषाकुलैः= तृषा= पिपासया, आकुलैः= व्याकुलैः। चातकपक्षिणाम्= सारभिधानां पक्षिणाम्, 'सार स्तोकचातकः' इत्यमरः। कुलैः= समूहैः। प्रयाचिताः= संयाचिताः प्रार्थिताः तोयभरावलम्बिभिः= तोयानाम्= जलानाम् भरेण= भारेण, अवलम्बिनः= अधोभागे सञ्चरणकारिणः बहुधारवर्षिणः= बहुधारं वर्षन्ति ये ते तथाविधाः= अतिशयेन जलधारापातिनः, श्रोत्रमनोहरस्वनाः= श्रोत्रेभ्यः= कर्णेभ्यः मनोहराः= मनोज्ञाः, स्वनाः= ध्वनयो येषां ते तथाभूताः, श्रोत्रपेयध्वनय इति यावत्, बलाहकाः= मेघाः 'अभ्रं मेघो वारिवाहः स्तनयित्नुर्बलाहकः' इत्यमरः। मन्दम्= शनैः शनैः प्रयान्ति= सञ्चरन्ति।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके उपजातिवृत्तम्। (२) वर्षर्तौ मेघानां स्वाभाविक्याः स्थितेर्वर्णनम्। (३) अल्पसमासा वृत्तिः, प्रसादश्चगुणः। (४) वैदर्भी रीतिः।

समासः— तृषाकुलैः= तृषा आकुलैः= (तृ० त० पु०), तोयभरावलम्बिनः= तोयभरेण अवलम्बिनः (तृ० त० पु०) बहुधारवर्षिणः= बहूनां धाराणां वर्षिणः (ष० त० पु०) श्रोत्रिमनोहरस्वनाः- श्रोत्रेभ्यः मनोहरः= श्रोत्रमनोहरः (च० त० पु०) श्रोत्रमनोहराणि स्वनानि येषां ते- (ब० ब्री०)।

हिन्दी शब्दार्थ— तृषाकुलैः= प्यास से व्याकुल, चातकपक्षिणाम्= चातक पक्षियों के, कुलैः= समूह के द्वारा, प्रयाचिताः= प्रार्थित, तोयभरावलम्बिनः= जल के भार से झुके हुए, बहुधारवर्षिणः= बहुत अधिक वर्षा करने वाले, 'श्रोत्रमनोह-रस्वनाः=कर्ण- मधुर ध्वनि करने वाले, बलाहकाः= मेघ, मन्दम्= धीरे-धीरे, प्रयान्ति चलते हैं।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिबद्ध वक्ता का कहना है कि ग्रीष्म ऋतु के समय में प्यास से व्याकुल होकर चातक पक्षियों ने पानी की याचना मेघों से की, उसी से प्रभावित होकर मेघ इस वर्षा ऋतु में मूसलाधार वर्षा कर रहे हैं। वे श्रोत्रपेय गर्जना कर रहे हैं और धीरे-धीरे आकाश में विचरण कर रहे हैं।

भावार्थ— हे प्रिये! प्यास से व्याकुल पक्षियों से प्रार्थित, जल के भार से पृथ्वी के सन्निकट झुके हुए; मेघ मूसलाधार वर्षा कर रहे हैं, श्रोत्रपेय मधुर ध्वनि कर रहे हैं तथा धीरे-धीरे सञ्चरण कर रहे हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में उपजाति वृत्त है। (२) वर्षा ऋतु के मेघों की स्वाभाविक स्थिति का वर्णन है। (३) अल्पवृत्ति संघटना है। (४) वैदर्भी रीति है और (५) प्रसाद गुण है।

बलाहकाश्चाशनिशब्दमर्दलाः सुरेन्द्रचापं दधतस्तडिद्गुणम्।
सुतीक्ष्णधारापतनोग्रसायकैस्तुदन्ति चेतः प्रसभं प्रवासिनाम्।।४।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके कविनिबद्धो वक्ता स्वप्रियतमायाः समक्षं वर्षर्तोः वर्णनस्य माध्यमेन वक्ति यत् सम्प्रतम् मेघाः प्रवासिनां कृते शात्रवं निर्वहन्ति। येन प्रकारेण कश्चनापि प्रबलः शत्रुः भेरीघोषपूर्वकं हस्ते धनुरादाय शत्रौ शरासारं पातयति; तेनैव प्रकारेणास्य प्रवासिजनशत्रोः बलाहकवर्गस्य वज्रनिर्घोष एव भेरीवाद्यम् तडिद्-गुणः सुरेन्द्रचाप एवं धनुः, वर्षाधारैव शरासारः इत्थंभूता बलाहकाः भृशं तुदन्ति प्रवासिजनम्।

अन्वयः— अशनिशब्दमर्दलाः तडिद्गुणं सुरेन्द्रचापं च दधतः बलाहकाः सुतीक्ष्णधारापतनोग्रसायकैः प्रवासिनां चेतः प्रसभं तुदन्ति।

व्याख्या— अशनिशब्दमर्दलाः= अशनेः= वज्रस्य, शब्दः= निर्घोष एव मर्दलः= भेरी येषां ते तथाभूताः तडिद्गुणम्= तडित्= विद्युत् गुणः= प्रत्यञ्चा यस्य तत् तथाभूतम् सुरेन्द्रचापम्= सुरेन्द्रस्य= देवेन्द्रस्य चापः= धनुः तम्, दधतः= धारणं कुर्वन्तः, बलाहकाः= मेघाः, सुतीक्ष्णधारापतनोग्रसायकैः= सुतीक्ष्णानाम्= अति तीव्राणां धाराणाम्= जलधाराणाम्, पतनानि= संपातनानि एव उग्राः अतीव पीडाकराः, सायकाः= बाणाः, तैः, प्रवासिनाम्= कण्ठाश्लेषप्रणयिभ्यो जनेभ्यो दूरे निवसताम् अतएव प्रियतमा विप्रयोगे विधुराणाम्, चेतः= अन्तःकरणम्, प्रसभम्= हठेन तुदन्ति= पीडयन्ति।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके उपजातिवृत्तम्। (२) साङ्गरूपका-लङ्कारः बलाहकेषु शत्रुत्वारोपात्। (३) अल्पवृत्तिसमासः। (४) वैदर्भी रीतिः। (५) प्रसादो गुणश्च।

समासः— अशनिशब्दमर्दलाः- अशनेः शब्दः= अशनिशब्दः (ष० त० पु०) अशनिशब्द एव मर्दलो येषां ते- (ब० व्री०), तडिद्गुणम् तडिदेव गुणो यस्य तत् (ब० व्री०) सुरेन्द्रचापम्= सुरेन्द्रस्य चापम्= (ष० त० पु०) सुतीक्ष्णधारापतनो-ग्रसायकैः- सुतीक्ष्णाश्चेमा धाराः= सुतीक्ष्णधाराः (कर्मधारयः) तासां पतनानि= सुतीक्ष्णधारापतनानि (ष० त० पु०) सुतीक्ष्णधारापत नानि। एव उग्राः सायकाः येषां तैः= (कर्मधारयः)।

हिन्दी शब्दार्थ— अशनिशब्दमर्दलाः= वज्रनिर्घोष ही जिनका भेरी नाद है, तड़िद्गुणम्= विद्युत रूपी प्रत्यञ्चा वाले, सुरेन्द्रचापम्= इन्द्र धनुष को, दधतः= धारण करने वाले, बलाहकाः= मेघ, सुतीक्ष्णधारापतनोग्रसायकैः= अत्यन्त तीव्र जलधारा रूपी भयंकर बाणों से, प्रवासिनाम्= परदेश में रहने वाले लोगों के, चेतः= अन्तः करण को, प्रसभम्= हठपूर्वक तुदन्ति= पीड़ित करते हैं।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिबद्ध वक्ता अपनी प्रियतमा के समक्ष बतला रहा है कि इस वर्षा ऋतु में मेघ रूपी शत्रु परदेशियों के अन्तःकरण को अत्यधिक दुखी बना रहे हैं। जिस तरह कोई प्रबल शत्रु संग्राम के लिए भेरी नाद करता है, धनुष पर डोरी चढ़ाकर प्रतिपक्ष के ऊपर भयंकर तीव्र वाणों की वर्षा करते हुए अपने शत्रु को अत्यन्त दुःखी बनाता है, उसी तरह मेघरूपी शत्रु का वज्रनिर्घोष ही भेरीनाद है, इन्द्रधनुष ही उसका धनुष है। विद्युत् ही उसकी प्रत्यञ्चा है। लगातार होने वाली वर्षा ही उसके बाण हैं।

भावार्थ— प्रिये! बज्र निर्घोष ही जिसका भेरी नाद है, विद्युत् की प्रत्यञ्चा वाले इन्द्रधनुष रूपी धनुष को धारण करने वाले मेघ, लगातार होने वाली तीव्र वर्षा की धारा रूपी उग्र बाणों से परदेशियों के अन्तःकरण को अत्यन्त पीड़ित कर रहे हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में उपजातिवृत्त है। (२) मेघों पर शत्रुत्व का आरोप करने के कारण साङ्गरूपक अलंकार है। (३) अल्पवृत्ति समास है। (४) वैदर्भी रीति है और (५) प्रसाद नामक गुण है।

प्रभिन्नवैदूर्यनिभैस्तृणांकुरैः समाचिता प्रोत्थितकन्दलीदलैः।
विभाति शुक्लेतररत्नभूषिता वराङ्गनेव क्षितिरिन्द्रगोपकैः।। ५।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके कविनिबद्धो वक्ता स्वप्रियतमायाः, समक्षं वर्षर्तोः वर्णनं कुर्वन् वक्ति यत् अस्मिन् वर्षर्तौ हरितवर्णैः तृणांकुरैः पृथिवी तथैवाभाति यथा सम्पूर्णायां भूमौ नीलमणिराजयः देदीप्यमांनाः स्युः। इन्द्रगोपकैः परिपूर्णा पृथिवी तथैवाभाति यथा शुक्लेतररत्नभूषिता काचन वराङ्गना भवति।

अन्वयः— प्रभिन्नवैदूर्यनिभैः तृणांकुरैः प्रोत्थितकन्दलीदलैः इन्द्रगोपकैः समाचिता क्षितिः शुक्लेतररत्नभूषिता वराङ्गना इव विभाति।

व्याख्या— प्रभिन्नाः= देदीप्यमानाः ये वैदूर्याः= नीलमणयः तैः निभैः= सदृशैः, तृणांकुरैः, प्रोत्थितकन्दलीदलैः= प्रोत्थिताः= उद्भिन्नाः, याः कन्दलयः= तृणविशेषाः छत्राकाः ताभिः= इन्द्रगोपकैः= कृमिविशेषैः वीरवधूटिभिः, क्षितिः= पृथिवी, शुक्लेतर-रत्नभूषिता= शुक्लेतराभिः= धवलवर्णव्यातिरिक्तवर्णवन्ति, यानि रत्नानि= मण्यादिकानि, तैः भूषिता= समलङ्कृता, या वाराङ्गना वेश्या, सा इव= सदृशं, विभाति= विशेषेण शोभते।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके उपजातिवृत्तम्। (२) पृथिव्याः वाराङ्गनया साम्य दर्णनात् उपमालंकारः। तथा चोक्तं साहित्यदर्पणकारेण 'साम्यं वाच्यमवैधर्म्यं वाक्यैक्ये उपमाद्वयोः' इति। अत्रापि हरिद्वर्णैः तृणांकुरैः कन्दलीभिः, वीरवधूटीभिश्च समलङ्कृतायाः पृथिव्याः शुक्लेतररत्नभूषितया वारनार्या साम्यमभि-हितम्। (३) अल्पसमासवती संघटना, (४) माधुर्यप्रसादौ गुणौ। (५) वैदर्भी रीतिः (६) शृंगाररसाभासश्च।

समासः— प्रभिन्नवैदूर्यनिभैः- प्रभिन्ना ये वैदूर्याः प्रभिन्नवैदूर्याः (कर्मधारयः) तैर्निभैः= प्रभिन्नवैदूर्यनिभैः (तृ० त० पु०) तृणांकुरैः= तृणानामंकुरैः- (ष० त०

पु०) प्रोत्थितकन्दलीदलैः प्रोत्थिताः याः कन्दलयः= प्रोत्थितकन्दलयः (कर्मधारयः) तासां दलैः= प्रोत्थितकन्दलीदलैः (ष० त० पु०) शुक्लेतररत्नभूषिताः= शुक्लादितराणि= शुक्लेतराणि= (ष० त० पु०) शुक्लेतराणि चेमानि रत्नानि= शुक्लेतररत्नानि तैः भूषिताः= शुक्लेतररत्नभूषिताः।

हिन्दी शब्दार्थ— प्रभिन्नवैदूर्यनिभैः= देदीप्यमान नीलमणि के समान, तृणांकुरैः= घास के अंकुरों से, प्रोत्थितकन्दलीदलैः= जमे हुए कुकुरमुत्तों से, इन्द्रगोपकैः= वीर बधूटियों से, समचिता= भरी हुई, क्षितिः= पृथिवी, शुक्लेतररत्नभूषिता= रंग विरंगे रत्नों से सजी हुई, वराङ्गना= वेश्या इव= के समान, शोभते= सुशोभित होती है।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिवद्ध वक्ता अपनी प्रियतमा से कहता है कि इस समय वर्षाकाल में धरती हरी-हरी घासों से परिपूर्ण हो गयी है। कुकुरमुत्ते जम गये हैं, इन सबोंसे से भरी-पूरी पृथिवी इस तरह से लग रही है, जैसे कोई वराङ्गना विभिन्न वर्णों के रत्नों से समलंकृत हो गयी हो।

भावार्थ— हे प्रियतमे! देदीप्यमान नीलमणियों के समान कान्तिवाली घासों, कुकुरमुत्तों तथा वीरवधूटियों से परिपूर्ण पृथिवी, रंगविरंगे रत्नों से सजी हुई वेश्या के समान सुशोभित हो रही है।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में उपजाति वृत्त है। (२) पृथिवी की वेश्या से समता बतलाने के कारण उपमालंकार है। (३) प्रसाद एवं माधुर्य गुण का सद्भाव है। (४) अल्पसमासवती संघटना और वैदर्भी रीति का सद्भाव है।

सदा मनोज्ञं स्वनदुत्सवोत्सुकं विकीर्णविस्तीर्णकलापशोभितम्।
ससंभ्रमालिङ्गनचुम्बनाकुलं प्रवृत्तनृत्यं कुलमद्य बर्हिणाम्।। ६।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— वर्षर्तोः वर्णनस्य प्रसङ्गेन महाकविः वर्णयति यदस्मिन् वर्षाकाले, मयूर्या साकं संजिगमिषुः मयूरवर्गः नर्तनोत्सुकः सन् स्ववर्हभारं प्रसारयति मयूर्याः मुखचुम्बनं च करोति। अतएव मयूरेषु महती उत्सुकताऽवलोक्यते।

अन्वयः— अद्य स्वनत् उत्सवोत्सुकम् विकीर्णविस्तीर्णकलापशोभितम् ससंभ्रमालिङ्गनचुम्बनाकुलं प्रवृत्तनृत्यं वर्हिणाम् कुलं सदा मनोज्ञम्।

व्याख्या— अद्य= साम्प्रतम् वर्षाकाले, स्वनत्= ध्वनिं कुर्वत्, उत्सवोत्सुकम्= उत्सवाय= महोत्सवाय उत्सुकम्= समुत्कण्ठितम् विकीर्णविस्तीर्णकलापशोभितम्= विकीर्णाः= प्रकीर्णा, विस्तीर्णाः= विस्तृताः ये कलापाः= वर्हभाराः, तैः= शोभितम्= सुशोभितम्, ससम्भ्रमालिङ्गनचुम्बनाकुलम्= ससम्भ्रमंम्= सपद्येव, आलिङ्गनम्= कण्ठाश्लेषणम्, चुम्बनञ्च= मुखमेलनञ्च तदर्थमाकुलम्= व्याकुलम्= सर्वदोत्सुकमितिभावः प्रवृत्तनृत्यम्= प्रवृत्तम्= प्रारब्धं नृत्यम्= नर्तनं यस्याऽसौ तथाविधम्, बर्हिणाम्= मयूराणाम्, कुलम्= समूह इति भावः, सदा= सर्वदा, मनोज्ञम्= मनोहरमाभाति। सम्प्रतम् मयूराणाम् केकारवः नर्तनञ्चातीव मनोहरमाभातीति भावः।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके उपजातिवृत्तम्। (२) वर्षर्तौ मयूराणां

स्वाभाविकस्थितिवर्णनात् स्वभावोक्तिरलंकारः। (३) माधुर्यप्रसादौ गुणौ। (४) अल्पसमासा संघटना वैदर्भी रीतिश्च।

समासः— उत्सवोत्सुकम्= उत्सवाय उत्सुकम्= उत्सवोत्सुकम् (च० त० पु०) विकीर्णविस्तीर्णकलापशोभितम्= विकीर्णाः विस्तीर्णाश्च ये कलापाः= विकीर्ण विस्तीर्णकलापाः (कर्मधारयः) तैः शोभितम्= विकीर्णविस्तीर्णकलापशोभितम् (तृ० त० पु०) ससम्भ्रमालिङ्गनचुम्बनाकुलम्= आलिङ्गनं चुम्बनञ्च= आलिङ्गनचुम्बने, (द्वन्द्वः) ससम्भ्रमम् चेमे आलिङ्गनचुम्बने= सम्भ्रमालिङ्गनचुम्बने (कर्मधारयः) तदर्थं आकुलम् यत् तत्= ससम्भ्रमालिङ्गनचुम्बनाकुलम् (ब० ब्री०) प्रवृत्तनृत्यम्- प्रवृत्तं नृत्यं यस्य तत् (ब० ब्री०)।

हिन्दी शब्दार्थ— अद्य= इस समय (वर्षाकाल में) स्वनत्= बोलते हुए, उत्सवोत्सुकम्= उत्सव मनाने के लिए उत्सुक विकीर्णविस्तीर्णकलापशोभितम्= फैले हुए लम्बे-लम्बे वर्हभार से सुशोभित, ससम्भ्रमालिङ्गनचुम्बनाकुलम्= शीघ्र ही मयूरी का आलिङ्गन और चुम्बन करने के लिए आकुल, प्रवृत्तनृत्यम्= नाचने वाले, बर्हिणाम्= मयूरों का, कुलम्= समूह, सदा= हमेशा, मनोज्ञम्= मनोहर लगता है।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिबद्ध वक्ता वर्षाकाल में मयूरों की स्वाभाविक क्रियाओं का वर्णन करते हुए कहता है कि इस समय मयूर मयूरी से मिलने, उसका आलिङ्गन करने तथा चुम्बन करने के लिए आकुल रहते हैं। नाचते हुए मयूर का बिखरा हुआ और लम्बा-लम्बा वर्हभार बड़ा ही सुन्दर लगता है।

भावार्थ— प्रिये! इस समय मयूर केकाध्वनि करते हैं, उत्सव मनाने के लिए उत्सुक, अपनी मयूरी का आलिङ्गन करने तथा चुम्बन करने के लिए आकुल, नाचते हुए मयूर का विकीर्ण तथा विस्तृत वर्हभार देखने में सदा ही मनोहर लगता है।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में उपजातिवृत्त है। (२) स्वभावोक्ति अलंकार है। (३) माधुर्य तथा प्रसाद गुण हैं। (४) अल्पसमासवती संघटना है, तथा (५) वैदर्भी रीति है।

निपातयन्त्यः परितस्तटद्रुमान् प्रवृद्धवेगैः सलिलैरनिर्मलैः।
स्त्रियः सुदुष्टा इव जातिविभ्रमान् प्रयान्ति नद्यस्त्वरितं पयोनिधिम्।।७।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके महाकविः कालिदासो वर्षर्तोः वर्णनप्रसंगेन वक्ति यत् साम्प्रतं मलिनजलैः परिपूर्णाः तटद्रुमानुत्पाटयन्त्यः शीघ्रतया वेगपूर्वकं पयोनिधिं प्रति तेनैव प्रकारेण यान्ति येन प्रकारेण कुलाचारमुल्लंघ्य स्वैरिण्यः कामचारं प्रति प्रवृत्ताः भवन्ति।

अन्वयः— प्रवृद्धवेगैः अनिर्मलैः सलिलैः परितः तटद्रुमान् सुदुष्टाः स्त्रियः जातिविभ्रमान् इव निपातयन्त्यः नद्यः पयोनिधिम् त्वरितं प्रयान्ति।

व्याख्या— प्रवृद्धवेगैः=प्रवृद्धः= प्रकर्षं गतो वेगः= रयः येषां तथाभूतैः अनिर्मलैः= ननिर्मलमनिर्मलमस्वच्छमिति भावः, वर्षर्तौ नदीनां जलम् मलिनं भवतीति दृश्यत एव, सलिलैः= जलैः, परितः= सर्वतः, तटद्रुमान्= कूलस्य पादपान् 'अभितः

परितः समया निकषा हा प्रतियोगेऽपी' ति द्वितीया, सुदुष्टाः= स्वैरिण्यः दुष्टस्वभावयुक्ताः, स्त्रियः= कामिन्यः जातिविभ्रमान्= वंशाचारान् इव= सदृशम्, निपातयन्त्यः= उत्पाटयन्त्यः नद्यः= सरितः पयोनिधिम्= समुद्रम्, प्रति अत्रापि प्रतियोगे द्वितीया, त्वरितम्= शीघ्रतया, प्रयान्ति।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके सन्ति उपजातिवृत्तम्। (२) उपमालंकारः, नदीस्वैरिण्योः साम्यवर्णनात्। तथाचोक्तं साहित्यदर्पण कर्त्रा' 'साम्यं वाच्यमवैधर्म्यं वाक्यैक्ये उपमाद्वयोः।' इति। (३) अल्पसमासवती रचना। (४) माधुर्यप्रसादाख्यावत्र गुणौ। (५) वैदर्भी रीतिः। (६) शृंगाररसाभासश्च

समासः— प्रवृद्धवेगैः= प्रवृद्धः वेगो येषां ते तथाभूतैः (ब० ब्री०) अनिर्मलैः= न निर्मलमनिर्मलं तथाभूतैः (ब० ब्री०) तटद्रुमान्= तटस्य द्रुमान् (ष० त० पु०) जातिविभ्रमान्= जातेः विभ्रमान् (ष० त० पु०)।

हिन्दी शब्दार्थ— प्रवृद्धवेगैः= जिनका वेग बहुत बढ़ गया है, अनिर्मलैः= गन्दे, सलिलैः= जलों से, परितः= चारो ओर, तटद्रुमान्= किनारे के वृक्षों को, सुदुष्टाः= अत्यन्त दुष्ट स्वभाव वाली व्यभिचारिणी, स्त्रियः= रमणियों द्वारा, जातिविभ्रमान्= कुलाचारों के, इवं= समान निपातयन्त्यः= उखाड़ती हुई, नद्यः= नदियाँ, पयोनिधिम् प्रति= समुद्र के पास, त्वरितम्= शीघ्रतापूर्वक, यान्ति= जा रही हैं।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिबद्ध वक्ता अपनी प्रियतमा से कह रहा है कि इस समय नदियों के जल का वेग बढ़ गया है, बाढ़ के कारण उनका जल मटमैला हो गया है। वे उसी तरह से किनारे के वृक्षों को उखाड़ती हुई शीघ्रता के साथ अपने प्रेमी समुद्र के पास जा रही हैं जिस तरह से दुष्ट स्वभाव वाली स्त्रियाँ अपनी कुलपरम्परा पर ध्यान दिए बिना उसको विनष्ट करके, अपने मन में बुरा भाव होने के कारण, अपने रमणों के पास चली जाती हैं।

भावार्थ— हे प्रिये! समृद्धवेग वाले मटमैले जल से भरी हुई तथा किनारे के वृक्षों को उखाड़ती हुई नदियाँ शीघ्रता पूर्वक उसी तरह से समुद्र के पास जा रही हैं; जिस तरह से व्यभिचारिणी स्त्रियाँ अपने कुलाचार को विनष्ट कर अपने प्रेमियों के पास जाती हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में उपजातिवृत्त है। (२) मटमैले जल से भरी नदियों का व्यभिचारिणी स्त्रियों से साम्य बतलाये जाने के कारण उपमालंकार है। (३) अल्पसमासवाली संघटना है। (४) प्रसाद और माधुर्यगुण का इस श्लोक में सद्भाव है। (५) वैदर्भी रीति है। (६) शृंगाररसाभास का इसमें सद्भाव है।

तृणोत्करैरुद्गतकोमलांकुरैर्विचित्रनीलैर्हरिणीमुखक्षतैः।
वनानि वैन्ध्यानि हरन्ति मानसं विभूषितान्युद्गतपल्लवैर्द्रुमैः।। ८।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— वर्षर्तोः वर्णनस्य प्रसङ्गेनास्मिञ्छ्लोके महाकविः वर्णयति यत् साम्प्रतंम शष्पेषु कोमलांकुराः प्रस्फुटिताः सन्ति। हरिणीनां मुखेन खण्डिताः अपिशष्पाणां पुनरुद्गतपल्लवाः हरितवर्णाः सन्तः विन्ध्यवने विद्यमानाः पश्यतां जनानां मनांसि हठादाकर्षयन्ति।

अन्वयः— उद्गतकोमलांकुरैः विचित्रनीलैः, हरिणीमुखक्षतैः, तृणोत्करैः, उद्गत पल्लवैः द्रुमैः विभूषितानि वैन्ध्यानि वनानि मानसं हरन्ति ।।

व्याख्या— उद्गतकोमलांकुरैः= उद्गताः= उद्भिन्नाः ये कोमलाः मृदवः, अंकुराः= प्ररोहाः तैः उत्पन्नमृदुकोमलप्ररोहैरिति यावत्। विचित्रनीलैः= विचित्राः अद्भुताश्च ते, नीलाः= नीलवर्णाः, तैः, हरिणीमुखक्षतैः, हरिण्याः= मृग्याः, मुखेन= वदनेन, क्षतैः= खण्डितैः जग्धै रिति यावत् तृणोत्करैः= तृणानाम्= शष्पाणाम्, उत्करैः= समूहैः, उद्गतपल्लवैः= पुनः उद्गताः= उद्भिन्नाः पल्लवाः= किसलयाः येषु तथाविधैः, द्रुमैः= वृक्षैः विभूषितानि= समलंकृतानि, वैन्ध्यानि= विन्ध्याचल-सम्बन्धीनि, वनानि= अरण्यकानि, मानसम्= अन्तः करणं, हठात् हरन्ति= स्ववशीकुर्वन्ति ।

साहित्यिकविशेषताः— (१) उपजातिवृत्तमस्ति श्लोकेस्मिन्। (२) विन्ध्यवनस्य स्वाभाविकं वर्णनमत्र विद्यते। अतएवात्र स्वभावोक्तिरलङ्कारः। (३) अल्पसमासवती रचना। (४) प्रसादाख्यो गुणः (५) वैदर्भी रीतिश्च।

समासः— उद्गतकोमलांकुरैः= उद्गताः कोमलाः अंकुराः येषु तैः= (ब० ब्री०) विचित्रनीलैः= विचित्राश्चनीलाश्चते तैः (द्वन्द्वः) हरिणीमुखक्षतैः- हरिण्याः मुखम्= हरिणीमुखम् (ष० त० पु०) तेन क्षता ये ते तैः= (ब० ब्री०) तृणोत्करैः= तृणानाम् उत्करैः- (ष० त० पु०) उद्गतपल्लवैः- उद्गताः पल्लवाः येषु तैः (ब० ब्री०)।

हिन्दी शब्दार्थ— उद्गतकोमलांकुरैः= जिनमें नवीन कोमल अंकुर निकल चुके हैं, विचित्रनीलैः= आश्चर्यकारी नीलवर्ण वाले, हरिणीमुखक्षतैः= हरिणी के द्वारा चर लिए गए; तृणोत्करैः= तृणसमूहों तथा, उद्गतपल्लवैः= जिनमें पल्लव निकल चुके हैं उन, द्रुमैः= वृक्षों के द्वारा, विभूषितानि= समलंकृत, वैन्ध्यानि= विन्ध्याचल के, वनानि= वन (देखने वालों के) मानसम्= मन को, हरन्ति= हठात् अपने वश में कर लेते हैं।

उपस्थापन— इस श्लोक में महाकवि वर्षा ऋतु के वर्णन के प्रसंङ्ग में बतला रहे हैं कि इस समय, जिनको यहाँ की हरिणयों ने चर लिया है। वे घासों के कोमल अंकुर आश्चर्यकारी तथा हरितवर्ण के प्रतीत होते हैं उन घासों में नये अंकुर निकल आये हैं। वृक्षों के भी नये-नये पत्ते निकल गए हैं, इसके कारण वे भी अत्यन्त मनोहर लग रहे हैं। इन सबों से सुशोभित विन्ध्याचल का वन देखने वालों के मन को बरबस अपने वश में कर लेते हैं।

भावार्थ— निकले हुए कोमल अंकुर वाले, आश्चर्यकारी हरे-हरे तथा मृगियों के द्वारा चर लिए गए तृण समूहों तथा जिनमें नवीन कोमल पल्लव निकल आए हैं उन वृक्षों से सुशोभित विन्ध्याटवी देखने वालों के मन को अपने वश में कर लेती है।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में उपजाति वृत्त है। (२) स्वभावोक्ति अलंकार है। (३) प्रसादगुण है तथा रचना अल्पसमासों वाली है। (४) इसमें वैदर्भी रीति का सद्भाव है।

विलोलनेत्रोत्पलशोभिताननैर्मृगैः समन्तादुपजातसाध्वसैः।
समाचिता सैकतिनी वनस्थली समुत्सुकत्वं प्रकरोति चेतसः।। ९।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके महाकविः कालिदासः विन्ध्याटव्याः वर्णनं कुर्वन् वक्ति यत् वनस्थलीयं सैकतिनी वर्त्तते। इमां वनस्थलीं चञ्चलनेत्राः, मृगाः अध्यासन्ते। तथाविधैः मृगैरर्चितं वनस्थलं पश्यतां मनांसि समुत्सुकानि कुर्वन्ति।

अन्वयः— विलोलनेत्रोत्पलशोभिताननैः समन्तात् उपजातसाध्वसैः मृगैः समाचिता सैकतिनी वनस्थली चेतसः समुत्सुकत्वं प्रकरोति।

व्याख्या— विलोलनेत्रोत्पलशोभिताननैः-विलोलानि= चञ्चलानि, नेत्राणि= नयनानि, एव उत्पलानि= कमलानि तैः शोभितानि= मण्डितानि, आननानि= मुखानि, येषां तैः, समन्तात्= सर्वतः उपजातसाध्वसैः= उपजातम्= उत्पन्नम्, साध्वसम्= भयम्, येषां तैः, मृगैः= हरिणैः, समन्विता= परिपूर्णा, सैकतिनी= बालुकामयी, वनस्थली= वनस्य प्राकृता भूमिः, चेतसः= अन्तः करणस्य, समुत्सुकत्वम्= आनन्द-मयत्वं, प्रकरोति= विदधाति।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके सन्ति उपजातिवृत्तम्। (२) वनस्य यथायथं वर्णनम्। (३) मध्यमसमासवती संघटना। (४) माधुर्यगुणः। (५) वैदर्भी रीतिश्च। (६) रूपकालंकारः नेत्रेषूत्पलत्वारोपात्।

समासः— विलोलनेत्रोत्पलशोभिताननैः= विलोलानि चेमानि नेत्राणि= विलोलनेत्राणि (कर्मधारयः) तान्येव उत्पलानि, विलोलनेत्रोत्पलानि (उपमितसमासः) तैः शोभितानि आननानि येषां ते तैः (ब० ब्री०) उपजातसाध्वसैः= उपजातंम साध्वसं येषु तैः (ब० ब्री०),।

हिन्दी शब्दार्थ— विलोलनेत्रोत्पलशोभिताननैः- चञ्चलनेत्र कमल से जिनका मुख सुशोभित हो रहा है, समन्तात्= चारों ओर से, उपजातसाध्वसैः= जिनमें भय उत्पन्न हो गया है ऐसे, मृगैः= मृगों द्वारा, समाचिता= परिपूर्ण, वनस्थली= वन, चेतसः= अन्तः करण में, समुत्सुकत्वम्= उत्सुकता, प्रकरोति= उत्पन्न कर देता है।

उपस्थापन— इस श्लोक में कवि वर्षा ऋतु की वनस्थली का वर्णन कर रहे हैं। वे बतलाते हैं कि वनस्थली बालुकामयी है। उसमें मृग बैठे हुए हैं, उनके नेत्र नील कमल के समान मनोहर तथा चञ्चल हैं। इन मनोज्ञ नेत्रों से मृगों का मुख सुशोभित हो रहा है। ऐसी वनस्थली को देखकर सहसा मन में एक प्रकार की उत्सुकता उत्पन्न हो जाती है।

भावार्थ— जिनका मुख नील कमल के समान नेत्रों से सुशोभित हो रहा है, ऐसे भयभीत मृगों से सब ओर से भरी हुई बालुकामयी वनस्थली, हृदय की उत्कण्ठा को बढ़ा देती है।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में उपजाति वृत्त है। (२) नेत्रों में उत्पलत्व का आरोप होने से रूपकालंकार है। (३) अल्पसमासवती संघटना है। (४) माधुर्य और प्रसाद गुण का सद्भाव है। (५) वैदर्भी रीति है।

अभीक्ष्णमुच्चैर्ध्वनता पयोमुचा घनान्धकारीकृतशर्वरीष्वपि।
तडित्प्रभादर्शितमार्गभूमयः प्रयान्ति रागादभिसारिकाः स्त्रियः ।।१०।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके महाकविः वर्णयति यत् वर्षर्तौ अस्मिन् तमिस्राः घनान्धकाराच्छन्नाः वर्तन्ते। आकाशे प्रसृतो मेघः उचैर्ध्वनिं करोति। क्वापि मार्गो न दृश्यते यद्यपि तथापि अभिसारिकाः तडित् प्रभायां मार्गमवलोक्य रागातिरेकात्-स्वप्रियतमानां सविधे यान्ति।

अन्वयः— अभीक्ष्णम् उच्चैः ध्वनता पयोमुचा घनान्धकारीकृतशर्वरीषु अपि तडित्प्रभादर्शितमार्गभूमयः अभिसारिकाः स्त्रियः रागात् प्रयान्ति।

व्याख्या— अभीक्ष्णम्= असकृत् बहुबारमिति यावत्, उच्चैः= गम्भीरस्वरेण, ध्वनता= गर्जनं कुर्वता, पयोमुचा= मेघेन घनान्धकारीकृतशर्वरीष्वपि= घनः= निविडः अन्धकारः= तमः, घनान्धकारः, न घनन्धकारः अघनान्धकारः, अघनान्धकारः घना-घन्धकारः सम्पादितः इति धनान्धकारीकृताः= निबिडान्धकाराच्छन्नाः सम्पादिताः या शर्वर्यः= रात्र्यः तास्वापि घनान्धकारीकृतशर्वरीष्वपि, तडित्प्रभादर्शितमार्गभूमयः= तडितः= विद्युतः प्रभा= कान्तिः तया दर्शितः= प्रकाशितः, मार्गस्य= पथः, भूमिः= धरित्री याभिः ताः तथाविधाः, अभिसारिकाः= उपपतिभिः सह संगमनोत्सुका 'कान्ता-र्थिनी तु या याति संकेतं साऽभिसारिका' इत्यमरः। स्त्रियः= रमण्यः, रागात्= कामजन्यस्नेहातिशयात्, प्रयान्ति= संकेतस्थानं प्रति यान्ति।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके उपजातिवृत्तम्। (२) अभिसारिकाणां वर्णनम्। (३) मध्यमसमासवती वृत्तिः। (४) माधुर्यगुणः (५) वैदर्भी रीतिश्च।

समासः— घनान्धकारीकृतशर्वरीषु- घनःश्चासौ अन्धकारः घनान्धकारः (कर्म-धारयः) घनान्धकारोऽघनान्धकारः, अघनान्धकारो घनान्धकारः कृतः इति घनान्-धकारीकृतः। (अभूततद्भावेच्विः) घनान्धकारीकृताश्चेमाः शर्वर्यः तासु= घनान्ध-कारीकृतशर्वरीषु (ब० ब्री०) तडित्प्रभादर्शितमार्गभूमयः- तडितः प्रभा= तडित्प्रभा (ष० त० पु०) तडित्प्रभया दर्शिता मार्गस्य भूमिः याभिः ताः (ब० ब्री०)।

हिन्दी शब्दार्थ— अभीक्ष्णम्= बार-बार, उच्चैः= जोर-जोर से, ध्वनता= गर्जने वाले, पयोमुचा= मेघ के द्वारा, घनान्धकारीकृतशर्वरीष्वपि= घनान्धकारयुक्त रात्रियों में भी, तडित्प्रभादर्शितमार्गभूमयः= बिजली के प्रकाश में रास्ते की भूमि को देखकर चलने वाली, अभिसारिकाः स्त्रियः= उपपतियों के साथ सहवास की इच्छा वाली स्त्रियाँ, रागात्= प्रेमातिशय के कारण, प्रयान्ति= संकेतस्थल पर जाती हैं।

उपस्थापन— इस श्लोक में अभिसारिकाओं का वर्णन करते हुए कवि कहते हैं कि बरसात की रात बादलों के घिर जाने से और अन्धकाराछन्न हो जाती है; फिर भी अपने प्रेमियों के प्रति गाढानुराग होने के कारण अभिसारिकाएं बादलों की बार-बार घोर गर्जना को सुनकर भी नहीं डरती हैं। वे अन्धेरी रात में भी चमकने वाली बिजली के प्रकाश में रास्ते की भूमि देख-देख कर अपने प्रेमी से मिलने के लिए संकेत स्थान की ओर चली जा रही हैं।

भावार्थ— बार-बार गरजने वाले मेघों से आच्छन्न होने के कारण अत्यन्त अन्धेरी रात में भी चमकने वाली बिजली के प्रकाश में रास्ता देखकर प्रेमवशात् अभिसारिकाएँ तेजी से अपने प्रियतम के पास मिलने के लिए जा रही हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में उपजाति वृत्त है। (२) अभिसारिका नायिकाओं का भी सजीव वर्णन है। (३) मध्यमसमास वाली रचना है। (४) प्रसाद एवं माधुर्य गुण का सन्निवेश है। (५) वैदर्भी रीति है। (६) सम्भोगश्रृंगाररसाभास है।

पयोधरैर्भीमगभीरनिःस्वनैस्तडिद्भिरुद्वेजितचेतसो भृशम्।
कृतापराधानपि योषितः प्रियान्परिष्वजन्ते शयने निरन्तरम्।। ११।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके महाकविः वर्णयति यत् वर्षर्तावस्मिन् रात्रौ मेघाः गर्जनं कुर्वन्ति, विद्युदसकृत् विद्योतते, तेन कान्तानां मनांसि भयभीतानि भवन्ति। अतएव भीतिभीतास्ताः कृतापराधानपि प्रियतमान् शयनेषु असकृदालिङ्गनं कुर्वन्ति।

अन्वयः— भीमगभीरनिःस्वनैः पयोधरैः (गंभीरनिस्वनैः) तडिद्भिः भृशं उद्वेजित-चेतसः योषितः कृतापराधान् अपि प्रियान् शयने निरन्तरम् परिष्वजन्ते।

व्याख्या— भीमगभीरनिःस्वनैः- भीमः= भयङ्करः, गभीरः= अतिघोरः, निःस्वनः= ध्वनिर्येषां तैः, तारस्वरेण भयङ्करध्वनिकारिभिः पयोधरैः= मेघैः, तडिद्भिः= चपलाभिः 'तडिद् विद्युच्चञ्चला चपला अपि' इत्यमरः, भृशम्= अत्यधिकम् उद्वेजितचेतसः= उद्वेजितानि= उद्विग्नीकृतानि, चेतांसि= अन्तः करणानि यासां ताः तथाविधाः योषितः= रमण्यः, कृतापराधान् कृतः= सम्पादितः, अपराधः= परस्त्री-गमनादिरूपः अपराधो यैः तथाविधान् अपि, प्रियान्= प्रियतमान् स्वपतीन्, शयने= शय्यायां निरन्तरम्= सततम्, परिष्वजन्ते= आलिङ्गनं कुर्वन्ति।

कृतापराधाद् यद्यपि प्रियतमा आलिङ्गनार्हाः नहि सन्ति अथापि तडितः चमत्कृतिं वीक्ष्य श्रुत्वा भयंङ्करं ध्वनिम् मेघानां ताः अकामेनापि भीतिभीताः सत्यः तेषामालिङ्गनं कुर्वन्ति अविरतम्।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके उपजातिवृत्तम्। (२) सम्भोगश्रृंगा-रात्मकं वर्णनम्। (३) माधुर्यप्रसादाख्यौ गुणौ। (४) अल्पसमासवती संघटना। (५) वैदर्भी रीतिश्च।

समासः— भीमगभीरनिःस्वनैः- भीमः गभीरश्चनिस्वनो येषां ते तैः (ब० ब्री०), उद्वेजितचेतसः= उद्वेजितानि चेतांसि यासां ताः (ब० ब्री०), कृतापराधान्= कृतः अपराधो यैस्ते तान् (ब० ब्री०)।

हिन्दी शब्दार्थ— भीमगभीरनिःस्वनै- भयंकर एवं जोर-जोर से गर्जना करने वाले, पयोधरैः= मेघों द्वारा तडिद्भिः= बिजली के चमकने से, भृशम्= अत्यन्त, उद्वेजितचेतसः= उद्विग्न अन्तः करण वाली, स्त्रियः= रमणियाँ, कृतापराधान् अपि= अपराधी भी, प्रियान्= प्रियतमों को, शयने= अपनी शय्या पर, निान्तरम्= सदा परिष्वजन्ते= आलिङ्गन करती हैं।

उपस्थापन— इस श्लोके में महाकवि कालिदास बतला रहे हैं कि बरसात के

दिनों में रात्रि में जब वर्षा होती है तो बादल गर्जता है। उसकी भयंकर और गंभीर गर्जना सुनकर रमणियाँ डर जाती हैं। उस समय उनका हृदय तो और उद्विग्न हो जाता है, जबकि तेज बिजली चमकती है। बादल की गर्जना सुनकर और बिजली की चमक देखकर भयभीत रमणियाँ शय्या पर अपने अपराधी प्रियतम से नाराज़ होकर यदि सोयी रहती हैं तो वे उनको पकड़कर उनसे सट जाती हैं। उस समय उनका मान समाप्त हो जाता है और बिना अनुनय के ही अपने पतियों का आलिङ्गन करने लगती है।

भावार्थ— मेघ की भयंकर तथा गंभीर गर्जना एवं बिजलियों की चमक से भयभीत रमणियाँ शय्या पर अपने अपराधी पतियों का निरन्तर आलिङ्गन करने लगती हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में उपजाति वृत्त है। (२) नारी स्वभाव का स्वाभाविक वर्णन है। (३) सम्भोग शृंगार रस का सद्भाव है। (४) माधुर्य एवं प्रसाद गुण हैं तथा (५) वैदर्भी रीति है।

विलोचनेन्दीवरवारिबिन्दुभिर्निषिक्तबिम्बाधरचारुपल्लवाः।
निरस्तमाल्याभरणानुलेपनाः स्थिताः निराशाः प्रमदाः प्रवासिनाम्।। १२।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके महाकविः कालिदासः वर्षर्तोः वर्णनस्य प्रसङ्गेन वक्ति यत् यासां प्रमदानां पतयः प्रवासात् अस्मिन् ऋतौ स्वगृहं नायान्ति तासां प्रमादानां नीलकमलतुल्येभ्यो नेत्रेभ्यो सदाश्रुपातो भवति। कुत्रापि ताः शर्म न लभन्ते। तासां नवकिसलयतुल्यौ ओष्ठौ अश्रुवारिविन्दुभिर्निषिक्तौ भवतः। विषण्णास्ताः माल्याभरणादिकं नाहि धारयन्ति परित्यजन्ति च स्रक्चन्दनानुलेपनादिकम्।

अन्वयः— प्रवासिनाम् विलोचनेन्दीवरवारिबिन्दुभिः निषिक्तबिम्बाधरचारुपल्लवाः निरस्तमाल्याभरणानुलेपनाः प्रवासिनां प्रमदाः निराशाः स्थिताः।

व्याख्या— प्रवासिनाम्= विदेशे निवासकारिणाम्, विलोचनेन्दीवरवारिविन्दुभिः= विलोचने= सुन्दरे नयने एव इन्दीवरे= नीलकमले। सुन्दरीणां नयने नीलकमल-तुल्यातीवाकर्षके भवत इति कवि समयः। तयोः वारिणाम्= अश्रूणाम् विन्दुभिः= प्रसरद्भिः अश्रुजलकणैरिति भावः, निषिक्तबिम्बाधरचारुपल्लवाः= निषिक्ताः= संसिक्ताः, बिम्बाधराः= बिम्बफलवदति कमनीयाः दन्तच्छदाः चारुपल्लवाः= मनोज्ञ-किसलयाः यासां ताः। सिञ्चिताधरोष्ठा इति भावः निरस्तमाल्याभरणानुलेपनाः= निरस्तानि= परित्यक्तानि माल्याभरणानि= स्रगाभूषिणनि, अनुलेपनानि= चन्दना-दिलेपनानि याभिस्ताः तथाविधाः प्रमदाः= रमण्यः, निराशाः= आशया विरहिताः विषण्णहृदया इति भावः स्थिताः= गृहेषु तिष्ठन्तीति यावत्।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके उपजाति वृत्तम्। (२) रूपकालंकारः नेत्रेषु नीलकमलत्वारोपात् अधरेषु चारुपल्लवत्वारोपाच्च। तथा चोक्तं साहित्यदर्पण-कर्त्रा- 'रूपकं रूपिताऽरोपो विषये निरुपह्नवे।' इति। (३) विप्रलम्भशृंगाररसः प्रवासहेतुकः। (४) माधुर्यप्रसादाख्यौ गुणौ। (५) अल्पसमासवती संघटना। (६) वैदर्भी रीतिश्च। (७) विरहिण्याः वर्णनम्।

समासः— विलोचनेन्दीवरवारिविन्दुभिः= विलोचने एव इन्दीवरे= विलोचनेन्दीवरे (उपमितः समासः) तयोः वरिविन्दुभिः (ष० त० पु०) निषिक्ताः बिम्बाधराः= निषिक्त= बिम्बाधराः (कर्मधारयः) निषिक्तबिम्बाधरा एव चारुपल्लवाः यासां तास्तथाविधाः= निषिक्तबिम्बाधरचारुपल्लवाः (ब० ब्री०) निरस्तमाल्याभरणानुलेपनाः= निरस्तानिमाल्याभरणानि अनुलेपनानि च याभिः ताः (ब० ब्री०)।

हिन्दी शब्दार्थ— प्रवासिनाम्= परदेशियों के, विलोचनेन्दीवरवारिविन्दुभिः= नेत्ररूपी नीलकमल के जल विन्दुओं से अर्थात् आँसुओं से, निषिक्तबिम्बाधरचारुपल्लवाः= जिनके मनोज्ञ किसलयों के समान अधरोष्ठ विम्ब भींग गए हैं, निरस्तमाल्याभरणानुलेपनाः= जिन सबों ने माला पहनना तथा चन्दनानुलेपन करना त्याग दिया, वे प्रमदाः= रमणियाँ, निराशाः= निराश, स्थिताः= हो गयी हैं।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिबद्ध वक्ता अपनी प्रियतमा के समक्ष वर्षा ऋतु के वर्णन के प्रसङ्ग में कहता है कि जिन रमणियों के प्रियतम इस वर्षा ऋतु में भी अपने घर नहीं लौटे हैं वे अपने घर में उदास बैठी रहती हैं। उनके नीलकमल के समान मनोहर आँखों से पानी निकलता रहता है जिससे कि उनके बिम्बाफल के समान लाल ओष्ठ भिंगे रहते हैं। उन सबों ने माला पहनना तथा चन्दनानुलेपन करना त्याग दिया है। उनको अब इस ऋतु में अपने पतियों के घर लौटने की कोई आशा नहीं रह गयी है।

भावार्थ— जिनके परदेशी प्रियतम घर नहीं आए उन रमणियों के नीलकमल के समान आँखों से निकलने वाला आँसू उनके किसलय दल के समान मनोहर ओष्ठों को धो दे रहा है। माला पहनना तथा चन्दनानुलेपन करना त्यागकर अब वे उदास रहा करती हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में उपजाति वृत्त है। (२) प्रवास हेतुक विप्रलम्भ शृंगार रस है। (३) नेत्रों में नीलकमल के आरोप तथा ओष्ठों में मनोज्ञ किसलय का आरोप होने से रूपकालंकार है। (४) माधुर्य एवं प्रसाद नामक गुणों का सद्भाव है। (५) अल्पसमासवती संघटना और वैदर्भी रीति है। (५) विरहिणी रमणी का मनोहर वर्णन है।

विपाण्डुरं कीटरजस्तृणान्वितं भुजंगवद्वक्रगतिप्रसर्पितम्।
ससाध्वसैर्भेककुलैर्निरीक्षितं प्रयाति निम्नाभिमुखं नवोदकम्।। १३।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— वर्षर्तोः वर्णनस्य प्रसङ्गेन महाकविः कालिदासो वर्णयति यदस्मिनृतौ वर्षायाः नवीनं जलम् मृतिकामिश्रितत्वात् धूसरितवर्णं सत् कीटधूलितृणादिभिः युक्तं तेनैव प्रकारेण वक्रगत्या प्रवहति येन प्रकारेण सर्पो वक्रगत्या प्रसर्पति। तथाविधं प्रवहमानं पानीयं प्रेक्ष्य भेको भयभीतो भवति सर्पभिया। इत्थं जलम् निम्नगं वर्त्तते। रजोयुक्तत्वात् निम्नगामित्वं नरस्यापि विलोक्यते। नवोदकमिदं सर्पवदाभातीति वक्तुरभिप्रायः।

अन्वयः— विपाण्डुरं कीटरजस्तृणान्वितं भुजंगवद्वक्रगतिप्रसर्पितम् ससाध्वसैः भेककुलैः निरीक्षितं नवोदकम् निम्नाभिमुखं प्रयाति।

व्याख्या— विपाण्डुरम्= विशेषेण पाण्डुरम्= पाण्डुवर्णम्, मृत्तिकामिश्रितत्वात्, कीटरजस्तृणान्वितम्= कीटाश्च= क्षुद्रजन्तवश्च, रजांसि च= मृत्तिकांशश्च, तृणानि च तैरन्वितम्= युक्तम् एभिर्वस्तुभिर्दूषितमितिभावः, भुजंगवत्= सर्पवत् वक्रगति-प्रसर्पितम्= वक्रा= कुटिला या गतिः= गमनम् तया प्रसर्पितम्= प्रवहमानम्, ससाध्वसैः= भयपूर्वकमिति भावः, भेककुलैः= भेकानाम्=मण्डूकानाम्, कुलैः= समूहैः, निरीक्षितम्= विलोकितम्, नवोदकम्= वर्षायाः नवीनं जलम्, निम्नाभिमुखम्= अधोऽधः प्रयाति= प्रवहति ।।

विशेषः— (१) अस्मिञ्छ्लोके उपजातिवृत्तम् । (२) उपमालङ्कार वक्रगत्याप्रवहमानस्य वर्षायाः जलस्य सर्पेण साकं साम्य वर्णनात् । (३) वक्रगत्या प्रवहमानं जलं वीक्ष्य भेकस्य भीतेरुत्पत्तेः भ्रमालंकारः । (४) प्रसादाख्यो गुणः । (५) अल्पसमासवती संघटना । (६) वैदर्भी रीतिश्च ।

समासः— कीटरजस्तृणान्वितम्- कीटाश्च, रजांसि, च तृणानि च कीटरजस्तृणानि (समाहारद्वन्द्वः) तैरन्वितम् यत् तत् (ब० ब्री०), वक्रगतिप्रसर्पितम्= वक्रा चाऽसौ गतिः= वक्रगतिः (कर्मधारयः) तया प्रसर्पितम् (तृ० त० पु०) भेककुलैः= भेकानाम् कुलैः (ष० त० पु०)।

हिन्दी शब्दार्थ— विपाण्डुरम्= पीला-पीला, कीटरजस्तृणान्वितम्= कीड़े, धूल तथा घास से युक्त, भुजंगवत्= सांप के समान, वक्रगतिप्रसर्पितम्= टेढ़ी-मेढ़ी गति से सरकने वाला, ससाध्वसम्= भयपूर्वक, भोककुलैः= मेढकों द्वारा, निरीक्षितम्= देखा जाने वाला, नवोदकम्= वर्षा का नया जल, निम्नाभिमुखम्= नीचे की ओर, प्रयाति= बह रहा है।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिवद्ध वक्ता वर्षा ऋतु के वर्णन के प्रसंग में कहता है कि वर्षा का नया-नया पानी, कीचड़, कीड़े, घास इत्यादि के कारण गदला हो गया है। उसका रंग भी बदल गया है। टेढ़ी-मेढ़ी चाल से बहते हुए उस जल को देखकर मेढक इसलिए डर जाते हैं कि कहीं यह सांप न हो। सांप भी तो धूमिल वर्ण का तथा टेढ़ी-मेढ़ी चाल से चलने वाला होता है। पानी का स्वभाव ही होता है कि वह नीचे की ओर बहता है।

भावार्थ— कीड़ों-मकोड़ों, मिट्टी तथा घास से दूषित, पीला-पीला वर्षा का नया जल टेढ़ी-मेढ़ी गति से नीचे की ओर बह रहा है, जिसे देखकर मेढ़क डर जाते हैं कि कहीं यह साँप न हो।

विशेष— (१) इस श्लोक में उपमा तथा भ्रमालंकार की संसृष्टि है। (२) उपजाति वृत्त है। (३) प्रसादगुण है। (४) अल्पसमासवती संघटना है। (५) वैदर्भी रीति है।

विपत्रपुष्पां नलिनीं समुत्सुका विहाय भृङ्गाः श्रुतिहारिनिःस्वनाः ।
पतन्ति मूढाः शिखिनां प्रनृत्यतां कलापचक्रेषु नवोत्पलाशया ।। १४ ।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके महाकविर्वर्णयति यत् वर्षर्तुरयं प्रारब्धो वर्त्तते ।

अतएव नलिनीवनं पत्रपुष्परहितमास्ते। किन्तु मयूरा वनेषु नृत्यन्ति। भ्रमराः तथाविधां नलिनीं विहाय साम्प्रतम् प्रवृत्तनृत्यानां मयूराणां कलापचक्रं-वीक्ष्य, तदभिमुखाः भवन्ति, पुष्पविशेषशङ्क्या तेषां भ्रमो भवति मयूरकलापचके नवीनस्य नीलकमलस्य।

अन्वयः— समुत्सुकाः श्रुतिहारिनिःस्वनाः मूढाः विपत्रपुष्पां नलिनीं विहाय नवोत्पलाशया प्रनृत्यतां शिखिनां कलापचक्रेषु पतन्ति।

व्याख्या— समुत्सुकाः= सम्यग्रूपेणोत्साहसमन्विताः, श्रुतिहारिनिःस्वनाः= श्रुतिम्= श्रवणम्, हरन्ति= समाकर्षन्तीति श्रुतिहारिणः= श्रोत्रपेया इति यावत् निःस्वनाः= गुञ्जनध्वनिर्येषां ते तथाविधाः, मूढाः= मुग्धाः, भृङ्गाः= भ्रमराः, विपत्र-पुष्पम्= विगतेपत्रपुष्पे यस्याः सा ताम्= दलकुसुमविरहितामिति भावः, नलिनीम्= कमलिनीम्, विहाय= परित्यज्य सत्यामेव सम्पत्तौ सर्वे स्पृहयन्ति इति व्यज्यते, नवोत्प-लाशया= नवञ्चेदेमुत्पलम्= नवोत्पलम्= नवीनं नीलकमलम्, तस्य आशया= शंकया, प्रनृत्यताम्= प्रकर्षेण नर्तनं कुर्वताम्, शिखिनाम्= मयूराणाम्, कलापचक्रेषु= वर्हसमूहेषु, पतन्ति= निपतन्ति।

सौगन्ध्य-सौन्दर्य-समन्वितमेव वस्तु सेवन्ते भ्रमराः, कामिनोऽपि सौन्दर्य-यौवन सम्पन्नमेवयौवतम् सेवन्ते इति नायकस्य कार्य कलापो नायकोक्त्या व्यज्यते।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके उपजातिवृत्तम्। (२) मयूराणां कलापचक्रं वीक्ष्य नवोत्पलशङ्कायाः भ्रमरेषूत्पन्नत्वाद्भ्रमालङ्कारः। (३) व्यंग्यार्थ प्रधानोऽयं श्लोकः, (४) माधुर्यप्रसादाख्यावत्रगुणौ (५) वैदर्भी रीतिश्चात्र।

समासः— श्रुतिहारिनिःस्वनाः= श्रुतिम् हरतीति= श्रुतिहारी (द्वि० त० पु०) तथाविधो निः स्वनो येषां ते तथाभूताः (ब० व्री०), विपत्रपुष्पाम्= विगते पत्रपुष्पे यस्याः सा ताम् (ब० ब्री०), नवोत्पलाशया= नवं चेदमुत्पलम् (कर्मधारयः) तस्याशा तया (ष० त० पु०)।

हिन्दी शब्दार्थ— समुत्सुकाः= अत्यन्त उत्सुक, श्रुतिहारिनिःस्वनाः= मनोहर ध्वनि करने वाले, मूढाः= भ्रान्त, भृङ्गाः= भौंरे, निष्पत्रपुष्पाम्= पत्र एवं पुष्प से रहित, नलिनीम्= कमल को, विहाय= छोड़कर, नवोत्पलाशया= नवीन नीलकमल की शङ्का से, प्रनृत्यताम्= नाचने वाले, शिखिनाम्= मयूरों के, कलापचक्रेषु= वर्हभार की ओर, निपतन्ति= जा रहे हैं।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिवद्ध वक्ता अपनी प्रियतमा से वर्षा ऋतु का वर्णन करते हुए कह रहा है कि, वर्षा ऋतु प्रारम्भ है। ग्रीष्म ऋतु में जल सूख जाने के कारण कमल वन पत्रों एवं पुष्पों से रहित हो गया है। इसलिए मनोहर गुन-गुन की ध्वनि करने वाले भौंरे कमल बन का त्याग करके अब नाचते हुए मयूर के कलाप चक्र की ओर इस आशा से जा रहे हैं कि, उन्हें लगता है कि इस समय कोई नवीन नील कमल विकसित हो गया है।

वक्ता के कहने का यह भी आशय है कि जिस तरह भौंरे रूप एवं सौगन्ध्य का ही सेवन करते हैं उसी तरह से कामी पुरुष सौन्दर्य एवं यौवन सम्पन्न ही सुन्दरी समूह का सेवन करते हैं। पत्रपुष्प विहीन कमलिनी का भौंरों द्वारा त्याग इस अर्थ

को सूचित करता है कि सम्पत्ति में ही सब लोग साथ देते हैं विपत्ति में अपने भी पराये हो जाते हैं।

भावार्थ— उत्कण्ठित रहने वाले और मनोहर ध्वनि करने वाले भ्रांत भौंरे पत्रपुष्प विहीन कमलिनी को त्यागकर नाचते हुए मयूरों के कलाप चक्र की ओर इस शंङ्का से जा रहे हैं कि यह कोई नवीन नीलकमल विकसित हो गया है।

साहित्यिक विशेषता— (१) इस श्लोक में उपजाति वृत्त है। (२) भ्रमालंकार है। (३) सम्भोग शृंगार रस की व्यञ्जना हो रही है। (४) माधुर्य एवं प्रसाद गुण का सद्भाव है। (५) अल्पसमासवती संघटना है। (६) वैदर्भी रीति है।

वनद्विपानां नववारिदस्वनैर्मदान्वितानां ध्वनतां मुहुर्मुहुः।
कपोलदेशा विमलोत्पलप्रभाः सभृङ्गयूथैर्मदवारिभिश्चिताः॥ १५॥

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके महाकविर्वर्णयति यत् वर्षा कालेऽस्मिन् वन हस्तिनां कपोलस्थलात् मदवारि स्रवति। तस्य सुगन्ध्या आकृष्टाः भ्रमराः हस्तिनां कृष्णवर्णं कपोलं प्रेक्ष्य नीलोत्पलस्य शंकया तदभिमुखाः भवन्ति। ते वनागताः वर्षाकालीन मेघवदेव गर्जनमपि कुर्वन्ति।

अन्वयः— नववारिदस्वनैः मुहुःमुहुः ध्वनतां मदान्वितानां वनद्विपानां विमलोत्पलप्रभाः कपोलदेशाः सभृङ्गयूथैः मदवारिभिः चिताः।

व्याख्या— नववारिदस्वनैः= नूतनश्चासौ वारिदः= मेघः, तस्य स्वनैः= ध्वनिभिः, वर्षाकालिकनूतनबलाहकगर्जनां श्रुत्वा गर्जनाकारिभिः इति यावत्। मुहुः मुहुः= असकृत्, ध्वनताम्= ध्वनिं कुर्वताम् मदान्वितानाम्= मदवारिमण्डितानाम्, वनद्विपानाम्= अरण्यगजानाम्, विमलोत्पलप्रभाः-विमलम्= स्वच्छं चेदमुत्पलम्= नीलकमलम् तस्य प्रभा= कान्तिरिव प्रभा= कान्तिर्येषुः ते तथाभूताः, कपेलदेशाः गण्डस्थलप्रदेशाः, सभृङ्गयूथैः=भृङ्गानाम्= भ्रमराणाम् ये यूथाः= समूहाः तैः सहिता वर्तन्ते ये ते तैः तथाभूतैः, मदवारिभिः= मदजलैः, चिताः= परिपूर्णाः सन्तीति शेषः।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके उपजातिवृत्तम्। (२) उपमालंकारः हस्तिनां कपोलदेशस्य नीलोत्पलप्रभया (३) साम्य स्य वर्णनात्। (४) वनगजानां स्वभाववर्णनात् स्वभावोक्तिरलंकारश्च। (५) प्रसादाख्यो गुणः। (६) अल्पसमासवती संघटना। (७) वैदर्भी रीतिश्च।

समासः— नववारिदस्वनैः= नवश्चासौ वारिदः=नववारिदः (कर्मधारयः) तस्य स्वनैः मदान्वितानाम्= मदेन अन्वितानाम् (तृ० त० पु०) वनद्विपानाम्= वनस्य द्विपानाम् (ष० त० पु०) विमलोत्पलप्रभाः= विमलञ्चेदमुत्पलम्= विमलोत्पलम् (कर्मधारयः) तस्य प्रभा इव प्रभा येषां ते तथाभूताः (ब० व्री०) कपोलदेशाः- कपोलस्य देशाः (ष० त० पु०) मदवारिभिः= मदस्य वारीणि तैः (ष० त० पु०)।

हिन्दी शब्दार्थ— नववारिदस्वनैः= नवीन मेघ को आवाज को सुनकर, मुहुः मुहुः= बारम्बार, ध्वनताम्= गर्जन करने वाले, मदान्वितानाम्= मदमत्त, वनद्विपानाम्= वनैले हाथियों के. विमलोत्पलप्रभाः= स्वच्छ नील कमल के समान कान्ति

वाले, कपोलदेशाः= गण्डस्थल प्रदेश, सभृङ्गयूथैः= भ्रमर समूह के साथ-साथ मदवारिभिः= मदजल के द्वारा, चिताः= भर गए हैं।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिबद्ध वक्ता अपनी प्रियतमा के समक्ष वर्षा ऋतु का वर्णन करते हुए कहता है, कि इस वर्षा ऋतु में बादल आकाश में छा गए हैं। उनकी गर्जना को सुनकर बनैले हाथी भी बार-बार गर्जना करते हैं। उन हाथियों की गाल से मदवारि चू रही है, उसकी सुगन्धि से भौंरे भी उनके ऊपर इस भ्रम से लगे हुए हैं कि उन्हें लगता है कि ये नीलकमल के समान कान्ति वाले हैं। इस तरह का उनका कपोल भ्रमरों तथा मदजल से भरा हुआ है।

भावार्थ— प्रिये! नवीन मेघ की गर्जना सुनकर बार-बार गर्जने वाले वनैले हाथियों के कपोल स्वच्छ नीलकमल की प्रभा के समान प्रभा वाले तथा मदजल से भरे हुए हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में उपजाति वृत्त है। (२) उपमालंकार और स्वभावोक्ति अलंकार की संसृष्टि है। (३) वनगजों की स्वाभाविक स्थिति का वर्णन है। (४) प्रसाद नामक गुण है। (५) अल्पसमासवती संघटना है। (६) वैदर्भी रीति का सद्भाव है।

सितोत्पलाभाम्बुदचुम्बितोपलाः समाचिताः प्रस्रवणैः समन्ततः।
प्रवृत्तनृत्यैः शिखिभिः समाकुलाः समुत्सुकत्वं जनयन्ति भूधराः।। १६।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके महाकविर्वर्णयति यत् धवलवर्णाः मेघाः पर्वतानामुपरि सञ्चरन्ति। तेषां कान्तिरपि धवलकमलवत् वर्त्तते। पर्वतानां समन्तात् निर्झराः प्रस्रवन्ति तत्र मयूराः नर्तनं कुर्वन्ति दृष्ट्वा मेघम्। एतादृशः पर्वताः प्रेक्षकाणां मनस्सु उत्साहविशेषं जनयन्ति।

अन्वयः— सितोत्पलाभााम्बुदचुम्बितोपलाः समन्ततः प्रस्रवणैः समाचिताः प्रवृत्तनृत्यैः शिखिभिः समाकुलाः भूधराः समुत्सुकत्वं जनयन्ति।

व्याख्या— अस्य श्लोकस्य मुख्यं वाक्यं 'भूधराः समुत्सुकत्वं जनयन्ति इति विद्यते। अत्र भूधराणां त्रीणि विशेषणान्युपन्यस्तानि वर्त्तन्ते। (१) पर्वतानामुपरि-धवलवर्णाः मेघाः प्रचरन्ति। (२) तेषां समन्तात् निर्झराः प्रस्रवन्ति (३) पर्वतेषु यत्र तत्र मयूराः नर्तनं कुर्वन्तीति च।।

सितोत्पलाभाम्बुदचुम्बितोत्पलाः= सितानि= धवलवर्णानि यानि उत्पलानि= कमलानि तेषमाभा इव= कान्तिरिव, आभाः= कान्तिर्येषां ते तथाभूता ये अम्बुदाः= मेघाः तै चुम्विताः= संस्पृष्टाः, ये उपलाः= प्रस्तरखण्डाः ते तथाभूताः। समन्ततः सर्वतः, प्रस्रवणैः= निर्झरैः, समाचिताः= परिपूर्णाः, प्रवृत्तनृत्यैः= प्रवृत्तम्= प्रारब्धं, नृत्यम् येषां ते तथाभूतैः, शिखिभिः= मयूरैः, समाकुलाः= व्याप्ताः= सर्वत्र मयूराः नर्तनं कुर्वन्तीति यावत्। तथाभूताः भूधराः= पर्वताः, समुत्सुकत्वम्= समुत्सुकतां जनयन्ति= उत्पादयन्ति। अवलोकतां मनस्सु कुतूहलं उत्पादयन्तीति भावः।

साहित्यिविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके उपजाति वृत्तम्। (२) उपमालङ्कारः।

(३) पर्वतानामतिरमणीयं वर्णनम्। (४) मध्यमसमासवती रचना। (५) माधुर्याख्यो गुणः (६) वैदर्भी रीतिश्च।

समासः— सितोत्पलाभाम्बुदचुम्बितोपलाः= सितञ्चेद्दमुत्पलम्= सितोत्पलम् (कर्मधारयः) तस्याभा इवाभा येषां ते तथाभूताः (ब० ब्री०), प्रवृत्तनृत्यैः= प्रवृत्तंनृत्यं येषां ते तैः। (ब० ब्री०)।

हिन्दी शब्दार्थ— सीतोत्पलाभाम्बुदचुम्बितोपलाः= उजले कमल के समान कान्तिवाले बादल से जिनके पत्थर छू गए हैं। समन्ततः= हर ओर से, प्रस्रवणैः= झरनों से, समाचिताः= भरे हुए, प्रवृत्तनृत्यैः= नाचने वाले, शिंखिभिः= मयूरों से, समाकुलाः= व्याप्त, भूधराः= पर्वत, समुत्सुकत्वम्= उत्सुकता को, जनयन्ति= उत्पन्न करते हैं।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिवद्ध वक्ता अपनी प्रियतमा से कह रहा है कि पर्वतों के ऊपर उजले बादल घिरे हुए हैं। उनकी शोभा इस तरह लग रही है जैसे श्वेत कमल खिले हुए हों। पर्वतों के ऊपर चारो ओर झरने झर रहे हैं और स्थान-स्थान पर मोर नाच रहे हैं। इस तरह के इन पर्वतों को देखकर अन्तःकरण में एक प्रकार की आनन्दमयी उत्कण्ठा उत्पन्न होती है।

भावार्थ— हे प्रिये! श्वेत कमल के समान कान्ति वाले बादल जिनके ऊपर सञ्चरण कर रहे हैं, हर जगह जिन पर झरने झर रहे हैं तथा मयूर नृत्य कर रहे हैं, ऐसे पर्वतों को देखकर प्रेक्षक के मन में उत्कण्ठा उत्पन्न हो जाती है।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में उपजाति वृत्त है। (२) उपमालंकार है। (३) पर्वत का मनोज्ञ प्राकृतिक वर्णन है। (४) वैदर्भी रीति है। (५) मध्यम समासवती रचना है। (६) माधुर्य एवं प्रसाद नामक गुणों का सद्भाव है।

कदम्बसर्जार्जुनकेतकीवनं विकम्पयंस्तत्कुसुमाधिवासितः।
ससीकराम्भोधरसङ्गशीतलः समीरणः कं न करोति सोत्सुकम्।। १७।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके महाकविः कालिदासो वर्षर्तोः वर्णनस्य प्रसङ्गेन वर्णयति यत् साम्प्रतंम वनानि कम्पयन् वायुर्वाति। स च तेषां पुष्पाणां संबन्धेन, जलपूर्णमेघानां सम्पर्केण च शैत्यगुणसम्पन्नः सन् समेषां जनानां मनस्सु औत्सुक्यमुद्भावयति।

अन्वयः— कदम्बसर्जार्जुनकेतकीवनं विकम्पयन् तत्कुसुमाधिवासितः ससमीकराम्भोधरसङ्गशीतलः समीरणः कं सोत्सुकम् न करोति।

व्याख्या— अस्मिञ्छ्लोके वायोः वैशिष्ट्यत्रयं समुल्लिखितमास्ते। तानि च वैशिष्ट्यानि सन्ति क्रमशः (१) विविधानां वृक्षाणां वनं कम्पयति (२) वनपुष्पाणां सौगन्ध्येन समन्वितं वर्त्तते (३) जलपूर्णमेघानां संगेन शीतलमास्ते। तथाहि कदम्बसर्जार्जुन केतकीवनम्= कदम्बश्च= नीपश्च सर्जश्च= सालश्च, अर्जुनश्च= वीरक्षुश्च, केतकी च= खर्जुरी च= कदम्बसर्जार्जुनकेतक्यः तासां वनम्= अरण्यम् कम्पयन्= विधुन्वन्। तत्कुसुमाधिवासितः= तस्य= वनस्य, कुसुमैः= पुष्पैः, अधिवा-

सितः= सौगन्ध्यसमन्वितः, ससीकराम्भोधरसङ्गशीतलः= सीकरैः सहिताः ससीकराः= जलकणयुक्ताः, ये अम्भोधराः= मेघाः, तेषां सङ्गेन= संसर्गेण शीतलः= शैत्यगुण-सम्पन्नः, समीरणः= वायुः, कम्= पुरुषम्, सोत्सुकम्= उत्कण्ठा समन्वितम् न= नहि, करोति= सम्पादयति।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके उपजाति वृत्तम्। (२) वर्षर्तौः वायोः मनोज्ञं वर्णनम्। (३) अल्पवृत्तिसमासवती संघटना। (४) प्रसादगुणः (५) वैदर्भी रीतिश्च।

समासः— कदम्वसर्जार्जुनकेतकीवनम्= कदम्बश्च, सर्जश्च, अर्जुनश्च, केतकी च= कदम्बसर्जार्जुनकेतक्यः (समाहारद्वन्द्वः)। तासां वनम् (ष० त० पु०) ससीकराम्भोधरसङ्गशीतलः= ससीकराश्चेमे अम्भोधराः= ससीकराम्भोधराः, (कर्मधारयः) तेषां सङ्गः= ससीकराम्भोधरसङ्गः= (ष० त० पु०) तेन शीतलो य असौ= ससीकराम्भोधरसङ्गशीतलः (ब० ब्री०)। तत्कुसुमाधिवासितः- तस्य कुसुमानि= तत्कुसुमानि (ष० त० पु०) तैः अधिवासितः= तत्कुसुमाधिवासितः। (तृ० त० पु०)।

हिन्दी शब्दार्थ— कदम्बसर्जार्जुनकेतकीवनम्= कदम्ब,साल अर्जुन तथा खुर्जुरों के वन को, विकम्पयन्= कम्पाते हुए, तत्कुसुमाधिवासितः- उस वन के पुष्पों से सुगन्धित बना हुआ, ससीकराम्भोधरसङ्गशीतलः= जल भरे बादलों के सम्बन्ध से शीतल बना हुआ, समीरणः= वायु, कम्= किस पुरुष को, सोत्सुकम्= उत्कंठित, न= नहीं, करोति= बना देती है।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिवद्ध वक्ता अपनी प्रियतमा के समक्ष वर्षा ऋतु के वर्णन के प्रसङ्ग में बतला रहा है कि इस समय ठंढ़ी-ठंढ़ी वायु चल रही है। यह वायु कदम्ब, अर्जुन, साल तथा केतकी के वनों से होकर आ रही है, अतएव उन वनों के पुष्पों की सुगन्धि से सुगन्धियुक्त बन गयी है। जल भरे बादलों के संसर्ग से यह वायु ठंढी हो गयी है; अतएव उसके संस्पर्शमात्र से मानव के मन में आनन्द भर जाता है।

भावार्थ— कदम्ब, साल, अर्जुन तथा केतकी वन को कम्पाने वाला, उस वन के पुष्पों की सुगन्धि से सुगन्धित, जल भरे बादलों के संसर्ग से शीतल, यह वायु किसके मन में उत्कण्ठा नहीं उत्पन्न करती है ?।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में उपजाति वृत्त है। (२) बरसाती वायु की मादकता का मनोज्ञ वर्णन है, (३) प्रसाद गुण तथा माधुर्यगुण का सद्भाव, (४) अल्प समासवती संघटना, तथा (५) वैदर्भी रीति का सद्भाव है।

शिरोरुहैः श्रोणितटावलम्बिभिः कृतावतंसैः कुसुमैः सुगन्धिभिः।
स्तनैः सहारैर्वदनैः ससीधुभिः स्त्रियो रतिं सञ्जनयन्ति कामिनाम्।। १८।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके महाकविः वर्णयति यत् वर्षर्तौ विविधैरलङ्कारैस्समलंकृताः मदपानेनक्षीवतां गताः श्रोणितटावलम्बिभिः कुन्तलकलापैः समलंकृताः सुगन्धितपुष्पालङ्कारैः समलंकृताश्च कामिन्यः प्रसभं जनानां मनस्सु कामोद्दीपनं कुर्वन्ति।

अन्वयः— श्रोणितटावलम्बिभिः शिरोरुहैः कृतावतंसैः सुगन्धिभिः कुसुमैः, सहारैः स्तनैः ससीधुभिः वदनैः स्त्रियः कामिनां रतिं सञ्जनयन्ति।

व्याख्या— अस्मिञ्छ्लोके महाकविः कामिनीनां कामिनां मनस्सुकामोदीप्तिकरत्वं वर्णयति। श्रोणितटावलम्बिभिः केशैः, कृतावतंसैः कुसुमैः हारालंकृतैः स्तनैः मदिरासौ' गन्ध्याञ्चितैर्मुखैः ताः कामिनां कामाग्निं वर्द्धयन्तीति प्रहात्र कविः। तथाहिश्रोणित-टावलम्बिभिः= श्रोणितटे= नितम्बस्थलपर्यन्तं अवलम्बिभिः= आलम्बमानैः, शिरोरुहैः= केशैः, सुगन्धिभिः= सौगन्ध्यसमन्वितैः कुसुमैः= पुष्पैः कृतावतंसैः= विरचितालंकारैः, सहारैः= कलापाञ्चितैः, स्तनैः= कुचैः, ससीधुभिः= मधुमदाञ्चितैः, वदनैः= मुखैः, स्त्रियः= कामिन्यः, कामिनाम् समृद्धकामाग्निपुरुषाणां रतिम्= काम-भावनाम्, सञ्जनयन्ति= समुत्पादयन्ति।

विशेषः— (१) अस्मिञ्छ्लोके उपजातिवृत्तम्, (२) सम्भोगश्रृंगाररसाभिव्यक्तिः, (३) स्थायिभावस्य स्वशब्दाभिधेयत्व-दोषः, (४) अल्पवृत्तिः संघटना, (५) माधुर्यप्र-सादाख्यौ गुणौ, (६) वैदर्भी रीतिश्च सन्ति।

समासः— श्रोणितटावलम्बिभिः- श्रोण्याः तटम् (ष० त० पु०) तस्मिन् अवल-म्बिभिः (स० त० पु०) कृतावतंसैः- कृतः अवतंसो येषां ते तैः (ब० ब्री०)।

हिन्दी शब्दार्थ— श्रोणितटावलम्बिभिः= कमरपर्यन्त लटकने वाले, शिरोरुहैः= केशों के द्वारा, कृतावतंसैः= आभूषण रूप से सजाये गये, सुगन्धिभिः= सुगन्धित, कुसुमैः= पुष्पों के द्वारा, सहारैः= हारों से अलंकृत, स्तनैः= स्तनों द्वारा, तथा ससीधुभिः= मदिरामोद से युक्त, वदनैः= मुखड़े द्वारा, स्त्रियः= कामिनियाँ, कामिनाम्= कामी पुरुषों की, रति= कामभावना को, सञ्जनयन्ति= उत्पन्न कर देती हैं।

उपस्थापन— इस श्लोक में महाकवि कालिदास पावसवर्णन के प्रसङ्ग में बतला रहे हैं कि बरसात के दिनों में सजी हुई कामिनियों को देखकर कामी पुरुषों के मन में काम की भावना उद्दीप्त हो रही है। उनके आकर्षण के साधन चार प्रकार के हैं। (१) कामिनियों के लम्बे-लम्बे बाल उनके कमर तक लटक रहे हैं, अतएव देखने में बड़े ही मनोहर लगते हैं। (२) वे सुगन्धित पुष्पों का आभूषण बनाकर धारण किए हुई हैं। (३) वे अपने स्तनों तक लटकने वाले हार को धारण किए हुई हैं तथा (४) उनका मुख मदिरा की सुगन्धि से सुशोभित हो रहा है। इस तरह की कामिनियों को देखकर कामी पुरुषों के मन में काम की भावना हठात् उत्पन्न हो जा रही है।

भावार्थ— कमर तक लटकने वाले, आभूषण बनाए गए सुगन्धित पुष्पों, हार से सुशोभित स्तनों तथा मदिरा के आमोद से सुशोभित मुखों के द्वारा कामिनियाँ कामी पुरुषों की रतिभावना को उत्पन्न कर रही है।

विशेष— (१) इस श्लोक में उपजाति वृत्त है, (२) सम्भोग श्रृंगार रस व्यंग्य है, (३) स्थायीभाव का स्वशब्दवाच्यत्व नामक दोष है, (४) माधुर्य तथा प्रसाद नामक गुण है, (५) वैदर्भी रीति है।

वहन्ति वर्षन्ति नदन्ति भान्ति व्यायन्ति नृत्यन्ति समाश्रयन्ति।
नद्यो घनाः मत्तगजा वनान्ताः प्रियाविहीनाः शिखिनः प्लवङ्गाः ।। १९।।

सन्दर्भप्रसङ्गौः— अस्मिञ्छ्लोके कविनिवद्धो वक्ता स्वप्रियतमायाः समक्षं वषर्तोः वैभवस्य वर्णनं समुपस्थापयन् वक्ति यत् साम्प्रतं सर्वा नद्यो वहन्ति वर्षायाः जलेन परिपूर्णत्वात्, मेघाः गर्जनं कुर्वन्ति, मदमत्ताः गजाः नादं कुर्वन्ति, वनप्रदेशाः देदीप्यमानाः सन्ति मयूराः नर्तनं कुर्वन्ति मर्कटाश्च स्वाश्रयं सामाश्रयन्ति।

अन्वयः— नद्यः वहन्ति, घनाः वर्षन्ति, मत्तगजाः नदन्ति, वनान्ताः भान्ति, प्रियाविहीनाः व्यायन्ति, शिखिनः नृत्यन्ति, प्लवङ्गाः समाश्रयन्ति।। १९।।

व्याख्या— अस्मिन् वर्षतौं नद्यः= सरितः, वहन्ति= जलेन परिपरिपूर्णत्वात् प्रवहन्ति, घनाः= मेघाः, वर्षन्ति= वर्षा कुर्वन्ति। मत्तगजाः= मदमत्ताः करिणः, नदन्ति= गर्जनं कुर्वन्ति। वनान्ताः= वनप्रदेशाः= भान्ति= देदीप्यमानाः भवन्ति, प्रियाविहीनाः= प्रवासिनो जनाः, व्यायन्ति= दुःखानुभवं कुर्वन्ति, शिखिनः= मयूराः, नृत्यन्ति= नर्तनं कुर्वन्ति, प्लवङ्गाः= मर्कटाः, समाश्रयन्ति= वर्षया क्लान्ताः सन्तः, कन्दराः समाश्रयन्ते।

साहित्यिकविशेषताः— अस्मिञ्छ्लोके सन्ति (१) उपजातिवृत्तम्, (२) प्रसादाख्यो गुणः (३) वैदर्भी रीतिः (४) असमासा संघटना च।

हिन्दी शब्दार्थ— नद्यः= नदियाँ, वहन्ति= बहती हैं, घनाः= मेघ, वर्षन्ति= वर्षा करते हैं, मत्तगजाः= मतवाले हाथी, नदन्ति= गर्जना करते हैं। वनान्ताः= वन प्रदेश, भान्ति= साफ सुथरा चमक रहे है, प्रियविहीनाः= अपनी प्रियतमा से विधुर हुए प्रवासी पुरुष, व्यायन्ति= दुखी हो रहे हैं, शिखिनः= मयूर, नृत्यन्ति= नृत्य कर रहे हैं और. प्लवङ्गा= वानर, समाश्रयन्ति= कन्दराओं का सेवन कर रहे हैं।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिवद्ध वक्ता अपनी प्रियतमा के समक्ष उन अनेक विशेषताओं का वर्णन करता है जो वर्षा ऋतु में वनों में पायी जाती हैं। वर्षा का प्रचुर जल पाकर वन की छोटी-छोटी नदियाँ भी बहने लगती हैं, मेघ इस ऋतु में प्रचुर मात्रा में वर्षा करते हैं। मदमत्त वनैले हाथी चिग्घाड़ने लगते हैं और वर्षा के जल से वन के वृक्षों पर चढी हुई धूल साफ हो जाती है अतएव चारो ओर का वन प्रदेश हरा भरा दिखने लगता है, उसमें एक तरह की चमक आ जाती है। प्रवासी लोग अपनी प्रियतमा से दूर रहने के कारण कष्ट का अनुभव करते है तथा इस ऋतु में मयूर नृत्य करने लगते हैं। वर्षा के जल से भिंगने के भय से वनैले बन्दर कन्दराओं में छिप जाते हैं।

भावार्थ— नदियाँ बह रही हैं, मेघ बरस रहे हैं, वनैले हाथी चिग्घाड़ रहे हैं, वन प्रदेश चमक रहे हैं, प्रवासी पुरुष कष्ट का अनुभव करते है, मयूर नृत्य कर रहे हैं तथा बन्दर कन्दराओं का सेवन कर रहे हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ— इस श्लोक में (१) उपजाति वृत्त (२) प्रसादगुण, (३) समासरहित संघटना तथा (४) वैदर्भी रीति के सद्भाव हैं।

तडिल्लताशक्रधनुर्विभूषिताः पयोधरास्तोयभरावलम्बिनः ।
स्त्रियश्च काञ्चीमणिकुण्डलोज्ज्वला हरन्ति चेतो युगपत्प्रवासिनाम् ।। २० ।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके महाकविः कालिदासो वर्णयति यत् अस्मिन् वर्षर्तौ कण्ठाश्लेषप्राणियिजन-विश्लेष-विरह-व्याकुलमानसाः प्रवासिनः द्वेधा दुःखातिशयमनुभवन्ति। विद्युद्भिः इन्द्रधनुर्भिश्च विभूषिताः जलभारभरेण परिपूर्णाः अतएव पृथिव्यास्सविधेऽवलम्बिनः मेघाः, देदीप्यमानमणिकुण्डलालंकृताः कामिन्यश्च समकालमेव तेषां मनसः हरणं कुर्वन्ति ।

अन्वयः— तडिल्लताशक्रधनुर्विभूषिताः तोयभरावलम्बिनः पयोधराः काञ्चीमणिकुण्डलोज्ज्वलाः स्त्रियश्च प्रवासिनां कृते जलधराणां युगपत् प्रवासिनां चेतः हरन्ति ।

व्याख्या— तडिल्लताशक्रधनुर्विभूषिताः= तडितः= विद्युतः, लता= वल्लरी-तडिल्लता, तडिल्लता च शक्रधनुश्च= इन्द्रधनुश्च ताभ्यां विभूषिताः,= समलंकृताः, तोयभरावलम्बिनः= तोयस्य= जलस्य, भरः= भारः, तेन हेतुनाअवलम्बिनः= अधस्तात् समागताः, पयोधराः= मेघाः, काञ्चीमणिकुण्डलोज्ज्वलाः, काञ्ची च मणिकुण्डलञ्च, ताभ्याम् उज्ज्वलाः= सुशोभनाः, देदीप्तवर्णा इति यावत् स्त्रियश्च= कामिन्यश्च, प्रवासिनाम्= परदेशेषु निवसताम्, अतएव स्वप्रियतमाविप्रयोगवैयाकुलीमनुभवताम्, जनानाम् चेतः= अन्तःकरणम्, युगपत्= समकालमेव, हरन्ति= स्वायत्तीकुर्वन्ति ।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके उपजाति वृत्तम् । (२) अत्र व्यंग्यः विप्रलम्भः शृंगाररसः, (३) माधुर्यप्रसादाख्यौ गुणौ, (४) वैदर्भी रीतिः, (५) अल्पसमासवती संघटना च ।

समासः— तडिल्लताशक्रधनुर्विभूषिताः= तडिल्लता शक्रधनुश्च= तडिल्लता शक्रधुनुषी= (समाहारो द्वन्द्वः) ताभ्यां विभूषिताः= तडिल्लताशक्रधनुर्विभूषिताः (तृ० त० पु०) तोयभरावलम्बिनः= तोयस्य भरः= तोयभरः (ष० त० पु०) तेनावलम्बिनः= तोयभरावलम्बिनः । (तृ० त० पु०) ।

हिन्दीशब्दार्थ— तडिल्लताशक्रधनुर्विभूषिताः= बिजली तथा इन्द्रधनुष से सुशोभित तोयभरावलम्बिनः= जल के भार से झुके हुए, पयोधराः= मेघ, काञ्चीमणिकुण्डलोज्ज्वलाः= करधनी तथा मणि से निर्मित कुण्डलों के धारण करने से सुशोभित, स्त्रियश्च= स्त्रियाँ भी, युगपत्= एक ही साथ, प्रवासिनाम्= परदेशियों के, चेतः= मन को, हरन्ति= चुराने का कार्य करते हैं ।

उपस्थापन— इस श्लोक में महाकवि वर्षा ऋतु का वर्णन करते हुए कहते हैं कि इस ऋतु में जब बादलों के बीच बिजली चमकती है और इन्द्र धनुष उगते हैं तो उन्हें देखकर प्रवासियों का मन राग-रंग से काषायित हो जाता है। साथ ही वे जब करधनी तथा मणिनिर्मित कुण्डल धारण की हुई प्रमदाओं को देखते हैं तो उनका मन और चञ्चल हो जाता है। इस ऋतु की ये दोनों ही वस्तुएँ परदेशियों के दिल को चुराने का काम किया करती हैं ।

भावार्थ— बिजली और इन्द्रधनुष् से सुशोभित तथा जल के भार से झुके हुए मेघ तथा करधनी एवं मणियों के कुण्डल को धारण करने वाली कामिनियाँ परदेशियों के मन को एक साथ चुराने का कार्य करती हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में उपजाति वृत्त है, (२) प्रवास हेतुक विप्रलम्भ शृंगार रस व्यंग्य है, (३) इसमें वर्षा कालीन मेघ तथा सुन्दरियों के रूप का आकर्षक वर्णन है, (४) माधुर्य तथा प्रसाद नामक गुण विद्यमान हैं एवं (५) वैदर्भी रीति तथा अल्पसमासवती संघटना हैं।

मालाः कदम्बनवकेसरकेतकीभिरायोजिताः शिरसि बिभ्रति योषितोऽद्य।
कर्णान्तरेषु ककुभद्रुममञ्जरीभिरिच्छानुकूलरचितानवतंसकांश्च।। २१।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिन् श्लोके महाकविः कालिदासः वर्षर्तोः वर्णनस्य प्रसङ्गेन वर्णयति यत् साम्प्रतं सुन्दर्यः स्वशिरसि पुष्पनिर्मिताः माला विभ्रति कर्णयोश्चार्जुनवृक्षमञ्जरीनिर्मितानवतंसकांश्च धारयन्ति।

अन्वयः— अद्य योषितः शिरसि कदम्बनवकेसरकेतकीभिः आयोजिताः मालाः कर्णान्तरेषु च ककुभद्रुममञ्जरीभिः इच्छानुकूलरचितान् अवतंसकान् बिभ्रति।

व्याख्या— अस्मिञ्छ्लोके महाकविः नारीणामलंकारद्वयस्य वर्णनं करोति पुष्पनिर्मितस्य शिरोभूषणस्य, मञ्जरीनिर्मितस्य कर्णालंकारस्य च। आभ्यामलंकरणाभ्यां नारीणां सौन्दर्यं समृद्धं भवति। तथाहि। अद्य- अस्मिन् वसन्ततौं, योषितः= प्रमदाः, शिरसि= मूर्ध्नि, कदम्बनवकेसरकेतकीभिः= नवश्चासौ केसरः नवकेसरः= नवीनः परागः, कदम्बस्य= नीपस्य, नवकेसरः= कदम्बनवकेसरः, कदम्बनवकेसरश्च, केतकी च, कदम्बनवकेसरकेतक्यः ताभिः= कदम्बनवकेसरकेतकीभिः, आयोजिताः= निर्मिताः, मालाः= स्रजः, कर्णान्तरेषु= श्रोत्रविवरेषु, च ककुभद्रुमस्य= अर्जुनवृक्षस्य, मञ्जरीभिः, इच्छानुकूलरचितान्= स्वेच्छया विनिर्मितान् विभिन्नप्रकारकान्, अवतंसकान्= अलंकारान् विभ्रति= धारयन्ति।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके वसन्ततिलकावृत्तम्। 'ज्ञेया वसन्ततिलका तभजाजगौ गः' इति तल्लक्षणम्। (२) शृङ्गारिकानां विभावानां वर्णनमस्ति, (३) प्रसादाख्यो गुणो वर्त्तते, (४) वैदर्भी रीतिः, (५) अल्पसमासवती संघटना च स्तः।

हिन्दी शब्दार्थ— अद्य= इस समय, योषितः= नारियाँ, शिरसि= अपने सिर पर, कदम्बनवकेसरकेतकीभिः= नवीन पराग भरे कदम्ब पुष्प तथा केवड़ा के पुष्पों से, आयोजिताः= निर्मित, मालाः= मालाएँ, च= तथा, कर्णान्तरेषु= कानों में, ककुभद्रुममञ्जरीभिः= अर्जुनवृक्ष की मञ्जरियों से, इच्छानुकूल, रचितान्= अपनी इच्छा के अनुसार बनाए गए, अवतंसकान्= आभूषणों को, विभ्रति= धारण करती हैं।

उपस्थापन— इस श्लोक में महाकवि वर्षा ऋतु का वर्णन करते हुए सुन्दरियों के दो प्रकार के आभूषणों का वर्णन करते हैं, जो स्वभावतः कामोत्तेजक विभाव का काम करते हैं। (१) सुन्दरियाँ नवीन पराग से परिपूर्ण कदम्ब पुष्प तथा केवड़ा के पुष्प से बनी माला अपने सिर पर धारण करती हैं, तथा (२) वे अपने मनोनुकूल अर्जुन वृक्ष की मञ्जरियों का कर्णाभूषण बनाकर उन्हें धारण करती हैं।

भावार्थ— आजकल सुन्दरियाँ अपने सिर पर नवीन पराग से परिपूर्ण कदम्ब तथा केवड़ा के पुष्पों से निर्मित माला तथा अर्जुन वृक्ष की मञ्जरियों से बने कर्णाभूषण को धारण करती हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में वसन्ततिलका छन्द है। 'ज्ञेया वसन्ततिलका तभजा जगौ गः' यह वसन्ततिलका छन्द का लक्षण है। इस छन्द के प्रत्येक पाद में चौदह अक्षर होते हैं, जो क्रमशः तगण भगण नगण जगण तथा दो गुरु होते हैं। (२) सम्भोग शृंगार के उद्दीपक कामिनियों के आभूषणद्वय का वर्णन है। (३) प्रसाद एवं माधुर्य नामक गुणों का सद्भाव है। (४) वैदर्भी रीति तथा अल्पसमासवती संघटना है।

कालागुरुप्रचुरचन्दनचर्चिताङ्घ्र्यः पुष्पावतंससुरभीकृतकेशपाशाः।
श्रुत्वा ध्वनिं जलमुचां त्वरितं प्रदोषे श्य्यागृहं गुरुगृहात्प्रविशन्ति नार्यः।। २२।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— वर्षर्तोः वर्णनस्य प्रसङ्गेन महाकविः कालिदासो वर्णयति यदस्मिन् काले कालागुरुमिश्रितं चन्दनं स्वाङ्गेषु धारयन्ति रमण्यः। ताः पुष्पालङ्कारैः स्वकुन्तलकलापं सौगन्ध्यसमन्वितं कुर्वन्ति। मेघस्य भयोत्पादकं कामवर्धकं च ध्वनिं श्रुत्वा ताः स्वगुरुजनानां गृहेभ्यो निस्सृत्य सायाह्नि एव शय्यागृहं प्रविशन्ति।

अन्वयः— कालागुरुप्रचुरचन्दनचर्चिताङ्घ्र्यः पुष्पावतंससुरभीकृतकेशपाशाः नार्यः प्रदोषे जलमुचां ध्वनिं श्रुत्वा गुरुगृहात् शय्यागृहं त्वरितं प्रविशन्ति।

व्याख्या— अत्र श्लोके महाकविर्वक्ति यत् वर्षर्तौ मेघस्य श्रोत्रपेयं ध्वनिं श्रुत्वा कामिन्यः सायाह्नि एव शीघ्रं स्वशयनकक्षं प्रविशन्ति। तासां कामिनीनामत्र वैशिष्ट्य द्वयमस्ति वर्णितम्। ताः चन्दनचर्चितांघ्र्यः सन्ति, किञ्च तासां केशपाशः सुगन्धितैः पुष्पैरवतंसितो वर्त्तते। तथाहि कालागुरुप्रचुरचन्दनचर्चिताङ्घ्र्यः= कालागुरुः= कृष्ण वर्णागुरुः प्रचुरम्= अत्यधिकमात्रायां विद्यते यस्मिन् तथाविधेन चन्दनेन= मलयजेन, चर्चितानि= सुशोभितानि अङ्गानि= वक्षोजादीनि अवयवानि यासां तथाविधाः रमण्यः, पुष्पावतंससुरभीकृतकेशपाशाः= पुष्पाणाम्= कुसुमानां, अवतंसेन= आभूषणेन, सुरभीकृतः= सुगन्धितः कृतः केशपाशः= कुन्तल-कलापो यासां तथाविधाः, नार्यः= रमण्यः, जलमुचाम्= मेघानाम्, ध्वनिम्= शब्दं श्रुत्वा प्रदोषे= सायाह्नि, गुरुगृहात्= गुरुजनानां भवनात् निस्सृत्येति शेषः त्वरितम्= सपदि, शय्यागृहम्= शयनागारम्, प्रविशन्ति= प्रवेशं कुर्वन्ति।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके वसन्ततिलकावृत्तम्, 'ज्ञेया वसन्ततिलका तभजा जगौ गः' इति हि वसन्ततिलका लक्षणम्। (२) संभोगशृंगार रसोऽभिव्यंग्यो वर्त्तते। (३) मध्यमसमासवती संघटना विद्यते (४) माधुर्याख्यो गुणः वैदर्भी रीतिश्चात्र वर्त्तते।

समासः— कालागुरुप्रचुरचन्दनचर्चिताङ्घ्र्यः= कालागुरुः प्रचुरं यस्मिन् तथाविधम्= कालागुरुप्रचुरम्, तथाविधेन चन्दनेन चर्चितान्यङ्गानि यासां ताः (ब० ब्री०) पुष्पावतंससुरभीकृतकेशपाशाः पुष्पाणामवतंसः= पुष्पावतंसः (ष० त० पु०) तैः

सुरभीकृताः केशपाशाः यासां ताः तथाविधाः। (ब० ब्री०) शय्यायाः गृहम्= शय्यागृहम् (ष० त० पु०) गुरुगृहात्= गुरूणां गृहात् (ष० त० पु०) अथवा गुरुजनानां गृहात्= गुरुगृहात् (मध्यमपदलोपी समासः)।

उपस्थापन— इस श्लोक में महाकवि बतलाते हैं, कि वर्षा ऋतु में रमणियाँ अपने स्तन आदि अवयवों पर ऐसे चन्दन का लेप करती हैं, जिस चन्दन में काला अगरु प्रचुर मात्रा में रहता है; क्योंकि अगरु का स्वभाव है कि उसका लेप करने से स्तन आदि अंगों का शैथिल्य समाप्त हो जाता है और उनका काठिन्य सुरक्षित रहता है। उनके केशपाश सुगन्धित पुष्पों के आभूषण से सुगन्धित बने रहते हैं। ये रमणियाँ वर्षाकाल की कामोद्दीपन मेघध्वनि को सुनकर सायंकाल में अपने गुरुजनों के गृहों से निकलकर शीघ्र ही अपने रमणों से मिलने की अभिलाषा से अपने शयन कक्ष में प्रवेश कर जाती हैं।

भावार्थ— प्रचुर मात्रा में काला अगुरु मिले हुए चन्दन से सुशोभित अङ्गों वाली तथा फूलों के सुगन्धित अलंकारों से सुगन्धित केशपाश वाली रमणियाँ सायंकाल में मेघध्वनि को सुनकर शीघ्र ही अपने गुरुजनों के भवनों से निकलकर शयनकक्ष में प्रवेश कर जाती हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में वसन्ततिलका वृत्त है। 'ज्ञेया वसन्ततिलका तभजा जगौ गः' यह वसन्ततिलका वृत्त का लक्षण है। (२) इस श्लोक में सम्भोग शृंगार रस व्यंग्य है, (३) माधुर्य गुण का सद्भाव है, (४) मध्यम समासवती संघटना है तथा (५) वैदर्भी रीति का सद्भाव है।

कुवलयदलनीलैरुन्नतैस्तोयनम्रै
मृदुपवनविधूतैर्मन्दमन्दं चलद्भिः।
अपहृतमिव चेतस्तोयदैः सेन्द्रचापैः
पथिकजनवधूनां तद्वियोगाकुलानाम्।। २३।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके महाकवि वर्णयति यत् वर्षाकालेऽस्मिन् जलभरेण परिपूर्णत्वात् पृथिव्याः सविधे समागताः सन्ति। मेघनम्रत्वमागतमास्ते। तेषामाकरः नवविकसितनीलकमलवदास्ते। पवनस्तान् मेघान् मन्दं मन्दं नुदति विहायसि। मेघेषु इन्द्रधनुषः शोभा मनांसि मोहयति। इत्थं भूतान् मेघान् विलोक्य पथिकवनितासार्थस्य, स्वकण्ठाश्लेषप्रणयिजनवियोगविधुरत्वात् अन्तः करणम् अपहृतमिव भवति।

अन्वयः— कुवलयदलनीलैः उन्नतैः तोयनम्रैः मृदुपवनविधूतैः मन्दमन्दं चलद्भिः सेन्द्रचापैः तोयदैः तद्वियोगाकुलानाम् पथिकजनवधूनां चेतः अपहृतम् इव।

व्याख्या— वर्षाकाले नवीनतयोद्गतान् नवनीलोत्पलदलाभान्, जलपरिपूर्णान् आकाशे पवनेन मन्दं मन्दं नुद्यमानान् मेघान् वीक्ष्य स्वप्रियतमवियोगखिन्नान्तःकरणानां पथिकवनितानामन्तःकरणं मुग्धं भवतीति। तथाहि—

कुवलयदलनीलैः- कुवलस्य= पद्मस्य, दलानि= पत्राणि तानीव= नीलैः= कृष्णवर्णैः, उन्नतैः= नवीनतयोद्भूतैः, वषर्तौ मेघानां नवीना नवीना राशिरुद्भवति,

तोयनम्रैः= तोयेन= जलेन, नम्रैः= अधस्तात्, समागतैः, मृदुपवनविधूतैः= मृदुना= स्पर्शक्षमेण, मन्दगतिमता, पवनेन= वायुना, विधूतैः= उह्यमानैः अतएव, मन्दमन्दम्= शनैः शनैः, चलद्भिः, सेन्द्रचापैः= इन्द्रधनुस्समलंकृतैः, तोयदैः= मेघैः, वियोगाकुलानाम्= वियोगेन= प्रियतमविप्रयोगेन, आकुलानाम्= व्याकुलानाम्, पथिकजनबधूनाम्= पथिकजनबधूनाम्= पान्थजनरमणीनां, आशाबन्धसमन्वितम्, चेतः= अन्तःकरणम्, अपहृतमिव= चोरायितमितिमन्ये।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके मालिनीवृत्तम्, (२) कुवलयदलनीलैरित्यत्राप्युपमा (३) अपहृतमिवेत्यत्रोत्प्रेक्षालंकारः, पथिकजनरमणीनां चेतसः अपहरणस्योत्प्रेक्षणात्। तथा चोक्तं विश्वनाथेन–'भवेत् संभावनोत्प्रेक्षा विषये निरुपह्नवे' इति। (४) अत्र विप्रयोगशृंगाराभिव्यक्तिः (५) माधुर्यप्रसादाख्ययोः गुणयोः सद्भावः। (६) अल्पसमासवती संघटना (७) वैदर्भी रीतिश्च।

समासः— कुवलयदलनीलैः= कुवलयस्य दलानि= कुवलयदलानि। (ष० त० पु०) तनीव नीलानि तैः= कुवलयदलनीलैः (उपमितः समासः) तोयनम्रैः- तोयेन नम्रैः= (तृ० त० पु०) मृदुपवनविधूतैः= मृदुश्चासौ पवनः= मृदुपवनः (कर्मधारयः) तेन विधूतैः= मृदुपवनविधूतैः (तृ० त० पु०) वियोगाकुलानाम्= वियोगेन आकुलानाम्= (तृ० त० पु०), पथिकजनवधूनाम्= पथिकजनानाम् वधूनाम् (ष० त० पु०)।

हिन्दी शब्दार्थ— कुवलयदलनीलैः= कमल पत्र के समान नीले-नीले, उन्नतैः= ऊपर की ओर उठे हुए, तोयनम्रैः= जल के भार से झुके हुए, मृदुपवनविधूतैः= मन्द पवन के झोकों से उड़ाये जाने वाले, मन्दमन्दं= धीरे-धीरे, चलद्भिः= चलने वाले, तोयदैः= मेघों द्वारा, वियोगाकुलानाम्= वियोग से व्याकुल, पथिकजनवधूनाम= परदेशियों की पत्नियों का, तत्= वह (वियोगव्याकुल) चेतः= अन्तःकरण, अपहृतमिव= मानों लूट लिया गया है।

उपस्थापन— इस श्लोक में महाकवि वर्षा ऋतु के वर्णन के प्रसंग में बतला रहे हैं कि, आकाश में काले-काले बादल उमड़ आए हैं। वे बादल जल से भरे होने के कारण पृथिवी के सन्निकट आ गए हैं। मन्द-मन्द चलती हुई हवा उन्हें धीरे-धीरे आकाश में उड़ाये जा रही है। बादलों के ऊपर इन्द्रधनुष उगे हुए हैं। इस तरह के मनोहर आकाश वाले बादलों को देखकर परदेशियों की पत्नियों का वियोग व्याकुल मन जैसे, लूट सा गया हो। वे अत्यन्त उदास सी हो जाती हैं।

भावार्थ— कमल-पत्र के समान नील वर्ण के, जल के भार से झुके हुए, मन्द पवन द्वारा धीरे-धीरे उड़ाये जाते हुए, इन्द्रधनुष की शोभा से समलंकृत बादलों को देखकर परदेशियों की पत्नियों का वियोग व्याकुल मन मानों लूट सा जाता है।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में मालिनी वृत्त है। 'ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोके।' यह मालिनी वृत्त का लक्षण है। (२) कुवलयदलनीलैः पद में उपमालंकार है और 'अपहृतमिव' में उत्प्रेक्षालंकार। इन दोनों अलंकारों की इस श्लोक में संसृष्टि है। (३) इस श्लोक में विप्रयोग हेतुक विप्रलम्भ शृंगार व्यंग्य है।

(४) इस श्लोक में गुणीभूतव्यंग्य काव्य का सद्भाव है। (५) माधुर्य एवं प्रसाद नामक गुणों का इसमें सद्भाव है। (६) अल्पसमासवती संघटना और वैदर्भी रीति है।

मुदित इव कदम्बैर्जातपुष्पैः समन्तात्
पवनचलितशाखैः शाखिभिर्नृत्यतीव।
हसितमिव विधत्ते सूचिभिः केतकीनां
नवसलिलनिषेकाच्छिन्नतापो वनान्तः।। २४।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके महाकविः कालिदासः वनप्रदेशस्य वर्णनं करोति। स वक्ति यत् ग्रीष्मर्तौ तु वनप्रदेशः सन्तप्त इव आसीत्। साम्प्रतं वर्षाजलनिषेकात् विगतसंतापः संजातः। लोके येन प्रकारेण सकलसंतापरहितः प्रसन्नः पुरुषो मोमोदते, नृत्यति हसति च तेन प्रकारेणायं वनान्तः विकसित कदम्बपुष्पमाध्यमेन मोमोदते इव, पवनविधूतवृक्षाणां माध्यमेन नृत्यतीव, केतकीकलिका माध्यमेन च हसतीवेति उत्प्रेक्षते कविः।

अन्वयः— नवसलिलनिषेकच्छिन्नतापः वनान्तः जातपुष्पैः कदम्बैः मुदित इव समन्तात् पवनचलितशाखैः शाखिभिः नृत्यति इव। केतकीनां सूचिभिः हसितम् इव विधत्ते।

व्याख्या— अस्मिञ्छ्लोके महाकविः वनान्तस्य वैशिष्ट्यत्रयमभिधत्ते। (१) सः विकसितकदम्बपुष्पैः आनन्दाभिव्यक्तिं करोति (२) वायुचञ्चलैर्वृक्षैः सः नृत्यतीव (३) केतकीकुड्मलैः सः हसतीव च। तथा च-

नवसलिलनिषेकच्छिन्नतापः= नवः= नवीनः नूतनतयेति यावत्, सलिलस्य= जलस्य, यो हि निषेकः= सिञ्चनम्, तेन छिन्नः= उच्छिन्नः विनष्टः, तापः= संतापः निदाघजन्यो यस्याऽसौ तथाविधः वनान्तः= वनप्रदेशः, जातपुष्पैः= समुद्भूतैः कुसुमैः, कदम्बैः= नीपैः मुदित इव= मोदमान इव, समन्तात्= सर्वतः, पवनचलितशाखैः= पवनेन= वायुना, चलिताः= चंचलाः विधूतेति यावत्, शाखाः येषां ते तथाविधैः, शाखिभिः= पादपैः, नृत्यतीव= नर्तनं हसितमिव= हासमिव विधत्ते= करोति।

साहित्यिकविशेषताः— अस्मिञ्छ्लोके सन्ति (१) मालिनीवृत्तम् (२) उत्प्रेक्षारूपकालंकारयोः संसृष्टिः (३) प्रसादाख्यो गुणः (४) वैदर्भी रीतिः (५) अल्पसमासवती संघटना च।

समासः— नवसलिलनिषेकाच्छिन्नतापैः= सलिलस्य निषेकः सलिलनिषेकः (ष० त० पु०) नवश्चासौ सलिलनिषेकः= नवसलिलनिषेकः (कर्मधारयः) नवसलिलनिषेकेण छिन्नः तापः यस्याऽसौ तथाविधः (ब० ब्री०) जातपुष्पैः= जातानि पुष्पाणि येषु ते तथाविधैः (ब० ब्री०) पवनचलितशाखैः= पवनेन चलिताः शाखा येषां ते तथाविधैः (ब० ब्री०)।

हिन्दी शब्दार्थ— नवसलिलनिषेकच्छिन्नतापैः= जल के नवीन सिञ्चन से जिसका संताप समाप्त हो गया हो इस प्रकार का, वनान्तः= वन प्रदेश, जातपुष्पैः= उत्पन्न हुए पुष्पों वाले, कदम्बैः= कदम्बों के माध्यम से, मुदित इव= मानों प्रसन्न

हो गया है, समन्तात्= सर्वत्र, पवनचलितशाखैः= वायु के द्वारा कँपाये गये शाखाओं वाले, शाखिभिः= वृक्षों के माध्यम से, नृत्यतीव= मानों नाच रहा है, केतकीनाम्= केतकी पुष्पों के, सूचिभिः= कलियों के माध्यम से; हसितमिव विधत्ते= मानों हँस रहा है।

उपस्थापन— इस श्लोक में महाकवि कालिदास वर्षा ऋतु के वर्णन के प्रसंग में वनान्त का वर्णन करते हुए बतला रहे हैं कि ग्रीष्म के दिनों में सूर्य की प्रचण्ड धूप से वनान्त संतप्त हो गया था किन्तु वर्षा ऋतु में तो वह वर्षा के जल से सिक्त हो गया है। उसका संताप समाप्त हो गया है। जिस तरह संताप रहित मानव प्रसन्न हो जाता है, खुशियाँ मनाता है, हँसता है और नाचने लगता है, उसी तरह इस वर्षा ऋतु में वनान्त विकसित कदम्ब पुष्पों के माध्यम से मानों प्रसन्न हो रहा है, धीरे-धीरे चलने वाली वायु के झोंके से जिनकी शाखाएँ झूम रही हैं, उन वृक्षों के माध्यम से मानों वह नाच रहा है तथा केतकी पुष्प की कलिकाओं के माध्यम से मानों वह हँस रहा है। इस तरह महाकवि ने इस श्लोक के माध्यम से वनान्त में मानवीकरण का आरोप किया है। साथ ही उन्होंने यह भी सूचित किया है कि बरसात में कदम्ब पुष्प विकसित हो जाते हैं और केवड़ा के फूल भी निकलने लग जाते हैं।

भावार्थ— जल के नवीन सेक के कारण संताप रहित वन प्रदेश विकसित कदम्ब पुष्पों के माध्यम से मानों प्रसन्न हो रहा है; पवनकम्पित शाखाओं वाले वृक्षों के माध्यम से मानों वह नाच रहा है तथा केतकी की कलियों के माध्यम से मानों वह हँस रहा है।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में मालिनी छन्द है। (२) उत्प्रेक्षा अलंकार (३) वनान्त का मानवीकरण (४) प्रसादगुण (५) अल्पवृत्ति संघटना तथा (६) वैदर्भी रीति है।

शिरसि बकुलमालां मालतीभिः समेतां,
विकसितनवपुष्पैर्यूथिकाकुड्मलैश्च।
विकचनवकदम्बैः कर्णपूरं वधूनां
रचयति जलदौघः कान्तवत्काल एषः।। २५।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके महाकविः कालिदासो वर्षर्तोः वर्णनस्य प्रसङ्गेन वक्ति यत् अयं कालः कामिनीनां तथैव शृंगारं करोति यथा तासां पतयः नानाविधैरलंकारैः अलंकरणं कुर्वन्ति। तथाहि- कामिजनवदयं कालः विकसितैः बकुलपुष्पैः मालतीपुष्पैश्च तासां शिरसि मालां निर्माति। किञ्च यूथिकायाः कुड्मलैः विकसित-कदम्बकुसुमैश्च कर्णपूरं निर्माति। अयमाशयः वर्षाकाले कदम्बयूथिकामालत्यादीनि पुष्पाणि प्रचुरमात्रायां विकसितानि भवन्ति। तैश्च पुष्पैः कामिन्यः स्वालंकरणं कुर्वन्ति।

अन्वयः— एषः जलदौघः कालः कान्तवत् वधूनां शिरसि मालतीभिः समेतां बकुलमालां रचयति। विकसितनवपुष्पैः यूथिकाकुड्मलैः विकचनवकदम्बैः च कर्णपूरं रचयति।

व्याख्या— एषः= अयम् मया वर्ण्यमानः जलदौघः= जलदानाम्= मेघानां ओघः= समूहस्वरूपः, कालः= समयः, वर्षाकाल इति भावः। कान्तवत्= कमनीय-पुरुषसदृशः, 'तेन तुल्यं क्रियाचेद्वतिः' येन प्रकारेण कामिजनाः कामिनीनां अलंकरणं कुर्वन्ति तथैवायमपि कामिनीनामलंकरणकर्मणि व्यापृतः बधूनाम्= रमणीनाम्, शिरसि= मूर्ध्नि, मालतीभिः= मालतीकुसुमैरित्यर्थः समेताम्= समन्विताम्, बकुल-मालाम्= मौलिश्री मालाम्, रचयति= निर्माति। विकसितनवपुष्पैः= विकसितानि= विकचानि, नवानि=नवीनानि, पुष्पाणि= कुसुमानि, येषु तैः, यूथिका- कुड्मलैश्च= कलिकाभिः, विकचनवकदम्बैः= विकसितनवीनकदम्बकुसुमैः, कर्णपूरम्= कर्णाभ-रणम्, रचयति= निर्माति।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके मालिनीवृत्तम् (२) रमणीनामाभ-रणद्वयस्य वर्णनम् (३) उपमालंकारः (४) शृंगाररसाभासो व्यंग्यः (५) गुणीभूत-व्यंग्यकाव्यता (६) माधुर्यप्रसादाख्यौ गुणौ (७) वैदर्भी रीतिः (८) अल्पसमासवती संघटना च सन्ति।

समासः— जलदौघः= जलदानाम् ओघः (ष० त० पु०), बकुलमालाम्- बकुलस्य मालाम् (ष० त० पु०) विकसितनवपुष्पैः= विकसितानि नवानि पुष्पाणि येषु तैः (ब० व्री०) यूथिकाकुड्मलैः- यूथिकायाः कुड्मलैः। विकचनवकदम्बैः= विकचश्चासौ नवकदम्बः तैः (कर्मधारयः)।

हिन्दी शब्दार्थ— एषः= यह, जलदौघः= मेघसमूहस्वरूप, कालः= समय कान्तवत्= पति के समान, बधूनाम्= रमणियों के, शिरसि= शिर पर, मालतीभिः समेताम्= मालती पुष्प से युक्त, बकुलमालाम्= मौलिश्री की माला को, रचयति= बनाता है। विकसितनवपुष्पैः= जिसमें नवीन पुष्प विकसित हो गए हैं इस तरह के यूथिकाकुड्मलैः= जुही की कलियों से, च= और, विकचनवकदम्बैः= विकसितनवी-नकदम्ब पुष्पों से, कर्णपूरम्= कुण्डल, रचयति= बनाने का काम करता है।

उपस्थापन— इस श्लोक में महाकवि कालिदास वर्षाकाल का वर्णन करते हुए बतलाते हैं कि यह वर्षा काल उसी प्रकार से रमणियों का विविध प्रकार के पुष्पाभूषणों से शृंगार करता है जिस प्रकार से कोई कामी पुरुष अपनी कामिनी का विविध प्रकार के पुष्पों से शृंगार से करता है। वह मालती पुष्पों को मिलाकर मौलिश्री के पुष्पों से उनके सिर की माला बनाता है। जुही तथा कदम्ब पुष्पों से उनके कर्णपूर का निर्माण करता है। कहने का अभिप्राय यह है कि इस काल में मालती, कदम्ब, जुही, मौलिश्री इत्यादि के सुगन्ध से भरपूर पुष्प विकसित होने लगते हैं और सुन्दरियाँ इन पुष्पों से अपने को अनेक प्रकार से सजाती हैं।

भावार्थ— यह वर्षा काल कामी पुरुषों के समान मालती पुष्प मिश्रित मौलिश्री के पुष्पों से कामिनियों के सिर की माला तथा जुही मिश्रित विकसित कदम्ब पुष्पों से कर्णाभरण का निर्माण करता है।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में मालिनीवृत्त है (२) उपमालंकार है (३) सम्भोग शृंगाररसाभास है (४) प्रसाद एवं माधुर्य गुण हैं (५) अल्पसमासवती संघटना है तथा (६) वैदर्भी रीति है।

इस श्लोक के द्वारा महाकवि अपने भावों को पूर्णरूप से अभिव्यक्त नहीं कर पाए हैं।

दधति वरकुचाग्रै रुन्नतैर्हारयष्टिं
प्रतनुसितदुकूलान्यायतैः श्रोणिबिम्बैः।
नवजलकणसेकादुद्गतां रोमराजीं
ललितबलिविभंगैर्मध्यदेशैश्च नार्यः।। २६ ।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके महाकविः कालिदासो वर्षाकाले सुन्दरीणां जायमानं सौन्दर्यविशेषं वर्णयन् वक्ति यत् साम्प्रतं कामिन्यः स्वकीयेषून्नतेषूरोजेषु हारयष्टिं धारयन्ति, विस्तृतेषु नितम्बेषु सूक्ष्माणि दुकूलानि विभ्रति, नवीनजलविन्दुसेकसमुद्गतासु त्रिवलीषु रोमराजीमतिललितां विभ्रति च।

अन्वयः— नार्यः उन्नतैः वरकुचाग्रैः हारयष्टिं, आयतैः श्रोणिबिम्बैः प्रतनुसितदुकूलानि, मध्यदेशैः ललितवलिविभंगैः नवजलकणसेकादुद्गता रोमराजीं दधति।

व्याख्या— नार्यः= रमण्यः, उन्नतैः= अत्युच्चकैः पृथुलैरिति यावत् वरकुचाग्रैः= वराणाम् उत्तमकोटिकानां युवजनसम्मोहनसाधनानाम्, कुचानम्= स्तनानाम्, अग्रैः= अग्रभागैः, हारयष्टिम्= कलापम्, आयतैः= विस्तृतैः, श्रोणीबिम्बैः= कटिप्रदेशैः, प्रतनुसितदुकूलानि= प्रतनूनि= सूक्ष्माणि, सितानि= धवलानि दुकूलानि= वस्त्राणि, मध्यदेशैः= शरीरस्यमध्यभागैः ललितबलिविभंगैः= ललिताः= मनोज्ञाः ये वलिविभंगाः= त्रिबलीरेखाः उदर मध्ये विराजिताः तैः, नवजलकणसेकादुद्गताम्= नवाः= नवीनाः ये जलकणाः= जलबिन्दवः तेषाम्= सेकात्= सिञ्चनात्, उद्गताम्= उदभूताम् उन्नताम् वा रोमराजिम्= लोमपंक्तिम्, दधति= विभ्रति।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके मालिनी वृत्तम् (२) रत्युपष्टम्भकविभावानाम् वर्णनम् (३) माधुर्यप्रसादाख्यौ गुणौ (४) वैदर्भी रीतिः (५) अल्पसमासवती संघटना च सन्ति।

समासः— वरकुचाग्रैः वरश्चासौ कुचः वरकुचः (कर्मधारयः) वरकुचानाम् अग्रैः= वरकुचाग्रैः (ष० त० पु०) श्रोणिबिम्बैः- श्रोणीनाम् बिम्बैः (ष० त० पु०) प्रतनुसितदुकूलानि= सितानि चेमानि दुकूलानि= सितदुकूलानि (कर्मधारयः) प्रतनूनि चेमानि सितदुकूलानि= प्रतनुसितदुकूलानि (कर्मधारयः) मध्यदेशैः= मध्यश्चाऽसौ देशः= मध्यदेशः (कर्मधारयः) ललितबलिविभंगैः= ललिताश्चेमा बलयः= ललितबलयः (कर्मधारयः) तासां विभंगैः= ललितबलिविभंगैः (ष० त० पु०) नवजलकणसेकात्= नवाश्चेमाः जलकणाः= नवजलकणाः (कर्मधारयः) तेषां सेकात्= नवजलकणसेकात् (ष० त० पु०) रोमराजीम् रोमणाम् राजीम्= रोमराजीम् (ष० त० पु०)।

हिन्दी शब्दार्थ— नार्यः= नारियाँ, उन्नतैः= उठे हुए, वरकुचाग्रैः= श्रेष्ठ स्तनों के अग्रभाग पर, हारयष्टिम्= हार, आयतैः= विस्तृत, श्रोणिबिम्बैः= कटिप्रदेश पर, प्रतनुसितदुकूलानि= पतले उजले वस्त्र, मध्यदेशैः= शरीर के मध्यभाग में विद्यमान, ललितबलिविभंगैः= मनोज्ञ त्रिबली पर, नवजलकणसेकात्= नवीन जल

कण के सिंचन से उद्गताम्= उठी हुई, रोमराजीम्= रोम पंक्ति को, दधति= धारण करती हैं।

उपस्थापन— इस श्लोक में कवि वर्षा ऋतु का वर्णन करते हुए रमणियों की तीन विशेषताओं का वर्णन करते हैं। (१) रमणियों के उत्तम कोटि के स्तन पृथुल हैं। उनके अग्रभाग उठे हुए हैं और उनके ऊपर वे मोतियों का हार धारण किए हुई हैं। (२) उनका नितम्ब भाग अत्यधिक विस्तृत है। वे इस समय अपने नितम्बभाग पर पतले तथा उजले वस्त्र को धारण किए हुई हैं। (३) वर्षा ऋतु में नई वर्षा होने लगी है। वर्षा का जल उनके शरीर के ऊपर से ढलकता हुआ उदर के त्रिबली प्रदेश पर पहुँचता है तो जल के शीतल संस्पर्श से रोमाञ्चित रमणियों के त्रिबली के रोओं के ऊपर ही जल की बून्दें टँगी रह जाती हैं, जो अत्यन्त ही मनोहर लगती हैं।

भावार्थ— रमणियाँ अपने उन्नत स्तनों के अग्रभाग में हार धारण करती हैं, अपने विस्तृत नितम्ब भाग पर वे उजले वस्त्रों को धारण करती हैं तथा उनकी उदरस्थ त्रिबली प्रदेश की जल से सिंचित तथा रोमाञ्चित लोम पंक्तियाँ जल कण को धारण करती हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में मालिनीवृत्त है। (२) रति के उद्बोधक विभावों का वर्णन है। (३) सम्भोग शृंगार रस वयंग्य है। (४) माधुर्य और प्रसाद नामक गुण हैं, (५) अल्पसमासवती संघटना है तथा (६) वैदर्भी रीति है।

नवजलकणसङ्गाच्छीततामादधानः
कुसुमभरनतानां लासकः पादपानाम्।
जनितरुचिरगन्धः केतकीनां रजोभिः
परिहरति नभस्वान्प्रोषितानां मनांसि।। २७।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके महाकविः कालिदासो वर्षर्तोः वायोः वैशिष्ट्य चतुष्टयमभिधत्ते। (१) वर्षाविन्दुसंबन्धाद् वायुः शैत्यं विभर्ति। अस्मिन् रुक्षस्पर्शस्या भावो वर्त्तते। अतएवायं रत्युपष्टम्भकतां गतः। (२) मन्दं मन्दं वाति वायुः। सः पुष्पभारनतान् पादपान् स्वकम्पनेननर्तयतीव। (३) केतकीपुष्पपरागसम्बन्धात् सौगन्ध्यमावहतीति वायुः साम्प्रतं शीतलः, मन्दः सुगन्धश्च सञ्जातः। (४) इत्थं भूतो वायुः प्रोषितपतिकानां नारीणामपि मनांसि लुण्ठति।

अन्वयः— नवजलकणसङ्गात् शीतताम् आदधानः, कुसुमभरनतानां पादपानां लासकः केतकीनां रजोभिः जनितरुचिरगन्धः नभःस्वान् प्रोषितानां मनांसि परिहरति।

व्याख्या— अस्मिञ्छ्लोके महाकविः वर्षाकालीनस्य शैत्यमान्द्यसौगन्ध्यमावहतः वायोः प्रोषितभर्तृकानामौत्कण्ठ्योद्दीपनत्वं वर्णयति। तथा च नवजलकणसङ्गात्= नवस्य= नवीनस्य, जलकणस्य= वर्षाजलविन्दोः, संगात्= संबन्धात्, शीतताम्= शैत्यम्, आदधानः= आवहन्, कुसुमभरनतानाम्= कुसुमानाम्= पुष्पाणाम्, भरेण= भारेण, नतानाम्= नम्रतां गतानां, पादपानाम्= वृक्षाणां, लासकः= नर्तयिता, केतकीनाम्= तालीनाम्, रजोभिः= परागैः, जनितरुचिरगन्धः= जनितः= उत्पन्नः,

रुचिरः= मनोज्ञः, गन्धो यस्मिन् सः, नभस्वान्= वायुः, प्रोषितानाम्= प्रोषितपतिकानां, मनांसि= चेतांसि, परिहरति= चोरयति।

साहित्यिकविशेषः— (१) अस्मिञ्छ्लोके मालिनीवृत्तम् (२) वायोः वैशिष्ट्यचतुष्टयम् (३) वायोः विप्रलम्भवर्द्धकत्वम् (४) अल्पसमासवती संघटना (५) माधुर्यगुणः (६) वैदर्भी रीतिश्च सन्ति।

समासः— नवजलकणसङ्गात्-नवश्चासौ जलकणः= नवजलकणः (कर्मधारयः) तस्य संगात् (ष० त० पु०), कुसुमभरनतानाम्= कुसुमानां भरः= कुसुमभरः (ष० त० पु०) तेन नतानाम् (तृ० त० पु०) जनितरुचिरगन्धः= जनितः रुचिरो गन्धो यस्मिन्नसौ (ब० ब्री०)

हिन्दी शब्दार्थ— नवजलकणसङ्गात्= नवीन जलकण के संपर्क के कारण, शीतताम्= शीतलता को, आदधानः= धारण करने वाला, कुसुमभरनतानाम्= पुष्पों के भार से झुके हुए, पादपानाम्= वृक्षों को, लासकः= नचाने वाला, केतकीनाम्= केवड़ा के, रजोभिः= परागों से, जनितरुचिरगन्धः= जिसमें सुन्दर सुगन्धि उत्पन्न हो गयी है इस प्रकार का, नभस्वान्= वायु, प्रोषितानाम्= जिनके प्रियतम विदेश चले गये हैं उन रमणियों के, मनांसि= मन को, परहरति= चुरा लेता है।

उपस्थापन— इस श्लोक में महाकवि बतला रहे हैं कि इस वर्षा ऋतु में चलने वाली वायु की चार विशेषताए हैं। (१) गर्मी बीत जाने के कारण होने वाली वर्षा के नवीन जलकणों का संस्पर्श हो जाने से हवा में शीतलता आ गयी है। अतएव ठंढ़ी हवा चल रही है। (२) वृक्ष पुष्पों के भार से झुक गए हैं। धीरे-धीरे चलती हुई मानों उन वृक्षों से नृत्य करवा रही है। (३) केवड़ा के फूल भी निकल गए हैं। उन फूलों के पराग हवा में मिले जा रहे हैं; अतएव हवा में मनोहर सुगन्ध उत्पन्न हो गयी है। (४) इस तरह की शीतल मन्द तथा सुगन्ध हवा उन रमणियों के मन को चुरा लेने का काम कर रही है, जिनके प्रियतम विदेश चले गए हैं। अतएव इस वायु के संस्पर्श से उनमें विप्रयोग की भावना प्रबल हो जाती है।

भावार्थ— नवीन जलकणों के संस्पर्श से शीतल, पुष्पों के भार से झुके हुए वृक्षों को कंपाने वाला तथा केवड़ा के पराग का संबन्ध होने के कारण सुगन्धित वायु प्रोषितपतिका रमणियों के मन को चुरा लेने का कार्य कर रही है।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में मालिनी छन्द है। (२) शीतल मन्द एवं सुगन्ध वायु का वर्णन कामोद्दीपन के रूप में किया गया है। (३) विप्रयोग हेतुक विप्रलम्भ शृंगार रस व्यंग्य है। (४) प्रसाद एवं माधुर्य गुण का सद्भाव है। (५) अल्प समासवती संघटना है तथा (६) वैदर्भी रीति है।

जलभरविनतानामाश्रयो ऽस्माकमुच्चै
रयमिति जलसेकैस्तोयदास्तोयनम्राः।
अतिशयपरुषाभिर्ग्रीष्मवह्नेः शिखाभिः
समुपजनिततापं ह्लादयन्तीव विन्ध्यम्।। २८।।

भावार्थ— जल के भार से झुकेहुए धर्मःलोगों का सर्वोत्तम आश्रय यह ही होता है, इसी अभिप्राय से जल भरे मेघ गर्मी की आग से संतप्त विन्ध्य पर्वत के सन्ताप को शान्त करने के लिए मानो उस पर वर्षा करते हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ— इस श्लोक में (१) मालिनी वृत्त, (२) उत्प्रेक्षालंकार (३) अल्पसमासवती संघटना (४) प्रसाद नामक गुण तथा (५) वैदर्भी रीति के सद्भाव हैं।

बहुगुणरमणीयः कामिनीचित्तहारी
तरुविटपलतानां बान्धवो निर्विकारः।
जलदसमय एषः प्राणिनां प्राणभूतो
दिशतु तव हितानि प्रायशो वाञ्छितानि।। २८।।

इति महाकविकालिदासकृतौ ऋतुसंहारे प्रावृड्वर्णनं नाम द्वितीयः सर्गः।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके महाकविः कालिदासो वर्षर्तुवर्णनस्य प्रसङ्गेन कालस्यैतस्य कानिचन वैशिष्ट्यानि वक्ति। तथाहि- (१) अयं कालः अनेकगुणसमन्वितो वर्त्तते। (२) कामिनीजनचित्तचौरोऽयं कालः (३) स्वाभाविकरूपेणायं वृक्षादिकानां स्थावराणां बान्धवो वर्त्तते जलप्रदानेन तेषां प्राणस्य पोषकत्वात्। पानीय प्रदायकत्वादेवायं कालः समेषां प्राणिनां प्राणप्रदो विद्यते। इत्थं भूतोऽयं समेषां सहृदयानामभिलषितार्थप्रदो भवतु कालः।

अन्वयः— बहुगुणरमणीयः कामिनीचित्तहारी तरुविटपलतानां निर्विकारः बान्धवः। प्राणिनां प्राणभूतः एष जलदसमयः तव वाञ्छितानि हितानि प्रायशो दिशतु।

व्याख्या— अस्मिन् पद्ये महाकविः वर्षाकालस्य वैशिष्ट्यचतुष्ट्यमभिधत्ते। तद्यथा- (१) बहुगुणरमणीयत्वम् (२) कामिनीजनचित्तापहारकत्वम्, (३) स्थावराणां वृक्षलतादिकानां स्वाभाविकसुहृत्त्वम्, (४) सकलजीवप्राणप्रदत्वञ्च। तथाहि- बहुगुणरमणीयः-बहुभ्यः= उपरि सर्गेऽस्मिन् वर्णितेभ्यो गुणेभ्यः रमणीयः= मनोह्लादकः, कामिनीचित्तहारी= कामिनीनाम् कामयन्ते रत्यादिकम् प्रणयिजनसह्वासादिना इति कामिन्यः, तासाम् चित्तम्= अन्तः करणम्, हरति= अपहरति यअसौ तथाविधः, तरुविटपलतानाम्= तरवश्च= वृक्षाश्च विटपाश्च, लताश्च= व्रततयश्च तरुविटपलताः, तासाम्, निर्विकारः= नैसर्गिकः, बान्धवः= हितकारी; प्राणिनाम्= समेषां जीवानाम्, प्राणभूतः= प्राणस्वरूपः, प्राणानामप्यायकत्वादेव पानीयप्रदस्य प्रावृडः सर्वप्राणिप्राणत्वं अव्याहतम् एषः= अयम्, जलदः समयः= वर्षाकालः, तव=भवतः पाठकानाम् सहृदयानाञ्च, वाञ्छितानि= अभिप्रेतानि, हितानि= कल्याणानि, दिशतु= प्रयच्छतु।

साहित्यिकाविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके मालिनी छन्दः (२) वर्षर्तुवर्णनस्यायमुपसंहारश्लोकः (३) वर्षर्तोः वैशिष्ट्यचतुष्टयम्, (४) प्रसादगुणः (५) अल्पसमासवती संघटना (६) वैदर्भी रीतिश्च सन्ति।

समासः— बहुगुणरमणीयः= बहुभिः गुणैः रमणीयः (च० त० पु०), कामिनीचित्तहारी= कामिनीनां चित्तहारी (ष० त० पु०), तरुविटपलतानाम्= तरुश्च विटपश्च, लता च तासाम् (द्वन्द्वः)।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके महाकविः वर्षर्तोः वर्णनस्य प्रसङ्गेन वक्ति यत् साम्प्रतम् मेघाः विन्ध्यपर्वतोपरि प्रभूतं वर्षणं कुर्वन्ति । तत्र कारणमास्ते; यत् मेघानां मनसि वर्त्तते यत् यदा वयम् जलभरेण विनताः भवामः तदाऽयमेव विन्ध्यपर्वतः अस्माकं सर्वापेक्षया अत्यन्तानुकूल आश्रयो भवति । ग्रीष्मर्तौ अयं पर्वतः ग्रीष्मवह्नेः शिखाभिः अत्यन्तं संतप्तो बभूव । अतएवास्माभिरस्य सन्तापशमनाय प्रभूतमात्रायामत्र वर्षणं करणीयम् ।

अन्वयः— जलभरविनतानां अस्माकं अयम् उच्चै इति तोयनम्राः तोयदाः अतिशयपरुषाभिः शिखाभिः समुपजनिततापं विन्ध्यम् जलसेकैः ह्लादयन्तीव ।

व्याख्या— जलभरविनतानाम्= जलस्य= सलिलस्य भरः= भारः, तेन हेतुना, विनतानाम्= नम्रतां गतानाम्, भाराक्रान्तो नम्रो भवत्येव । अस्माकम्= बलाहकानाम्, अयम्= एष विन्ध्याभिधानः पर्वतः, उच्चैः= सर्वश्रेष्ठः, आश्रयोः भवतीति मनसि आकलय्य, तोयनम्राः= तोयेन जलभरेण नम्राः= अधस्तात् आगताः, तोयदाः= मेघाः, ग्रीष्मवह्नेः= ग्रीष्मर्तोः अग्नेः, अशियपरुषाभिः= अत्यन्तरुक्षाभिः, शिखाभिः= ज्वालाभिः, समुपजनिततापम्= समुपजनितः= समुत्पन्नः, तापः= संतापो यस्मिन्नसौ तथाविधम्, विन्ध्यम्= विन्ध्याभिधानम् पर्वतम्, जलसेकैः= जलस्य सेचनैः, ह्लादयन्तीव= आनन्दितं कुर्वन्तीवेति मन्ये ।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके सन्ति मालिनीवृत्तम् । (२) उत्प्रेक्षालंकारः (३) अल्पसमासवती संघटना (४) प्रसादाख्यो गुणः (५) वैदर्भी रीतिश्च ।

समासः— जलभरविनतानाम्= जलस्य भरः= जलभरः (ष० त० पु०) तेन विनतानाम् (तृ० त० पु०) तोयनम्राः- तोयेन नम्राः (तृ० त० पु०) ग्रीष्मवह्नेः= ग्रीष्मस्य वह्नेः (ष० त० पु०) अतिशयपरुषाभिः= अतिशयेन परुषाभिः (कर्मधारयः) समुपजनिततापम्= समुपजनितः तापः यस्मिन्नसौ तथाविधम् (बं० ब्री०) ।

हिन्दी शब्दार्थ— जलभरविनतानाम्= जल के भार से झुके हुए, अस्माकम्= हम मेघों का, अयम्- यह विन्ध्य पर्वत, उच्चैः= सर्वश्रेष्ठ, आश्रयः= आश्रय है । इति= इस प्रकार से सोचकर, तोयनम्राः= जल के भार से झुके हुए, तोयदाः= मेघ, ग्रीष्मवह्नेः= ग्रीष्म ऋतु की आग की, अतिशयपरुषाभिः= अत्यन्त रुक्ष स्वभाव वाली, शिखाभिः= ज्वालाओं से, समुपजनिततापम्= उत्पन्न संताप वाले ह्लादयन्तीव= मानों आनन्दित करते हैं ।

उपस्थापन— इस श्लोक में महाकवि वर्षा ऋतु में विन्ध्य पर्वत पर जोर-शोर से बरसने वाले मेघों की कृतज्ञता का वर्णन कर रहे हैं । वे बतलाते हैं कि बादलों के मन में यह भावना भरी हुई है कि जब हम हम जल के भार से झुके रहते हैं उस समय यह विन्ध्यपर्वत ही हम लोगों का सर्वोत्तम आश्रय बनता है । ग्रीष्म ऋतु की गर्मी की लपट से यह पर्वत अत्यन्त संतप्त हो चुका है । इसके संताप की शान्ति के लिए हम लोगों को अपनी वर्षा से इसे खूब शीतल बना देना चाहिए । इसी अभिप्राय से ये मेघ मानों विन्ध्य पर्वत पर प्रचुर वर्षा करके इसे आनन्दित करना चाहते हैं ।

हिन्दी शब्दार्थ— बहुगुणरमणीयः= अनेक गुणों के कारण मनोहर, कामिनी चित्तहारी= कामिनियों के चित्त को चुरा लेने वाला, तरुविटपलतानाम्= वृक्ष, गुल्म तथा लताओं का, निर्विकारः= स्वाभाविक, बान्धवः= बन्धु, प्राणिनाम्= समस्त प्राणधारियों के, प्राणभूतः=प्राणस्वरूप, एषः= यह , जलदः कालः= वर्षाकाल, तव= तुम्हारे, वाञ्छितानि= अभिलषित, हितानि= अर्थों को, दिशतु= प्रदान करे।

उपस्थापन— इस श्लोक के द्वारा वर्षा ऋतु के वर्णन का उपसंहार करते हुए महाकवि कालिदास कहते हैं कि ऊपर के अट्ठाइस श्लोकों में वर्षा ऋतु के जो गुण बतलाए गए हैं उन समस्त गुणों से सम्पन्न होने के कारण यह ऋतु अत्यन्त मनोहर लगती है। अपने गुणों से युक्त होने के कारण ही कामिनियों के चित्त को चुरा लेता है। यह वृक्ष, लता, गुल्म आदि स्थावरों के लिए तो स्वाभाविक रूप से बान्धव है। बिना किसी कारण के जल प्रदान करके यह उनका उपकार किया करता है। समस्त प्राणियों को जलप्रदान करने के कारण यह सबों के प्राण स्वरूप है। जल ही प्राणों को आप्यायित करता है। जल के बिना किसी भी प्राणी के लिए प्राणधारण करना असंभव है। इस प्रकार का यह समय सबों के लिए कल्याणप्रद है।

भावार्थ— अनेक गुण सम्पन्न होने के कारण मनोज्ञ, कामिनियों के चित्त को चुराने वाला, वृक्ष, लता, गुल्म आदि का स्वाभाविक बान्धव तथा प्राणियों के प्राणस्वरूप यह वर्षा ऋतु आप सबों को अभिलषित अर्थ प्रदान करे।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में मालिनी छन्द है। (२) वर्षा वर्णन का यह उपसंहार श्लोक है। (३) इसमें प्रसाद नामक गुण है। (४) अल्पसमासवती संघटना है और (५) वैदर्भी रीति है।

इस तरह महाकवि कालिदास रचित ऋतुसंहार काव्य का द्वितीय सर्ग सम्पूर्ण हुआ।

तृतीयः सर्गः
शरद्वर्णनम्

काशांशुका विकचपद्ममनोज्ञवक्त्रा सोन्मादहंसरवनूपुरनादरम्या।
आपक्वशालिरुचिरा नतगात्रयष्टिः प्राप्ता शरन्नववधूरिव रूपरम्या।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अनेन श्लोकेन महाकविः कालिदासः शरदृतोः वर्णनं करोति। अत्र सः शरदृतोः नववधोः रूपेण वर्णनं करोति। शरद्वधूरियं रूपरम्या वर्त्तते। काशविकास एवास्याः वस्त्रम्, विकसितानि कमलान्येवास्याः शरद्वधोः मनोज्ञं मुखमण्डलम्, उत्कटहंसस्वनमेवास्याः नूपुररवः, तस्याः आपक्वशालिरेव रुचिरं कृशं गात्रं तथाविधेयं शरद्वधूरतीव रमणीया वर्त्तते।

अन्वयः— काशांशुका विकचपद्ममनोज्ञवक्त्रा सोन्मादहंसरवनूपुरनादरम्या आपक्वशालिरुचिरा नतगात्रयष्टिः रूपरम्या नववधूः इव शरत् प्राप्ता।

व्याख्या— अस्मिञ्छ्लोके महाकविः शरदृतोः साङ्गरूपकस्य माध्यमेन वर्णनं करोति। तथाहिकाशांशुकाकाश एव अंशुकम्= वस्त्रम् यस्याः सा तथाविधा काशविकासवदतिधवलवस्त्रधारिणीति यावत्, विकचपद्ममनोज्ञवक्त्रा= विकचानि= विकसितानि, यानि पद्मानि तान्येव मनोज्ञम्= रुचिरम्, वक्त्रम्= मुखं यस्याः सा सोन्मादहंसरवनूपुरनादरम्या= सोन्मादाः= उन्मत्ताः ये हंसाः,= कलहंसाः तेषां रवः= कलरव एव नूपुरस्य=मञ्जीरस्य नादः= ध्वनिः तेन रम्या= रन्तुं योग्या रमणीयेति भावः, आपक्वशालिरुचिरा= आङ्= समन्तात् परिपूर्णरूपेणेति भावः, पक्वाः= परिपक्वतां गता ये शालयः= धान्यानि, तद्वत् रुचिरा=मनोहरा, परिपक्वशालिवर्णवदतिपीतवर्णवती सा मनोहरेति भावः, नतगात्रयष्टिः= नता=नम्रा गात्रयष्टिः= शरीरं, यस्याः सा इत्थंभूता, रूपरम्या= रूपेण= सौन्दर्येण, रम्या= मनोज्ञा अत्यन्तं सुन्दरीति भावः नवबधूः= नवोढा वधू इव= सदृशम्, शरद्= शरदृतुः प्राप्ता= समागता।

अस्य वर्णनस्य माध्यमेन महाकविना शरदृतोः वैशिष्ट्यचतुष्टयमभिहितम्— (१) शरदृतौ काशस्य विकासो जायते, (२) सरस्सु कमलानि विकसितानि भवन्ति, (३) उन्मत्ता हंसा रवं कुर्वन्ति (४) क्षेत्रेषु शालयः परिपक्वाः भवन्तीति च।

इयं शरदृतुः वधूरिव वर्त्तते। अस्याः वधोः विकसितः काश एव धवलं वस्त्रम्, विकसितानि कमलानि एव मुखमण्डलम्, हंसानां कलरव एव युवजनमोहन-विद्येव अस्याः शरन्नायिकायाः मञ्जीरध्वनिः, परिपक्वशालिपीतवर्णमेवास्या रूपधनम्।

साहित्यिकविशेषताः— अस्मिञ्छ्लोके (१) वसन्ततिलकावृत्तम्— 'ज्ञेया वसन्ततिलका तभजाजगौगः।' इति हि वसन्ततिलकावृत्तस्य लक्षणम्। (२) साङ्गरूप-

कमत्रालङ्कारः-शरदृतौ बधूत्वारोपात्। तथाचोक्तं साहित्यदर्पणकारेण- 'रूपकं रूपितारोपो विषये निरुपह्नवे' इति। (३) मध्यमसमावती संघटना चात्र। (४) सम्भोगश्रृङ्गाररसोऽत्र व्यङ्ग्यः। (५) माधुर्य प्रसादाख्यावत्र गुणौ। (६) वैदर्भी-रीतिश्चात्र।

समासः— काशांशुका= काश एव अंशुको यस्याः सा (ब० ब्री०) विकचपद्मम-नोज्ञवक्त्रा-विकचानि पद्मानि एव मनोज्ञं वक्त्रं यस्याः सा (ब० ब्री०) सोन्मादहंसरवनूपुरनादरम्या- सोन्मादाश्चेमे हंसाः सोन्मादहंसाः (कर्मधारयः) तेषां रव एव नूपुरनादः तेन रम्या या सा तथाविधा (ब० ब्री०) आपक्वशालिरुचिरा-आपक्वाश्चेमे शालयः= आपक्वशालयः (कर्मधारयः) तद्वद्रुचिरा= आपक्वशालि-रुचिरा या सा (ब० ब्री०) नतगात्रयष्टिः- नता गात्रयष्टिः यस्याः सा= (ब० ब्री०) रूपरम्या-रूपेण रम्या (तृ० त० पु०)

हिन्दी शब्दार्थ— काशांशुका= काश ही जिसका वस्त्र है, विकचपद्मम-नोज्ञवक्त्रा= विकसित कमल ही जिसका मनोहर मुखड़ा है, सोन्मादहंसरव-नूपुरनादरम्याउन्मत्तहंसों की कलखरूपी नूपुरध्वनि सी मनोहर लगने वाली, आपक्व-शालिरुचिरा= पके हुए धान के समान गौरवर्ण की अतएव मनोहर, नतागात्रयष्टिः= जिसका शरीर झुक सा गया है, इस तरह की 'रूपरम्या= अत्यन्त सुन्दरी, शरद्= नवबधूः इव= नवविवाहिता वधू के समान शरद्= शरद् ऋतु रूपी नायिका, प्राप्ता= आ गयी है।

उपस्थापन— इस श्लोक के माध्यम से शरद् ऋतु के वर्णन का उपक्रम करते हुए महाकवि कालिदास शरद् ऋतु का अत्यन्त सुन्दरी के रूप में एक रूपक के माध्यम से वर्णन करते हैं। वे कहते हैं कि इस शरद् नायिका का कमल समूह ही मनोहर मुखमण्डल है, खेतों में पककर पीले और कृश धान के समान उसका गौर वर्ण का दुबला-पतला शरीर है तथा उन्मत्त हंसों का कलरव ही उसकी मधुर मञ्जीर ध्वनि के समान है। इस तरह की इस शरद्, नायिका का सौन्दर्य उपभोगार्ह है।

इस वर्णन के माध्यम से महाकवि ने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि शरद् ऋतु में काश खिल जाते हैं, सरोवरों में कमल विकसित हो जाते हैं, उन्मत्त हंस सर्वत्र कलरव करने लग जाते हैं तथा खेतों में धान की फसल पक कर पीली और कृश हो जाती है।

भावार्थ— विकसित काशरूपी वस्त्र को धारण करने वाली, विकसित कमलरूपी मुखवाली, उन्मत्त हंसों के कलरव रूपी मञ्जीर ध्वनि वाली तथा धानों के समान रूप तथा कृश शरीर वाली शरद् ऋतु नवविवाहिता वधू के समान उपभोगक्षम है।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में वसन्ततिलकावृत्त है। 'ज्ञेया वसन्ततिलका तभजा जगौ गः।' यही वसन्ततिलकावृत्त का लक्षण है। (२) शरद् ऋतु में नायिकात्व का आरोप करने के कारण इस श्लोक में रूपकालंकार है। 'रूपकं रूपितोरोपो विषये निरुपह्नवे।' यही रूपकालंकार का लक्षण है।

(३) शरद् नायिका के अङ्गप्रत्यङ्ग का वर्णन किया गया है अतएव इसमें

साङ्गरूपक है। (४) इस श्लोक में सम्भोग श्रंङ्गाररस व्यंग्य है। (५) यहाँ पर माधुर्य एवं प्रसाद नामक गुण का सद्भाव है। (६) इसमें वैदर्भीरीति है तथा (७) अल्पसमासवती संघटना है।

काशैर्मही शिशिरदीधितिना रजन्यो हंसैर्जलानि सरितां कुमुदैः सरांसि।
सप्तच्छदैः कुसुमभारनतैर्वनन्ताः शुक्लीकृतान्युपवनानि च मालतीभिः ।।२।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके शदृतोर्वर्णनस्य प्रसङ्गेन महाकवि वर्णयति यदृतावस्मिन् पृथिव्यां सर्वत्र काशविकासस्यैव शोभाऽवलोकिता भवति। रात्रौ शारदी चन्द्रिका प्रसृमरा भवति धवलतमा, सरितां जलेषु हंसाः क्रीडन्ति, सरस्सु कुमुदानि विकसितानि भवन्ति, वनेषु सप्तच्छदो वृक्षो विकसितो विभाति, उपवनेषु च मालती पुष्पं विकसितं विलोक्यते।

अन्वयः— काशैः मही, शिशिरदीधितिना रजन्यः, हंसैः सरितां जलानि, कुमुदैः सरांसि, कुसुमभारनतैः सप्तच्छदैः वनान्ताः मालतीभिः उपवनानि च शुक्लीकृतानि।

व्याख्या— अस्मिञ्छ्लोके महाकविः शरदृतोः षट्विशेषता अभिधत्ते ताश्च सन्ति- (१) काशो विकसितो भवति (२) विशदा चन्द्रिका पृथिव्यां प्रसृमरा भवति, (३) सरित्सु हंसास्तरन्ति (४) सरस्सु कैरवाणि राजन्ते (५) वनेषु सप्तच्छदो भवति विकसितः (६) उपवनेषु मालतीपुष्पाणि च विकसतान्यस्मिनृतौ। तथाहि—

काशैः= काशाभिख्यैः तृणविशेषैः मही= पृथिवी, शिशिरदीधितिना= चन्द्रमसा रजन्यः=रात्र्यः, हंसैः= कलहंसैः, सरिताम्= नदीनाम् जलानि= सलिलानि, कुमुदैः= कैरवैः सरांसि= पल्वलानि, कुसुमभारनतैः= कुसुमानाम्= पुष्पाणां, भारेण= गौरवेण, नतैः= नम्रतां गतैः, वनान्ताः= वनप्रदेशाः, मालतीभिः= मालतीपुष्पैः उपवनानि= क्रीडारामाणि च, शुक्लीकृतानि= धवलितानि। अत्राभूत्तद्भावेच्विः। न शुक्लानि अशुक्लानि, अशुक्लानि शुक्लानि कृतानीति शुक्लीकृतानि।

शरदृतावस्मिन् सर्वत्र शौक्ल्यस्यैव वर्चस्वं विलोक्यते इति भावः।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके वसन्ततिलकावृत्तम, (२) स्वभावोक्तिरलंकारः (३) शृङ्गारोद्दीपनविभावानां वर्णनम्। (४) माधुर्यप्रसादाख्यौ गुणौ (५) वैदर्भी रीतिः (६) अल्पसमासवती संघटना च सन्ति।

समासः— शिशिरदीधितिना- शिशिरा दीधितिर्यस्याऽसौ तेन (ब० ब्री०) कुसुमभारनतैः= कुसुमानां भारः= कुसुमभारः (ष० त० पु०) तेन नतैः (तृ० त० पु०)

हिन्दी शब्दार्थ— काशैः= काशनामकतृण से, मही= पृथिवी, शिशिरदीधितिना= चन्द्रमा के द्वारा, रजन्यः= रात्रियाँ, हंसैः= हंसों के द्वारा, सरिताम्= नदियों के, जलानि= जल, कुमुदैः= कुमुदों से, सरांसि= सरोवर, कुसुमभारनतैः= पुष्प के भार से झुके हुए, सप्तच्छदैः= सप्तच्छद के वृक्षों द्वारा, वनान्ताः= वनप्रदेश तथा मालतीभिः= मालती पुष्पों के द्वारा, उपवनानि= उपवन, शुक्लीकृतानि= धवल बना दिए गये हैं।

उपस्थापन— इस श्लोक में महाकवि बतला रहे हैं कि शरद् ऋतु के आते

ही पृथिवी विकसित काश के उजले फूलों से भर जाती है,- रात्रि में उजली-उजली चाँदनी चारों ओर छिटक जाती है, नदियों के जल में उजले-उजले हंस तैरने लग जाते हैं और छोटे-छोटे सरोवरों में उजले-उजले कुमुद के पुष्प विकसित हो जाते हैं। वनों में सप्तच्छद के वृक्ष उजले-उजले फूलों के भार से झुक जाते हैं और उपवनों में उजली-उजली मालती विकसित हो जाती है। चारों ओर शुक्लिमा का ही साम्राज्य छा जाता है। ये सातों विशेषताएँ शरद् ऋतु के लिए स्वाभाविक हैं।

भावार्थ— काश पुष्पों से पृथिवी, चाँदनी से रात्रि, हँसों के द्वारा नदियों के जल, कुमुद के पुष्पों द्वारा सरोवर, पुष्पों के भार से झुके सप्तच्छद वृक्षों द्वारा वन तथा मालती पुष्पों के द्वारा उपवन-उजले बना दिए गए हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में वसन्ततिलकावृत्त है (२) शरदृतु का स्वाभाविक एवं चमत्कारिक वर्णन करने के कारण स्वभावोक्ति अलंकार है। (३) शृङ्गार रस के उद्दीपन विभावों का वर्णन है, (४) इसमें माधुर्य एवं प्रसाद नामक गुण हैं, (५) वैदर्भीरीति है तथा (६) अल्पसमासवती संघटना है।

चञ्चन्मनोज्ञशफरीरशनाकलापाः पर्यन्तसंस्थितसिताण्डजपंक्तिहाराः।
नद्यो विशालपुलिनान्तनितम्बबिम्बा मन्दं प्रयान्ति समदाः प्रमदा इवाद्य।।३।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके महाकविः कालिदासः शरदृतोः नदीनां वर्णनं करोति। सः ताः रमणीमिवोपस्थापयति रूपकस्य माध्यमेन। नद्यः ऋतावस्यां मन्दं प्रवहन्ति। तासां गतिः समदाः प्रमदा इव वर्त्तते। अस्याः नदीरमण्याः शफर्य एव देदीप्यमाना रशनाः सन्ति, सविधे विद्यमानानां धवलवर्णानां पक्षिणां पंक्तय एव तस्याः मौक्तिकाः हाराः सन्ति। विशालानि पुलिनानि एव नितम्ब-बिम्बाः सन्ति। अतएव ताः समदाः प्रमदाः इवाभन्ति।

अन्वयः— चञ्चन्मनोज्ञशफरीरशनाकलापाः पर्यन्तसंस्थितसिताण्डजपंक्तिहाराः विशालपुलिनान्तनितम्बबिम्बाः नद्यः समदाः प्रमदाः इव अद्य मन्दं प्रयान्ति।

व्याख्या— अस्मिञ्छ्लोके महाकविः शरन्नदीनायिकानां वैशिष्ट्यानि त्रीणि वर्णयति। तानि च सन्ति- चञ्चलाःदेदीप्यमानाश्च शफर्यः एव तासां कञ्चीकलापाः विद्यन्ते, धवलवर्णाः पक्षिण एव तासां मौक्तिकाः हाराः, विशालानि पुलिनानि एव तासां नितम्बबिम्बाः। तथाहि चञ्चन्मनोज्ञशफरीरशनाकलापाः= मनोज्ञाः= रुचिराः इमा शफर्यः= मत्स्यः मनोज्ञशफर्यः चञ्चन्त्यः=देदीप्यमानाश्च ताः= चञ्चन्मनोज्ञशफर्यः ता एव रशनाकलापाः= काञ्चीकलापाः यासां ताः, पर्यन्तसंस्थितसिताण्डजपंक्तिहाराः= पर्यन्ते= सविधे संस्थिताः= विद्यमानाः ये सिताण्डजाः= धवलवर्णाः पक्षिणः, तेषां पंक्तिः= समूह एव हाराः= मौक्तिकाः स्रजः यासां तथाविधाः विशालपुलिनान्त- नितम्बबिम्बाः= विशालाः= विस्तृताः ये पुलिनान्ताः सरितः समदाः= मदेन सहिताः मदमत्ता इत्यर्थः, प्रमदा इव= रमण्य इव, अद्य= अस्मिन्नृतौ, मन्दम्= शनैः शनैः, प्रयान्ति= समुद्राभिखं यान्ति, प्रवहन्तीत्यर्थः।

साहित्यिकविशेषताः— अस्मिन् श्लोके (१) वसन्ततिलकावृत्तम् (२) साङ्गरूप-

कालङ्कारः (३) शृङ्गाराभासव्यंग्यता (४) मध्यमसमासवती संघटना, (५) वैदर्भी रीतिः (६) माधुर्यगुणश्च।

समासः— चञ्चन्मनोज्ञशफरीरशनाकलापाः- मनोज्ञाश्चैताः शफर्यः= मनोज्ञशफर्यः (कर्मधारयः) चञ्चन्त्यश्च ताः मनोज्ञशफर्यः चञ्चन्मनोज्ञशफर्यः (कर्मधारयः) चञ्चनूमनोज्ञशफर्य एव रशनाकलापाः यासां ताः (ब० ब्री०) पर्यन्तसंस्थितसिताण्डजपंक्तिहाराः- पर्यन्ते संस्थिताः= पर्यन्तसंस्थिताः (स० त० पु०) पर्यन्तसंस्थिताः सिताण्डजाः= पर्यन्तसंस्थितसिताण्डजाः (कर्मधारयः) तेषां पंक्तिरेव हारो यासां ताः= पर्यन्तसंस्थितसिताण्डजपंक्तिहाराः। (ब० ब्री०) विशालपुलिनान्तनितम्बबिम्बाः= विशालाश्च ते पुलिनान्ताः= विशालपुलिनान्ताः (कर्मधारयः) विशालपुलिनान्ता एव नितम्बबिम्बा यासां ताः (ब० ब्री०)

हिन्दी शब्दार्थ— चञ्चन्मनोज्ञशफरीरशनाकलापाः- चमकती हुई मनोहर मछलियाँ ही जिनकी करधनी हैं, पर्यन्तसंस्थितसिताण्डजपंक्तिहाराः- सन्निकट में बैठे हुए उजले पक्षियों की पंक्ति ही जिनके मोती के हार हैं, विशालपुलिनान्तनितम्बबिम्बाः= विशाल नदी का तट ही जिनके विस्तृत नितम्ब हैं इस प्रकार की नद्यः= नदियाँ, अद्य= इस समय, समदाः= मदमत्त, प्रमदा इव= रमणियों के समान, प्रयान्ति= समुद्र की ओर बह रही हैं।

उपस्थापन— महाकवि कालिदास शरद् ऋतु का वर्णन करते हुए इस काल में बहने वाली नदियों का वर्णन मदमत्त रमणियों के समान एक रूपक के माध्यम से कर रहे हैं। मदमत्त रमणियाँ अपने पतियों के सम्मुख धीरे-धीरे चलती हुई जाती हैं। शरद् ऋतु की नदियाँ भी धीरे-धीरे समुद्राभिमुख बहती हैं।

जिस तरह नदियाँ अपने कमर में चमकती हुई चञ्चल करधनी धारण करती हैं, उसी तरह नदी रूपी नायिका की भी चमकती हुई चञ्चल मछलियाँ ही करधनी का काम करती हैं। रमणियाँ उजली मोतियों का हार धारण करती हैं, नदी नायिका भी अपने सन्निकट में बैठी हुई उजले पक्षियों की पंक्ति रूपी हार को धारण करती है। रमणियों का विस्तृत नितम्ब ही युवजन मोहन विद्या का काम करता है, नदी नायिका के भी विस्तृत नितम्बबिम्ब का काम उनका विस्तृत पुलिनान्त करता है। इस तरह से नदी नायिका और रमणियों में साङ्गरूपक के माध्यम से साम्य का निर्देश महाकवि ने किया है।

भावार्थ— चमकती हुई चञ्चल मछलियाँ ही जिनकी करधनी हैं, सन्निकट में बैठी हुई उजली पक्षियों की पंक्ति ही जिनका मुक्ताहार है, विशाल तट भाग ही जिनका विस्तृत नितम्ब है, इस प्रकार की नदियाँ इस ऋतु में मदमत्त रमणी के समान धीरे-धीरे समुद्र की ओर बह रही है।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में मालिनी छन्द है (२) साङ्गरूपकालंकार है, (३) इसमें सम्भोगशृङ्गाराभास व्यंग्य है। (४) इस श्लोक में गुणीभूतव्यंग्य काव्यता है। (५) इसमें वैदर्भीरीति तथा, (६) मध्यमसमासवती संघटना की विशेषता है (७) माधुर्यगुण का इस श्लोक में सद्भाव है।

व्योम क्वचिद्रजतशङ्खमृणालगौरैस्त्यक्ताम्बुभिर्लघुतया शतशः प्रयातैः ।
संलक्ष्यते पवनवेगचलैः पयोदै राजेव चामरवरैरुपवीज्यमानः ।। ४ ।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके महाकविर्वर्णयति यत् सम्प्रति नीले आकाशे धवलवर्णाः वायुना प्रेर्यमाणाः शतशो मेघाः धावन्ति । एतेषां शोभा अतीव कमनीया वर्त्तते । वर्षर्तौ त्यक्ताम्बुत्वात् लघुतया आकाशे धावमानाः ते आकाशाभिधस्य राज्ञः चमरवद् आभान्ति । इमे मेघखण्डाः रजतशंखमृणालादिवदतीव देदीप्यमानाः सन्ति । प्रतीयते यत् एभिः मेघखण्डचामरैः राजा आकाश उपसेव्यत इति ।

अन्वयः— क्वचित् रजतशङ्खमृणालगौरैः त्यक्ताम्बुभिः लघुतया पवनवेगचलैः शतशः प्रयातैः पयोदैः व्योम चामरवरैः उपवीज्यमानः राजा इव संलक्ष्यते ।

व्याख्या— क्वचित्= कुत्रचित्, रजतशंखमृणालगौरैः= काव्येषु धवलिम्नस्त्रयस्य चर्चा असकृद् भवति । तच्चास्ति रजतस्य धावल्यम्, शंखस्य धावल्यं, मृणालस्य धावल्यम् । अत्र काव्ये महाकविरुपर्युक्तस्य त्रिप्रकारकस्य धावल्यस्य साम्यमभिधत्ते शारदीयेन मेघधावल्येन साकम् । रजतशंखमृणालगौरैः= रजतञ्च, शंखश्च, मृणालञ्च रजतशंखनृणालानि= रौप्य-कम्बु-कमलनालानि तानीवगौरैः= धवलैः, त्यक्ताम्बुभिः= त्यक्तानि= परित्यक्तानि, अम्बूनि= जलानि यैस्तैः, लघुतया= लाघवात् भाररहित-त्वादिति भावः, पवनवेगचलैः= पवनस्य= वायोः वेगेन= रयेण, चलैः= चञ्चलैः धावमानैरितिभावः, शतशः=अनेकशः, प्रयातैः= गम्यमानैः, पयोदैः= मेघैः, व्योम= आकाशः, चामरवरैः= व्यजनश्रेष्ठैः, उपवीज्यमानः= सेव्यमानः, राजा इव= नृप इव, संलक्ष्यते= दृश्यते । राजाऽपि चामरश्रेष्ठैः सेव्यते, अयं आकाशोऽपि मेघचामरैः उपवीज्यते इव ।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके वसन्ततिलकावृत्तम् (२) उपमालंकार आकाशनृपयोः साम्यवर्णनात् । तथा चोक्तं साहित्यदर्पणे- साम्यं वाच्यमवैधर्म्यं वाक्यैक्ये उपमा द्वयोः' इति (३) अल्पसमासवती संघटना (४) प्रसादाख्यो गुणः (५) वैदर्भीरीतिश्च ।

समासः— रजतशंखमृणालगौरैः= रजतञ्च, शंखश्च मृणालञ्च रजतशंखमृ-णालानि तद्वद्गौरैः, उपमितसमासः । त्यक्ताम्बुभिः= त्यक्तानि अम्बूनि यैस्तैः (ब० ब्री०) पवनवेगचलैः= पवनस्य वेगः पवनवेगः (ष० त० पु०) तेन चलैः= पवनवेगचलैः (तृ० त० पु०) चामरेषु वरैः (स० त० पु०)

हिन्दीशब्दार्थ— क्वचित्= कहीं पर, रजतशंखमृणालगौरैः= चाँदी, शंख तथा मृणाल के समान गौर वर्ण वाले, त्यक्ताम्बुभिः= जलरहित, लघुतया= हल्के होने के कारण, पवनवेगचलैः= वायु के वेग से उड़ाये जाने वाले, शतशः= अनेक, प्रयातैः= चलने वाले, पयोदैः= मेघों द्वारा, व्योम= आकाश, चामरवरैः= उत्तम कोटि के चामरों द्वारा, उपवीज्यमानः= चामर झले जाते हुए, राजा इव= राजा के समान, संलक्ष्यते= प्रतीत हो रहा है ।

उपस्थापन— इस श्लोक में महाकवि कालिदास शरद् ऋतु का वर्णन करते हुए कहते हैं कि, इस ऋतु में आकाश में उजले-उजले मेघ के अनेक टुकड़े दिखने

लगते हैं। उनकी धवलिमा की तुलना चाँदी अथवा शंख अथवा मृणाल से की जा सकती है। इन मेघों में जल का अभाव है। अतएव वे हल्के हो गए हैं। वायु उन्हें बड़ी आसानी से आकाश में तेजी से उड़ाती हुई ले जाती है। नीले-नीले आकाश के ऊपर बादल के अनेक टुकड़े ऐसे लग रहे हैं जैसे उस आकाश रूपी राजा का उत्तम कोटि के उजले-उजले चमरों से व्यजन किय जा रहा हो।

भावार्थ— कहीं पर लगता है कि जैसे- चाँदी, शंख और मृणाल के समान गौर वर्ण वाले, बरसात में जल बरसा कर हल्के हुए तथा वायु के वेग से उड़ाये जाने वाले मेघ रूपी श्रेष्ठ चमरों से आकाश रूपी राजा को चमर किया जा रहा हो।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में वसन्ततिलका छन्द है। (२) साङ्गरूपक अलंकार है, क्योंकि आकाश में राजत्व का तथा उजले मेघों में चमरत्व का आरोप किया गया है। (३) अल्पसमासवती संघटना है। (४) वैदर्भीरीति है तथा (५) प्रसाद नामक गुण है।

भिनाञ्जनप्रचयकान्ति नभो मनोज्ञं बन्धूकपुष्परजसारुणिता च भूमिः।
वप्राश्च चारुकमलावृतभूमिभागाः प्रोत्कण्ठयन्ति न मनो भुवि कस्य यूनः।। ५।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके महाकविः कालिदासः शरदृतोः वर्णनं कुर्वन् वक्ति यत् अस्मिनृतौ नीलाकाशः बन्धूककुसुमपरिपूर्णा भूमिः, सर्वत्र कमलानां मनोज्ञो विकासश्च समेषां जनानां मनोहरणे क्षमाः भवन्ति।

अन्वयः— भिन्नाञ्जनप्रचयकान्तिमनोज्ञं नभः, बधूकपुष्परजसारुणिता भूमिश्च, चारुकमलावृतभूमिभागाः वप्राश्च, भुवि कस्य यूनः मनो न प्रोत्कण्ठयन्ति।

व्याख्या— शरदृतौ आकाशे मेघानां अभावात् आकाशस्य स्वच्छत्वाच्च नभः धवलवर्णस्सन् अतीव मनोज्ञः आभाति। पृथिव्यां सर्वत्र बन्धूककुसुमं च विकसितं भवति। सरस्सु कमलानि चातीव हृद्यानि आभान्ति। तथाहि-

भिनाञ्जनप्रचयकान्ति= भिन्नम्= प्रकीर्णञ्चतत् अञ्जनं= कज्जलम्, तस्य यो हि प्रचयोः= राशिः तस्य कान्तिरिव कान्तिर्यस्य तत् तथाविधं, मनोज्ञम्= हृद्यं, नभः= आकाशः, बन्घूकपुष्परजसारुणिता= बन्धूकनाम्= बन्धूकजीवकानाम्, पुष्पाणाम्= कुसुमानाम् रसा= परागेण अरुणिता= रक्तता सम्पादिता यस्यास्सा यस्याः सा तथाविधा भूमिः= पृथिवी, कमलावृतभूमिभागाः= कमलैः= पद्मैः, आवृताः ।= आच्छन्नाः, भूमेः= पृथिव्याः भागः= अंशो येषां ते तथाविधाः, वप्राः= प्रकाराः, भुवि= जगत्याम् कस्य, यूनः= युवकस्य, मनः= अन्तःकरणम्, न= नहि, प्रोत्कण्ठयन्ति= समुत्कण्ठयन्ति। सर्वान् जनान् समुत्कण्ठितान् कुर्वन्ति इति भावः।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके वसन्ततिलकावृत्तम् (२) शारदीयायाः शोभायाः स्वाभाविकवर्णनत्वात् स्वभावोक्तिरलङ्कारः (३) मध्यमसमासा संघटना (४) वैदर्भीरीतिः (५) प्रसादाख्यो गुणश्च।

समासः— भिन्नाञ्जनप्रचयकान्ति= भिन्नञ्च तदञ्जनम्= भिंन्नाञ्जनम् (कर्मधारयः) तस्य प्रचयः= भिन्नाञ्जनप्रचयः (ष० त० पु०) तस्य कान्तिरिव कान्तिर्यस्य

तत् (ब० ब्री०) बन्धूकपुष्परजसारुणिता= बन्धूकस्य पुष्पाणि= बन्धूकपुष्पाणि (ष० त० पु०) तेषाम् रजसा= बन्धूकपुष्परजसा (ष० त० पु०) अरुणिता= अरुणवर्णा कृता चारुकमलावृतभूमिभागाः= चारूणि च तानि कमलानि= चारुकमलानि (कर्मधारयः)= तै आवृताः भूमिभागाःयेषां ते= चारुकमलावृतभूमिभागाः।(ब० ब्री०)

हिन्दी शब्दार्थ— भिन्नाञ्जनप्रचयकान्ति= प्रकीर्ण अंजन राशि के समान कान्तिवाला, मनोज्ञं= मनोहर, नभः= आकाश, बन्धूकपुष्परजसारुणिता= दुपहरिया के फूलों के पराग से जिसमें लालिमा उत्पन्न कर दी गयी है, इस प्रकार की, भूमिः= पृथिवी, चारुकमलावृतभूमिभागाः= जिनके भूमिभाग मनोहर कमलों से आच्छन्न हैं, इस प्रकार के वप्र= प्राकार, भुवि= पृथिवी पर, कस्य= किस, यूनः= युवक के, मनः= मन को न= नहि, प्रोत्कण्ठयन्ति= उत्कण्ठित करते हैं।

उपस्थापन— इस श्लोक में महाकविकालिदास शरद्ऋतु की तीन मनोहर विशेषताओं का वर्णन करते हुए कहते हैं कि इस ऋतु में मेघों से रहित नीला आकाश देखने में बड़ा ही मनोहर लगता है। लाल-लाल खिले हुए दुपहरिया के फूलों के पराग से पृथिवी लाल हो गयी है। चारों ओर खिले हुए कमल पृथिवी की शोभा को और बढ़ा देते हैं। इन तीनों चीजों को देखकर युवकों का मन स्वाभाविक रूप से उत्कण्ठित हो जाता है।

भावार्थ— प्रकीर्ण काजल की राशि के समान कान्ति वाला मनोहर आकाश, दुपहरिया के फूलों के पराग से लाल लगने वाली पृथिवी तथा मनोहर कमलों से ढ़के हुए भूमि भाग वाले प्राकार किस युवक के मन को आकृष्ट नहीं करते हैं?

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में वसन्ततिलका छन्द है (२) शरद् ऋतु के स्वाभाविक शोभा का चमत्कारिक वर्णन करने के कारण स्वभावोक्ति अलंकार है।

मन्दानिलाकुलितचारुतराग्रशाखः पुष्पोद्गमप्रचयकोमलपल्लवाग्रः।
मत्तद्विरेफपरिपीतमधुप्रसेकश्चित्तं विदारयति कस्य न कोविदारः।।६।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— शरदृतोर्वर्णनस्य प्रसङ्गेन महाकविः कालिदास अनेन श्लोकेन शरदृतौ कोविदारे जायमानस्य वैशिष्ट्यस्य वर्णनां कुर्वन्नाह यदिदानीं कोविदारः पूर्णरूपेण विकसितो भवति। भ्रमरास्तं परितो विद्यमानाः यथेष्टं परागपानं कुर्वन्ति। एतादृशं कोविदारं वृक्षं विलोक्य पश्यतां मनांसि विदीर्णानि भवन्ति।

अन्वयः— मन्दानिलाकुलितचारुतराग्रशाखः पुष्पोद्गमप्रचयकोमलपल्लवाग्रः मत्तद्विरेफपरिपीतमधुप्रसेकः कोविदारः कस्य चित्तं न विदारयति।

व्याख्या— मन्दानिलाकुलितचारुतराग्रशाखः= मन्देन= धीरेण, अनिलेन= पवनेन, आकुलिताः= सञ्चालिताः, चारुतराः= हृद्यतराः, अग्रशाखाः= शाखाया अग्रभागा यस्य सः, पुष्पोद्गमप्रचयकोमलपल्लवाग्रः= पुष्पाणां= कुसुमानाम् यो हि उद्गम= विकासः तस्य यो हि प्रचयः= राशिः, तेन कोमलानि= मृदूनि पल्लवाग्राणि= किसलयस्याग्रभागो यस्यासौ तथाविधः, मत्तद्विरेफपरिपीतमधुप्रसेकः= मत्तैः=

मदमत्तैः द्विरेफैः= भ्रमरैः परिपीतः= पूर्णरूपेणोपभुक्तः मधुप्रसेकः= पुष्पपरागो यस्य सः, इत्थं भूतः कोविदारः कस्य= प्रेक्षकपुरुषस्य, चित्तम्= अन्तःकरणम् न= नहि, विदारयति= विदीर्णं करोति।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके वसन्ततिलकावृत्तम् (२) कोविदार वृक्षस्य स्वाभाविकं चमत्कारिकं च वर्णनम्। (३) मध्यमसमासवती संघटना (४) माधुर्यगुणस्य सद्भावः, (५) वैदर्भी रीतिश्च।

समासः— मन्दानिलाकुलितचारुतराग्रशाखः= मन्दश्च सः अनिलः= मन्दानिलः (कर्मधारयः) तेन आकुलितः मन्दानिलाकुलितः= (तृ० त० पु०) मन्दानिलाकुलिताः चारुतराग्रशाखाः यस्याऽसौ तथाविधः। (ब० ब्री०) पुष्पोद्गमप्रचयकोमलपल्लवाग्रः= पुष्पाणाम् उद्गमः= पुष्पोद्गमः= (ष० त० पु०) तस्य प्रचयः= पुष्पोद्गमप्रचयः, तेन कोमलः पल्लवाग्रो यस्य सः (ब० ब्री०) मत्तद्विरेफपरिपीतमधुप्रसेकः= मत्ताश्चते द्विरेफाः (कर्मधारयः) तैः परिपीतः मधुप्रसेको यस्य सः (ब० ब्री०)

हिन्दी शब्दार्थ— मन्दानिलाकुलितचारुतराग्रशाखः= मन्द-मन्द चलती हुई वायु के झोंकों से जिसकी शाखाओं के अग्रभाग काँप रहे हैं, पुष्पोद्गमप्रचयकोमलपल्लवाग्रः- विकसित पुष्प समूह के कारण जिसके पल्लवों के अग्रभाग कोमल हो गये हैं, मत्तद्विरेफपरिपीतमधुप्रसेकः- मदमत्त भौंरे जिसके परांग रस का यथेष्ट मात्रा में पान कर रहे हैं, इस प्रकार को, कोविदारः= कोविदार (कचनार) का वृक्ष, कस्य= किसके, चित्तम्= अन्तःकरण का, न= नही, विदारयति= विदीर्ण करता है ? अर्थात् इस समय सुन्दर तथा विकसित कचनार वृक्ष को देखकर सबों का मन सहसा, उसकी ओर आकृष्ट हो जाता है।

उपस्थापन— इस श्लोक में महाकवि कालिदास शरद् ऋतु में अत्यन्त आकर्षक लगने वाली कोविदार (कचनार) वृक्ष की शोभा का वर्णन करते हुए कहते हैं कि इस समय कचनार का वृक्ष पूर्ण रूप से विकसित फूलों से लद गया है। फूलों के खिल जाने से उसके किसलय बड़े ही कोमल हो गए हैं। उस पर चारो ओर से भौंरे पराग पान की लालसा से टूट रहे हैं। धीरे-धीरे चलती हुई वायु से इस वृक्ष की शाखाएँ झूम रही हैं। इस तरह के कोविदार वृक्ष को देखकर प्रेक्षकों का मन सहसा उसकी ओर आकृष्ट हो जाता है।

भावार्थ— मन्द पवन से जिसका अग्रभाग काँप रहा है, जो विकसित फूलों से भर गया है तथा लिस पर परागपान की लालसा से भौंरे टूट रहे हैं, इस तरह के कचनार वृक्ष को देखकर प्रेक्षकों का मन सहसा उसकी ओर आकृष्ट हो जाता है।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में वसन्ततिलकावृत्त है। (२) कचनार वृक्ष का स्वाभाविक तथा चमत्कारिक वर्णन होने से स्वभावोक्ति अलंकार है। (३) मध्यमसमासवती वाली संघटना है, (४) माधुर्य गुण का सद्भाव है तथा (५) वैदर्भी रीति है।

तारागणप्रवरभूषणमुद्वहन्ती मेघावरोधपरिमुक्तशशाङ्कवक्त्रा।
जयोत्स्नादुकूलममलं रजनी दधाना वृद्धिं प्रयात्यनुदिनं प्रमदेव बाला।। ७।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके महाकविः कालिदासो वर्णयति यत् शरदृतौ रजन्यो दीर्घायन्ते। अत्र महाकविः रजन्याः रमण्याःरूपकेण वर्णनं करोति। अस्याः रजनीरमण्याः ताराणां समूह एवाभूषणवर्ग। निर्मलश्चन्द्र एव तस्याः मनोज्ञं मुखम्, चन्द्रमसो ज्योत्स्नैव तस्याः निर्मलं दुकूलम्। येन प्रकारेण काचिदपि बालाऽनुदिनं वर्द्धते तेनैव प्रकारेण शरद आदौ तु रजन्यो ह्रस्वा भवन्ति; किन्तु क्रमशः ताः वृद्धिमाप्नुवन्ति।

अन्वयः— तारागणप्रवरभूषणम् उद्वहन्ती मेघावरोधपरिमुक्तशशाङ्कवक्त्रा अमलं ज्योत्स्नादुकूलं दधाना रजनी प्रमदा बाला अनुदिनं वृद्धिं प्रयाति।

व्याख्या— तारागणप्रवरभूषणम्= ताराणाम्= नक्षत्राणाम् गणः= समूहः= तारागणः तारागण एव प्रवरं= श्रेष्ठम्, भूषणम्= अलंकरणम्। उद्वहन्ती= धारयन्ती, मेघावरोधपरिमुक्तशशाङ्कवक्त्रा। मेघानाम्= बलाहकानां, यो हि अवरोधः= व्यवधानं तेन परिमुक्तम्= रहितम्, शशाङ्करूपम्= चन्द्रस्वरूपं वक्त्रम्= मुखम्, यस्याः सा; अमलम्= निर्मलम्, ज्योत्स्नादुकूलम्= ज्योत्स्ना= चन्द्रिका, चन्द्रिका कौमुदी ज्योत्स्ना' इत्यमरः। एव दुकूलम्= वस्त्रम्, दधाना= धारयन्ती, रजनी= रात्रिः प्रमदा= प्रकृष्टं मदो यस्याः सा तथाविधा, बालासुन्दरी इव=, अनुदिनम्= प्रतिदिनम्, वृद्धिम्= समृद्धिम् दैर्घ्यमिति यावत् प्रयाति= प्राप्नोति। शरदृतौ रात्र्यः वर्द्धन्त एव।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके वसन्ततिलका छन्दः। (२) साङ्गरूपकालंकारः रजन्यां प्रमदात्वारोपात् तारागणे भूषणत्वस्य, चन्द्रमसि मुखत्वस्य, ज्योत्स्नायां च दुकूलत्वस्यारोपात्। (३) अत्र सम्भोग शृंङ्गारस्यालम्बनोद्दीपन विभावयोः वर्णनात् सम्भोगशृंङ्गाररसो व्यंग्यः। (४) माधुर्याख्यो गुणः (५) वैदर्भी रीतिः, (६) मध्यमसमासवती संघटना च।

समासः— तारागणप्रवरभूषणम्= ताराणां गणः= तारागणः, (ष० त० पु०) तारागण एव प्रवरं भूषणम् (कर्मधारयः) मेघावरोधपरिमुक्तशशाङ्कवक्त्रा= मेघस्यावरोधः= मेघावरोधः (ष० त० पु०) तेन परिमुक्तः= मेघावरोधपरिमुक्तश्चासौ शशाङ्कः= मेघावरोधपरिमुक्तशशाङ्कः (कर्मधारयः) मेघावरोधपरिमुक्तशशाङ्क एव वक्त्रं यस्याः सा= मेघावरोधपरिमुक्तशशाङ्कवक्त्रा। (ब० ब्री०) ज्योत्सनादुकूलम्= ज्योत्स्ना एव दुकूलम् (कर्मधारयः)

हिन्दी शब्दार्थ— तारागणप्रवरभूषणम्= तारा समूह रूपी श्रेष्ठ आभूषण को, उद्वहन्ती= धारण करने वाली, मेघावरोधपरिमुक्तशशाङ्कवक्त्रा= मेघ के अवरोध से रहित चन्द्रमा रूपी मुखवाली, अमलम्= स्वच्छ, ज्योत्स्नादुकूलम्= चाँदनी रूपी वस्त्र को धारण करने वाली, रजनी प्रमदा= रात्रि रूपी रमणी, बाला इव= नवयुवती के समान, अनुदिनम्= प्रतिदिन, वृद्धिं प्रयाति= बढती जाती है।

उपस्थापनः— इस श्लोक में महाकवि कालिदास शरद् ऋतु की रात्रि का वर्णन एक नवयुवती के समान करते हैं। जिस तरह कोई नव युवती अनेक श्रेष्ठ आभूषणों को धारण करती है, उसी तरह से रात्रि रूपी नवयुवती तारासमूह रूपी श्रेष्ठ आभूषणों को धारण करती है। बरसात के दिनों में तो चन्द्रमा बादलों के

बीच छिप जाता है; किन्तु शरद् ऋतु में बादलों का अभाव हो जाता है। चन्द्रमा के दिखायी देने में किसी प्रकार का अवरोध नहीं रहता है। चन्द्रमा मनोहर और स्वच्छ दिखता है। इस प्रकार का चन्द्रमा ही रात्रि रमणी का मुख है। शरद् ऋतु में स्वच्छ चाँदनी छिटक जाती है। वह चाँदनी ही रात्रि रूपी रमणी का वस्त्र है। जिस तरह से नवयुवती प्रतिदिन बढती जाती है, उसी तरह रात्रि रूपी नवयुवती शरद् ऋतु में प्रतिदिन बढती ही जाती है।

भावार्थ— नक्षत्र रूपी श्रेष्ठ आभूषणों वाली बादलों के अवरोध से रहित चन्द्रमा रूपी मुख वाली, तथा शुभ्र चाँदनी रूपी वस्त्रवाली रात्रि रूपी नवयुवती प्रतिदिन बढती जा रही है।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में वसन्ततिलका छन्द है। (२) इसमें साङ्गरूपकालंकार है। (३) सम्भोग शृंगार रसके विभावों का वर्णन है। (४) माधुर्य नामक गुण है। (५) मध्यम समासवती संघटना है तथा (६) वैदर्भीरीति है।

कारण्डवाननविघट्टितवीचिमालाः कादम्बसारसचयाकुलतीरदेशाः।
कुर्वन्ति हंसविरुतैः परितो जनस्य प्रीतिं सरोरुहरजोरुणितास्तटिन्यः।। ८।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके महाकविः कालिदासः शरदृतोर्नद्या वर्णनं करोति। स वक्ति यत् साप्रतं नदीनां जलेषु कारण्डवाख्याः पक्षिणः चञ्चुप्रहारं कुर्वन्ति, कादम्बसारसेत्यादिकाः पक्षिणः नद्यास्तटं सेवन्ते। ते तत्रैव प्रचरन्ति। नदीषु हंसाः कलरवं कुर्वन्ति, सर्वत्र पद्मानि विकसितानि सन्ति। एतादृशीः नदीः वीक्ष्य नैसर्गिकतया जानानां मनस्सु समधिका प्रीतिरुत्पद्यते।

अन्वयः— कारण्डवाननविघट्टितवीचिमालाः कादम्बसारसचयाकुलतीरदेशाः सरोरुहरजोरुणिताः तटिन्यः हंसविरुतैः परितः जनस्य प्रीतिं कुर्वन्ति।

व्याख्या— कारण्डवाननविघट्टितवीचिमालाः= कारण्डवानाम्= कारण्डव-नामकानां पक्षिणाम्, आननैः= तुण्डैः, विघट्टिताः, वीचिमालाः= लहरीणां, माला= समूहो यासां तास्तथाविधाः, कादम्बसारसचयाकुलतीरदेशाः= कादम्बानाम्= कलहंसानाम्, च सारसाणाम्= सारसाख्यपक्षिविशेषाणाञ्च च चयेन= समूहेन, आकुलितः= समासेवितः, तीरदेशः= तटप्रदेशो यासां ताः सरोरुहरजोऽरुणिताः= सरोरुहाणाम्= पद्मानाम्, रजोभिः= परागैः अरुणितः= शोणीकृताःयास्तास्तथाविधाः, तटिन्यः= नद्यः, हंसविरुतैः= हंसानाम्= कलहंसानाम्, विरुतैः= कलरवैः परितः= सर्वतः जनस्य= प्रेक्षकस्य जनस्य मनांसि, प्रीतिम्= स्नेहयुक्तं, कुर्वन्ति। दर्ष्टृणां मनस्सु स्वाभाविकेनैव रूपेण रागो जायते एतादृशीः नदीः विलोक्य।

साहित्यिकविशेषताः— अस्मिञ्छ्लोके (१) वसन्ततिलका छन्दः (२) नद्याः स्वाभाविकचमत्कारिकवर्णनत्वात् स्वभावोक्तिरलंकारः (३) मध्यमसमासवती संघटना (४) वैदर्भीरीतिः (५) प्रसादाख्यो गुणश्च।

समासः— कारण्डवाननविघट्टिवीचिमालाः– कारण्डवानाम् आननैः= कारण्ड-वाननैः (ष० त० पु०) कारण्डवाननैः विघट्टिताः वीचिमालाः यासां ताः= कारण्डवा-

ननविघट्टितवीचिमालाः । कादम्बसारसचयाकुलतीरदेशाः= कादम्बाश्च सारसाश्च= कादम्बसारसाः (द्वन्द्वः) तेषां चयः= कादम्बसारसचयः (ष० त० पु०) तेन आकुलः तीरदेशो यासां ताः= कादम्बसारसचयाकुलतीरदेशाः (ब० ब्री०) सरोरुहरजोऽरुणिताः= सरोरुहणाम् रजांसि= सरोरुहरजांसि तैः अरुणिताः= = सरोरुहरजोऽरुणिताः (ब० ब्री०) हंसविरुतैः= हंसानां विरुतैः (ष० त० पु०)

हिन्दीशब्दार्थ— कारण्डवाननविघट्टितवीचिमालाः= कारण्डव नामक पक्षियों के चोंच मारने से जिनकी लहरियाँ टूटती रहती हैं। कादम्बसारसचयाकुलतीरदेशाः= कलहंस तथा सारस नामक पक्षी जिनके तीर में प्रभूत मात्रा में विद्यमान रहते हैं, सरोरुहरजोरुणिताः= कमल के पराग से जो लाल बनी हुई हैं, इस प्रकार की, तटिन्यः= नदियाँ, हंसविरुतैः= हंसों की ध्वनि द्वारा, परितः= सब प्रकार से, जनस्य= देखने वालों के मन में, प्रीतिम्= आनन्दविशेष को, कुर्वन्ति= उत्पन्न कर देती हैं।

उपस्थापन— इस श्लोक में महाकवि कालिदास शरत्काल में होने वाली नदी की स्वाभाविक शोभा का चमत्कारिक ढंग से वर्णन करते हुए बतलाते हैं कि इस ऋतु में कारण्डव नामक पक्षी नदियों के लहरियों में अपने भोज्य पदार्थ मत्स्य आदि को पकड़ने के लिए चोंच मारते रहते हैं। इससे नदियों की लहरियाँ टूटती रहती हैं।। नदी के तट में कादम्ब तथा सारस नामक पक्षी हमेशा सञ्चरण करते रहते हैं। अतएव उन पक्षियों से नदी का तट प्रदेश हमेशा भरा-पूरा रहता है। खिले हुए कमलों के लाल-लाल पराग से नदियों का जल भी लाल-लाल हो जाता है और उसे देखकर हंस पक्षी कलरव करते रहते हैं। इस तरह से नदी की इस ऋतु में स्वाभाविक शोभा को देखकर देखने वालों के मन में एक विशेष प्रकार का आनन्द उत्पन्न होता है।

भावार्थ— कारण्डव पक्षियों के चोंच मारने से जिनकी लहरियाँ टूटती रहती हैं, कादम्ब तथा सारस पक्षी जिनके तट में हमेशा भरे रहते हैं, विकसित पद्म पुष्पों के पराग से जिनका जल लाल बना रहता है तथा हंस कलरव करते रहते हैं इस प्रकार की नदियाँ दर्शक के मन में एक विशेष प्रकार का आनन्द उत्पन्न करती हैं।

साहित्यिकविशेषताएँ— (१) इस श्लोक में वसन्ततिलका वृत्त है, (२) स्वभावोक्ति अलंकर है (३) वैदर्भी रीति है (४) प्रसाद नामक गुण है और (५) मध्यमसमासवती संघटना है।

नेत्रोत्सवो हृदयहारिमरीचिमालः प्रह्लादकः शिशिरसीकरवारिवर्षी।
पत्युर्वियोगविषदिग्धशरक्षतानां चन्द्रो दहत्यतितरां तनुमङ्गनानाम् ।। ६ ।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके महाकविः कालिदासो वर्णयति यत् साम्प्रतं रात्रौ चन्द्रस्तु निर्मलप्रभो भवति। तस्य चन्द्रिका ऽतीव प्रह्लादिका भवति। यद्यपि चन्द्रमसः किरणानि शिशिराणि भवन्ति तथापि तानि प्रोषितभर्तृकाणां कृते ऽतीव सन्तापकराणि भवन्ति। विप्रयोगजनितः विप्रलम्भः नितरां तुदति तेषां हृदयानीति भावः।

अन्वयः— नेत्रोत्सवः हृदयहारिमरीचिमालः प्रह्लादकः शिशिरसीकरवारिवर्षी चन्द्रः पत्युः वियोगविषदिग्धशरक्षतानां अङ्गनानां तनुं अतितरां दहति।

व्याख्या— अस्मिञ्छ्लोके शरदृतोः पञ्च विशेषताः सन्ति निर्दिष्टाः महाकविना। सामान्येन जनानां कृते चन्द्रः नेत्रानन्दप्रदः, हृदयहारकःकिरणैर्युक्तः, मनः प्रहृलादकः, शीतल आनन्दवर्धकश्च भवति किन्तु प्रोषितपतिकानां कृते सः हृदयदाहको भवति। तथाहिनेत्रोत्सवः= नेत्राणामानन्दप्रदः, हृदयहारिमरीचिमालः= हृदयानि= अन्तःकरणानि हरन्ति= आकर्षन्ति यास्तास्तथाविधाः= मरीचयो माला यस्य सः= हृदयहारिमरीचिमालः= अन्तःकरणाहृलादककिरणजालसमन्वित इति यावत्। प्रहलाद्कः= हर्षप्रदः। शिशिरसीकरवारिवर्षी= शिशिराणि= शीतलानि सीकराणि= विन्दवः यस्य तथाविधं वारि= जलम् वर्षति यस्सः। एतादृशः, चन्द्रः= चन्द्रमाः, पत्युः= स्वामिनः, वियोगविषदिग्धशरक्षतानाम्= वियोग एव= विप्रयोग एव विषदि- ग्धःशरः= गरलमिश्रितबाणः तेन क्षतानाम्= आहतानाम्, अङ्गनानाम्= रमणीनाम्= प्रोषितपतिकानामिति भावः तनुम्= शरीरम्, अतितराम्= अतिशयेन, दहति= संतापयति।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके वसन्ततिलकावृत्तम्। (२) विप्रलम्भशृंगारोद्दीपनविभावानां वर्णनम् (३) विप्रयोगजन्य विप्रलम्भ शृंङ्गाराभिव्यञ्जनम् (४) माधुर्यप्रसादाख्यौ गुणौ (५) स्वभावोक्तिरलङ्कारः (६) अल्पसमासवती संघटना (७) वैदर्भी रीतिश्च।

समासः— नेत्रोत्सवः= नेत्रोयोरुत्सवः= (ष० त० पु०) हृदयहारिमरीचिमालः= हृदयं हरतीति हृदयहारी (द्वि० त० पु०) हृदयहारिणी मरीचीनां माला यस्य सः= हृदयहारिमरीचिमालः= (ब० ब्री०) शिशिरसीकरवारिवर्षी- शिशिराणि च तानि सीकराणि= शिशिरसीकराणि (कर्मधारयः) शिशिरसीकराणां वारिवर्षी= शिशिरसीकरवारिवर्षी (ष० त० पु०) वियोगविषदिग्धशरक्षतानाम्= वियोगस्य विषम्= वियोगविषम् (ष० त० पु०) तेन दिग्धाः शराःवियोगविषदिग्धशराः (तृ० त० पु०) वियोगविषदग्धशरैःक्षताः = (तृ० त० पु०) वियोगविषदिग्धशरक्षताः याः ताः तासाम् (ब० ब्री०)

हिन्दी शब्दार्थ— नेत्रोत्सवः= आँखों को सुख देने वाला, हृदयहारिमरीचिमालः= मनोहर किरणों वाला, प्रहूलादकः= आनन्दप्रद, शिशिरसीकरवारिवर्षी= शीतल विन्दु वाले जल की वर्षा करने वाला, चन्द्रः= चन्द्रमा, पत्युः= पति के, वियोगविषदिगग्धरक्षतानाम्= वियोग से उत्पन्न विष मिश्रित काम बाणों से घायल, अङ्गनानाम्= रमणियों के तनुम्= शरीर को, अतितराम्= अत्यधिक, दहति= जलाता है।

उपस्थापन— इस श्लोक में महाकवि कालिदास शरद् ऋतु के चन्द्रमा के दो पक्षों को उपन्यस्त करते हैं। एक ही चन्द्रमा प्रियतम संयोग सम्पन्न रमणियों को नयनानन्द प्रदाता एवं हृद्रयाहलादक चाँदनी की किरणों से युक्त उनके मन को प्रसन्न करने वाला है। उनके लिए चाँद की चाँदनी से शीतल बिन्दुओं से युक्त जल के कण बरसते है, किन्तु दूसरी ओर उसका स्वभाव इसके ठीक विपरीत

प्रतीत होता है। वे रमणियाँ जिनके प्रियतम परदेश में रहते हैं, जो प्रोषितपतिका हैं, प्रियतम के विप्रयोग से उत्पन्न विष से दिग्ध बाणों का प्रहार जिन पर कर-कर के कामदेव ने घायल बना दिया है। जिनका शरीर तो स्वयं ही जल रहा है। यह चाँद अपनी शीतल किरणों से उनके शरीर को और जलाये जा रहा है। उनके लिए यह सुखद नहीं दुःखद हो गया है।

भावार्थ— आँखों को सुख देने वाला मनोमोहक किरणों से सम्पन्न आह्लाद जनक, एवं शीतल जल विन्दुओं को बरसाने वाला चन्द्रमा प्रियतम विप्रयोग रूपी विषदिग्ध बाणों से आहत प्रोषितपतिकाओं को और अधिक सन्तप्त किए जा रहा है।

साहित्यिकविशेषताएँ— (१) इस श्लोक में वसन्ततिलका वृत्त है, (२) इसमें विप्रयोग हेतुक विप्रलम्भ शृंङ्गार व्यंग्य है (३) विप्रलम्भोद्दीपन विभावों का मनोज्ञ वर्णन है। (४) माधुर्य एवं प्रसाद गुणों का सद्भाव हे। (५) वैदर्भी रीति है तथा (६) मध्यमसमासवती संघटना है।

आकम्पयन्फलभरानतशालिजालानानर्तयंस्तरुवरान्कुसुमावनम्रान्।
उत्फुल्लपङ्कजवनां नलिनीं विधुन्वन्यूनां मनश्चलयति प्रसभं नभस्वान्।।१०।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके महाकविः कालिदासः शरद् ऋतोः प्रवहमानस्य वायोः वैशिष्ट्यचतुष्टयमभिधत्ते। तथाहि- (१) अस्मिनृतौ वायुः फलभरेण नम्रतां गतान् क्षेत्रस्थान् शालीनाकम्पयति। (२) सर्वत्र वृक्षाः कुसुमितास्सन्ति। कुसुमभारावनम्रान् वृक्षान् वायुरयं कम्पयति। (३) पंकजवनं विकसितं जातमिदानीम्। तत्र विद्यमानां कमलिनीमयं विधुन्वति स्ववेगेन। (४) उपर्युक्त प्रकारकोऽयं वायुः यूनामन्तःकरणमपि चंचलं करोति।

अन्वयः— फलभरानतशालिजालान् आकम्पयन् कुसुमावनम्रान् तरुवरान् आनर्तयन् उत्फुल्लपङ्कजवनां नलिनीं विधुन्वन् नभस्वान् यूनां मनः प्रसभं चलयति।

व्याख्या— फलभरानतशालिजालान्= फलानाम् भरेण= भारेण, आनतान्= विनम्रीभूतान्, शालिजालान्= शालिसमूहान्, आकम्पयन्= प्रकम्पयन्। कुसुमावनम्रान्= कुसुमैः= पुष्पैः अवनम्रान्= नतान्, तरुवरान्= पादपश्रेष्ठान्, आनर्तयन्= उत्कम्पयन्, उत्फुल्लपंकजवनाम= उत्फुल्लम्= विकसितं पङ्कजवनम्= कमलसमूहः यस्यास्सा ताम् नलिनीं= कमलिनीं च, विधुन्वन्= उत्कम्पयन्, नभस्वान्= वायुः, यूनाम्= युवकानाम्, मनः= अन्तःकरणं प्रसभम्= बलपूर्वकं, चलयति= चञ्चलं करोति। एतादृशस्य वायोः स्पर्शमात्रेणैव युवकानां मनो रागविशेषपरिपूर्णं भवति।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके सन्ति वसन्ततिलकावृत्तम् (२) शारदीयवायोरुद्दीपनविभावरूपेण वर्णनम्। (३) माधुर्यगुणस्य सद्भावः (४) वैदर्भी रीतिः (५) मध्यमसमासवती संघटना च।

समासः— फलभरानतशालिजालान्= फलानां भरः= फलभरः= (ष० त० पु०) तेन आनतान्= फलभरानतान् (तृ० त० पु०) फलभरानतान् च तान् शालिजालान्= फलभरानतशालिजालान् (कर्मधारयः) कुसुमावनम्रान्= कुसुमैः

अवनम्रान्= कुसुमावनम्रान् (तृ० त० पु०) तरुवरान्= तरुषु वरान् (ष० त० पु०) उत्फुल्लपंकजवनाम= उत्फुल्लं पंकजवनम् यस्याससा ताम् (कर्मधारयः)

हिन्दीशब्दार्थ— फलभरानतशालिजालान्= फल के भार से झुके हुए धान के समूह को, आकम्पयन्= कँपाते हुए, कुसुमावनम्रान्= फूलों के भार से झुके हुए, तरुवरान्= श्रेष्ठ वृक्षों को, आनर्तयन्= कँपाते हुए, उत्फुल्लपंकजवनाम= खिले हुए कमला वनों वाली, नलिनीम्= कमलिनी को, विधून्वन्= कँपाते हुए नभस्वान्= वायु, यूनाम्= युवकों के, मनः= मन को, प्रसभम्= हठपूर्वक, चलयति= चंचल बना देती है।

उपस्थापन— इस श्लोक के माध्यम से महाकवि कालिदास शरत्कालीन वायु की विशेषता का वर्णन करते हुए कहते हैं कि इस समय खेतों में धान की बाली चावल के पड़ जाने से झुक गयी है। चलती हुई हवा उसे कँपा रही है। उत्तम कोटि के वृक्ष खिल गए हैं। वे फूलों के भार से झुक से गए हैं। यह हवा मानों अपने झोंकों से उन्हें नचा रही हो। फूल के भार से लदे हुए वृक्ष हवा के झोंकों से लग रहा है कि स्वयम् नाच रहे हों। जलाशयों में कमल के वन खिले हुए हैं। उनकी कमलिनी को यह वायु जैसे कँपा रही हो। इस तरह की वायु का स्पर्श युवकों के मन में भी एक विशेष प्रकार का उत्साह भर देता है। उनका मन सहसा चञ्चल सा हो उठता है।

भावार्थ— फलों के भार से लदे हुए धान के समूह को कँपाने वाली, खिले हुए वृक्षों को नचाने वाली, तथा विकसित कमल वन वाली कमलिनी को कँपाने वाली, वायु अपने स्पर्श मात्र से युवकों के मन को चंचल बना देती है।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में वसन्ततिलका छन्द है, (२) शरत्कालीन कामोद्दीपन करने वाली वायु का स्वाभाविक वर्णन है (३) माधुर्य एवं प्रसाद गुणों का सद्भाव है (४) वैदर्भी रीति है तथा (५) मध्यमसमासवती संघटना है।

सोन्मादहंसमिथुनैरुपशोभितानि स्वच्छप्रफुल्लकमलोत्पलभूषितानि।
मन्दप्रभातपवनोद्गतवीचिमालान्युत्कण्ठयन्ति सहसा हृदयं सरांसि।। ११।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अनेन श्लोकेन द्वारा महाकविः सरसां वर्णनं करोति। शरत् काले प्रातःकाले सरसः शोभातीव रमणीया भवति। हंसमिथुनं सरः सेवते प्रातःकाले। कमलानि तत्र विकसितानि भवन्ति, प्रातःकालीनस्य वायोः सरसि वीचीनां माला उद्गता भवति। एतादृशं विलोक्य सरो मनः सहसा उत्कण्ठितं भवति।

अन्वयः— सोन्मादहंसमिथुनैरुपशोभितानि स्वच्छप्रफुल्लकमलोत्पलभूषितानि मन्दप्रभातपवनोद्गतवीचिमालानि सरांसि सहसा हृदयं उत्कण्ठयन्ति।

व्याख्या— महाकविनाऽत्र सरसाम् त्रीणि विशेषणान्युपन्यस्तानि सन्ति- (१) उन्मत्तहंसमिथुनैः सेवितत्वम्, (२) निर्मलकमलभूषितत्वम् (३) प्रातःकालीनमन्दपवनसंस्पर्शेण उद्गत तरङ्गमालत्वञ्च। एभिः त्रिभिर्विशेषणैः सर अतीव मनोमोहकं भवति शरदृतौ तथाहि-

सोन्मादहंसमिथुनैः= सोन्मादानि= मदमत्तानि परस्परानुरागवन्तीति यावत् यानि हंसमिथुनानि= हंसयुगलानि; तैः= उपशोभितानि= समलंकृतानि, स्वच्छप्रफुल्लकमलोत्पलभूषितानि= कमलानि च= पदमानि च, उत्पलानि च= नीलकमलानि च कमलोत्पलानि, स्वच्छानि च= अमलानि च, प्रफुल्लानि च= विकसितानि च, स्वच्छप्रफुल्लानि। स्वच्छप्रफुल्लानि च तानि कमलोत्पलानि= स्वच्छप्रफुल्लकमलोत्पलानि= तैः भूषितानि= समलंकृतानि, मन्दप्रभातपवनोद्गतवीचिमालानि प्रभातस्य= प्रातःकालस्य पवनः= वायुः प्रभात पवनः मन्दश्चासौ प्रभातपवनः= मन्दप्रभातपवनः= धीरः प्रातःकालीनो वायुः, तेन उद्गता= उत्पन्ना, वीचीनाम्= तरङ्गाणाम्, माला= समूहो येषु तथाभूतनि, सरांसि= सरोवराणि, सहसा= अकस्मादेव हृदयम्= अन्तःकरणम्, उत्कण्ठयन्ति= प्रियतमाकण्ठालि- ङ्गनायोत्साहितं करोति।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके वसन्ततिलका वृत्तम्, (२) सरसः शृंगारोद्दीपनविभावरूपेण वर्णनम्, (३) सम्भोगशृंङ्गारस्याभिव्यंग्यता (४) स्वभावोक्तिरलंकारः (५) मध्यमसमासवती संघटना (६) वैदर्भीरीतिः (७) माधुर्य गुणश्च सन्ति।

समासः— सोन्मादहंसमिथुनैः= सोन्मादानि च तानि हंसमिथुनानि, सोन्मादहंसमिथुनानि तैः (कर्मधारयः) स्वच्छप्रफुल्लकमलोत्पलभूषितानि= कमलानि चोत्पलानि च= कमलोत्पलानि (द्वन्द्वः) स्वच्छानि च प्रफुल्लानि च= स्वच्छप्रफुल्लानि (द्वन्द्वः) स्वच्छप्रफुल्लानि च तानि कमलोत्पलानि= स्वच्छप्रफुल्लकमलोत्पलानि (कर्मधारयः) स्वच्छप्रफुल्लकमलोत्पलैर्भूषितानि यानि तानि (ब० व्री०) मन्दप्रभातपवनोद्गतवीचिमालानि= प्रभातस्य पवनः= प्रभातपवनः (ष० त० पु०) मन्दश्चासौ प्रभातपवनः= मन्दप्रभातपवनः (कर्मधारयः) तेन उद्गता वीचीनां मालाः येषु तानि= मन्दप्रभातपवनोद्गतवीचिमालानि। (ब० व्री०)

हिन्दी शब्दार्थ— सोन्मादहंसमिथुनैः= उन्मत्त हंस के जोड़ों से, उपशोभितानि= सुशोभित, स्वच्छप्रफुल्लकमलोत्पलभूषितानि= स्वच्छ तथा विकसित कमलों तथा नील कमलों से समलंकृत, मन्दप्रभातपवनोद्गतवीचिमालानि= प्रातःकालीन मन्द पवन के झोंके लगने के कारण जिनमें हिलोरें उठने लगी हैं इस प्रकार से, सरांसि= सरोवर, सहसा= अकस्मात्, हृदयम्= अन्तःकरण को, उत्कण्ठयन्ति= उत्कण्ठित बना देते हैं।

उपस्थापन— इस श्लोक में महाकवि कालिदास शरत् काल में सरोवरों की प्रातः कालीन शोभा का वर्णन करते हुए वतलाते हैं कि प्रातःकाल में सरोवरों की शोभा अत्यन्त उन्मादक होती है। प्रातःकाल में हंसों की जोड़ी सरोवरों में क्रीड़ा करती है। स्वच्छ एवं खिले हुए कमल तथा नीलकमल की शोभा सरोवर को समलंकृत करती है। प्रातःकाल में धीरे-धीरे चलती हुई हवा के संस्पर्श से सरोवर लहरियों से तरंगायित होने लगता है। इस प्रकार की सरोवर की शोभा को देखकर मन सहसा उत्कण्ठित होने लगता है।

भावार्थ— उन्मत्त हंसों की जोड़ों से सुशोभित, स्वच्छ तथा विकसित कमलों एवं नीलकमलों से समलंकृत तथा प्रातःकालीन मन्दपवन के झोंकों से तरङ्गायित सरोवर देखने वालों के मन को सहसा उत्कण्ठित कर देते हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में वसन्ततिलका छन्द है (२) प्रातःकालीन सरोवर की शोभा का वर्णन कामोद्दीपक के रूप में किया गया है (३) सम्भोगश्रृंगार अभिव्यंग्य है (४) माधुर्य एवं प्रसाद गुण का सद्भाव है (५) वैदर्भीरीति है तथा (६) मध्यमसमासवती संघटना है।

नष्टंधनुर्बलभिदो जलदोदरेषु सौदामिनी स्फुरति नाद्य वियत्पताका।
धुन्वन्ति पक्षपवनैर्न नभो बलाकाः पश्यन्ति नोन्नतमुखा गगनं मयूराः।। १२।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके महाकविः कालिदासो वर्णयति यत् साम्प्रतम् वर्षाकालीनानामुपष्टम्भकानामत्यन्ताभाव इव संजातः। वर्षर्तौ मेघेष्विन्द्रधनूषिं उदियन्ति, किन्तु साम्प्रतं तानि नो उदियन्ति आकाशेषु विद्युत् नो विद्योतते, नवा आकाशेषु बलाकाः उत्पतन्ति। वर्षाकाले तु ताः आकाश एव गर्भधारणं कुर्वन्ति। वर्षर्तौ मेघमुन्नतं मयूरा मुखमुन्नमय्य पश्यन्त्याकाशाभिमुखम्, किन्तु शरदि ते तथा नहि कुर्वन्ति।

अन्वयः— जलदोदरेषु बलभिदः धनुः नष्टं। अद्य वियत्पताका सौदामिनी न स्फुरति। बलाकाः पक्षपवनैः नभः न धुन्वन्ति मयूराः गगनं उन्नतमुखं न पश्यन्ति।

व्याख्या— अस्मिन् श्लोके महाकविः कालिदासो वर्णयति यत् साम्प्रतम्-तानि चिह्नानि नावलोक्यन्ते यानि वर्षाकाले दृश्यन्ते स्म। तथाहि-जलदोदरेषु= जलदानाम्= मेघानाम् उदरेषु= अन्तः बलभिदः= इन्द्रस्य, धनुः यत् वर्षाकालेऽदृश्यत तत् साम्प्रतं नष्टम्= विनष्टम्, नहि विलोक्यते इति भावः। अद्य= इदानीं शरदि, वियत्पताका= वियतः= आकाशस्य पताका, सौदामिनी= विद्युत्, न= नहि, स्फुरति= चकस्ति। बलाकाः= बकपत्न्यः=, पक्षपवनैः= पक्षवातैः नभः= वियत् न= नहि, धुन्वन्ति= कम्पयन्ति। वर्षाकाले तु ताः= गर्भाधानस्य क्षणे परिचयात् नभसि जलदं सेवन्ते। तथा चोक्तं मेघदूते 'गर्भाधानक्षणपरिचयान्नूनमावद्धमालाः इति। उन्नत-मुखम्= उपरिकृतवदनम्, गगनम्= आकाशम् न= नहि, पश्यन्ति= अवलोकयन्ति। एतद्विपपरीतं माघकविनात्वभिहितं= स्वरमयूरमयूरमणीयतामिति।

साहित्यिकविशेषताः— अस्मिञ्छ्लोके सन्ति वसन्ततिलकावृत्तम्। (२) शरदृतोः स्वाभाविकं वर्णनम् (३) प्रसादगुणः (४) असमासा संघटना (५) वैदर्भी रीतिश्च।

समासः— जलदोदरेषु= जलदस्य उदरम्= जलदोदरं तेषु जलदोदरेषु। (ष० त० पु०) वियत्पताका- वियतः पताका (ष० त० पु०) पक्षपवनैः= पक्षाणापवनैः= पक्षपवनैः (ष० त० पु०)

हिन्दीशब्दार्थः— जलदोदरेषु= बादलों पर, बलभिदः= इन्द्र के, धनुः= धनुष्, नष्टम्= नष्ट हो गए हैं। अद्य= आज, वियत्पताका= आकाश की पताका, सौदामिनी= बिजली, न= नहीं, स्फुरति= चमकती है। बलाका= बक की पत्नी (बगुली) पक्षपवनैः= अपने पंख की वायु से, नभः= आकाश को, न= नहीं, धुन्वति= आन्दोलित करती है। मयूराः= मोर पक्षी, उन्नतमुखम्= मुँह ऊपर उठाकर, गगनम्= आकाश को, न= नहीं, पश्यन्ति= देखते हैं।

उपस्थापन— इस ऋतु में महाकवि कालिदास बतला रहे हैं कि शरद् ऋतु में

वर्षा ऋतु की अपेक्षा परिस्थितियाँ बदल सी गयी हैं। वर्षा ऋतु में बादलों में इन्द्रधनुष दिखायी पड़ते थे, बादलों के बीच-बीच में बिजली चमकती थी। ये बिजलियाँ ही आकाश की पताका का काम करती हैं। आकाश में बलाकाएँ उड़ती थीं तथा बादलों की आशा में मयूर ऊपर की ओर मुख उठाकर देखते थे। किन्तु आज न तो बादलों में इन्द्रधनुष ही दिखायी देते हैं और न तो बिजली ही चमकती है। आकाश में न तो उड़ती हुई बलाकाएँ ही दिखायी पड़ती है और न तो मयूर ही ऊपर की ओर मुख उठाकर आकाश की ओर देखते हैं। वर्षा ऋतु की अपेक्षा सब कुछ बदल गया है।

भावार्थ— बादलों के बीच से इन्द्रधनुष नष्ट हो गया है। न तो आकाश की पताका स्वरूप बिजली ही चमकती है और न तो आकाश में बलाकाएँ ही उड़ती हैं; न तो मयूर आकाश की ओर मुख उठाकर देखते हैं।

साहित्यिकविशेषताएँ— (१) इस श्लोक में बसन्ततिलका छन्द है (२) शरद् ऋतु का इसमें स्वाभाविक वर्णन है। (३) इस श्लोक में प्रसाद नामक गुण है (४) वैदर्भी रीति है तथा (५) अल्पसमासवती संघटना है।

नृत्यप्रयोगरहिताञ्छिखिनो विहाय हंसानुपैतिमदनो मधुरप्रगीतान्।
मुक्त्वा कदम्बकुटजार्जुनसर्जनीपान्सप्तच्छदानुपगता कुसुमोद्गमश्रीः।। १३।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके महाकविः कालिदासः शरदृतोः वर्णनस्य प्रसंगेन अस्मिनृतौ वर्षर्तोः अपेक्षया स्थिति वैपरीत्यं वर्णयति। वर्षर्तौ मयूराः नृत्यन्ति शरदृतौ ते नहि नृत्यन्ति, अतएव कामोऽपि शरदि तान् विहाय मधुरगानकर्तॄन् हंसानेवाश्रयते। शरदृतौ तु सप्तच्छदेष्वेव पुष्पाणां विकासो दृश्यते।

अन्वयः— मदनः नृत्यप्रयोगरहितान् शिखिनः विहाय मधुरप्रगीतान् हंसान् उपैति। कुसुमोद्गमश्रीः कदम्बकुटजार्जुनसर्जनीपान् मुक्त्वा सप्तच्छदान् उपगता।

व्याख्याः— मदनः= काम, नृत्यप्रयोगरहितान्= नृत्यस्य= नर्तनस्य यो हि प्रयोगः अभ्यासः तेन रहितान्= नर्तनक्रियां प्रत्युदासीनानिति भावः, शिखिनः= मयूरान्, विहाय= त्यक्त्वा, मधुरप्रगीतान्= मधुराणि= श्रोत्रपेयानि, प्रगीतानि= गायनानि येषां ते तथाभूतान् हंसान्= कलहंसान्, उपैतिं= प्राप्नोति। हंसानां श्रोत्रपेयो रव एव कामोपष्टम्भको भवति शरदृतौ। अनेनैव प्रकारेण, कुसुमोद्गमश्रीः= कुसुमानाम्= पुष्पाणाम् उद्गमस्य= उत्पत्तेः, श्रीः= शोभा, कदम्बकुटजार्जुनस-र्जनीपान्= कदम्बश्च,= नीपश्च, कुटजश्च, अर्जुनश्च, सर्जनश्च= सालश्च नीपश्च= अशोकश्च कदम्बकुटजा- र्जुजनसर्जनीपान्= एतान् वृक्षान् मुक्त्वा= परित्यज्य, सप्तच्छदान्= सप्तच्छदाभिख्यान् वृक्षान् उपगता= समागात्।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके वसन्ततिलकावृत्तम् (२) शरदो मनोज्ञं वर्णनम् (३) मध्यमसमासवती संघटना (४) प्रसादाख्यो गुणः (५) वैदर्भी रीतिश्च।।

समासः— नृत्यप्रयोगरहितान्= नृत्यस्य प्रयोगः= नृत्यप्रयोगः (ष० त० पु०)

तेन रहिता ये ते तान् (ब० ब्री०) कुसुमोद्गमश्रीः= कुसुमानाम् उद्गमः= कुसुमोद्गमः, (ष० त० पु०) तस्य श्रीः= कुसुमोद्गमश्रीः (ष० त० पु०) कदम्बकुटजार्जुनसर्ज-नीपान्= कदम्बश्च कुटजश्च अर्जुनश्च सर्जश्चनीयश्च= कदम्बकुटजर्जुनसर्जनीपाः (द्वन्द्वः)

हिन्दीशब्दार्थ— मदनः= कामदेव, नृत्यप्रयोगरहितान्= नृत्य के प्रयोग से रहित, शिखिनः- मयूरों को, विहाय= छोड़कर, मधुरप्रगीतान्= जिनका गीत (कलरव) मधुर लगता है, ऐसे, हंसान्= हंसों को, उपैति= अपना आश्रय बना रहा है। पुष्पोद्गमश्रीः= पुष्पों के विकास की शोभा, कदम्बकुटजार्जुनसर्जनीपान्= कदम्ब, कुटज, अर्जुन सर्ज तथा अशोक के वृक्षों को मुक्त्वा= छोड़कर सप्तच्छदान्= सप्तच्छद के वृक्षों को, उपगता= अपना आश्रय बना लिया है।

उपस्थापन— इस श्लोक में महाकवि कालिदास शरद् ऋतु की शोभा का वर्णन करते हुए कहते हैं कि इस समय मयूरों ने नृत्य करना छोड़ दिया है, अतएव कामदेव ने भी अपना आश्रय मयूरों को बनाना छोड़ दिया है। शरद् ऋतु में श्रोत्रपेय कलरव करने वाले हंसों को काम ने अपना आश्रय बनाया है। अर्थात् शरद् ऋतु में हंसों की ही मधुर ध्वनि कामोद्दीपक होती है, मयूरों की नहीं। वर्षा ऋतु में तो कदम्ब, कुटज, अर्जुन तथा सर्ज के वृक्षों में ही पुष्पों का विकास दिखता था। किन्तु शरद् ऋतु में पुष्पों के विकास की शोभा ने उपर्युक्त वृक्षों का परित्याग कर दिया है। इस समय सप्तच्छद के ही वृक्ष पुष्पित दिखते हैं।

महाकवि माघ की धारण कालिदास की धारणा से बिल्कुल विपरीत प्रतीत होती है। वे कहते हैं कि शरद् ऋतु में हंसों की बोली परुष तथा मयूरों की बोली रमणीय होती है।

'शरदि हंसरवाः परुषीकृताः स्वरमयूरमयू रमणीयताम्।'

भावार्थ— नृत्य के प्रति विरक्त मयूरों को त्याग कर कामदेव ने मधुर ध्वनि करने वाले हंसों को अपना आश्रय बना रहा है। इस समय कदम्ब, कुटज, अर्जुन तथा सर्ज के वृक्षों को त्याग कर पुष्पों के विकास की शोभा ने सप्तच्छद के वृक्षों को अपना आश्रय बनाया है।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में वसन्ततिलका छन्द है। (२) सम्भोगशृंङ्गार अभिव्यंग्य है (३) कामोत्तेजक विभावों का वर्णन है, (४) वैदर्भी रीति है (५) प्रसाद एवं माधुर्य गुणों का सद्भाव है (६) अल्पसमासवती संघटना है।

शेफालिकाकुसुमगन्धमनोहराणि, स्वस्थस्थिताण्डजकुलप्रतिनादितानि।
पर्यन्तसंस्थितमृगीनयनोत्पलानि, प्रोत्कण्ठयन्त्युपवनानि मनांसि पुंसाम्।। १४।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके महाकविः कालिदासः शरदृतौ उपवनानां शोभां वर्णयति। तानि चोपवनानि शेफालिकायाः कुसुमानां गन्धेनातीव मनोहराणि सन्ति। तेषु विद्यमानाः पक्षिणः कलरवं कुर्वन्ति। उपवनानां सविधेऽतीव मनोहरनेत्रवत्यः मृग्य उपविष्टाः सन्ति। एतादृशानि उपवनानि वीक्ष्य पुंसां मनांसि उत्कण्ठितानि भवन्ति।

अन्वयः— शेफालिकाकुसुमगन्धमनोहराणि स्वस्थस्थिताण्डजकुलप्रतिनादितानि पर्यन्तसंस्थितमृगीनयनोत्पलानि उपवनानिं पुसां मनांसि प्रोत्कण्ठयन्ति।

व्याख्या— शेफालिकाकुसुमगन्धमनोहराणि= शेफालिकायाः= नीलिकायाः, कुसुमानाम्= पुष्पाणाम्, गन्धेन= सुगन्धिना, मनोहराणि= मनोज्ञानि, स्वस्थस्थिताण्ड- जकुलप्रतिनादितानि= स्वस्थस्थितानाम्= सुखपूर्वकमवस्थितानां, अण्डजानाम्= पक्षिणाम्, यद्धि कुलम्= समूहः, तेन प्रतिनादितानि= प्रतिध्वनितानि, पर्यन्त- संस्थितमृगीनयनोत्पलानि= पर्यन्ते= सविधे, संस्थितानाम्= उपविष्टानाम्, मृगीनाम्= हरिणीनाम्, नयनानि= नेत्राणि एव उत्पलानि= नीलकमलानि येषां तानि उपवनानि= विहारारामाणि पुंसाम्= पुरुषाणाम्, मनांसि= अन्तःकरणानि, प्रोत्कण्ठयन्ति= प्रकर्षेण उत्कण्ठितानि कुर्वन्ति।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके सन्ति वसन्ततिलकावृत्तम् (२) सम्भोगशृंङ्गारो ऽभिव्यंग्यः (३) वैदर्भी रीतिः (४) माधुर्याख्यो गुणः (५) मध्यमसमासवती संघटना च।

समासः— शेफालिकाकुसुमगन्धमनोहराणि= शेफालिकायाः कुसुमानि= शेफालिकाकुसुमानि (ष० त० पु०) तेषां गन्धः= शेफालिकाकुसुमगन्धः, (ष० त० पु०) तेन मनोहराणि= शेफालिकाकुसुमगन्धमनोहराणि (तृ त० पु०) स्वस्थस्थिता- ण्डजकुलप्रतिनादितानि= स्वस्थस्थिताश्च ते अण्डजाः= स्वस्थस्थिताण्डजाः (कर्मधा- रयः) तेषां कुलम् स्वस्थस्थिताण्डजकुलम् (ष० त० पु०) तेन प्रतिनादितानि= स्वस्थस्थिताण्डजकुलप्रतिनादितानि (तृ० त० पु०) पर्यन्तसंस्थितमृगीनयनोत्पलानि= पर्यन्ते संस्थिताः= पर्यन्तसंस्थिताः (स० त० पु०) पर्यन्तसंस्थिताश्च ताः मृग्यः- पर्यन्तसंस्थितमृग्यः (कर्मधारयः) तासां नयनान्येवोत्पलानि येषां तानि= पर्यन्त- संस्थितमृगीनयनोत्पलानि। (ब० ब्री०)

हिन्दीशब्दार्थ— शेफालिकाकुसुमगन्धमनोहराणि- शेफालिका (हरशृंगार के) पुष्पों की गन्ध से मनोहर बने हुए, स्वस्थस्थिताण्डजकुलप्रतिनादितानि= सुखपूर्वक बैठे हुए पक्षियों के समूह द्वारा प्रतिध्वनित, तथा पर्यन्तसंस्थितमृगीनयनोत्पलानि= सन्निकट में बैठी हुई हरिणियों के नेत्र रूपी नीलकमल से सुशोभित, उपवनानि= उपवन, पुंसाम्= पुरुषों के, मनांसि= मन को, प्रोत्कण्ठयन्ति= अत्यधिक उत्कण्ठित बना देते हैं।

उपस्थापन— इस श्लोके में महाकवि कालिदास शरत् काल में होने वाली शोभा का वर्णन करते हुए कहते हैं, कि उपवनों में हरशृंगार के पुष्प खिल गए हैं। उन पुष्पों की सुगन्धि से ये उपवन अत्यन्त मनोहर लगते हैं। इन उपवनों में पक्षियों का समूह सुखपूर्वक बैठकर कलरव कर रहा है तथा उसके कलरवों से उपवन प्रतिनादित हो रहा है। सन्निकट में मृगियाँ भी बैठी हुई हैं। उनके नेत्र नीलकमल के समान अत्यन्त मनोहर हैं। मृगियों के नेत्र रूपी नीलकमल से ये उपवन सुशोभित हो रहे हैं। इस प्रकार के उपवनों को देखकर पुरुषों का मन अत्यन्त उत्कण्ठित हो जाता है।

भावार्थ— हरशृंगार के पुष्पों की गन्ध से मनोहर बने हुए, सुखपूर्वक बैठे हुए पक्षियों की ध्वनि से प्रतिध्वनित तथा सन्निकट में बैठी हुई मृगियों के नेत्र रूपी नीलकमल से सुशोभित उपवनों को देखकर पुरुषों का मन अत्यन्त उत्कण्ठित हो जाता है।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में वसन्ततिलका छन्द है। (२) सम्भोगशृंगाररस अभिव्यंग्य है (३) वैदर्भी रीति है, (४) माधुर्य गुण है तथा (५) मध्यमसमासवती संघटना है।

कह्लारपद्मकुमुदानि मुहुर्विधुन्वंस्तत्संगमादधिकशीतलतामुपेतः।
उत्कण्ठयत्यतितरां पवनः प्रभाते पत्रान्तलग्नतुहिनाम्बुविधूयमानः।। १५।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके महाकविः कालिदासः शरदृतोः प्रभातकालिकस्य पवनस्य वर्णनं करोति। स वक्ति यत् वायुरयं विविधप्रकारकाणां सौगन्ध्यसम्पन्नानां पुष्पाणां संस्पर्शेण सुगन्धितः शीतलश्च भवति। शरदि प्रातःकाले तृणानामुपरि तुषारस्य बिन्दवः लग्नाः भवन्ति। वायुरयं मन्दं वाति अतितराभुत्कण्ठयति च।

अन्वयः— कह्लारपद्मकुमुदानि मुहुः विधुन्वन् तत्संगमात् अधिकशीतलताम् उपेतः पत्रान्तलग्नतुहिनाम्बुविधूयमानः पवनः प्रभाते अतितराम् उत्कण्ठयति।

व्याख्याः— कह्लारपद्मकुमुदानि= कह्लाराणि च= सौगन्धिकानि च, पद्मानि च= कमलानि च, कुमुदानि च, मुहुः= असकृद् विधुन्वन्= कम्पयन् तत्संगमात्= तेषां संसर्गात् अधिकशीतलताम्= अतीवशैत्यम्, उपेतः= प्राप्तः, पत्रान्तलग्न तुहिना-म्बुविधूयमानः= पत्राणाम्, अन्ते= अन्तिमे भागे, लग्नम्= संलग्नम्, यत् तुहिनम्= तुषाराम्बुकणम् तत् विधूयमानः= अपाकुर्वन्, पवनः= वायुः, प्रभाते= प्रातःकाले, अतितराम्= अत्यधिकम्, उत्कण्ठयति= उत्कण्ठितं करोति।

अस्मिञ्छ्लोके शरद् ऋतोः प्राभातिकस्य वायोः वर्णनमतीव कामोत्तेजकरूपेण कृतमास्ते।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके वसन्ततिलकावृत्तम् (२) प्राभातिकस्य वायोः कामोत्तेजकरूपेण वर्णनम् (३) सम्भोगशृङ्गारो ऽभिव्यंग्यः। (४) वैदर्भीरीतिः (५) माधुर्यप्रसादाख्यौ गुणौ (६) मध्यमसमासवती संघटना च सन्ति।

समासः— कह्लारपद्मकुमुदानि= कह्लाराणि च पद्मानि च कुमुदानि च= कह्लारपद्मकुमुदानि (समाहार द्वन्द्वः) तत्संगमात्- तेषांसङ्गमात्- (षष्ठी तत्पुरुषः) अधिकशीतलताम्= अधिका चाऽसौ शीतलता ताम्। (कर्मधारयः) पत्रान्तल-ग्नतुहिनाम्बुविधूयमानः- पत्रस्य अन्तः= पत्रान्तः (ष० त० पु०) तत्रलम्नं तुहिनाम्बु= पत्रान्तन्तलग्नतुहिनाम्बु (स० त० पु०) तद्विधूयमानः पत्रान्तलग्नतुहिनाम्बुविध ूयमानः (ब० ब्री०)

हिन्दीशब्दार्थ— कह्लारपद्मकुमुदानि= सौगन्धिक कमल तथा कुमुद को, मुहुः= बारम्बार, विधुन्वन्= कँपाने वाली, तत्संगमात्= उन पुष्पों के संसर्ग के कारण, अधिकशीतलताम् उपेतः= अत्यधिक शीतल बना हुआ, पत्रान्तलग्नतुहिना-म्बुविधूयमानः= उनके पत्तों पर लगे हुए ओस के कणों को दूर करता हुआ,

पवनः= वायु, प्रभाते= प्रातःकाल में, अतितराम्= अत्यधिक, उत्कण्ठयति= उत्कण्ठित बना देता है।

उपस्थापन— इस श्लोक में महाकवि कालिदास ने प्राभातिक वायु का वर्णन कामोत्तेजक के रूप में किया है। वे कहते हैं कि शरद् ऋतु में तो सौगन्धिक कमल, सामान्य कमल तथा कुमुद, इन सभी प्रकार के पुष्प सरोवरों में विकसित हो गए हैं। प्रातःकाल में चलने वाली वायु उन सबों को कँपा देती है। उन पुष्पों के सम्पर्क के कारण उसमें अधिक शीतलता आ गयी है। उन पुष्पों के पत्तों के ऊपर जो ओस के कण अँटके हुए हैं, उन सबों को यह वायु सोख लेती है। इस प्रकार से धीरे-धीरे चलने वाली शीतल तथा सुगन्धित वायु अपने स्पर्शमात्र से पुरुषों के मन को अत्यधिक उत्कण्ठित कर देती है।

भावार्थ— कह्लार, कमल तथा कुमुद को बार-बार कँपाने वाला, उनके संपर्क से अत्यधिक शीतल, उनके पत्तों के ऊपर पड़े हुए ओस के कण को सुखाने वाला, प्रातः कालीन पवन अत्यधिक उत्कण्ठित बना देता है।

साहित्यिकविशेषताएँ— (१) इस श्लोक में वसन्ततिलका वृत्त है। (२) इसमें प्राभातिक पवन का वर्णन कामोत्तेजक के रूप में किया गया है। (३) इसमें सम्भोग शृंगार व्यंग्य है। (४) इसमें प्रसाद एवं माधुर्य इन दो गुणों का सद्भाव है। (५) वैदर्भीरीति है और (६) मध्यमसमासवती संघटना है।

संपन्नशालिनिचयावृतभूतलानि स्वस्थस्थितप्रचुरगोकुलशोभितानि।
हंसैः ससारसकुलैः प्रतिनादितानि सीमान्तराणि जनयन्ति नृणां प्रमोदम्।। १६।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके महाकविः कालिदासो वक्ति यत् शरदृतौ शालयः सर्वत्र पक्वतां गताः सन्ति। तैः सम्पूर्णा मही आच्छन्ना वर्त्तते। सर्वत्र पक्वाः शालय एवावलोक्यन्ते। भूमौ सर्वत्र सुखपूर्वकमुपविष्टाः गावः एव शोभन्ते। सीमाया आभ्यन्तरो भागः सारसैः हंसैश्च प्रतिध्वनितो विद्यते। एतादृशानीमानि सीमान्तराणि नृणां मनस्सु प्रमोदमेव जनयन्ति।

अन्वयः— सम्पन्नशालिनिचयावृतभूतलानि स्वस्थस्थितप्रचुरगोकुलशोभितानि ससारसकुलैः हंसैः प्रतिनादितानि सीमान्तराणि नृणां प्रमोदं जनयन्ति।

व्याख्या— अत्र महाकविः सीमान्तराणां विशेषणत्रयमुपन्यसति- (१) सीमान्तराणां भूमिभागः सर्वत्र सम्पन्नशालिसमूहेन आच्छन्नो विद्यते। (२) सर्वत्र भूमिं गोकुलमध्यासते। (३) तानि सारसैः हंसैश्च प्रतिध्वनितानि च सन्ति। तथाहि-

सम्पन्नशालिनीचयावृत भूतलानि= सम्पन्नानाम्= परिपक्वतां गतानाम् शालीनाम्= धान्यानां यो हि निचयः समूहः, तेन आवृतानि= आच्छन्नानि, भूतलानि= भूमिभागाः येषां तानि। स्वस्थस्थितप्रचुरगोकुलशोभितानि= स्वस्थम्= सुखपूर्वकम् यथेष्टं वा, स्थितम्= उपविष्टम्, यद्धि प्रचुरम्= प्रभूतमात्रायां विद्यमानं गोकुलम्= गोसमूहः, तेन शोभितानि= समलंकृतानि। ससारसकुलैः= सारससमूहसहितैः हंसैः= कलहंसैः प्रतिनादितानि= प्रतिध्वनितानि, सीमान्तराणि= सीमान्तरभागाः नृणाम्= मनुष्याणाम्, प्रमोदम्= आनन्दातिशयं, जनयन्ति= उत्पादयन्ति।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके वसन्ततिलका वृत्तम। (२) सीमान्तराणां यथायथं वर्णनम्। (३) मध्यमसमासवती संघटना (४) वैदर्भी रीतिः (५) प्रसादश्च गुणः।

समासः— सम्पन्नशालिनिचयावृतभूतलानि= सम्पन्नश्चासौ शालिनिचयः= सम्पन्नशालिनिचयः (कर्मधारयः) तेन आवृतानि भूतलानि येषां तानि (ब० ब्री०) स्वस्थस्थितप्रचुरगोकुलशोभितानि= स्वस्थस्थितं प्रचुरं च= स्वस्थस्थितप्रचुरम् (द्वन्द्वः) स्वस्थस्थितप्रचुरं च तत् गोकुलम्= स्वस्थस्थितप्रचुरगोकुलम् (कर्मधारयः) तेन शोभितानि (तृ त० पु०)

हिन्दीशब्दार्थ— सम्पन्नशालिनिचयावृतभूतलानि= पके हुए धानों से जिनकी धरती पट गयी है, स्वस्थस्थितप्रचुरगोकुलशोभितानि= सुखपूर्वक प्रचुर मात्रा में बैठी हुए गायों के समूह से सुशोभित, ससारसकुलैः= सारस समूह के साथ-साथ, हंसैः= हंसों के द्वारा, प्रतिनादितानि= प्रतिध्वनित, सीमान्तराणि= सीमाओं के आभ्यन्तर भाग, नृणाम्= लोगों के मन में, प्रमोदम्= आनन्दातिरेक, जनयन्ति= उत्पन्न करते हैं।

उपस्थापन— इस श्लोक में महाकवि शरद् ऋतु की भूमि की सीमा के आभ्यन्तर भागों का वर्णन करते हैं कि इस ऋतु में पके हुए धानों से पृथिवी भर जाती है। सर्वत्र पके हुए धान ही धान दिखायी देते हैं। सर्वत्र सुखपूर्वक गायों का समूह प्रचुरमात्रा में बैठा हुआ है। इन गायों के द्वारा भी सीमा के आभ्यन्तर भाग सुशोभित हैं। सर्वत्र हंस तथा सारस पक्षी कलरव करते हैं। इस प्रकार के सीमा के आभ्यन्तर भाग को देखकर मनुष्यों के मन में आनन्दातिशय्य का उद्रेक हो जाता है।

भावार्थ— पके हुए धानों से भरी हुई भूमि भाग वाले, प्रचुरमात्रा में सुखपूर्वक बैठी हुई गायों से सुशोभित तथा सारस एवं हंसों के कलरव से प्रतिनादित सीमा के आभ्यन्तरभाग सबों के मन में आनन्द को उद्रिक्त कर देते हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में वसन्ततिलका छन्द है (२) इसमें शारदीय सीमान्तभागों का यथायथ वर्णन है (३) मध्यमसमासवती संघटना है, (४) वैदर्भी रीति है तथा (५) प्रसाद नामक गुण है।

हंसैर्जिता सुललिता गतिरङ्गनानामम्भोरुहैर्विकसितैर्मुखचन्द्रकान्तिः।
नीलोत्पलैर्मदकलानि विलोकितानि भ्रूविभ्रमाश्च रुचिरास्तनुभिस्तरंगैः।। १७।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके महाकविर्वर्णयति यत् शरदि ऋतौ विभिन्नैः वस्तुभिः कामिनीनां विभिन्नप्रकारकाणां वस्तूनामपहरणादिकं कृतम्। तद्यथा-हंसैः तासां सुललिता गतिरेव जिता। विकसितैः पद्मैः तासां मुखचन्द्रस्यकान्तिरेव अपहृता, नीलकमलैश्च चपलानि मदमत्तानि मनोज्ञतमानि नेत्राणि एवापहृतानि, तनुभिः तरङ्गैश्च तासां रुचिराः भ्रूविभ्रमाश्चापहृताः। अनेन प्रकारेणास्मिन् ऋतौ नाना प्रकारकाणि वस्तून्युद्भतानि सन्ति, येषामवलोकनमात्रेण मनसि कामोत्तेजना सद्य एव उद्रिक्ता भवति।

अन्वयः— अङ्गनानां सुललिता गतिः हंसैः, मुखचन्द्रकान्तिःविकसितैः अम्भोरुहैः, मदकलानि विलोकितानि नीलोत्पलैः, रुचिराः भ्रू विभ्रमाश्च तनुभिः तरंगैः जिताः।

व्याख्या— अङ्गनानाम्= रमणीनाम्, सुललिता= मनोज्ञा गतिः= गमनम्, हंसैः= कलहंसैः जिता इति शेषः। मुखचन्द्रकान्तिः= मुखस्य= वदनस्य चन्द्रकान्ति= चन्द्रमा सदृशी ह्लादिका कान्तिः= शोभा, विकसितैः= प्रफुल्लैः, अम्भोरुहैः= पद्मैः, मदकलानि= मदेन= मदमत्ततया, कलानि= मनोज्ञानि, विलोकितानि= अवलोकितानि नयनानीति भावः, नीलोत्पलैः= नीलकमलैः, रुचिराः= मनोहराः भ्रूविभ्रमाश्च= भ्रुकुटिविलासाश्च, तनुभिः= ह्रस्वैः, तरङ्गैः= वीचिभिः जिताः।

अनेनायमर्थः सम्पन्नो यत् शरदृतौ हंसानाम् गमनस्य, कमलानाम्, नीलकमलानाञ्च प्राचूर्यवलोक्यते सरस्सु।। रमण्यश्च हंसगामिन्यः, चन्द्रमुख्यः, नीलोत्पलाविलोचनाश्च सन्ति।

तासामेकत्र क्वापि साम्यं नावलोक्यते।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अत्र वसन्ततिलका वृत्तम् (२) व्यतिरेकालंकारः (३) सम्भोगश्रृंगारोऽभिव्यंग्यः (४) मुखेचन्द्रत्वारोपात् मुखचन्द्रकान्तिरित्यत्र निरङ्गरूपकम्। (५) असमासा संघटना (६) माधुर्यप्रसादाख्यौ गुणौ (७) वैदर्भीरीतिश्च।

समासः— मुखचन्द्रकान्तिः= मुखचन्द्रस्य कान्तिः। (ष० त० पु०)

हिन्दीशब्दार्थ— अङ्गनानाम्= रमणियों के, सुललिता= मनोहर, गति= चाल को, हंसैजिता= हंसों ने जीत लिया। मुखचन्द्रकान्तिः= चन्द्रमा के समान आह्लादक मुख की कान्ति को, विकसितैः= खिले हुए, अम्भोरुहैः= कमलों ने जीत लिया। मदकलानि= मदमस्त एवं मनोहर, विलोकितानि= नेत्रों को, नीलोत्पलानि= नील कमलों ने जीत लिया तथा रुचिराः= मनोहर, भ्रूविभ्रमाश्च= भ्रुकुटिविलासों को, तनुभिः= छोटी-छोटी तरङ्गों ने; जिताः= जीत लिया।

उपस्थापन— इस श्लोके में महाकवि बतला रहे हैं कि शरद् ऋतु में अनेक मनोमोहक वस्तुएँ उत्पन्न हो गयी हैं। हंस चारों ओर आ गये हैं, उनके सामने हंस गामिनी रमणियों की भी चाल फीकी पड़ने लग गयी है। खिले हुए कमलों की शोभा के साथ रमणियों के मुखचन्द्र की शोभा हल्की प्रतीत होती है। नीलकमल भी खिले हुए हैं। नीलकमलों की शोभा रमणियों की नीली-नीली मनोहर आँखों की भी शोभा को मात दे रही है तथा रमणियों के मनोहर भ्रूभङ्गों की शोभा जलाशयों की छोटी-छोटी लहरियों के सामने फीकी सी प्रतीत होती है।

किन्तु एक ही रमणी में हंसों की चाल, नीलकमल के समान मनोहर नेत्र तथा कमलपुष्प के समान आह्लादक मुखमण्डल का सद्भाव है जो उन्हें अनुपमेय बनाये हुए है।

भावार्थ— रमणियों की चाल को हंसों ने, उनके मुखमण्डल की शोभा को विकसित कमलों ने उनकी नीली मनोहर नेत्रों की शोभा को नीलकमलों ने, तथा उनके भ्रूविलासों को छोटी-छोटी तरंगों ने जीत लिया है।

साहित्यिक विशेषताएँ– (१) इस श्लोके में वसन्ततिलका वृत्त है (२) व्यतिरेकालंकार है (३) मुख में चन्द्रत्व का आरोप होने से निरङ्गरूपक अलंकार (४) अल्पसमासवती संघटना (५) माधुर्य तथा प्रसाद नामक गुण एवं (६) वैदर्भी रीति है।

श्यामालताः कुसमुमभारनतप्रबालाः स्त्रीणां हरन्ति धृतभूषणबाहुकान्तिम्।
दन्तावभासविशदस्मितचन्द्रकान्तिं कङ्केलिपुष्परुचिरा नवमालती च।। १८।।

सन्दभप्रसङ्गौ—शरदृतौ श्यामालतानां मनोज्ञं वर्णनमनेन श्लोकेन करोति महाकविः कालिदासः।स वक्ति यदस्मिनृतौ इमाः लताः विकसिताः सन्ति।तासां मनोज्ञाः पल्लवास्तु रक्तवर्णास्सन्तः प्रवालस्य कान्तिं विभ्रति।विकसिता कङ्केलिपुष्पमनोज्ञा नवीनामालत्यपि रमणीनां दन्तपंक्तेः शोभां धारयति।अत एवाति मनोज्ञो ऽयं कालः।

अन्वयः— कुसुमभारनतप्रवालाः श्यामालताः स्त्रीणां धृतभूषणबाहुकान्तिं हरन्ति। कङ्केलिपुष्परुचिरा नव मालती च दन्तावभासविशदस्मितचन्द्रकान्तिं च हरति।

व्याख्या— कुसुमभारनतप्रबालाः= कुसुमानाम्= पुष्पाणां भारेण= गौरवेण, नताः= विनताः, प्रवालाः= किसलयाः यासां ताः तथाभूताः, श्यामा लतः= एतदभिधाना श्यामवर्णाः लताः, स्त्रीणाम्= रमणीनाम्, धृतभूषणबाहुकान्तिम्= धृतम्= धारणं कृतम्, भूषणानि= आभूषणानि यैः तेषां बाहूनाम्= भुजानाम्, कान्तिम्= सौन्दर्यम्, हरन्ति= चोरयन्ति। कङ्केलिपुष्परुचिरा= कंकेलि इति नाम्नाऽभिधीयमानं यत् पुष्पपादपं तस्य पुष्पैः= कुसुमैः रुचिरा= मनोज्ञा नवमालती= नवीना मालती च दन्तावभासविशदस्मितचन्द्रकान्तिम्= दन्तानाम्= दशनानाम्, अवभासेन= प्रकाशेन, विशदम्= धवलम्, यत् स्मितम्= ईषत् हसितम् तदेव चन्द्रकान्तिः= शशि नः कान्तिः ताम् मनोतामिति भावः, हरति= न्यक्करोति।

अयमाशयो यत् किसलयदलशोभितानां पूर्णरूपेण विक़सितानां श्यामालतानां शोभा तु रमणीनां समुचितालंकारलंकृतानां बाहूनां शोभां धत्ते। नवमालत्या अपि शोभा तासां स्मितकालेस्फुरन्त्याः दन्तप्रकाशबन्धुरायाः शोभायाः साम्यं धत्ते।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके वसन्ततिलका वृत्तम् (२) सम्भोगशृं-गाराभिव्यंग्यता (३) स्मिते चन्द्रकान्तित्वारोपाद्रूकालंकारः (४) अल्पसमासवती संघटना (५) माधुर्यप्रसादाख्यौ गुणौ (६) वैदर्भी रीतिश्च।

समासः— कुसमभारनतप्रवालाः= कुसमुमानां भारः= कुसुमभारः (ष० त० पु०) तेन नताः प्रवालाः यासां ताः (ब० ब्री०) धृतभूषणबाहुकान्तिम्= धृतानि च तानि भूषणानि= धृतभूषणानि, (कर्मधारयः) धृतभूषणानि यैः बाहुभिः तेषाम् कान्तिम् (ष० त० पु०) दन्तावभासविशदस्मितचन्द्रकान्तिम्= दन्तानाम् अवभासः= दन्ता भासः, (ष० त० पु०) तेन विशदम्= दन्तावभासविशदम् (तृ० त० पु०) दन्तावभासविशदं च तत् स्मितम्= दन्तावभासविशदस्मितम् (कर्मधारयः)

हिन्दीशब्दार्थ— कुसमुभारनतप्रवालाः= पुष्पों के भार से जिनके पल्लव झुक गए हैं, इस प्रकार की श्यामा लताः- श्यामा लताएँ, स्त्रीणाम्= रमणियों के, धृतभूषणबाहुकान्तिम्= आभूषणों से अलंकृत भुजाओं की शोभा को, हरन्ति=

चुरा ले रही हैं। कंकेलिपुष्परुचिरा= कंकेलि के फूलों से मनोहर बनी हुई, नवमालती च= नवीन मालती लता, दन्तावभासविशदस्मितचन्द्रकान्तिम्= दाँतों की कान्ति से सुशोभित मुसुकान की शोभा को चुरा लेती हैं।

उपस्थापन— इस श्लोक में महाकवि कालिदास यह बतला रहे हैं कि शरद् ऋतु में श्यामा लता विकसित हो गयी है। उसके फूलों के भार से उसके पल्लव भी झुक गए हैं। कंकेली के फूल भी खिले हुए हैं। उनके साथ खिली हुई सफेद पुष्पों से लदी हुई मालती लता की शोभा अत्यन्त रमणीय हो गयी है। अनेक प्रकार के आभूषणों से अलंकृत रमणी की भुजलता जिस तरह से मनोहारिणी होती है, उसी तरह से श्यामा लता की शोभा भी अत्यन्त मनोज्ञ है। जिस तरह से उजले दाँतों की शोभा से मनोज्ञ तथा मुसुकान मनोहर रमणी के लाल-लाल ओष्ठों की शोभा होती है, उसी तरह से कंकेली के उजले पुष्पों से मनोहर लाल-लाल पुष्पों वाली मालती लता भी अत्यन्त मनोहर लगती है।

भावार्थ— फूलों के भार से झुके हुए पल्लवों वाली श्यामा लता आभूषणों से समलंकृत रमणी की भुजाओं की शोभा को चुरा ले रही है। खिले हुए कंकेली पुष्पों की शोभा से मनोहर नवमालती लता दाँतों की चमक से युक्त तथा मन्द मुसुकान भरे रमणियों के मुखचन्द्र की शोभा को तिरस्कृत कर रही है।

साहित्यिकविशेषताएँ— (१) इस श्लोक में वसन्ततिलका छन्द है। (२) सम्भोग शृङ्गार अभिव्यंग्य है (३) मन्द मुसुकान में चन्द्रिकात्व का आरोप होने से रूपकालंकार है, (४) संघटना अल्पसमासवती वाली है (५) माधुर्य एवं प्रसाद नामक गुण हैं तथा (६) वैदर्भी रीति है।

केशान्नितान्तघननीलविकुञ्चिताग्रानापूरयन्ति वनिता नव मालतीभिः।
कर्णेषु च प्रवरकाञ्चनकुण्डलेषु नीलोत्पलानि विविधानि निवेशयन्ति।। १६।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके महाकविः कालिदासः सुन्दरीणामलंकरणं वर्णयन् वक्ति यत् रमण्यः नवमालत्याः पुष्पैः स्वकुन्तलकलापं समलंकुर्वन्ति। सुवर्णकुण्डलालंकृतेषु कर्णेषु विविधप्रकारकाणि नीलकमलानि निवेशयन्ति। एतेनायमप्यर्थः स्पष्टो जातो यत् साम्प्रतं नीलकमलानि बहुप्रकारकाणि विकसन्ति, मालतीलताऽपि विकसिता वर्त्तते येन सुन्दरीणां कृते पुष्पाणि सुलभानि भवन्ति।

अन्वयः— वनिताः नितान्तघननीलविकुञ्चिताग्रान् केशान् नवमालतीभिः आपूरयन्ति। प्रवरकाञ्चनकुण्डलेषु कर्णेषु च विविधानि नीलोत्पलानि निवेशयन्ति।

व्याख्या— वनिताः= रमण्यः, नवमालतीभिः= नवीनैः मालतीपुष्पैः, नितान्तघननीलविकुञ्चिताग्रान्= नितान्तम्= अतीव, घन इव= मेघ इव, नीलाः कृष्णवर्णाः, विकुञ्चिताग्राः= वक्राग्रभागाः= येषां तथाविधान्, केशान्= कुन्तलकलापान् आपूरयन्ति= संग्रथयन्ति। प्रवराणि= उत्तमजातीयानि यानि, काञ्चनानि= सुवर्णनिर्मितानि, कुण्डलानि= कर्णाभूषणानि, येषु तथाविधेषु, कर्णेषु= श्रोत्रेषु, विविधानि= अनेकानि, नीलोत्पलानि= नीलकमलानि, निवेशयन्ति= आभूषयन्ति।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके वसन्ततिलका वृत्तम् (२) सम्भोग-शृंगारस्य उद्दीपनविभावानां वर्णनम् (३) अल्पसमासवती संघटना (४) माधुर्यप्र-सादाख्यौ गुणौ (५) वैदर्भी रीतिश्च।

समासः— नितान्तघननीलविकुञ्चिताग्रान्- नितान्तम् घन इव नीलाः= नितान्त-घननीलाः (उपमितसमासः) विशेषेण कुञ्चितः अग्रः येषां ते विकुञ्चिताग्राः (ब० व्री०) नितान्तघननीलाश्च विकुञ्चिताग्राश्च= नितान्तघननीलविकुञ्चिताग्राः (द्वन्द्वः) तान्। प्रवरकाञ्चनकुण्डलेषु= प्रवराणि काञ्चनानि च कुण्डलानि येषु तेषु (कर्मधारयः)

हिन्दीशब्दार्थ— वनिताः= रमणियाँ, नवमालतीभिः= नवमालती के पुष्पों से, नितान्तघननीलविकुञ्चिताग्रान् केशान्= नीले मेघ के समान काले एवं घुँघराले बालों के अग्र भाग को आपूरयन्ति= सजाती हैं, प्रवरकाञ्चनकुण्डलेषु कर्णेषु= उत्कृष्ट जाति के सुवर्ण निर्मित कुण्डलों से युक्त कानों में, विविधानि= अनेक प्रकार के, नीलोत्पलानि= नीलकमल को, निवेशयन्ति= सजाती हैं।

उपस्थापन— इस श्लोक में महाकवि कालिदास यह बतला रहे हैं कि इस शरद् ऋतु में उद्यानों में तो मालती के पुष्प खिले हुए हैं और सरोवरों में नीलकमल खिले हुए हैं। इस समय रमणियाँ अपने सुन्दर काले एवं घुंघराले बालों को मालती के पुष्पों से सजाती हैं और अपने सुवर्ण निर्मित कुण्डलों से सुशोभित कानों को अनेक प्रकार के नील कमलों से सजाती हैं।

भावार्थ— काले मेघों के समान काले एवं घुंघराले बालों के अग्र भाग को सुन्दरियाँ मालती पुष्प से तथा सुवर्ण कुण्डल मण्डित कानों को अनेक प्रकार के नील कमलों से सजाती हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में वसन्ततिलका वृत्त है, (२) सम्भोगशृङ्गार के उद्दीपन विभावों का इसमें वर्णन है। (३) नितान्तघननीलवि-कुञ्चिताग्रान् में आर्थी उपमा है (४) माधुर्य एवं प्रसाद नामक गुणों का सद्भाव है (५) अल्पसमासवती संघटना है तथा (६) इसमें वैदर्भी रीति है।

हारैः सचन्दनरसैः स्तनमण्डलानि श्रोणीतटं सुविपुलं रसनाकलापैः।
पादाम्बुजानि कलनूपुरशेखरैश्च नार्यः प्रहृष्टमनसोऽद्य विभूषयन्ति।। २०।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके महाकविः कालिदासो वर्णयति यद् अस्मिन् शरदि ऋतौ रमण्यः विविधैः प्रकारै स्वाङ्गानि समलंकुर्वन्ति। तथाहि- ताः चन्दनरससिक्तैः शीतलैः हारैः स्वस्तनमण्डलानि, विस्तृतं कटितटं काञ्चीकलापैः, स्वचरणकमलानि च मनोज्ञैः मञ्जीरैश्चालं कुर्वन्ति। एतेनायमप्यर्थो ज्ञायते यत् शरदृतुः कामिनीनां कृतेऽतीवोन्मादको भवति।

अन्वयः— अद्य हृष्टमनसः नार्यः स्तनमण्डलानि सचन्दनरसैः हारैः, सुविपुलं श्रोणीतटं रसनाकलापैः, पादाम्बुजानि कलनूपुरशेखरैश्च विभूषयन्ति।

व्याख्या— अद्य= साम्प्रतम्, शरदि ऋतौ, नार्यः= प्रमदाः, प्रहृष्टमनसः= प्रहृष्टानि= सौख्यातिशयानुभवात् प्रसन्नानि, मनांसि= अन्तःकरणानि यासां ताः।

सचन्दनरसैः= चन्दनस्य= मलयजस्य, रसः तेन सिक्ता ये ते तथाविधैः हारैः= कलापैः, स्तनमण्डलानि= पयोधरमण्डलानि, विभूषयन्ति= समलंकुर्वन्ति, विपुलम्= विस्तृतं कटितटम्= श्रोणितटम्, रसनाकलापैः= काञ्चीकलापैः, समलंकुर्वन्ति; अव्यक्तशब्दकारीणि यानि नूपुराणि= मञ्जीराणि, तेषु शेखरैः= श्रेष्ठैः, पादाम्बुजानि= चरणकमलानि च विभूषयन्ति।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके सन्ति वसन्ततिलका वृत्तम् (२) सम्भोगशृंङ्गारस्योद्दीपनविभावानां वर्णनम् (३) नारीणामलंकारवर्णनम् (४) पादाम्बुजानीत्यत्र रूपकालंकारः (५) अल्पसमासवती संघटना (६) माधुर्यप्रसादाख्यौ गुणौ (७) वैदर्भी रीतिश्च।

समासः— प्रहृष्टमनसः- प्रहृष्टानि मनांसि यासां ताः (ब० ब्री०) सचन्दनरसैः= चन्दनस्य रसः= चन्दनरसः (ष० त० पु०) स्तनमण्डलानि= स्तनानां मण्डलानि (ष० त० पु०) रसनाकलापैः= रसनायाः कलापैः (ष० त० पु०) कलनूपुरशेखरैः= कलानि च तानि नूपुराणि= कलनूपुराणि (कर्मधारयः) तेषां शेखरैः= कलनूपुरशेखरैः (ष० त० पु०) पादाम्बुजानि= पादाः एव अम्बुजानि= पादाम्बुजानि (कर्मधारयः)

हिन्दीशब्दार्थ— अद्य= इस समय, नार्यः= रमणियाँ, प्रहृष्टमनसः= प्रसन्न मन से, सचन्दनरसैः= चन्दन के रस से संसिक्त, हारैः= हारों द्वारा, स्तनमण्डलानि= अपने स्तनमण्डल को, विभूषयन्ति= सजाती हैं, रसनाकलापैः= काञ्चीकलाप के द्वारा, सुविपुलम्= अत्यन्त विस्तृत, श्रोणीतटम्= अपनी कमर को तथा कलनूपुरशेखरैः= मनोहर शब्द करने वाले मञ्जीरों से, पादाम्बुजानि= अपने चरण कमलों को विभूषयन्ति= सजाती हैं।

उपस्थापन— इस श्लोक में महाकवि कालिदास बतलाते हैं कि इस समय रमणियों का मन प्रसन्न है। वे विभिन्न प्रकार के साधनों से अपने भिन्न-भिन्न अंगों को सजाती हैं। चन्दन के रस से सिक्त शीतल हारों से वे अपने स्तनमण्डल को सजाती हैं, अपने कमर में वे मनोहर करधनी धारण करती हैं,जिससे उनके अत्यन्त विस्तृत कमर की शोभा बढ़ जाती है। वे अपने पैरों में मनोहर तथा अव्यक्त शब्द करने वाले नूपुरों को धारण करती हैं।

भावार्थ— इस समय रमणियाँ प्रसन्न मन से चन्दन रससे सिक्त हारों से अपने स्तनमण्डल को, काञ्चीकलाप से अपने कटितट को तथा मनोहर शब्द करने वाले श्रेष्ठ नूपुरों से अपने चरण कमलों को सजाती हैं।

साहित्यिकविशेषताएँ— (१) इस श्लोक में वसन्ततिलका वृत्त है (२) सम्भोगशृंङ्गार के उद्दीपनविभावों का वर्णन है। (३) चरण में कमलत्व का आरोप होने से रूपकालंकार है (४) सुन्दरियों के अलंकार का वर्णन है। (५) अल्पसमासवती संघटना है (६) इस श्लोक में माधुर्य एवं प्रसाद इन दो गुणों का सद्भाव है तथा (७) वैदर्भी रीति है।

स्फुटकुमदचितानां राजहंसाश्रितानां
मरकतमणिभासा वारिणा भूषितानाम्

श्रियमतिशयरूपां व्योम तोयाशयानां
वहति विगतमेघं चन्द्रतारावकीर्णम् ।। २१।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके महाकविः कालिदासो वर्णयति यत् साम्प्रतं व्योम्नि बलाहका नहि दृश्यन्ते। सर्वत्राकाशे चन्द्रतारकाः प्रकाशन्ते। इत्थंभूत आकाशः तथैव आभाति यथा विकसितकुमुदपरिपूर्णानां, राजहंसैरासादितानां, मरकतमणिभासा जलेन समलंकृतानां जलाशयानां शोभा भवति। अत्र मणिभासा समलंकृतस्य जलाशयस्य स्थानी नीलाकाशः, स्फुटकुमदस्थानीयाः तारकाः, हंसस्थानीयश्च चन्द्रो वर्त्तते। अतएव साम्प्रतं व्योम कुमुदपुष्पाञ्चितै राजनहंसैरासादितेन जलाशयेन साम्यमावहति।

अन्वयः— विगतमेघं चन्द्रतारावकीर्णम् व्योम स्फुटकुमुदचितानां राजहंसाश्रितानां मरकमतमणिभासा वारिणा तोयाशयानां अतिशयरूपां श्रियम् वहति।

व्याख्या— विगतमेघम्= विगतः= समाप्तो मेघो यस्मिंस्तथाविधम्= मेघरहितमिति यावत्। शरत्काले आकाशः स्वच्छो भवति मेघाश्च विलीयन्ते इति प्रायेणावलोक्यते। चन्द्रतारावकीर्णम्= चन्द्रश्च= चन्द्रमाश्च, ताराश्च= नक्षत्राणि च तैः अवकीर्णम्= परिगतम्, आकाशस्य निर्मेघत्वात् आकाशे चन्द्रतारकाः रात्रौ शोभन्त एव। व्योम= आकाशः, स्फुटकुमुदचितानाम्= स्फुटैः= विकसितैः, कुमदैः= कैरवैः अचितानाम्= व्याप्तानाम्, राजहंसाश्रितानाम्= राजहंसाः= कलहंसाः आश्रिता येषु तथाविधानाम्= कलहंसाध्युषितानामिति यावत्, मरकतमाणिभासा= मरकतमणेः= नीलमणेः, भासा= प्रकाशेन वारिणा= जलेन, भूषितानाम्= समलंकृतानाम्, तोयाश- यानाम्= जलाशयानाम्, अतिशयरूपाम्= अत्यन्तमनोज्ञाम्, श्रियम्= शोभाम्, वहति= धारयति।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके मालिनी वृत्तम्। ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोके। इति हि मालिनीवृत्तस्य लक्षणम्। (२) व्योमश्रियः जलाशयश्रिया साम्यवर्णनादुपमालंकारः (३) सम्भोगश्रृंगारस्योद्दीपन विभावानां वर्णनम्। (४) अल्पसमासवती संघटना (५) माधुर्यप्रसादाख्यौ गुणौ (६) वैदर्भी रीतिश्च।

समासः— विगतमेघम्= विगताःमेघा यस्मिंस्तत् (ब० ब्री०) चन्द्रतारावकीर्णम्= चन्द्रश्च ताराश्च चन्द्रताराः= (द्वन्द्वः) तै अवकीर्णम् यत् तत्= (ब० ब्री०) स्फुटकुमुदाचितानाम्= स्फुटानि च तानि कुमुदानि= स्फुटकुमुदानि (कर्मधारयः) तैः अचिताः ये ते तेषाम् (ब० ब्री०) राजहंसस्थितानाम्= राजहंसाः स्थिताः येषु तथाविधानाम् (ब० ब्री०) मरकतमणिभासा- मरकतमणेः भासो यस्मिंस्तेन (ब० ब्री०) तोयाशयानाम्= तोयानि आशये येषाम् तेषाम् (ब० ब्री०) अतिशयरूपाम्= अतिशयम् रूपम् यस्याः सा ताम् (ब० ब्री०)

हिन्दी शब्दार्थ— विगतमेघम्= मेघरहित, चन्द्रतारावकीर्णम्= चाँद एवं तारों से सुशोभित, व्योम= आकाश, स्फुटकुमुदाचितानाम्= खिले हुए कुमुद पुष्पों से सुशोभित, राजहंसस्थितानाम्= जिनमें राजहंस बैठे हों तथा, मरकतमणिभासा=

जिसमें नीलमणि की छाया पड़ रही हो ऐसे, वारिणा= जल से, भूषितानाम्= समलंकृत, तोयाशयानाम्= जलाशयों की, अतिशयरूपाम्= अत्यन्त मनोरम, श्रियम्= शोभा को, वहति= धारण करता है।

उपस्थापन— इस श्लोक में महाकवि इस अर्थ का वर्णन करते हैं कि शरत् काल में मेघ नहीं दिखायी पड़ते हैं, आकाश बिल्कुल साफ हो गया है। इस नीले आकाश में चाँद और तारे सुशोभित हो रहे हैं। इस चाँद और तारों से सुशोभित आकाश की शोभा उस जलाशय की शोभा के समान लगती है, जिस जलाशय की सीढियाँ मरकत मणि की बनी हों, और उन मरकत मणियों की छाया जल में पड़ रही हो। सरोवर में कुमुद विकसित हों तथा राजहंस बैठे हों। नीलमणि की छाया से युक्त नीला-नीला जल नीले आकाश की तरह होगा। यदि आकाश में चाँद उदित है तो सरोवर में राजहंस। यदि जलाशय में कैरव कुसुम विकसित हैं तो आकाश में असंख्य तारे। अतएव आकाश एवं जलाशय की शोभा एक समान है।

भावार्थ— मेघरहित तथा चाँद एवं तारों से सुशोभित आकाश, मरकतमणि की कान्ति से सुशोभित जल वाले जिसमें कुमुद विकसित हों तथा हंस बैठे हों ऐसे जलाशयों की कान्ति को चुरा लेता है।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में मालिनी वृत्त है। 'ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोके' यह मालिनी वृत्त का लक्षण है। (२) इसमें जलाशय तथा आकाश की समता वर्णित होने से उपमा है। (३) अल्पसमासवती संघटना है (४) वैदर्भीरीति है तथा (५) माधुर्य एवं प्रसाद नामक गुण हैं।

शरदि कुमुदसङ्गाद्वायवो वान्ति शीता
विगतजलदवृन्दा दिग्विभागा मनोज्ञाः।
विगतकलुषमम्भः श्यानपङ्का धरित्री
विमलकिरणचन्द्रं व्योमताराविचित्रम्।।२२।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके महाकविः शरत्कालस्य स्वाभाविकं वर्णनमुपस्था- पयन् वक्ति यत् सम्प्रति वायुः विकसितानां कुमुदपुष्पाणां सम्पर्कात् शैत्यमावहति। सर्वाः दिशाः मेघरहिताः सत्यः मनोज्ञतां गताः, जलेषु क्वापि कालुष्यं न विलोक्यते, क्वापि पंको न दृश्यते भूमौ, आकाशे चन्द्रज्योत्स्ना स्वच्छा विकीर्णा च वर्त्तते, ताराश्च तत्र शोभन्ते।

अन्वयः— शरदि कुमुदसङ्गात् शीताः वायवः वान्ति। विगतजलदवृन्दा दिग्विभागाः मनोज्ञाः। अम्भः विगतकलुषम्। धरित्री श्यानपङ्का। विमलकिरणचन्द्रं ताराविचित्रम् व्योम।

व्याख्या— शरदि= शरत् काले, वायवः= पवनाः, कुमुदसंगात्= कुमुदानाम्= कैरवकुसुमानाम्, संगात्= संस्पर्शात्, शीताः= शीतलाः सन्तः, वान्ति= प्रवहन्ति। विगतजलदवृन्दाः= विगतानि= अपाकृतानि, जलदानाम्= मेघानाम्, वृन्दानि= समूहाः- येषु ते तथाविधाः, दिग्विभागाः= दिशाम्= आशानाम्, विभागाः= भेदाः

दिशानां: पूर्वपश्चिमादिकाः भवन्त्येव। मनोज्ञाः= मनोहराः संजाताः। अम्भः= जलम्, विगतकलुषम्= विगतः= अपाकृतः, कलुषः= मालिन्यम् यस्य तत् तथाविधम् संजातम्, धरित्री= पृथिवी, श्यानपङ्का:= शुष्कपङ्कवती, व्योम= आकाशश्च, विमलकिरण-चन्द्रम्= विमलानि= स्वच्छानि, किरणानि= रश्मयः यस्याऽसौ तथाविधः चन्द्रः= चन्द्रमा यस्याऽसौतथाविधम् निर्मलरश्मिसम्पन्नचन्द्रवत्, ताराविचित्रम्= ताराभिः= नक्षत्रैः, विचित्रम्= अद्भुतम् जातमितिशेषः।

साहित्यिकविशेषता:— (१) अस्मिञ्छ्लोके मालिनी वृत्तम्। (२) शरदः स्वाभा-विकवर्णनात् स्वभावोक्तिरलंकारः (३) प्रसादगुणः (४) अल्पसमासवती संघटना (५) वैदर्भी रीतिश्च।

समासः— कुसुमसंगात्- कुमुमानां संगात् (ष० त० पु०) दिग्विभागाः- दिशां विभागाः (ष० त० पु०) विगतजलदवृन्दाः= विगतानि जलदानां वृन्दानि येषां ते (ब० ब्री०) विगतकलुषम्= विगतं कलुषं यस्य तत् (ब० ब्री०) श्यानपङ्का- श्यानः पङ्को यस्याः सा (ब० ब्री०) विमलकिरणचन्द्रम्- विमलानि किरणानि चन्द्रस्य यस्मिंस्तत् (ब० ब्री०) ताराविचित्रम्= ताराभिः विचित्रम् (तृ त० पु)

हिन्दीशब्दार्थ— शरदि= शरत् काल में, वायवः= हवाएँ, कुसुमसंगात्= पुष्पों के संपर्क से, शीताः= ठंढी, वान्ति= चल रही हैं। दिग्विभागाः= दिशाएँ, विगतजलदवृन्दाः= बादलों से रहित होने के कारण, मनोज्ञाः= मनोहर हो गयी हैं। अम्भः= जल, विगतकलुषम्= स्वच्छ हो गया है, धरित्री= पृथिवी, श्यानपङ्का= कीचड़ से रहित हो गयी है, व्योम= आकाश, विमलकिरणचन्द्रम्= स्वच्छ चाँदनी वाले चन्द्रमा से युक्त हो गया है, तथा ताराविचित्रम्= ताराओं से सुन्दर लगता है।

उपस्थापन— इस श्लोक में महाकवि कालिदास शरद् ऋतु का वर्णन करते हुए बतलाते हैं कि इस ऋतु में खिले हुए पुष्पों से सम्पर्क के कारण हवा ठंढी-ठंढी चल रही है। आकाश में बादल साफ हो गए हैं, अतएव दिशाएँ स्वच्छ हो गयी हैं। अब जल की मलीनता समाप्त हो गयी है अतएव वह स्वच्छ हो गया है। पृथिवी का कीचड़ सूख गया है। आकाश में निकले हुए तारे अत्यन्त मनोहर लगते हैं और चाँद की चाँदनी भी स्वच्छ हो गयी है।

भावार्थ— शरत् काल में हवा पुष्पों के संसर्ग से ठंढी चल रही है, बादलों के समाप्त हो जाने से दिशाएँ मनोहर लगती हैं, जल स्वच्छ हो गया है, पृथिवी सूख गयी है और आकाश तारों तथा चाँद की स्वच्छ चाँदनी से मनोहर लगता है।

साहित्यिकविशेषताएँ— (१) इस श्लोक में मालिनी छन्द है (२) स्वभावोक्ति अलंकार है (३) शरद् ऋतु का स्वाभाविक वर्णन है (४) प्रसाद नामक गुण है (५) वैदर्भी रीति है और (६) अल्पसमासवती संघटना है।

करकमलमनोज्ञाः कान्तसंसक्तहस्ता
वदनविजित चन्द्राः काश्चिदन्यास्तरुण्यः।

रचितकुसुमगन्धि प्रायशो यान्ति वेश्म
प्रबलमदनहेतोस्त्यक्तसंगीतरागाः ।। २३ ।।

संदर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके महाकविः कालिदासः कामिनीनां सौन्दर्यातिशयं व्यवहारविशेषं च वर्णयति। स वक्ति यत् शरदि काले काश्चन चन्द्रमुख्यः कामिन्यः मदनावेशव्याकुलाः, संगीतानुरागमपहाय स्वकीयं कमलवदतिमनोज्ञं हस्तं स्वकान्तस्य हस्तेन सम्मेल्य पुष्पसौगन्ध्यसमन्विते कक्षे प्रविशन्ति।

अन्वयः— काश्चित् वदनविजितचन्द्राः करकमलमनोज्ञाः कान्तसंसक्तहस्ताः अन्याः तरुण्यः प्रबलमदनहेतोः त्यक्तसंगीतरागाः प्रायशः रचितकुसुमगन्धि वेश्म यान्ति।

व्याख्या— काश्चित्= काश्चन, वदनविजितचन्द्राः= वदनेन= मुखेन, विजितः= पराजितः, चन्द्रः= चन्द्रमाः याभिस्ताः= चन्द्रमुख्य इति यावत्, करकमलामनोज्ञाः= करौ= हस्तौ कमलवत्= कञ्जवत्, मनोज्ञौ= रुचिरौ यासां ताः तथाविधाः, कान्तसंसक्तहस्ताः= कान्तेन= प्रियतमेन, संसक्तौ= संलग्नौ, हस्तौ= बाहू यासां तास्तथाविधाः, अन्याः तरुण्यः= कामिन्यः, प्रबलमदनहेतोः= प्रवलः= प्रकृष्टश्चासौ मदनः= कामः तस्मात् हेतोः= कारणात्= कामातिशयवेगयुक्तत्वादिति भावः, त्यक्तसंगीतरागाः= त्यक्तः= परित्यक्तः, संगीतस्य= नृत्यगीतादिकस्य, रागः= अनुरागो याभिस्ताः, प्रायशः= प्रायेण, रचितकुसुमगन्धि= रचितैः= सुसज्जितैः, कुसुमैः= सुमनोभिः, गन्धि= सुगन्धियुक्तं यत् तथाविधम्, वेश्म= भवनम्, यान्ति= प्रविशन्ति।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके मालिनीवृत्तम् (२) विपर्ययालंकारः (३) सम्भोगशृंगाररसः (४) अल्पसमासवती संघटना (५) माधुर्यप्रसादाख्यौ गुणौ (६) वैदर्भी रीतिश्च।

समासः— वदनविजितचन्द्राः- वदनेन विजितः चन्द्रो याभिस्ताः (ब० व्री०) करकमलमनोज्ञाः= करौ कमलवत् मनोज्ञौ यासां ताः। (ब० व्री०) कान्तसंसक्तहस्ताः- कान्तेन संसक्तौ हस्तौ यासां ताः (ब० व्री०) प्रबलमदनहेतो- प्रबलश्चासौ मदनः= प्रबलमदनः (कर्मधारयः) तस्माद् हेतोः (प० त० पु०) त्यक्तसंगीतरागाः= त्यक्तः संगीतस्य रागो याभिस्ताः (ब० व्री०) रचितकुसुमगन्धि= रचितैः कुसुमैः गन्धि यत् (ब० व्री०)

हिन्दीशब्दार्थ— काश्चित्= कुछ, वदनविजितचन्द्राः= अपने मुखमण्डल की शोभा से चन्द्रमा को भी जीत लेने वाली, करकमलमनोज्ञाः= कमल के समान मनोहर हाथों वाली, कान्तसंसक्तहस्ताः= प्रियतम के साथ जिनका हाथ जुड़ा हुआ है। अन्याः= दूसरी, तरुण्यः= युवतियाँ, प्रबलमदनहेतोः= काम का अत्यधिक वेग होने के कारण, प्रायशः= प्रायः, रचितकुसुमगन्धिः= सजाए गये फूलों से सुगन्धित, वेश्म= भवन में, यान्ति= प्रवेश कर जाती हैं।

उपस्थापन— इस श्लोक में महाकवि कालिदास बतला रहे हैं कि इस ऋतु में कुछ तरुणियों में काम का वेग अधिक होता है। इन सुन्दरियों का मुख इतना

सुन्दर है कि उनके सामने चन्द्रमा का भी आह्लादकत्व फीका है, उनके हाथ कमल के समान मनोहर हैं, और अपने पतियों के हाथ में हाथ डालकर कामवेश के कारण अपने संगीत का राग छोड़कर अपने पतियों के साथ सजाए गए पुष्पों के सुगन्धि से सुगन्धित भवन में प्रवेश कर जाती हैं।

भावार्थ— अपने मुख सौन्दर्य से चन्द्रमा को भी तिरष्कृत करने वाली, कमल के समान मनोहर हाथों वाली तथा अपने पतियों के हाथ में हाथ डाले हुए, प्रबलकामावेग के कारण सजाए गये पुष्पों की सुगन्धि से सुगन्धित कमरे में कुछ युवतियाँ प्रवेश कर जाती हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में मालिनी छन्द है (२) विपर्ययालंकार है (३) करकमलमनोज्ञा में आर्थी उपमा है (४) सम्भोगशृंङ्गार रस है (५) अल्पसमासवती संघटना है (६) प्रसाद एवं माधुर्य गुण हैं तथा (७) वैदर्भीरीति है।

सुरतरसविलासाः सत्सखीभिः समेता
असमशरविनोदं सूचयन्ति प्रकामम्।
अनुपमसुखरागा रात्रिमध्ये विनोदं
शरदि तरुणकान्ताः सूचयन्ति प्रमोदान्।।२४।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके महाकविः कालिदासो वर्णयति यत् शरदि ऋतौ सुन्दर्यः कामसुखं प्रकाममनुभवन्ति। ताः स्वौष्ठौ विचित्रेण मनोहरेण विधिना रञ्जयन्ति। यासां तरुणीनां कान्ताः तरुणाः सन्ति ताः यदा स्व सखीभिः साकं एकान्तेउपविशन्ति तदा ताः तेषां समस्तप्रकारकाणां कामसुखानां वर्णनं कुर्वन्ति येषां ताभिः स्वपतिभिः साकं मध्यरात्रिं यावदनुभवं कृतम्।

अन्वयः— शरदि सुरतरसविलासाः सखीभिः समेताः प्रकामं असमशरविनोदं सूचयन्ति। अनुपममुखरागाः तरुणकान्ताः रात्रिमध्ये विनोदं प्रमोदान् सूचयन्ति।

व्याख्या- शरदि= शरदृतौ, सुरतरसविलासाः= सुरतस्य= रमणस्य, यो हि रसः= आनन्दः, स एव विलासः= सुखानुभवो यासां ताः तथाविधाः रमण्यः, सखीभिः= सहचरीभिः, समेताः= एकान्ते सम्मिलिताः सत्यः वार्तालापस्य प्रसङ्गेन, प्रकामम्= प्रभूतम्, असमशरविनोदम् असमाः= विषमाः, शराः= बाणा यस्याऽसौ तथाविधः, कामदेव इत्यर्थः, तस्य विनोदम्= मनोरञ्जनम्= कामक्रीडनमिति भावः, सूचयन्ति= वार्तयन्ति। अनुपममुखरागाः= अनुपमः= अनुपमेयः, मुखस्य= आननस्य रागः= रञ्जनम् यासां तथाविधाः ताः, तरुणकान्ताः= तरुणः= युवा कान्तः= पतिः यासां ताः, रात्रिमध्ये= रजन्यामिति भावः विनोदम्= कामक्रीडनम्, तज्जन्यान् प्रमोदान्= प्रकृष्टानन्दानुभवांश्च, सूचयन्ति= प्रकटयन्ति सखीनां समक्षमित शेषः,

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके मालिनी वृत्तम् (२) सम्भोगशृङ्गाररसः (३) अल्पसमासवती वृतिः (४) वैदर्भी रीतिः (५) माधुर्यप्रसादाख्यौ गुणौ च।

समासः— सुरतरसविलासाः= सुरतस्य रसः= सुरतरसः (ष० त० पु०) स

एव विलासो यासां ताः (ब० ब्री०) सत्सखीभिः= सत्यश्चताः सख्यः ताभिः (कर्मधारयः) असमशरविनोदम्- असमाः शराः यस्याऽसौ= असमशरः (ब० ब्री०) तस्य विनोदम् (ष० त० पु०) अनुपममुखरागाः- अनुपमः मुखस्यरागो यासां ताः (ब० ब्री०) रात्रिमध्ये= रात्रेः मध्ये (ष० त० पु०) तरुणकान्ताः= तरुणः कान्तो यासां ताः (ब० ब्री०)

हिन्दीशब्दार्थ— शरदि= शरत् काल में, सुरतरसविलासाः= सुरतानन्दका अनुभव करने वाली रमणियाँ, सखीभिः समेताः= अपनी सखियों के साथ मिलकर, प्रकामम्= बहुत अधिक, असमशरविनोदम्= काम क्रीडा रूपी मनोविनोद को, सूचयन्ति= कह डालती हैं। अनुपममुखरागाः= अतुलनीय ढंग से अपने ओष्ठों को रंगने वाली तथा, तरुणकान्ताः= युवक पतियों वाली के, रात्रिमध्ये= रात्रि में किए गये, विनोदम्= मनोविनोद को तथा, प्रमोदान्= तज्जन्य आनन्द को, सूचयन्ति= बतलाती हैं।

उपस्थापन— इस श्लोक में महाकवि कालिदास बतलाते हैं कि इस शरद् ऋतु में रमणियाँ जब अपनी घनिष्ठ सखियों से मिलती हैं तो रात्रि के समय अपने युवक पतियों के साथ जो कामक्रीडा जन्य आनन्द का अनुभव किए रहती हैं, उसको पूर्णरूप से वार्तालाप के प्रसंगों में कह डालती हैं। उनका अपने पतियों के साथ रमण विलास होता है तथा वे अपने पतियों को आकृष्ट करने के लिए अत्यन्त मनोहर ढंग से ओष्ठों को रंगती हैं।

भावार्थ— शरद् ऋतु में संभोग जन्य आनन्द का अनुभव करने वाली तथा अनुपम ढंग से अपने ओष्ठों को रंगने वाली रमणियाँ जब अपनी प्रिय सखियों से मिलती हैं तो रात्रि में अपने युवा पतियों के साथ किये गये सम्भोग सुख का पूर्ण रूप से वर्णन कर जाती हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में मालिनी वृत्त है, (२) इसमें रमणियों के सम्भोग शृङ्गार का वर्णन है (३) कामिनियों के स्वाभाविक अनुभावों का वर्णन है (४) अल्पसमासवती संघटना है (५) प्रसाद एवं माधुर्य गुणों का सद्भाव है और (६) वैदर्भी रीति है।

दिवसकरमयूखैर्बोध्यमानं प्रभाते
वरयुवतिमुखाभं पङ्कजं जृम्भतेऽद्य।
कुमुदमपि गतेऽस्तंलीयते चन्द्रबिम्बे
हसितमिव वधूनां प्रोषितेषु प्रियेषु।।२५।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके महाकविः कालिदासः शरत्कालस्य प्रभातकालस्य वर्णनं करोति। स वक्ति यत् प्रातःकाले सूर्यकिरणैः तेनैव प्रकारेण पंकजं विकसितं भवति येन प्रकारेण सुन्दरीणां मुखेषु स्मितं भवति विकसितम्, कुमुदानि च तेनैव प्रकारेण मुकुलितानि भवन्ति येन प्रकारेण प्रोषितपतिकानां सुन्दरीणां मुखात् स्मितं विलीयते।

अन्वयः— अद्य प्रभाते दिवसकरमयूखैः बोध्यमानं वरयुवतिमुखाभं पङ्कजं जृम्भते। अस्तंगते चन्द्रबिम्बे कुमुदम् अपि प्रोषितेषु प्रियेषु वधूनां हसितम् इव लीयते।

व्याख्या— प्राकृतिकानि सर्वाण्येव वस्तूनि सुखमयानि दुःखमयानि च भवन्ति। एक एव शरदः प्रातः कालः पद्मानां विकासकः कुमुदानां च संकोचको भवति। सूर्यः उदेति प्रातःकाले चन्द्रश्चास्तमेति लोकस्येयं महती विडम्बना। तथाहि- अद्य= अस्मिन्= शरत् काले, प्रभाते= प्रातःकाले वरयुवतिमुखाभम्= वराणाम्= श्रेष्ठानाम् प्रियतमसंयोगसौभाग्यसम्पन्नानां, युवतीनाम्= रमणीनाम्, मुखानाम्= वदनानाम् आभा इव आभा= कान्तिः यस्य तथाविधम्, पङ्कजम्= कमलम्, दिवसकरमयूखैः= दिवसकरस्य= सूर्यस्य, मयूखैः= किरणैः, बोध्यमानम्= प्रकाश्यमानम्, जृम्भते= विकसितं भवति। कुमुदमपि= कैरवमपि, चन्द्रबिम्बे= चन्द्रमण्डले, अस्तंगते= अस्तमिते सति। प्रियेषु= कण्ठश्लेषप्रणयिनि जने, बधूनाम्= रमणीनाम्, हसितमिव= स्मितमिव, लीयते मुकुलितं भवति।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके मालिनीवृत्तम् (२) 'वरयुवतिमुखाभम्' (३) इत्यत्रोपमालंकारः (४) सम्भोगविप्रयोगश्रृंगारयोः व्यंग्यता (५) अल्पसमासवती वृतिः (६) माधुर्यप्रसादाख्यौ गुणौ (७) वैदर्भीरीतिश्च।

समासः— वरयुवतिमुखाभम्- वराणां युवतीनाम् मुखम्= वरयुवतिमुखम् (ष० त० पु०) वरयुवतिमुखस्य आभा इव आभा यस्य तत्। (ब० ब्री०) दिवसकरमूयखैः= दिवसकरस्य मयूखैः (ष० त० पु०)

हिन्दीशब्दार्थ— अद्य= इस शरद् ऋतु में, प्रभाते= प्रातःकाल, 'वरयुवतिमुखाभम्- श्रेष्ठयुवतियों के मुख की कान्ति के समान कान्ति वाला, पङ्कजम्= कमल, दिवसकरमयूखैः= सूर्य की किरणों द्वारा, बोध्यमानम्= विकसित किया जाता हुआ, जृम्भते= सुशोभित हो रहा है, कुमुदमपि= कुमुद पुष्प भी, चन्द्रबिम्बे= चन्द्रमण्डल के, अस्तंगते= डूब जाने पर, प्रियेषु= पतियों के, प्रोषितेषु= विदेश चले जाने पर, वधूनाम्= रमणियों के, हसितमिव= हँसी के समान, लीयते= छिप रहा है।

उपस्थापन— इस श्लोक के माध्यम से महाकवि कालिदास शरत्काल के प्रभात काल का वर्णन करते हुए कहते हैं कि इस समय प्रातःकाल की सूर्य किरणों का सम्बन्ध प्राप्त करके कमलों का उसी प्रकार से विकास हो जाता है, जिस तरह से श्रेष्ठ रमणियों के मुखमण्डल पर मुसुकान सुशोभित होती है। किन्तु दूसरी तरफ प्रातःकाल में चन्द्रमण्डल के अस्त हो जाने पर कुमुद पुष्पों के विकास की शोभा उसी तरह से समाप्त हो जाती है जिस तरह प्रियतम के परदेश चले जाने पर सुन्दरियों के ओष्ठों की मुसुकान समाप्त हो जाती है।

इस श्लोक में एक ही प्रभात काल के दो पक्षों का वर्णन किया गया है। वह कमल का विकासक है तो कुमुद पुष्पों का संकोचक। प्रातःकाल का संबन्ध पाकर यदि सूर्य उदित होते हैं तो- चन्द्रमा अस्तमित।

भावार्थ— प्रातःकाल सूर्य जब अपने करों (किरणों) से कमल (रूपी नायिका

को जगाता है तो वह सुन्दरी युवती के मुख के समान विकसित हो जाता है एवं जिस तरह प्रियतम के परदेश चले जाने पर रमणियों के मुख की मुसुकुराहट समाप्त हो जाती है, उसी तरह चन्द्रमण्डल के अस्त हो जाने पर कुमुदिनी भी संकुचित हो जाती है।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में मालिनी वृत्त है (२) समासोक्ति अलंकार (३) 'सितमिव' तथा 'वरयुवतिमुखाभम्' में उपमालंकार है। (४) संयोग तथा विप्रलम्भ दोनों प्रकार के शृङ्गार व्यंग्य है (५) अल्पसमासवती वृत्ति (६) माधुर्य तथा प्रसाद नामक गुण (७) तथा वैदर्भी रीति।

असितनयनलक्ष्मीं लक्षयित्वोत्पलेषु
क्वणितकनककाञ्चीं मत्तहंसस्वनेषु।
अधररुचिरशोभां बन्धुजीवे प्रियाणाम्
पथिकजन इदानीं रोदिति भ्रान्तचित्तः ।। २६ ।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके महाकविः कालिदासः प्रियतमाविप्रयोगव्याकुलान्तः करणानाम्, पथिकजनानां दशां वर्णयति। सः वक्ति यत् विदेशेषु निवसन्तः पथिकाः स्वप्रियतमायाः नयनतुल्यकान्तिमन्ति नीलोत्पलानि वीक्ष्य, प्रियतमायाः काञ्चीकलापवन्मधुरध्वनिवद्ध्वनिवतः मत्तहंसध्वनीन् श्रुत्वा, तस्याः अधररुचिकान्तिमन्ति बन्धूजीव पुष्पाणि चावलोक्य, स्मृत्वा स्वप्रियतमाः व्याकुलान्तःकरणा भवन्ति भृशं रुदन्ति च।

अन्वयः— उत्पलेषु प्रियाणां असितनयनलक्ष्मीं लक्षयित्वा, मत्तहंसस्वनेषु क्वणितकनककाञ्चीं (लक्षयित्वा) बन्धुजीवे अधररुचिरशोभां (लक्षयित्वा) इदानीं पथिकजनः भ्रान्तचित्तः रोदिति।

व्याख्या— पथिकजनः= विदेशेषु निवसन्तो जनाः इदानीम्= अस्मिन् शरत्काले उत्पलेषु= नीलकमलेषु, प्रियाणाम्= स्वप्रेयसीनां असितनयनलक्ष्मीम्= असितयोः= कृष्णवर्णयोः, नयनयोः= नेत्रयोः, लक्ष्मीम्= शोभाम् विलोक्येतिशेषः, मतहंसस्वनेषु= मत्तानाम्= मदमत्तानाम्, हंसानाम्= कलहंसानाम्, स्वनेषु= कलवेषु, क्वणितकनककाञ्चीम्= क्वणन्ती= शब्दायन्ती या कनककाञ्ची= सुवर्णनिर्मिताकाञ्ची श्रोणीतटभूषणमितिभावः, बन्धुजीवे= मध्याहन् पुष्पे, अधररुचिरशोभाम्= ओष्ठयोःकान्तेः सौन्दर्यम्, लक्षयित्वा= वीक्ष्य, भ्रान्तचित्तः= व्यामुग्धमनाः, रोदिति= क्रन्दनं करोति। सदृशवस्तूनामवलोकनेन प्रियतमायाः स्मृतेरुद्भूतत्वात् तस्या विप्रयोगव्यथामनुभूय रोदिति इति भावः। तथा चोक्तमपि 'सदृशादृष्टचिन्ताद्याः स्मृतिबीजस्यबोधकाः।' इति।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके मालिनी छन्दः (२) विप्रलम्भशृङ्गाररसः (३) अल्पसमासा वृत्तिः (४) वैदर्भीरीतिः (५) माधुर्यप्रसादाख्यौ गुणौ च।।

समासः— असितनयनलक्ष्मीम्= असिते च ते नयने असितनयने (कर्मधारयः) असितनयनयोः लक्ष्मीम् (ष० त० पु०) मत्तहंसस्वनेषु- मत्ताश्च ते हंसाः= मत्तहंसाः (कर्मधारयः) तेषां स्वनेषु (ष० त० पु०) क्वणितकनककाञ्चीम्= कनकस्य काञ्ची

(ष० त० पु०) कनकाञ्ची क्वणिता, च सा कनककाञ्ची क्वणितकनकाञ्ची, ताम् (कर्मधारयः) अधररुचिरशोभाम्= रुचिरा च सा शोभा= रुचिरशोभा (कर्मधारयः) अधरस्य रुचिरशोभा ताम् (ष० त० पु०)

हिन्दीशब्दार्थ— पथिकजनः= परदेशी पुरुष, इदनीम्= इस समय, उत्पलेषु= नील कमलों में, प्रियाणाम्= प्रियतमाओं की, असितनयनलक्ष्मीम्= काली आँखों की शोभा को, मत्तहंसस्वनेषु= मदमत्त हंसों की ध्वनि में, क्वणितकनककाञ्चीम्= बजने वाली, सुवर्णनिर्मित काञ्ची को और बन्धुजीवे= दुपहरिया के फूलों में अधररुचिरशोभाम्= ओष्ठों की मनोहर शोभा को, लक्षयित्वा= देखकर; भ्रान्तचित्तः= मोहित होकर, रोदिति= रोता है।

उपस्थापन— इस श्लोक में महाकवि कालिदास परदेशियों की विरहावस्था का वर्णन करते हैं। परदेशियों का अपनी प्रियतमाओं से विप्रयोग हो गया है। इस शरद् ऋतु के आने पर जब वे सरोवरों में विकसित नीलकमलों को देखते हैं तो उन्हें अपनी प्रियतमाओं की नीली-नीली आँखों की याद आती है। सरोवरों में जब वे मदमत्त एवं क्रीडारत हंसों के कलरव को सुनते हैं तो उन्हें अपनी प्रियतमाओं की कमर में बंधी हुई रून-झुन की आवाज करने वाली मनोहर स्वर्णनिर्मित करधनी की ध्वनि की याद आती है और जब वे इस ऋतु के मध्याह्न में विकसित होने वाले दुपहरिया के पुष्पों को देखते हैं तो उन्हें अपनी प्रियतमाओं के लाल-लाल रतिसर्वस्व ओष्ठों की याद आती है। इन समस्त कामोद्दीपन वस्तुओं को देखकर वे परदेशी अपनी प्रियतमाओं की याद में व्याकुल हो जाते हैं और विलाप करने लग जाते हैं।

भावार्थ— इस शरद् ऋतु में परदेशी पुरुष नीलकमलों में अपनी प्रियतमा की काली आँखों की शोभा को, मदमत्त हंसों के कलरव में स्वर्ण निर्मित काञ्ची कलाप की ध्वनि को तथा दुपहरिया के फूलों में प्रियतमा के ओष्ठों की लाली को देखकर व्यामुग्ध होकर विलाप करने लगते हैं।

साहित्यिकविशेषताएँ— (१) इस श्लोक में मालिनी छन्द, (२) रत्युद्दीपनविभावों का वर्णन, (३) विप्रयोगहेतुक विप्रलम्भश्रृंगार रस का वर्णन (४) अल्पसमासवती संघटना (५) वैदर्भी रीति एवं (६) माधुर्य तथा प्रसाद गुणों का सद्भाव है।

स्त्रीणां विहाय वदनेषु शशाङ्कलक्ष्मीं
कामं च हंसवचनं मणिनूपुरेषु।
बन्धूककान्तिमधरेषु मनोहरेषु
कापि प्रयाति सुभगा शरदागमश्रीः ।। २७ ।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके महाकविः कालिदासो वर्णयति यत् शरदि ऋतौ रत्युद्दीपनविच्छित्तिविशेषाः प्राकृतिकान्युपादानानिविहाय कामिनीनां तेषु तेष्ववयवेषु प्रविष्टानि सन्ति। तथाहि चन्द्रस्याह्लादकत्वं तासां मुखमण्डले सनिविष्टम्,

हंसानां कलरवस्य माधुर्यं तु तासां मणिनूपुमेवाध्यासते, विकसित बन्धुजीवपुष्पसौन्दर्यं च तासामधरोष्ठमेव सेवते। फलतः सर्वत्र कामस्य साम्राज्यमे व दृश्यते।

अन्वयः— सुभगा शरदागमश्रीः शशाङ्कलक्ष्मीं स्त्रीणां वदनेषु, हंसवचनं मणि नूपुरेषु, बन्धूककान्तिं मनोहरेषु अधरेषु कामं विहाय कापि प्रयाति।

व्याख्या— सुभगा= मनोज्ञा, शरदागमश्रीः= शरदः= शरदृतोः, आगमः= आगमनम्, तस्य श्रीः= शोभा शशाङ्कस्य चन्द्रमसः, लक्ष्मीम्= शोभां, विहाय= परित्यज्य स्त्रीणाम्= रमणीनाम्, वदनेषु= मुखमण्डलेषु प्रयाति= प्रविशति। साम्प्रतम् चन्द्रमण्डले तादृशमाह्लादकत्वं नहि प्रतीयते यादृशमाह्लादकत्वं युवजनेन कामिनीनां मुखण्डलेष्वनुभूयत इति भावः। हंसवचनम्= हंसानाम्= कलहंसानाम् वचनम्= रुतम् विहाय सा कामिनीनां मणिनूपुरेषु= रत्नजटितेषु मञ्जीरेषु प्रयाति, कमिनीजनमणिमञ्जीराणामेव श्रोत्रपेयतां गतत्वात्। क्वापि= कुत्रचित् बन्धूक-कान्तिम्= बन्धूकपुष्पस्य शोभां विहाय मनोहरेषु= मनोमोहकेषु तासामधरेषु= अधरोष्ठेषु कामम्= यथेष्टम् याति तेषामेव रतिसर्वस्वतया कामिभिः पीयमानत्वात्।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके वसन्ततिलकावृत्तम् (२)सम्भोग-शृंगारोद्दीपनविभावानां वर्णनम्, (३) अल्पसमासवती संघटना (४) माधुर्य-प्रसादाख्यौगुणौ (५) वैदर्भीरीतिश्च सन्ति।

समासः- शरदागमश्रीः= शरद आगमः= शरदागमः (ष० त० पु०) तस्य श्रीः (ष० त० पु०) शशांकलक्ष्मीम्= शशाङ्कस्य लक्ष्मीम् (ष० त० पु०) हंसव-चनम्-हंसानाम् वचनम् (ष० त० पु०) मणिनूपुरेषु= मणिमयेषु नूपुरेषु (मध्यमपदलोपी समासः) बन्धूककान्तिम्= बन्धूकानाम् कान्तिम् (ष० त० पु०)

हिन्दी शब्दार्थ— सुभगा= मनोहारिणी, शरदागमश्रीः= शरद् ऋतु के आगमन की शोभा, शशांकलक्ष्मीम्= चन्द्रमा की शोभा को, विहाय= त्यागकर, स्त्रीणाम्= स्त्रियों के, वदनेषु= मुखमण्डल में, हंसवचनम्= हंसों की ध्वनि को त्यागकर, मणिनूपुरेषु= रमणियों की मणिजटित नूपुरों में, च= और, बन्धूककान्तिम्= दुपहरिया के फूलों की शोभा को त्यागकर, मनोहरेषु= मनोज्ञ, अधरेषु= रमणियों के अधरों में कामं प्रयाति= स्वच्छेया प्रवेश कर रही है।

उपस्थापन— इस श्लोक में महाकवि कालिदास उपर्युक्त छब्बीसवें श्लोक के ही अर्थ का प्रकारान्तर से वर्णन करते हुए कहते हैं कि इस शरद् ऋतु के आगमन की शोभा ने प्राकृतिक उपादानों का परित्याग करके मानों रमणियों के तत्-तत् अंगों में प्रवेश कर लिया है। चन्द्रमा के सौन्दर्य ने चन्द्रमा का परित्याग करके रमणियों के मुखमण्डल में अपना निवास स्थान बना लिया है अर्थात् इस शरद् ऋतु में चन्द्रमण्डल से भी अधिक आह्लादक रमणियों का मुखमण्डल ही लगता है। अब हंस की कलरव ध्वनि में वह माधुर्य नहीं रह गया है जो माधुर्य रमणियों के कटिप्रदेश में सजी हुई सुवर्णनिर्मित काञ्चीकलाप की ध्वनि में अनुभूत होती है तथा दोपहर में विकसित होने वाले दुपहरिया के पुष्पों की लालिमा का वह आकर्षण कहाँ जो आकर्षण सुन्दरियों के लाल-लाल ओष्ठों में है।

भावार्थ— मनोहर शरदागम की शोभा ने चन्द्रमण्डल की शोभा का त्याग करके कामिनियों के मुखमण्डल में, हंसों के कलरव का त्याग करके रमणियों के सुवर्ण निर्मित काञ्चीकलाप में तथा दुपहरिया के फूलों का त्याग करके उनके अधरों में निवास किया है।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में मालिनी छन्द है (२) सम्भोगशृङ्गार के उद्दीपन विभावों का वर्णन है, (३) अल्पसमासवती संघटना है (४) वैदर्भीरीति है तथा (५) प्रसाद एवं माधुर्य गुणों का सद्भाव है।

विकचकमलवक्त्रा फुल्लनीलोत्पलाक्षी
विकसितनवकाशश्वेतवासो वसाना।
कुमुदरुचिरकान्तिः कामिनीवोन्मदेयं
प्रतिदिशतु शरद्वश्चेतसः प्रीतिमग्र्याम्।।२८।।

इति श्री महाकविकालिदासाकृतौ ऋतुसंहारे शरद्वर्णनं नाम तृतीयः सर्गः।।३।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अनेन श्लोकेन द्वारा महाकविः कालिदासः शरद् ऋतोः वर्णनमुन्मदां कामिनीमिव करोति। एतस्याः शरत्कामिन्याः विकसितानि कमलान्येव मुखम्। विकसितानि नीलकमलान्येव मनोज्ञे कृष्णवर्णे युवजनहृदययहरणक्षमे नेत्रे स्तः। विकसितो नवीनः काश एव तस्याः धवलममलं वस्त्रमास्ते।

कमुदपुष्पाणां मनोज्ञा कान्तिरेवास्याः लावण्यातिशयं तथाविधेयं मन्मथोन्माद-सम्पन्ना शरत्कामिनी समेषां जनानां हृदयेषु परमं स्नेहमुत्पादियतुं क्षमा वर्त्तते।

अन्वयः— विकचकमलवक्त्रा फुल्लनीलोत्पलाक्षी विकसितनवकाशश्वेतवासः वसाना कुमुदरुचिरकान्तिः इयं शरत् उन्मदा इव वः चेतसः प्रीतिं अग्र्याम् प्रतिदिशतु।

व्याख्या— अयं श्लोकः सर्गस्यास्योपसंहारात्मकः मङ्गलात्मकश्च विद्यते। तथाहि-विकचकमलवक्त्रा= विकचानि= विकसितानि, कमलानि= पद्मानि एव वक्त्रम्= मुखं यस्याः सा, फुल्लनीलोत्पलाक्षी= फुल्लानि= विकसितानि, नीलोत्पलानि= नीलकमलान्येव, अक्षिणी= नेत्रे यस्याः सा। विकसितनवकाशश्वेतवासोवसाना= विकसितः= प्रफुल्लितः, नवः= नवीनः, काशः= एतन्नामकः तृणविशेषः, एतस्याः श्वेतम्= धवलवर्णम्, वासः= वसनम्, तेन वसाना= परिधापितवस्त्रा, कुमुदरुचिर-कान्तिः= कुमुदानाम्= कुमुदपुष्पाणां या रुचिरा= मनोज्ञा, कान्तिः= शोभा तामिवकान्तिर्यस्याः= सा तथाविधा, इयम्= एषा, उन्मदा= कामोन्मादसमन्विता, कामिनीव= रमणीव, शरत्= शरदृतुः, वः= युष्मभ्यम्, अतीव श्रेष्ठाम् प्रीतिम्= प्रेम, प्रतिदिशतु= दद्यात्।

ग्रन्थादौ ग्रन्थमध्ये ग्रन्थान्ते च मङ्गलं कुर्यात्। इति नियमानुसारेण महाकविना कालिदासेन ग्रन्थमध्ये श्लोकेनानेन आशीर्वादात्मकं मङ्गलं कृतम्।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके मालिनीवृत्तम् (२) साङ्गरूपकालंकारः शरदृतौ नायिकात्वारोपणात् (३) सम्भोगशृङ्गाररसाभासः (४) माधुर्यप्रसादाख्यौ गुणौ (५) अल्पसमासवती संघटना (६) वैदर्भीरीतिश्च।

समासः— विकचकमलवक्त्रा- विकचानि कमलान्येव वक्त्रं यस्याः सा (ब० ब्री०) फुल्लनीलोत्पलाक्षी- फुल्लानि= नीलोत्पलानि एव अक्षिणी यस्याः सा. विकसितनवकाशश्वेतवासोवसाना= विकसितः नवः काश एव श्वेतम् वासः तेन वसाना या सा तथाविधा (ब० ब्री०) कुमुदरुचिरकान्तिः= कुमुदानीव रुचिरा कान्तिः यस्याः सा (ब० ब्री०)

हिन्दीशब्दार्थ— विकचकमलवक्त्रा= विकसित कमल के समान मुखड़े वाली, फुल्लनीलोत्पलाक्षी= विकसित नीलकमल रूपी आँखों वाली, कुमुदरुचिरकान्तिः= कुमुदिनी के समान मनोहर कान्ति वाली, विकसितनवकाशश्वेतवासोवसाना= खिले हुए नवीन काश रूपी धवल वस्त्र को धारण करने वाली, इयं शरत्= यह शरद् ऋतु, उन्मदा कामिनीव= मनोदन्मत्त कामिनी के समान, वः= आप लोगों के, चेतसः= अन्तः'करण को, अग्र्याम्= उत्तम्, प्रीतिम्= स्नेह को, प्रतिदिशतु= प्रदान करे।

उपस्थापन— इस श्लोक के माध्यम से महाकवि कालिदास शरद् ऋतु का एक कामोन्माद सम्पन्न नायिका के रूप में वर्णन करते हैं। शरद् ऋतु में विकसित लाल कमल ही इस नायिका का मनोह्लादक मुखमण्डल है। इस ऋतु में नीलकमल खिल जाते हैं। खिले हुए नील कमल ही उसके नीले-नीले मनोमोहक नेत्र हैं। सर्वत्र जो नये-नये काश खिले हुए हैं वे ही इस शरत् नायिका के उजले वस्त्र हैं। उस वस्त्र में लिपटी हुई शरत् नायिका की उसी तरह से मनोहर कान्ति लगती है जिस तरह से कुमुदिनी की उजली-उजली कान्ति होती है। इस प्रकार की यह शरत् नायिका इस काव्य के पढ़ने वाले सहृदय पाठकों को उत्तम स्नेह प्रदान करे। इस तरह से महाकवि ने इस श्लोक में ग्रन्थ मङ्गल भी किया है।

भावार्थ— विकसित कमल रूपी मुखवाली, नीलकमलरूपी नेत्रों वाली, कुमुदपुष्प के समान मनोहर कान्ति वाली तथा विकसित काशपुष्प रूपी श्वेत वस्त्रों से अलंकृत यह शरत् नायिका आप सबों को उत्तम स्नेह प्रदान करे।

साहित्यिक विशेषताएँ- (१) इस श्लोक में मालिनी छन्द है (२) साङ्गरूपकालंकार है (३) सम्भोगशृङ्गाररसाभास है (४) अल्पसमासवती संघटना है (५) वैदर्भी रीति है तथा (६) माधुर्य और प्रसाद नामक गुणों का सद्भाव है।

इस तरह ऋतुसंहार काव्य का शरद् वर्णन नामक तृतीय सर्ग व्याख्या सम्पूर्ण हुई।

चतुर्थः सर्गः
हेमन्त ऋतु का वर्णन

नवप्रवालोद्गमसस्यरम्यः प्रफुल्ललोध्रः परिपक्वशालिः।
विलीनपद्मः प्रपतत्तुषारो हेमन्तकालः समुपागतोऽयम्।। १।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अनेन शलोकेन द्वारा महाकविः कालिदासः हेमन्तर्तोः वर्णनं प्रारम्भयति। महाकविर्वर्णयति यदस्मिनृतौ गोधूमेत्यादिकानि सस्यानि अंकुरितानि भवन्ति अतएवास्य ऋतोःरम्यता जायते। शालयोऽपि परिपक्वाः संजाताः, तुषारपतनेन कमलपुष्पाणि सरस्सु नावलोक्यन्ते, एतर्तोंशोऽयं हेमन्तकालः समागतः।

अन्वयः— नवप्रवालोद्गमसस्यरम्यः, प्रफुल्ललोध्रः, परिपक्शालिः, विलीनपद्मः, प्रपतत्तुषारः, अयं हेमन्तकालः, समुपागतः।

व्याख्या— नवप्रवालोद्गमसस्यरम्यः = नवानाम् = नवीनानाम्, प्रवालानाम् = प्रवालसदृशानां पल्लवानाम्, उद्गमेन =उद्भवेन, सस्यैः = धान्यैः गोधूमादिभिः, रम्यः = मनोहरः, प्रफुल्लोध्रः = प्रफुल्लः = प्रर्केषण फुल्लः = विकसित इति यावत् लोध्रः = लोध्रसंज्ञको वृक्षो यस्मिन् सः, परिपक्वशालिः = परिपक्वाः, = पूर्णरूपेण परिणताः शालयः = ब्रीहयो यस्मिन् सः तथाविधः, विलीनपद्मः = विलीनानि= तुषारहतात् अदृश्यतां गतानि पद्मानि = कमलानि यस्मिन् सः, प्रपत्तुत्रृषारः = प्रकर्षेण पतन्ति = निपतन्ति तुषारो यस्मिन् सः, अयम् = एषः, हेमन्तकालः = ड्रेमन्तर्तुः समुपागतः।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके उपजाति वृत्तम् (२) हेमन्तर्तोः स्वाभाविकं वर्णनम् (३) नवप्रवालोद्गमसस्यरम्यः इत्यत्र आर्थी उपमा (४) प्रसादाख्यो गुणः (५) आल्पसमासवती संघटना (६) वैदर्भी रीतिश्च।

समासः— नवप्रवालोद्गमसस्यरम्यः- नवश्चाऽसौ प्रवालः= नवप्रवालः, (कर्मधारयः) तेषामुद्गमैः= नवप्रवालोद्गमैः (ष० त० पु०) नवप्रवालोद्गमैश्चतै सस्यैः= (कर्मधारयः) नवप्रवालोद्गमसस्यैः रम्यो य सः। (ब० ब्री०) प्रफुल्ललोध्रः= प्रफुल्लो लोध्रो यस्मिन् सः (ब० जी०) विलीनानि पद्मानि यस्मिन् सः (ब० ब्री०) प्रपतत्तुषारः- प्रपतन् तुषारो यस्मिन् स० (ब०बी०)

हिन्दी शब्दार्थ— नवप्रवालोद्गमसस्यरम्यः= नवीनपल्लवों के उग आने से तथा गेहूं आदि सस्यों से मनोहर लगने वाला, प्रफुल्ललोध्रः= जिसमें लोध्र के पुष्प विकसित हो गए हैं, परिपक्वशालिः=तथा जिसमें धान अच्छी तरह से पक गए हैं, विलीनपद्मः= जिसमें कमल नहीं दिखायी पड़ते, प्रपतत्तुषारः= जिसमें ओस खूब पड़ने लगी है, इस प्रकार का अयम्= यह हेमन्तकालः= हेमन्तऋतु, समुपागतः= आ गया है।

उपस्थापन— इस श्लोक के माध्यम से महाकवि कालिदास हेमन्त ऋतु का वर्णन करते हुए कहते हैं कि इस ऋतु में गेहूँ आदि अन्नों के अंकुर निकल आने से खेती मनोहर लगने लग गयी है। वनों में लोध्र के पीले पुष्प खिल गए हैं खेतों में धान अच्छी तरह से पके हुए हैं। इस ऋतु में ओस बहुत अधिक पड़ने लग गयी है अतएव अब सरोवरों में कमल के फूल नहीं दिखायी देते, ओस के कारण वे जल गए हैं। इस प्रकार का यह हेमन्त ऋतु शरद् ऋतु के बीत जाने के पश्चात् आ गया है।

भावार्थ— मूंगों के नवीन दलों के समान अंकुरों के निकल आने तथा सस्यों से मनोहर, खिले हुए लोध्र पुष्पों वाला, पके हुए धानों वाला तथा बहुत अधिक ओस पड़ने के कारण कमलों से रहित यह हेमन्त ऋतु का समय आ गया है।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में वंशस्थ छन्द है 'वदन्ति वंशस्थविलं जतौ जरौ' यह वंशस्थाविल का लक्षण है। (२) इसमें हेमन्त ऋतु का स्वाभाविक वर्णन है (३) 'नवप्रवालोद्गमसस्यरम्यः' में अर्थी उपमा है (४) प्रसाद नामक गुण है (५) अल्पसमासवासी संघटना है तथा (६) इसमें वैदर्भी रीति है।

मनोहरैः चन्दनरागरक्तैस्तुषारकुन्देन्दुनिभैश्च हारैः।
विलासिनीनां स्तनशालिनीनामलंक्रियन्ते स्तनमण्डलानि।। २।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिन् श्लोके महाकविः कालिदासो हेमन्तर्तोः वर्णनं कुर्वन् वक्ति यदस्मिन् ऋतौ रमण्यः स्वस्तनमण्डलम् कुंकुमरागरक्तैः,धवलवर्णैः समलंकुर्वन्ति।

अन्वय— मनोहरैः चन्दनरागरक्तैः तुषारकुन्देन्दुनिभैः च हारैः स्तनशालिनीनां विलासिनीनां स्तनमण्डलानि अलंक्रियन्ते।

व्याख्या— मनोहरैः= मनोज्ञैः, चन्दनरागरक्तैः= चन्दनस्य= मलयजस्य रागेण= लौहित्येन, रक्तैः= रञ्जितै, तुषारकुन्देन्दुनिभैः= तुषारश्च= हिमञ्च, कुन्दश्च= माघ्यपुष्पञ्च, इन्दुश्च= शशी च, तेषाम् निभैः= सदृशैः, धवलवर्णैरिति भावः, हारैः= कलापैः, स्तनशालिनीनाम्=स्तनाभ्याम्= पयोधराभ्यां, शालन्ते= शोभन्ते यास्तासाम्, पृथुलस्तनवतीनामिति भावः, स्तनमण्डलानि= उरोजमण्डलानि, अलंक्रियन्ते= सज्जितानि क्रियन्ते।

अयमाशयो यत् साम्प्रतम् उन्नतविशालोरोजवत्यो रमण्यः स्वस्तनानामलंकरणं तु धवलवर्णै': हारैः कुर्वन्ति परन्तु ते हाराः भवन्ति केसररङ्गरञ्जिताः।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके उपजाति नामकं वृत्तम् (२) तुषारकुन्देन्दुनिभैरित्यत्रोपमालङ्कारः (३) सम्भोगशृङ्गारविभावानां मनोज्ञं वर्णनम् (४) वैदर्भी रीतिः (५) माधुर्यप्रसादख्यौ गुणौ (६) अल्पसमासवती संघटना च सन्ति।

समासः— कुंकुमरागरक्तैः= चन्दनस्य रागः= चन्दनरागः (ष० त० पु०) तेन रक्तैः=कुंकुमरागरक्तैः (तृ०त०पु०) तुषारकुन्देन्दुनिभैः तुषारञ्च कुन्दश्च, इन्दुश्च= तुषारकुन्देदवः (समाहारो द्वन्द्वः) तेषांनिभैः (ष०त०पु०) स्तनशालि- नीनाम्= स्तनाभ्यां शालन्ते यास्तासाम्(ब० ब्री०) स्तनमण्डलानि= स्तनानां मण्डलानि (ष० त० पु०)

हिन्दी शब्दार्थ— मनोहरैः= मनोहर, चन्दनरागरक्तैः= चन्दन के रंग से रंगे हुए, तुषारकुन्देन्दुनिभैश्च= वर्फ, कुन्द तथा चन्द्रमा के समान धवल वर्ण वाले, हारैः= हारों के द्वारा, स्तनशालिनीनाम्= बड़े-बड़े स्तनों वाली, विलासिनीनाम्= रमणियों के, स्तनमण्डलानि= स्तनमण्डल, अलंक्रियन्ते= अलंकृत किए जाते हैं।

उपस्थापन— इस श्लोक में महाकवि कालिदास बतलाते हैं कि इस समय ठंढी अधिक पड़ने लगी है। इसलिए जिन रमणियों के बड़े-बड़े स्तन हैं, वे अपने स्तनों को धवल वर्ण के हारों से सजाती तो अवश्य हैं किन्तु वे उन हारों को चन्दन के रंगों से रंग देती हैं। चन्दन के रंग से रंगे हार अब शीतल न लगकर गर्मी पैदा करते हैं।

भावार्थ— बड़े-बड़े स्तनों वाली रमणियाँ इस समय अपने स्तनों को केसर के रंग में रंगकर धवलवर्ण के हारों से अलंकृत करती हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में उपजाति नामक छन्द है, (२) सम्भोगशृंगार के उद्दीपन विभावों का वर्णन है (३) तुषारकुन्देन्दुनिभैः पद में उपमालंकार है (४) अल्पसमासवती संघटना है (५) माधुर्य एवं प्रसाद नामक गुण हैं तथा (६) वैदर्भी रीति है।

न बाहुयुग्मेषु विलासिनीनां प्रयान्ति सङ्गं वलयाङ्गदानि।
नितम्बबिम्बेषु नवं दुकूलं तन्वंशुकं पीनपयोधरेषु।। ३।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके महाकविः कालिदासो वर्णयति यत् साम्प्रतं शैत्याधिक्यानुभवात् रमण्यः करयोः नतु वलयधारणं कुर्वन्ति न वाङ्गदधारणम्। ताः स्वनितम्बेषु नतु नवीनं सूक्ष्मं वसनं परिदधति न वा स्तनयोरलंकरणं सूक्ष्मवस्त्रैः कुर्वन्ति। साम्प्रतं तु स्थूलमेव वस्त्रं सुखदमाभाति।

अन्वय— विलासिनीनां बाहुयुग्मेषु वलयाङ्गदानि नितम्बबिम्बेषु नवं दुकूलं, पीनपयोधरेषु तन्वंशुकम् सङ्गं न प्रयाति।

व्याख्या— विलासिनीनाम्= विलासप्रियाणाम् रमणीनाम् बाहुयुग्मेषु= बाह्वोः= करयोः युग्मेषु= युगलेषु। वलायङ्गदानि= वलयञ्च= कंकणञ्च, अंगदञ्च= भुजदण्डञ्च वलयाङ्गदम् तानि, नितम्बबिम्बेषु= नितम्बानाम्= श्रोणीनाम्, बिम्बेषु= मण्डलेषु, कटितटेष्विति भावः, नवम्= नवीनम्, दुकूलम्= क्षौमवस्त्रमतिसूक्ष्मम्, पीनपयोधरेषु= पीनाः पृथुला ये पयोधराः= स्तनानि तेषु, तन्वंशुकम्, तनु= सूक्ष्मं च तत् अंशुकम्= वस्त्रम्, सङ्गम्= सम्पर्कं न= नहि, प्रयाति= याति। तस्य शीतवारणाक्षमत्वात्।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके उपजातिवृत्तम् (२) सम्भोगशृङ्गार विभावानां वर्णनम् (३) वैदर्भी रीतिः (४) माधुर्यप्रसादाख्यौ गुणौ (५) अल्पसमासवती संघटना च सन्ति।

समासः— बाहुयुग्मेषु= बाहूनां युग्मेषु (ष० त० पु०) वलयाङ्गदानि= वलयञ्च अंगदञ्च= वलयाङ्गदे तानि= वलयङ्गदानि (द्वन्द्वः) नितम्बबिम्बेषु= नितम्बानां बिम्बेषु

(ष० त० पु) पीनपयोधरेषु= पीनाश्च ते पयोधराः तेषु (कर्मधारयः) तन्वंशुकम्= तनु च तत् अंशुकम् (कर्मधारयः)

हिन्दीशब्दार्थ— विलासिनीनाम्= रमणियों के, बाहुयुग्मेषु= भुजाओं में, वलयाङ्गदानि= कँगन एवं बाजूबन्द, नितम्बबिम्बेषु= नितम्बमण्डलों में नवम्= नवीन, दुकूलम्= रेशमी वस्त्र तथा पीनपयोधरेषु= बड़े-बड़े स्तनों पर तन्वंशुकम्= महीन वस्त्र, संगम् न प्रयाति= सम्पर्क नहीं प्राप्त करते हैं।

उपस्थान— इस श्लोक में महाकवि कालिदास बतलाते हैं कि जो रमणियाँ ग्रीष्म, वर्षा तथा शरद् ऋतुओं में अपने भुजाओं में कंगन तथा बाजूबन्द, नितम्बों पर नवीन रेशमी वस्त्र तथा स्तनों पर महीन वस्त्र धारण करती थीं वे इस हेमन्त ऋतु में ठंढी बढ जाने के कारण न तो हाथों में कंगन आदि आभूषणों को धारण करती हैं और न तो रेशमी वस्त्र ही पहनती हैं। वे अब पतले कपड़े से अपने बड़े-बड़े स्तनों को नहीं अलंकृत करती हैं। अब तो वे शीत से बचने के लिए मोटे ही वस्त्रों को धारण करती हैं।

भावार्थ— रमणियाँ अपनी दोनों भुजाओं में कंकण और बाजूबन्द को तथा नितम्बों पर नवीन रेशमी वस्त्र को एवं पृथुल स्तनों पर पतले वस्त्र को नहीं धारण करती हैं।

साहित्यिकविशेषताएँ— (१) इस श्लोक में उपजाति छन्द है (२) सम्भोग शृङ्गार रस के उद्दीपन विभावों का वर्णन है (३) माधुर्य एवं प्रसाद गुण हैं, (४) वैदर्भी रीति है और (५) अल्प समासवती संघटना है।

काञ्चीगुणैः काञ्चनरत्नचित्रैर्नो भूषयन्ति प्रमदा नितम्बान्।
न नूपुरैर्हंसरुतं भजद्भिः पादाम्बुजान्यम्बुजकान्तिभाञ्जि।। ४।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके महाकविः कालिदासः हेमन्तर्तोः प्रभावं वर्णयन् वक्ति यत् शरदादिषु ऋतुषु याः प्रमदाः स्वनितम्बभागं रत्नजटितैः काञ्चनैः काञ्चीकलापैः स्वपदकमलानि च हंसरुतमनुकुर्वद्भिः मणिमञ्जीरैः भूषयन्ति स्म ता एव साम्प्रतं नतु काञ्चीकलापधारणं कुर्वन्ति न वा नूपुरम्। यत इमानि त्वाभूषणानि शैत्यमेवावहन्ति।

अन्वयः— प्रमदाः काञ्चनरत्नचित्रैः काञ्चीगुणैः नितम्बान् हंसरुतं भजद्भि नुपूरैः अम्बुजकान्तिभाञ्जि पदाम्बुजानि च नो भूषयन्ति।

व्याख्या— प्रमदाः= कामिन्यः, प्रकृष्टःकाममदो यासां तथाविधाः, काञ्चनरत्नचित्रैः, रत्नैः हीरकादिभिः, चित्रैः= विचित्रैरतिसुन्दरैरितिभावः। काञ्चनाः= स्वर्णनिर्मिताश्चते रत्नचित्राः तैः स्वर्णनिर्मितैः रत्नोप्तैश्चेति भावः, काञ्चीगुणैः= काञ्च्याः गुणैः= काञ्चीकलापैरित्यर्थः। नितम्बान्= कटितटान्। हंसरुतम्= हंसानाम्= कलहंसानाम्, रुतम्= स्वनम्, भजद्भिः= धारयद्भिः, नूपुरैः= मञ्जीरैः, अम्बुजकान्तिभाञ्जि= अम्बुजस्य= पद्मस्य, कन्तिम्= शोभाम्, भजन्ति= धारयन्ति यानि तानि तथाविधानि, पादाम्बुजानि= चरणकमलानि नो= नाहि, भूषयन्ति= अलंकुर्वन्ति।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके सन्ति उपजाति छन्दः (२) पादाम्बु-जानीत्यत्र रूपकालंकारः (३) सम्भोगशृङ्गारस्योद्दीपनविभावानां वर्णनम् (४) अल्पस-मासवती संघटना (५) वैदर्भी रीतिः (६) माधुर्यप्रसादख्यौ गुणौ च।

समासः— काञ्चनरत्नचित्रैः= रत्नैःचित्राः रत्नचित्राः, काञ्च्याः गुणैः= काञ्चीगुणैः (ष० त० पु) अम्बुजकान्तिभाञ्जि= अम्बुजानां कान्तिः= अम्बुजकान्तिः (ष० त० पु०) तस्याः भाक् यानि तानि (ब० ब्री०) पादाम्बुजानि पादा एव अम्बुजानि= पादाम्बुजानि (कर्मधारयः)

हिन्दी शब्दार्थ— प्रमदाः= कामिनियाँ, काञ्चनरत्नचित्रैः= स्वर्णनिर्मित तथा रत्नजटित, काञ्चीगुणैः= काञ्ची कलाप के द्वारा, नितम्बान्= अपने नितम्बभागो को तथा हंसरुतम्=हंसों की ध्वनि को, भजद्भिः= धारण करने वाले, नूपुरैः= नूपुरों के द्वारा, अम्बुजकान्तिभाञ्जि= कमल की कान्ति को धारण करने वाले, पादाम्बुजानि= अपने चरण कमलों को, नो= नहीं भूषयन्ति= अलंकृत करती हैं।।

उपस्थापन— इस श्लोक में महाकवि कालिदास बतला रहे हैं कि विगत शरद् आदि ऋतुओं में तो कामिनियाँ अपने नितम्बों को स्वर्णनिर्मित तथा रत्नजटित करधनी से सजाती थीं तथा पैरों में हंस की ध्वनि के समान ध्वनि करने वाले नूपुर को बाँधती थीं; किन्तु इस हेमन्त ऋतु में उनका व्यवहार बदल गया है। ठंढी के कारण वे वैसा नहीं करती हैं। न तो वे नितम्बों पर काञ्ची कलाप धारण करती हैं और न तो पैरों मे नूपुर ही धारण करती हैं।

भावार्थ— कामिनियाँ स्वर्ण निर्मित तथा रत्नजटित काञ्चीकलाप को न तो अपने नितम्वों पर धारण करती हैं और न तो हंसों की ध्वनि की तरह ध्वनि करने वाले नूपुरों से अपने चरण कमल को ही अलंकृत करती हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक मे उपजाति छन्द है (२) रूपक अलंकार है (३) सम्भोग शृंङ्गार के उद्दीपन विभावों का वर्णन है, (४) अल्प समास वाली संघटना है, (५) वैदर्भी रीति है तथा (६) माधुर्य एवं प्रसाद गुण हैं।

गात्राणि कालीयकचर्चितानि सपत्रलेखानि मुखाम्बुजानि।
शिरांसि कालागुरुधूपितानि कुर्वन्ति नार्यः सुरतोत्सवाय।। ५।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अनेन श्लोकेन द्वारा हेमन्तर्तोः वर्णन कुर्वता महाकविना कालिदासेन वर्ण्यते यत् साम्प्रतं कामिन्यः शरन्महोत्सवसम्माननाय, स्वकीयेषु गात्रेषु कालीयकनामकस्य च चूर्णस्य लेपनं कुर्वन्ति, स्वमुखकमलेषु पत्रलेखनं कुर्वन्ति, कुन्तलकलापं च अगरु सुगन्धेन धूपेन सुगन्धितं कुर्वन्ति।

अन्वयः— नार्यः सुरतोत्सवाय गात्राणि कालीयकचर्चितानि मुखाम्बुजानि सपत्रलेखानि, शिरांसि कालागुरुधूपितानि कुर्वन्ति।

व्याख्या— नार्यः= प्रमदाः अस्मिनृतौ सुरतोत्सवाय= कामकेलिसम्माननाय, गात्राणि= स्वशरीरस्याङ्गानि, कालीयकचर्चितानि= कालीयकेन= कामोन्मादसंवर्धकेन चूर्णविशेषेण, चर्चितानि= संलिप्तानि, मुखाम्बुजानि= मुखकमलानि, सपत्रलेखानि=

पत्रलेखसहितानि, शिरांसि= शिरोभागान् केशानिति यावत्, कालागुरुधूपितानि= कालागुरोर्धूपेन, सुगन्धितानि, कुर्वन्ति= सम्पादयन्ति।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके उपजाति छन्दः, (२) मुखाम्बुजानी त्यत्र रूपकालंकारः (३) सम्भोगशृङ्गाररसः (४) माधुर्यप्रसादाख्यौ गुणौ (५) वैदर्भी रीतिः (६) अल्पसमासवती संघटना च।

समासः— सुरतोत्सवाय= सुरतस्य उत्सवाय (ष० त० पु०) कालीयकचर्चितानि कालीयकेन चर्चितानि (तृ० त० पु०) मुखाम्बुजानि= मुखानि च तानि अम्बुजानि (कर्मधारयः) कालागुरुघूपितानि= कालागुरुणा धूपितानि (तृ० त० पु०)

हिन्दी शब्दार्थ— नार्यः= नारियाँ, सुरतोत्सवाय= कामक्रीडा करने के लिए गात्राणि=अपने शरीरों को, कालीयकचर्चितानि= कालीयक नामक चूर्ण से मलती हैं, मुखाम्बुजानि= अपने मुख कमल को , सपत्रलेखानि= बेल बूटों से सजाती हैं, शिरांसि= अपने बालों को, कालागुरुधूपितानि= कालागुरु के घूप से सुगन्धित, कुर्वन्ति= बनाती हैं।

उपस्थापन— इस श्लोक में महाकवि कालिदास हेमन्त ऋतु का वर्णन करते हुए बतलाते हैं कि जो रमणियाँ काम क्रीडा करने के लिए मन से तैयार रहती हैं, वे अपने शरीर पर कालीयक नामक चूर्ण को मलती हैं, जिससे कि उनका शरीर सुगन्धित तथा सुरतानन्द बर्धक हो जाय। इसके लिए वे अपने मुखमण्डल पर बेल बूटों का निर्माण करती हैं तथा अपने शिर के बालों को सुगन्धित बनाने के लिए कालागुरु के धूप से धूपित करती हैं

भावार्थ— कामक्रीडा मनाने के लिए नारियाँ अपने शरीर पर कालीयक नामक चूर्ण मलती हैं, अपने मुख को बेल-बूटों से सजाती हैं तथा अपने सिर के बालों को कालागुरु के धूप से सुगन्धित बनाती हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ— इस श्लोक में उपजाति नामक छन्द है (२) रूपकालंकार (३) सम्भोगश्रृंगार रस, (४) वैदर्भी रीति (५) अल्पसमासवती संघटना तथा (६) माधुर्य एवं प्रसाद नामक गुण विद्यमान हैं।

रतिश्रमक्षामविपाण्डुवक्त्राः सम्प्राप्तहर्षाभ्युदयास्तरुण्यः।
हसन्ति नोच्चैर्दशनाग्रभिन्नान्प्रपीड्यमानानधरानवेक्ष्य।। ६।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके महाकविः कालिदासो वर्णयति यत् रात्रौ तु कामिन्यः कामक्रीडायां व्यापृताः भवन्ति। तदात्वे तासां पतयः तासामधरेषु दन्तक्षतमपि कुर्वन्ति। रीतिक्रीडायाः श्रमेण श्रान्ताः कामिन्यः पीतमुख्यो दृश्यन्ते। दिवसे कदाचित् वार्तालापप्रसङ्गमवाप्यापि ताः दन्तक्षतानामधराणां पीडाभयादुच्चैर्हासं नहि कुर्वन्ति।

अन्वयः— रतिश्रमक्षामविपाण्डुवक्त्राः तरुण्यः सम्प्राप्तहर्षाभ्युदयाः (अपि) दशनाग्रभिन्नान् प्रपीड्यमानान् अधरान् अवेक्ष्य (अपि) उच्चैः न हसन्ति।

व्याख्या— रतिश्रमक्षामविपाण्डुवक्त्राः- रतेः= कामक्रीडायाः, श्रमेण= परि-श्रमेण, क्षामम्= दुर्बलम्, विपाण्डु= विशेषरूपेण पीतवर्णं, वक्त्रम्= वदनम्, यासां

तथाविधाः, सम्प्राप्तहर्षाभ्युदयाः= सप्राप्तः= समुपलब्धः, हर्षस्य= अमोदस्य, अभ्युदयः= समुत्कर्षो यभिस्तथाविधाः, तरुण्यः= युवतयः:, दशनाग्रभिन्नम्= रतौ पतीनाम् अधरपानस्य प्रसङ्गेन दशनाग्रेण क्षतिं गतान् प्रपीड्यमानान्= आपीड्यमाऩान् अधरान्= अधरोष्ठान् अवेक्ष्य= विलोक्य, उच्चैः= तारस्वरेण, न= नहि, हसन्ति= हासं कुर्वन्ति। उच्चैः हासकरणेनाधरेषु पीडाधिक्यानुभवभयात्।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके उपजाति छन्दः (२) सम्भोगश्ङ्गाररसानुभाववर्णनम् (३) माधुर्यप्रसादाख्यौ गुणौ (४) वैदर्भी रीतिः (५) अल्पसमासवती संघटना च सन्ति।

समासः— रतिश्रमक्षामविपाण्डुवक्त्राः= रतेः श्रमः= रतिश्रमः (ष० त० पु०) तेन क्षामं विपाण्डु च वक्त्रं यासां तथाविधाः (ब० ब्री०) सम्प्राप्तहर्षाभ्युदयाः= सम्प्राप्तः हर्षस्य अभ्युदयो याभिस्ताः (ब० ब्री०) दशनाग्रभिन्नान्= दशनाग्रेण भिन्नान् (तृ० त० पु०)

हिन्दी शब्दार्थ— रतिश्रमक्षामविपाण्डुवक्त्राः- कामक्रीडाजन्य परिश्रम के कारण जो कमजोर हो गयी हैं तथा जिनका मुख पीला पड़ गया है, तरुण्यः= इस प्रकार की युवतियाँ, सम्प्राप्तहर्षाभ्युदयाः= हर्षित होने के कारण को प्राप्त करके भी, दशनाग्रभिन्नान्= सुरत काल में पतियों के दाँतों द्वारा काटे गऐ, प्रपीड्यमानान्= तथा दुखने वाले, अधरान्= अपने ओष्ठों को, अवेक्ष्य= देखकर, उनके और अधिक दुखने के भय से, उच्चैः= जोर से, न= नहीं, हसन्ति= हँसती हैं।

उपस्थापन— इस श्लोक के द्वारा महाकवि कालिदास कहते हैं कि रात्रि में रमणियाँ जब अपने पतियों के साथ रमण करती हैं तो उसके कारण वे बहुत अधिक थक जाती हैं, उनका मुख पीला पड़ जाता है। काम क्रीडा के समय रति क्रीड़ा में व्याप्त उनके पति अधर पान करते हुए दन्तक्षत करते हैं। जब कभी भी उन रमणियों के हँसने का प्रसङ्ग भो आता है तो वे जोर से इसलिए नहीं हँसती हैं कि दन्तक्षत से धायल तथा दर्द करने वाले अधरों में कहीं और अधिक दर्द न होने लगे।

भावार्थ— कामक्रीडा के श्रम से कमजोर तथा पीले मुख वाली रमणियाँ दन्तक्षत से धायल तथा दर्द करने वाले अपने अधरों को देखकर उनके अधिक दर्द करने के भय से जोर से नहीं हँसती हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में उपजाति छन्द, (२) सम्भोग श्रृङ्गार के अनुभवों का वर्णन, (३) वैदर्भी रीति (४) अल्प समासवती संघटना तथा (५) माधुर्य एवं प्रसाद गुण हैं।

पीनस्तनोरः स्थलभागशोभामासाद्य तत्पीडनजातखेदः।
तृणाग्रलग्नैस्तुहिनैः पतद्भिराक्रन्दतीवोषसि शीतकालः।।७।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके महाकविरुत्प्रेक्षते यदयं हेमन्तर्तुः रमणीनां पृथुलस्तनभागस्य शोभामवाप्य तु सौभाग्यमनुभवति; किन्तु यदा सः शोचति यत् ममस्वरूपभूतानि रमणीनामुरः स्थलानि तासां पतयः पीडयिष्यन्ति, तदा सः

दुःखाक्रान्तमनाः रोदिति। लोकेऽपि दृश्यते यत् यः पीडितो भवति स रोदिति। हेमन्तर्तोः अश्रुकणा एव तृणाग्रेषु लग्नाः तुषारकणाः प्रातः काले दृश्यन्ते इत्युत्प्रेक्षते महाकविः।

अन्वयः— पीनस्तनोरःस्थलभागशोभाम् आसाद्य तत्पीडनजातखेदः शीतकालः उषषि तृणाग्रलग्नैः पतद्भिः तुहिनैः आक्रन्दति इव।

व्याख्या— पीनस्तनोरःस्थलभागशोभाम्= पीनानि= पृथुलानि यानि स्तनानाम्= पयोधराणां उरःस्थलानि= वक्षःस्थलानि, तस्य शोभाम्= विच्छित्तिविशेषम् आसाद्य= प्राप्य, तत्पीडनजातखेदः तस्य= वक्षोजस्य पीडनेन= मर्दनेन, जातखेदः= सम्प्राप्त- श्रमः, शीतकालः= हेमन्तर्तुः, उषसि= प्रातः काले तृणाग्रलग्नैः= तृणानाम्= शष्पाणाम्, अग्रे= अग्रभागे, लग्नैः= संलग्नैः, पतद्भिः= पतमानैः, तुहिनैः= तुषारैः तुषारं तुहिनं हिममित्यमरः, आक्रन्दति इव= रोदिति इव।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके सन्ति उपजाति वृत्तम् (२) उत्प्रेक्षालंकारः (३) सम्भोगशृङ्गाररसानुभाववर्णनम् (४) अल्पसमासवती संघटना (५) माधुर्य-प्रसादाख्यौ गुणौ (६) वैदर्भी रीतिश्च।

समासः— पीनस्तनोरःस्थलभागशोभाम्= पीनानि च तानि स्तनानि पीनस्तनानि (कर्मधारयः) पीनस्तनानाम् उरः स्थलभागः = पीनस्तनोरस्स्थलभागः (ष० त० पु०) तस्य शोभाम् (ष० त० पु०) तत्पीडनजातखेदः= तस्य पीडनम्= तत्पीडनम् (ष० त० पु०) तेन जातः खेदो यस्मिन् सः (ब० ब्री०) तृणाग्रलग्नैः= तृणानामग्रम्= तृणाग्रम् (ष० त० पु०) तत्र लग्नैः (स० त० पु०)

हिन्दी शब्दार्थ— पीनस्तनोरःस्थलभागशोभाम्= पृथुल स्तनों वाले वक्षः स्थल भाग की शोभा को, आसाद्य= प्राप्त करके, तत्पीडनजातखेदः= उनके पीडन करने से दुखी, शीतकालः= यह हेमन्त ऋतु, उषसि= प्रातःकाल में, तृणाग्रलग्नैः= घासों के ऊपर लगे हुए, पतद्भिः= गिरने वाले, तुहिनैः= ओस कणों के माध्यम से, आक्रन्दति इव= मानो रोता है।

उपस्थापन— इस श्लोक में महाकवि कालिदास यह बतलाते हैं कि यह हेमन्त ऋतु भी प्रौढ सी हो गयी है। उसको कामिनियों के उन्नत उरोजस्थल की शोभा प्राप्त हो गयी है। वह स्वयं रमणियों के वक्षस्थलभाग स्वरूप है। कामिनियों के पति रमणकाल में उनके उन्नत उरोजों का मर्दन करते हैं, इससे उरोज स्वरूप शीत काल पीडित होकर मानो रोता है। उसी के अश्रु मानों प्रातः काल में तृणों के ऊपर गिरे हुए ओस कणों के रूप में दिखायी देते हैं।

भावार्थ— पृथुल स्तनों वाले वक्षस्थल की शोभा को प्राप्त करने वाली तथा उसके मर्दन करने से पीडित होकर रोने वाली हेमन्त ऋतु के अश्रुकण ही प्रातः काल में तृणों के ऊपर दिखायी देने वाले ओस कण हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में उपजाति नामक छन्द है (२) उत्प्रेक्षा अलंकार है (३) सम्भोग शृंगार के अनुभावों का आभास है (४) माधुर्य एवं प्रसाद गुण हैं (५) वैदर्भी रीति है तथा (६) अल्पसमासवती संघटना है।

प्रभूतशालिप्रसवैश्चितानि मृगाङ्गनायूथविभूषितानि।
मनोहरक्रौञ्चनिनादितानि सीमान्तराण्युत्सुकयन्ति चेतः।। ८।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके महाकविः कालिदासो वर्णयति यत् सीमान्तराणि वीक्ष्य जनानामन्तःकरणमुत्सुकं भवति। तानि च सीमान्तराणि शालिसमुदायैः परिपूर्णानि सन्ति, तत्र मृग्यो निवसन्ति ससुखम्, क्रौञ्चपक्षिणश्च तत्र निनादं कुर्वन्ति। इदं सीमान्तराणां प्राकृतिकं दृश्यमास्ते।

अन्वयः— प्रभूतशालिप्रसवैः चितानि, मृगाङ्गनायूथविभूषितानि, मनोहर-कौञ्चनिनादितानि सीमान्तराणि चेतः उत्सुकयन्ति।

व्याख्या— प्रभूतशालिप्रसवैः= प्रभूतानाम्= परिपूर्णमात्रायां विद्यमानानां, शालीनाम्= ब्रीहीणाम्, प्रसवैः= समुद्भवैः तानि च सीमान्तराणि, चितानि= परिपूर्णानि सन्ति। मृगाङ्गनायूथविभूषितानि= मृगाङ्गनानां मृगीनाम् यूथेन= समूहेन, विभूषितानि= समलंकृतानि, मनोहरक्रौञ्चपक्षिणः तेन, निनादितानि= समुद्घुष्टानि सीमान्तराणि= सीमान्तभागाः, चेतः= अन्तःकरणम्, उत्सुकयन्ति= समुत्सुकं कुर्वन्ति जनानामिति शेषः।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके उपजाति वृत्तम् (२) सीमान्तभागस्य स्वाभाविकं वर्णनम् (३) मध्यमसमासवती संघटना, (४) प्रसादाख्यो गुणः (५) वैदर्भी रीतिश्च सन्ति।

समासः— प्रभूतशालिप्रसवैः= प्रभूताश्च ते शालयः= प्रभूत-शालयः (कर्मधारयः) तेषां प्रसवैः (ष० त० पु०) मृगाङ्गनायूथविभूषितानि= मृगाङ्गनानां यूथः= मृगाङ्गनायूथः (ष० त० पु०) तेन विभूषितानि यानि तानि (ब० ब्री०) मनोहरक्रौञ्चनिनादितानि- मनोहराश्च ते क्रौञ्चाः= मनोहरक्रौञ्चाः (कर्मधारयः) तैः निनादितानि यानि तनि (ब० ब्री०)

हिन्दी शब्दार्थः— प्रभूतशालिप्रसवैः= अत्यधिकमात्रा में धानों के फलों से, अचितानि= परिपूर्ण, मृगाङ्गनायूथविभूषितानि= मृगियों के समूह से समलंकृत, मनोहरक्रौञ्चनिनादितानि= मनोहर क्रौञ्च पक्षी जहाँ पर कलरव करते रहते हैं। इस प्रकार के, सीमान्तराणि= सीमान्तभाग, चेतः= अन्तकरण को, उत्सुकयन्ति= उत्कण्ठित कर देते हैं।

उपस्थापन— इस श्लोक में महाकवि कालिदास सीमान्त भाग का वर्णन करते हुए उसकी तीन विशेषताओं को बतलाते हैं (१) सीमान्त भाग बहुत अधिक उपजे हुए धानों के फलों (बालों) से परिपूर्ण हैं (२) सीमान्तभाग को बैठी हुई मृगियों का समूह सुशोभित कर रहा है तथा (३) सीमान्त भाग में क्रौञ्च पक्षियों का समूह निनाद कर रहा है। इस प्रकार के सीमान्त भाग को देखकर अन्तःकरण उत्सुक हो जाता है।

भावार्थ— प्रभूत मात्रा में उत्पन्न धान की बालियों से परिपूर्ण, मृगियों के

समूह से समलंकृत तथा मनोहर क्रौञ्चपक्षियों के कलरव से गुञ्जित सीमान्तभाग अन्तःकरण को उत्सुक कर रहे हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में उपजाति छन्द है, (२) सीमान्त भाग की प्राकृतिक सम्पदा का मनोहरवर्णन है, (३) प्रसाद गुण है (४) मध्यम समासवती संघटना है तथा (५) वैदर्भी रीति है।

प्रफुल्लनीलोत्पलशोभितानि सोन्मादकादम्बविभूषितानि।
प्रसन्नतोयानि सुशीतलानि सरांसि चेतांसि हरन्ति पुंसाम्।। ६।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अनेन श्लोकेन द्वारा महाकविः कालिदासः हेमन्तर्तोः सरसं प्राकृतिकं शोभाविशेषं वर्णयन् वक्ति यत् साम्प्रतं पद्मानि तु सरस्सु नावलोक्यन्ते किन्तु नीलोत्पलानामयं विकासकालो वर्त्तते। इदानीं जलपक्षिणः सरस्सु कलरवं कुर्वन्ति, सरसां जलानि शीतलानि स्वच्छानि च सन्ति। एतादृशानि सरांसि विलोक्य जनानां मनांसि प्रह्लादितानि भवन्ति।

अन्वयः— प्रफुल्लनीलोत्पलशोभितानि सोन्मादकादम्बविभूषितानि प्रसन्नतोयानि सुशीतलानि सरांसि पुंसाम् चेतांसि हरन्ति।

व्याख्या— प्रफुल्लनीलोत्पलशोभितानि= प्रफुल्लानि= विकसितानि, यानि नीलोत्पलानि= नीलकमलानि, तैः शोभितानि= समलंकृतानि, सोन्मादकादम्ब विभूषितानि= सोन्मादाः= उन्मादान्विताः, ये कादम्बाः= पक्षिणां समूहाः तैः विभूषितानि= समलंकृतानि, प्रसन्नतोयानि= प्रसन्नम्= स्वच्छमु, तोयम्= जलं येषां तथाविधानि, चेतांसि= अन्तः करणानि, हरन्ति= आकृष्टानि कुर्वन्ति।।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके उपजाति वृत्तम् (२) हेमन्तकालीनानां सरसां मनोज्ञं वर्णनम् (३) वैदर्भी रीतिः (४) मध्यमसमासवती संघटना (५) प्रसादाख्यो गुणश्च वर्तते।

समासः— प्रफुल्लनीलोत्पलशोभितानि- प्रफुल्लानि चैतानि नीलोत्पलानि= प्रफुल्लनीलोत्पलानि (कर्मधारयः) तैः शोभितानि, यानि तानि (ब० ब्री०) सोन्मादकादम्बविभूषितानि- सोन्मादश्चाऽसौ कादम्बः= सोन्मादकादम्बः (कर्मधारयः) तेन विभूषितानि यानि तानि (ब० ब्री०) प्रसन्नतोयानि= प्रसन्नं तोयं येषां तानि (ब्र० ब्री०)

हिन्दीशब्दार्थ— प्रफुल्लनीलोत्पलशोभितानि= विकसित नीलकमल से सुशोभित, सोन्मादकादम्बविभूषितानि= मदोन्मत्त पक्षियों के समूह से समलंकृत, प्रसन्नतोयानि= स्वच्छ जल वाले, सुशीतलानि= अत्यन्त शीतल, सरांसि= सरोवर, पुंसाम्= मनुष्यों के, चेतांसि= अन्तःकरण को, हरन्ति= आकृष्ट करते हैं।।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिबद्ध वक्ता नायक अपनी प्रियतमा के समक्ष बतलाता है कि इस हेमन्त ऋतु में प्राकृतिक सौन्दर्य समृद्ध हो गया है। इस ऋतु में सरोवरों की शोभा मनुष्यों के अन्तःकरण को सहसा अपनी ओर आकृष्ट कर लेती है। कवि इस श्लोक में सरोवरों की चार विशेषताओं को निर्दिष्ट करता है। (१) सरोवरों में विकसित नीलकमल सुशोभित हो रहे हैं। (२) मदोन्मत्त पक्षियों के समूह

से सरोवर समलंकृत है (३) सरोवरों का जल इस ऋतु में विलकुल स्वच्छ हो गया है, तथा (४) सरोवरों के जल अत्यन्त शीतल हैं।

भावार्थ— विकसित नील कमलों से सुशोभित, मदोन्मत्त पक्षियों के समूह से समलंकृत, स्वच्छ तथा अत्यन्त शीतल जल भरे सरोवर पुरुषों के मन को अपनी ओर आकृष्ट कर लेते हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ— इस श्लोक में (१) उपजाति वृत्त (२) सरोवरों की हेमन्तकालीन मनोज्ञता का वर्णन (३) वैदर्भी रीति (४) मध्यमसमासवती संघटना तथा (५) प्रसाद नामक गुण कें सद्भाव हैं।

मार्गं समीक्ष्यातिनिरस्तनीरं प्रवासखिन्नं पतिमुद्वहन्त्यः।
अवेक्ष्यमाणाः हरिणेक्षणाक्ष्यः, प्रबोधयन्तीव मनोरथानि।। १०।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके महाकविः प्रोषितपतिकानां कामिनीनां मनोदशां वर्णयन् वक्ति यत् हेमन्तर्तौ तु मार्गः शुष्को भवति। गमनागमनादिकेषु कार्येषु क्वापि काठिन्यं नहि जायते। अतएव प्रोषितपतिकाः मृगाक्ष्यः नूनं मदीयो भर्ता साम्प्रतमायास्यति। यदा सः आयास्यति तदा तेन साकमनेन प्रकारेण वार्तालापं करिष्यामित्थं मानं च करिष्यामीति नानाप्रकारकाणि मनोरथानि ताः कुर्वन्ति।

अन्वयः— अति निरस्तनीरं मार्गं समीक्ष्य पतिमुद्वहन्त्यः हरिणेक्षणाक्ष्यः मार्गम् अवेक्ष्यमाणाः मनोरथानि प्रबोधयन्तीव।

व्याख्या— अतिनिरस्तनीरम्= अतिशयेन= पूर्णतया निरस्तम्= पृथिव्याः= शुष्कत्वात् समाप्तिं गतम्, नीरम्=जलम्, समीक्ष्य= विलोक्य, हृदयेन, प्रवासखिन्नम्= प्रवासेन वैदेशिकत्वात्, प्रियजनवियोगयुक्तत्वात् च, खिन्नम्= विषण्णम् पतिम्= भर्तारम्, उद्वहन्त्यः= धारयन्त्यः, सर्वदा स्वपतिविषयकं चिन्तनं कुर्वन्त्य इति भावः, नूनमिदानीं मम प्रिय आगमिष्यति इत्याशया मार्गम् अवेक्ष्यमाणाः= विलोकयन्त्यः, हरिणेक्षणाक्ष्यः= हरिणानाम्= मृगाणाम्, इक्षणानीव= इक्षणानि यासां तथाविधाः कामिन्यः, स्वान्तर्गतानि, मनोरथानि= अभिलाषाः, प्रबोधयन्तीव= उद्बोधयन्तीव साम्प्रतं वर्तन्त इति भावः।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके उपजाति वृत्तम् (२) उत्प्रेक्षालंकारः (३) प्रवासहेतुको विप्रलम्भशृङ्गारः (४) माधुर्यप्रसादाख्यौ गुणौ (५) अल्पसमासवती वृत्तिः (६) वैदर्भी रीतिश्च सन्ति।

समासः— अतिनिरस्तनीरम्= अतिशयेन निरस्तं नीरं यस्याऽसौ तथाविधम् (ब्र० ब्री०) प्रवासखिन्नम्प्रवासेन खिन्नम् (तृ० त० पु०) हरिणेक्षणाक्ष्यः= हरिणानाम् ईक्षाणानीव इक्षणानि यासां ताः (ब्र० ब्री०)

हिन्दी शब्दार्थ— अतिनिरस्तनीरम्= बिलकुल सुखे हुए, मार्गम्= रास्ते को, समीक्ष्य= देखकर प्रवासखिन्नम्= परदेश में रहने के कारण दुखी, पतिम्= अपने पति को, उद्वहन्त्यः= अपने हृदय में धारण करने वाली, सदा मर्गम्= रास्ते को,

अवेक्ष्यमाणाः= देखते रहने वाली, हरिणेक्षणाक्ष्यः= मृगनयनी कामिनियाँ, मनोर-थानि= अपने मन के भावों को, प्रबोधयन्तीव= मानों जगाती रहती हैं।

उपस्थापन— इस श्लोक में महाकवि कालिदास इस बात को बतलाते हैं कि हेमन्त ऋतु के आने पर मार्ग सुख जाता है। आने-जाने वालों को किसी प्रकार की परेशानी नहीं रह जाती है। उस प्रकार के मार्ग को देखकर वे कामिनियाँ जिनके पति परदेश में रहते हैं और प्रियतमा विप्रयोग के कारण खिन्न रहते हैं; उनको सदा अपने मन में धारण करती हुई तथा पति के आगमन की आशा से सदा मार्ग को देखते रहने वाली, रमणियाँ अपने पति के विषय में अनेक प्रकार की कामनाएँ करती रहती हैं।

भावार्थ— जिनके प्रियतम परदेश चले गए हैं वे मृगनयनी कामिनियाँ प्रवास के कारण दुखी अपने पतियों के विषय में सोचती हुई तथा उनके आगमन की राह देखती हुई अनेक प्रकार की अभिलाषाएँ करती हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में उपजाति छन्द (२) उत्प्रेक्षालंकार (३) प्रवासहेतुक विप्रलम्भ शृङ्गाररस (४) अल्पसमासवती संघटना (३) माधुर्य एवं प्रसाद गुण तथा (६) वैदर्भी रीति हैं।

पाकं ब्रजन्ती हिमजातशीतैराधूयमाना सततं मरुद्भिः।
प्रिये प्रियंगु प्रियविप्रयुक्ता विपाण्डुतां याति विलसिनीव।। ११।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— आस्मिञ्छ्लोके महाकविः कालिदासः हेमन्तर्तोः शैत्याधिक्येन परिपक्वतां गतायाः पीतवर्णायाः प्रियङ्गुलतायाः वर्णनं कुर्वन् वक्ति यत् येन प्रकारेण काचन प्रोषितपतिका प्रियतमविप्रयोगकृशा पीतवर्णतां याति तेनैव प्रकारेणेयं लताऽपि पीततां गतेवाभातीति।

अन्वयः— प्रिये! हिमजातशीतैः पाकं व्रजन्ती, मरुद्भिः सततं आधूयमाना प्रियङ्गुः प्रियविप्रयुक्ता विलासिनी इव विपाण्डुतां याति।

व्याख्या— प्रिये= प्रियतमे, हिमजातशीतैः= हिमेन= तुषारेण, जातानि= समुत्प- न्नानि यानि शीतानि= शैत्यानि तैः पाकम्= परिपक्वतां व्रजन्ती= समुपगच्छन्ती, मरुद्भिः= वायुभिः, सततम्= निरन्तरम्, आधूयमाना= प्रकम्प्यमाना, प्रियंगुः= पियंगुलता, प्रियविप्रयुक्ता= प्रियेण= प्रियतमेन, विप्रयुक्ता= विप्रयोगं गता, विलासि- नीव= कामिनीव, विपाण्डुताम्= विशेषरूपेण पाण्डुवर्णतां याति= गच्छति।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके वंशस्थवसन्ततिलकयोरुपजाति वृत्तम् (२) विप्रलम्भशृङ्गारसाभासः (३) प्रियंगुलतायाः प्रोषितभर्तृकया साम्यवर्णनात् उपमालंकारः (४) माधुर्यप्रसादाख्यौ गुणौ (५) समासरहिता संघटना, (६) वैदर्भी रीतिश्च।

समासः— हिमजातशीतैः हिमात् जातानि हिमजातानि (प० त० पु०) हिमजातानि च तानि शीतानि तैः (कर्मधारयः) प्रियविप्रयुक्ताप्रियात् विप्रयुक्ता (ष० त० पु०)

हिन्दी शब्दार्थ— प्रिये= प्रियतमे, हिमजातशीतैः= तुषार से उत्पन्न शीतलता

के कारण, पाकम्= परिपक्वता को, व्रजन्ती= प्राप्त करने वाली, मारुद्भिः= हवाओं से, सततम्= सदा, आधूयमाना= कँपायी जाने वाली, प्रियंगुः= प्रियंगुलता, प्रियविप्रयुक्ता= प्रियतम से वियुक्त होकर रहने वाली, विलासिनीव= कामिनी के समान, विपाण्डुताम्= विशेषरूप से पीतवर्णता को, याति= प्राप्त कर रही है।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिवद्ध नायक अपनी प्रियतमा को अपने अनुकूल बनाने के लिए हेमन्त ऋतु की ठंढी से पककर पीली हो जाने वाली तथा हवाओं से सदा कँपायी जाने वाली प्रियंगु लता के विषय में बतलाता है कि जिस तरह से कोई कामिनी अपने प्रियतम से विप्रयुक्त होकर पीली पड़ जाती है उसी तरह से यह प्रियंगु लता भी पीली-पीली दिखायी पड़ती है।

भावार्थ— प्रिये तुषार की ठंढी से पकी हुई तथा निरन्तर वायु से कँपायी जाने वाली यह प्रियंगुलता प्रोषितपतिका के समान विशेष रूप से पीली दिखायी दे रही है।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में वंशस्थ तथा वसन्ततिलका छन्दों के मिश्रण से बना उपजाति वृत्त है (२) उपमालंकार है, क्योंकि इसमें, प्रोषितपतिका तथा प्रियंगुलता के वर्णों का साम्य बतलाया गया है। (३) विप्रलम्भशृङ्गाराभास है (४) समासरहिता वृत्ति है, (५) माधुर्य एवं प्रसाद नामक गुणों का सद्भाव है तथा (६) वैदर्भी रीति है।

पुष्पासवामोदसुगन्धिवक्त्रो निःश्वासवातैः सुरभीकृताङ्गः।
परस्पराङ्गव्यतिसङ्गशायी शेते जनः कामरसानुविद्धः।। १२।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके कविनिवद्धो नायकः स्वप्रियतमायाः समक्षं हेमन्तवैभवं वर्णयन् वक्ति यत् साम्प्रतं पुष्पासवपानेन सौगन्ध्यसम्पन्नमुखवन्तः कामिनः, स्वप्रियतमायाः मुखेन साकं स्वमुखं संयोजयित्वा, निःश्वासवायुभिःसम्पूर्णं शरीरं सुगन्धितं कुर्वन्तः परस्परमङ्गानि संसक्तयित्वा शेरते।

अन्वयः— पुष्पासवामोदसुगन्धिवक्त्रः निःश्वासवातैः सुरभीकृताङ्गः कामरसानुविद्धः जनः परस्पराङ्गव्यतिसङ्गशायी शेते।

व्याख्या— पुष्पासवामोदसुगन्धिवक्त्रः= पुष्पाणाम्= कुसुमानाम्, आसवस्य= कस्यचनपेयपदार्थस्य यो हि आमोदः= सौगन्ध्यम्, तेन सुगन्धि= सुगन्धयुक्तं वक्त्रम्= मुखम् यस्य सः तथाविधः, निःश्वासवातेन= निःश्वासस्य= प्रश्वासस्य यो हि वातः तेन सुरभीकृताङ्गः= न सुरभिः असुरभिः असुरभिः सुरभिः कृतमिति सुरभीकृतम्= सुगन्धितं सम्पादितम् अभूततद्भावेच्विः। अङ्गम्= शरीरावयवं यस्य सः तथाविधः, कामरसानुविद्धः= कामस्य= मदनस्य, रसेन= अनुरागेणं, अनुविद्धः= सम्पृक्तो य असौ तथाविधः, जनः= मनुष्यः= कामी पुरुष इति भावः, परस्पराङ्गव्यतिसंङ्गशायी= परस्परम्=अन्योन्यम् अङ्गानि= शरीरावयवानि, व्यतिसङ्गम्= संयोज्य मेलयित्वा, शयनस्य शीलो यस्य सः। तथाविधः शेते= शयनं करोति।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके उपजातिवृतम्। (२) सम्भोगशृङ्गार-रसः (३) माधुर्यप्रसादाख्यौ गुणौ (४) मध्यमसमासवती संघटना (५) वैदर्भी रीतिश्च।

समासः— पुष्पासवामोदसुगन्धिवक्त्रः= पुष्पाणामासवः= पुष्पासवः (ष० त० पु०) तस्यामोदः= पुष्पासवामोदः (ष० त० पु०) तेन सुगन्धि वक्त्रं यस्याऽसौ तथाविधः (ब० ब्री०) निःश्वासवातैः- निःश्वासस्य वातैः= (ष० त० पु०) सुरभीकृताङ्गः= सुरभीणि कृतानि अङ्गानि यस्याऽसौ तथाविधः (ब० ब्री०) कामरसानुविद्धः= कामस्य रसः= कामरसः (ष० त० पु०) तेन अनुविद्धः य आसौ तथाविधः (ब० ब्री०) परस्पराङ्गव्यतिसङ्गशायीव्यतिसङ्गंशेते इति व्यतिसङ्गशायी, परस्परम् अङ्गानां व्यतिसङ्गशायी यः असौ (ब० ब्री०)

हिन्दी शब्दार्थ— पुष्पासवामोदसुगन्धिवक्त्रः= पुष्पों के आसव की सुगन्धि से सुगन्धित मुख वाले, निःश्वासवातैः= निःश्वास वायु से, सुरभीकृताङ्गः= अपने अंगों को सुगन्धित बनाये रखने वाले, कामरसानुविद्धः= कामानन्द में आसक्त, जनः= लोग, परस्पराङ्गव्यतिसङ्गशायी= एक दूसरे के अंगों से अंगों को सटाकर सोने की प्रक्रिया से, शेते= सोते हैं।

उपस्थापन— इस श्लोक में महाकवि कालिदास हेमन्त ऋतु का वर्णन करते हुए बतलाते हैं कि इस ऋतु में कामी लोग पुष्पों से तैयार किए गये सुगन्धित आसव का पान करते हैं; जिससे कि उनका सुगन्धित मुख गमकता रहता है। उनके मुख से निकली हुई निःश्वासवायु से उनके सारे अंग सुगन्धित होते रहते हैं। रात्रि में वे एक दूसरे से अपने अंगों को सटाकर परस्पर में लिपट कर सोते हैं।

भावार्थ— पुष्पों के आसव की सुगन्धि से सुगन्धित मुख वाले, निःश्वासों से अपने अंगों को सुगन्धित बनाने वाले, कामी पुरुष; रात्रि में परस्पर में एक दूसरे से लिपट कर सोते हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में उपजातिवृत्त, (२) सम्भोग शृङ्गार रस के अनुभावों का वर्णन (३) वैदर्भी रीति (४) माधुर्य एवं प्रसाद नामक गुण तथा (५) मध्यमसामासवती संघटना है।

दन्तच्छदैः सव्रणदन्तचिह्नैः स्तनैश्च पाण्यग्रकृताभिलेखैः।
संसूच्यते निर्दयमङ्गनानां रतोपभोगो नवयौवनानाम्।। १३।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके महाकविः कालिदासो वर्णयति यदस्मिन् हेमन्तर्तौ कामिपुरुषाः नवयुवतीनां निर्दयं रतोपयोगं कुर्वन्ति। ते रतिकाले तासामधरेषु दन्तक्षतं कुर्वन्ति, स्तनेषु च नखक्षतं कुर्वन्ति। एतत् सर्वं निर्दयरतोपयोग एव संभाव्यते।

अन्वयः— सव्रणदन्तचिह्नैः दन्तच्छदैः पाण्यग्रकृताभिलेखैः च स्तनैः नवयौवनानाम् अङ्गनानां निर्दयम् रतोपभोगः संसूच्यते।

व्याख्या— सव्रणदन्तचिह्नैः-व्रणश्च= ईर्मञ्च, दन्हचिह्नञ्च व्रणदन्तचिह्ने ताभ्यां सहितैः सव्रणदन्तचिह्नैः, दन्तच्छदैः= ओष्ठैः, पाण्यग्रकृताभिलेखैः= पाणेः= हस्तस्य अग्रेण= अग्रभागेन नखनेति भावः कृतः= विहितः, अभिलेखः= चिह्नानि येषु तथाविधैः= स्तनैश्च= पयोधरैश्च, नवयौवनानाम्= नवीनं यौवनम्= युवावस्था यासां तथाविधानाम्, अङ्गनानाम्= युवतीनाम्, निर्दयम्= कर्कशम्, रतोपयोगः= रते= सुरतव्यापारे उपभोगः= उपभोगः, संसूच्यतेसम्यग्रूपेण सूचितो भवति।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके उपजातिवृत्तम् (२) सम्भोगशृङ्गार रसवर्णनम् (३) माधुर्यप्रसादाख्यौ गुणौ। (४) अल्पसमासवती संघटना (५) वैदर्भी रीतिश्च सन्ति।

समासः— सव्रणदन्तचिह्नैः- व्रणाश्च दन्तचिह्नानि च ब्रणदन्तचिह्नानि (द्वन्द्वः) तैः सहितानि यानि तानि (ब० ब्री०) पाण्यग्रकृताभिलेखैःपाणेः अग्रम्= पाण्यग्रम् (ष० त० पु०) तेन कृतः अभिलेखो येषु तैः तथाभूतैः (ब० ब्री०) नवयौवनानामूनवं यौवनं यासां तासाम् (ब० ब्री०) रतोपभोगः- रते उपभोगः (स० त० पु०)।

हिन्दी शब्दार्थ— सव्रणदंतचिहूनैः= व्रण तथा दाँतों के चिहूनों से युक्त, दन्तच्छदैः= ओष्ठों, च= और, पाण्यग्रकृताभिलेखैः= जिस पर नखक्षत के चिहून बने हुए हैं ऐसे, स्तनैः= स्तनों के द्वारा, नवयौवनानाम्= नवीन जवानी वाली, अङ्गनानाम्= रमणियों की, निर्दयम्= कर्कश, रतोपभोगः= कामक्रीडा, संसूच्यते= सूचित होती है।

उपस्थापन— इस श्लोक के द्वारा महाकवि कालिदास बतलाते हैं कि इस ऋतु में नवीन जवानी वाली रमणियों के पति उनके साथ बड़ी निर्दयता के साथ रमण करते हैं। इसकी सूचना उनके ओठों पर बने दन्तक्षत के घाव तथा दाँतों के निंशान एवं स्तनों पर बने नखक्षत के चिह्नों के द्वारा मिलती है।

भावार्थ— घावों तथा दाँतों के निशान से युक्त ओष्ठों एवं नखक्षत से युक्त स्तनों के द्वारा नवीन जवानी वाली रमणियों के कर्कश रमण की सूचना मिलती है।

साहित्यिक विशेषता— (१) इस श्लोक में उपजाति वृत्त (२) सम्भोग शृङ्गार का वर्णन, (३) अल्प समास वाली संघटना, (४) माधुर्य एवं प्रसाद गुण तथा (५) वैदर्भी रीति के सद्भाव हैं।

काचिद्विभूषयति दर्पणसक्तहस्ता बालातपेषु वनिता वदनारविन्दम्।
दन्तच्छदं प्रियतमेन निपीतसारं दन्ताग्रभिन्नमवकृष्य निरीक्षते च।। १४।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके महाकविः कालिदासो वर्णयति यदस्मिन् हेमन्तर्तौ सूर्यरश्मयः सुखदाः भवन्ति। अतएव काचिद् रमणी हस्ते दर्पणमादाय सूर्यातपे उपविश्य स्वमुखकमलं विभूषयति। रात्रौ रमणेन रमणकाले यथेष्टं निपीतसारम् दन्तक्षतेन क्षतमधरं हस्तेन आकृष्य रमणसुखं स्मरन्ती सती विलोकयति च।

अन्वयः— काचित् दर्पणसक्तहस्ता वनिता बालातपेषु वदनारविन्दम् विभूषयति। प्रियतमेन निपीतसारं दन्ताग्रभिन्नं दन्तच्छदं अवकृष्य निरीक्षते च।

व्याख्या— काचित्= एका, दर्पणसक्तहस्ता= दर्पणे= आदर्शे, सक्तः= संलग्नः, हस्तः= करो यस्यास्सा, वनिता= रमणी, बालातपेषु= प्रातः कालीनस्य सूर्यस्य घर्मेषु, वदनारविन्दम्= मुखकमलम्, विभूषयति= समलंकृतं करोति। प्रियतमेन= रमणेन, निपीतसारम्= निपीतः= रमणावसरे पूर्णतया पानं कृतः, सारः= सारभागः= आस्वाद्यो रसः यस्याऽसौ तथाविधम्, दन्ताग्रभिन्नम्= दन्ताग्रेण= दन्तानामग्रभागेन, भिन्नम्= क्षतम् दन्तच्छदम्= ओष्ठं अवकृष्य= हस्तेनाकृष्य, निरीक्षते= विलोकयति च।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके उपजातिवृत्तम् (२) सम्भोगशृङ्गारस्य वर्णनम् (३) वदनारविन्दमित्यत्र रूपकालंकारः (४) अल्पसमासवती संघटना (५) वैदर्भी रीतिः (६) माधुर्यप्रसादाख्यौ गुणौ च सन्ति।

समासः— दर्पणसक्तहस्ता= दर्पणे सक्तः हस्तो यस्याः सा (ब० ब्री०) बालातपेषु= बालाश्च ते आतपाः तेषु (कर्मधारयः) वदनारविन्दम्= वदनं च तदरविन्दम् (कर्मधारयः) निपीतसारमू= निपीतः सारो यस्याऽसौ तथाविधम् (ब० ब्री०)

हिन्दी शब्दार्थ— काचित्= कोई, दर्पणसक्तहस्ता= हाथ में दपर्ण ली हुई, वनिता= रमणी, बालातपेषु= कोमल धूप में, वदनारविन्दम्= अपने मुख कमल को, विभूषयति= सजाती है। प्रियतमेन= प्रियतम के द्वारा निपीतसारम्= जिसका सार पी लिया गया है, तथा दन्ताग्रभिन्नम्= दाँतो से काट लिया गया है, इस प्रकार के दन्तच्छदम्= ओठ को अवकृष्य= हाथों से खींचकर, निरीक्षते च= देख रही है।

उपस्थापन— इस श्लोक में महाकवि कालिदास बतलाते हैं कि जिस रमणी के साथ रमण के समय उसके प्रियतम ने उसके रति सर्वस्व ओष्ठों का पान करते-करते उसके सम्पूर्ण रस को पी लिया है। अधर पान काल में उसके ओष्ठों पर दन्तक्षत भी कर दिया है। प्रातः काल जब थोड़ी सी धूप निकलती है, तो वह रमणी अपने हाथ में दर्पण लेकर और धूप में बैठकर अपने को सजाती है तथा प्रियतम के दन्तक्षत से घायल ओठों को अपने हाथों से खीचकर दर्पण में देखती है।

भावार्थ— कोई रमणी अपने हाथ में दर्पण लेकर और धूप में बैठकर अपने मुखकमल को पुनः सजाती है और प्रियतम के द्वारा जिसका रस पी लिया गया है तथा जिन्हें दाँतों से काट लिया गया है ऐसे अपने ओष्ठों को खींचकर देखती है।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में उपजाति वृत्त, (२) सम्भोग शृङ्गार रस, (३) रूपकालंकार (४) अल्प समासवती संघटना (५) वैदर्भी रीति तथा (६) माधुर्य एवं प्रसाद गुण हैं।

अन्या प्रकामसुरतश्रमखिन्नदेहा रात्रिप्रजागरविपाटलनेत्रपद्मा।
स्रस्तांसदेशलुलिताकुलकेशपाशा निद्रां प्रयाति मृदुसूर्यकराभितप्ता।। १५।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके महाकविः कालिदासः कस्याश्चन तस्याः नायिकायाः वर्णनं करोति या यथेष्टमात्रायां रात्रौ रंमणेन रतिक्रीडायामुपभुक्तत्वात् श्रान्तशरीरवती संजाता विद्यते, रात्रौ रमणेन रतिक्रीडायामु पभुक्तत्वात् श्रान्तशरीरवती संजाता विंद्यते, रात्रौ जागरणकृतत्वात् तस्याः नेत्रे रक्ते संजाते स्तः। तस्याः कबरी व्यस्तबन्धा सञ्जाता अतएव तस्याः केशाः अस्तव्यास्ताः संजाता सन्ति। प्रातः काले हेमन्तकालीनानां सूर्यस्य मृदुकिरणानां संयोगं समवाप्य सा, शेते सुखानुभवं कुर्वन्ती।

अन्वयः— प्रकामसुरतश्रमखिन्नदेहा रात्रिप्रजागरविपाटलनेत्रपद्मा। स्रस्तांस-देश-लुलिताकुलकेशपाशा अन्या मृदुसूर्यकराभितप्ता निद्रां प्रयाति।

व्याख्या— प्रकामसुरतश्रमखिन्नदेहा= रात्रौ रमणेन साकं प्रकामस्य= यथेष्टस्य, सुरतस्य= कामक्रीडायाः श्रमेण= परिश्रमेण, खिन्नः= श्रान्तः देहः= शरीरं यस्यास्सा,

रात्रिप्रजागरविपाटलनेत्रपद्मा= रात्रौ= विभावर्याम्, प्रजागरेण= दीर्घकालपर्यन्तं जागरणेन विपाटले= रक्तवर्णे, नेत्रपद्मे= नयनकमले यस्याः सा तथाभूता, अन्या= काचित्, मृदुसूर्यकराभितप्ता= मुदुभिः= कोमलैः अतएव सुखदैः सूर्यकरैः= सूर्यस्य किरणैः अभितप्ता= समुपलब्धौष्ण्यवती, स्रस्तांसदेशेलुलिताकुलकेशपाशा= स्रस्तः= अस्तव्यस्तः यो हि अंसदेशः= स्कन्धप्रदेशः, तत्र लुलितः= मर्दितः केशपाशः= कुन्तलकलापो यस्यास्सा तथाविधा नायिका, निद्रां प्रयाति= शेते।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके उपजातिवृत्तम् (२) सम्भोगश्रृंगार रसवर्णनम् (३) उपमालंकारः (४) मध्यमसमासवती संघटना (५) माधुर्यप्रसादख्यौ गुणौ (५) वैदर्भी रीतिश्च।

समासः— प्रकामसुरतश्रमखिन्नदेहा= प्रकामश्चासौ सुरतः प्रकामसुरतः (कर्मधारयः) तस्य श्रमः= प्रकामसुरतश्रमः (ष० त० पु०) तेन खिन्नो देहो यस्याः सा (ब० ब्री०) रात्रिप्रजागरविपाटलपद्मनेत्रा= रात्रौ प्रजागारः= रात्रिप्रजागरः (स० त० पु०) तेन विपाटले रात्रिप्रजागरविपाटले, पद्मवत्नेत्रे यस्याः सा= रात्रि प्रजागरविपाटलपद्मनेत्रा (ब० ब्री०) स्रस्तांसदेशलुलिताकुलकेशपाशा= स्रस्तश्च अंस देशे लुलिताकुलश्च केशपाशो यस्याः सा= (ब० ब्री०) मृदुसूर्यकराभितप्ता= मृदुभिः सूर्यकरै अभितप्ता या सा (ब० बी०)

हिन्दी शब्दार्थ— प्रकामसुरतश्रमखिन्नदेहा= बहुत अधिक कामक्रीडा करने के कारण जिसका शरीर थक गया है, रात्रिप्रजागरविपाटलपद्मनेत्रा= रात्रि में बहुत अधिक जागने के कारण जिसके कमलवत् नेत्र लाल-लाल हो गए हैं, स्रस्तांसदेशलुलिताकुलकेशपाशा= खुले हुए कन्धे के पास रगड़ खाने के कारण अस्तव्यत बालों वाली अन्या= दूसरी रमणी, मृदुसूर्यकराभितप्ता= सूर्य की कोमल किरणों से कुछ गर्मी पाकर, निद्रां प्रयाति= सो रही है।

उपस्थापन— इस श्लोक में महाकवि कालिदास उस नायिका का वर्णन कर रहे हैं, बहुत अधिक सुरत क्रीडा करने के कारण जिसका शरीर थक गया है, रात्रि में बहुत अधिक जांगने के कारण जिसके कमल के समान मनोहर नेत्र लाल-लाल दिखायी पड़ते हैं। जिसके बाल खुले हुए हैं, कन्धे के पास बहुत अधिक रगड़ खाने के कारण अस्त-व्यस्त हो गए हैं वह नायिका अब प्रातःकाल में सूर्य की कोमल-कोमल तथा सुखद किरणों के लगने के कारण सो रही है।

भावार्थ— बहुत अधिक रमण करने के कारण थकी हुई रात्रि में बहुत जागने के कारण जिसके कमलवत् नेत्र लाल हो गए हैं, जिसके बाल खुल गए हैं तथा बहुत अधिक रगड़ खाने के कारण कन्धे पर अस्तव्यस्त पड़े हैं, ऐसी कोई रमणी सूर्य की किरणों की कोमल गर्मी पाकर सो रही है।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में उपजाति वृत्त, (२) उपमालंकार (३) सम्भोगश्रृङ्गार रस का वर्णन (४) मध्यमसमास वाली संघटना (५) माधुर्य एवं प्रसाद गुण तथा (६) वैदर्भी रीति हैं।

निर्माल्यदाम परिभुक्तमनोज्ञगन्धं मूर्ध्नोऽपनीय घननीलशिरोरुहान्ताः।
पीनोन्नतस्तनभरानतगात्रयष्ट्यः कुर्वन्ति केशरचनामपरास्तरुण्यः।। १६।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके महाकविः कालिदासो वक्ति यत् अस्मिन् हेमन्तर्तौ काश्चन तरुण्यो यासां केशकलापा अतीव कृष्णवर्णाः सन्ति यासां शरीरमत्युन्नतस्तनभरेण नतमास्ते ताः सुगन्धितपुष्परचितां परिभुक्तां मालां स्वशिरसोऽपनीय पुनः नवीनतया केशरचनां कुर्वन्ति।

अन्वयः— घननीलशिरोरुहान्ताः पीनोन्नतस्तनभरानतगात्रयष्ट्यः अपराः तरुण्यः परिभुक्तमनोज्ञगन्धं निर्माल्यदाम मूर्ध्नोऽपनीय केशरचनां कुर्वन्ति।

व्याख्या— घननीलशिरोरुहान्ताः= घनाः= सघनाः, नीलाः= कृष्णवर्णाश्च शिरोरुहान्ताः= केशान्तभागो यासां तथाविधाः पीनोन्नतस्तनभरानतगात्रयष्ट्यः= पीनानि च= पृथुलानि च, उन्नतानि च= उत्थितानि च स्तनानि= पयोधराः येषाम् भरेण= भारेण, आनता= नम्रतां गता गात्रयष्टिः=शरीरं यासां तथाविधाः, अपराः= अन्याः, तरुण्यः= युवतयः, परिभुक्तमनोज्ञगन्धम्= परिभुक्तः= पूर्णरूपेण उपभुक्त, मनोज्ञः= मनोहरः= गन्धः= सौगन्ध्यम् यस्य तत् तथाविधम् निर्माल्यदाम= निर्माल्यम्= उपभुक्तं दाम= स्रक, मूर्ध्नः= शिरसः, अपनीय= अपाकृत्य, केशरचनाम्= सीमन्तक्रियाम्, कुर्वन्ति= सम्पादयन्ति।।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके उपजातिवृत्तम् (२) सम्भोगशृङ्गार वर्णनम् (३) मध्यमसमासवती संघटना, (४) माधुर्यप्रसादाख्यौ गुणौ (५) वैदर्भी रीतिश्च सन्ति।

समासः— घननीलशिरोरुहान्ताः= घनाश्च नीलाश्च शिरोरुहाणामन्तः यासां ताः (ब० ब्री०) पीनोन्नतस्तनभरानतगात्रयष्ट्यः= पीनानि उन्नतानि च स्तनानि= पीनोन्नतस्तनानि (कर्मधारयः) तेषां भरेण आनता गात्रयष्टिः यासां ताः (ब० ब्री०) परिभुक्तमनोज्ञगन्धम्= परिभुक्तः मनोज्ञो गन्धो यस्य तत् (ब० ब्री०) निर्माल्यदाम= निर्माल्यं च तत् दाम= निर्माल्यदाम (कर्मधारयः)

हिन्दीशब्दार्थ— घननीलशिरोरुहान्ताः= जिनके बालों के अग्रभाग घने तथा काले हैं, पीनोन्नतस्तनभरानतगात्रयष्ट्यः= बडे-बड़े बालों तथा उठे हुए स्तनों के भार से जिनके शरीर झुके हुए हैं, इस प्रकार की, अपराः= दूसरी, तरुण्यः= युवतियाँ, परिभुक्तमनोज्ञगन्धम्= जिनके मनोहर गन्ध का उपभोग कर लिया गया है, ऐसे निर्माल्यदाम= पहनी हुई सुगन्धित माला को, मूर्ध्नः= अपने शिर पर से, अपनीय= हटाकर, केशरचनां कुर्वन्ति= अपने बालों को सजाती हैं

उपस्थापन— इस श्लोक में महाकवि कालिदास उन रमणियों का वर्णन कर रहे हैं जो प्रातः काल उठकर अपने बालों को फिर से सजाती हैं। उन रमणियों की तीन विशेषतओं को महाकवि ने इंगित किया है। (१) उन रमणियों के बालों के अग्रभाग घने तथा अत्यन्त काले-काले हैं। (२) बड़े-बड़े तथा उठे हुए स्तनों के भार से उन रमणियों का शरीर झुक सा गया है। इस विशेषता के द्वारा उन रमणियों का पतली कमर वाली

होना सूचित होता है। (३) उन रमणियों ने जो सुगन्धित पुष्पों की माला अपने शिर में लगा रखा था उसके सौगन्ध्य का अच्छी तरह से उपभोग कर लिया गया है। उन मालाओं को उतार कर वे अब अपने केशों को सँवार रही हैं।

भावार्थ— सघन तथा काले बालों वाली, बड़े तथा उन्नत स्तनों के भार से जिनका शरीर झुक गया है, तथा बालों में लगे सुगन्धित माला का जिन सबों ने उपभोग कर लिया है, उस बासी माले को अपने बालों से उतार कर दूसरी तरुणियाँ अपने केशों को सजाती हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ— इस श्लोक में उपजाति वृत्त, (२) सम्भोग शृङ्गार का वर्णन (३) मध्यमसमास वाली संघटना, (४) वैदर्भी रीति तथा (५) माधुर्य एवं प्रसाद नामक गुणों का सद्भाव है।

अन्या प्रियेण परिभुक्तमवेक्ष्य गात्रं हर्षान्विता विरचिताधरचारुशोभा।
कूर्पासकं परिदधाति नखक्षताङ्गी व्यालम्बिनीलललितालककुञ्चिताक्षी।। १७।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके महाकविः कालिदासः तासां रमणीनां वर्णनं करोति यासां रमणाः रमणकाले निर्दयतया रमणं कुर्वन्तः सन्तः तासां स्तनेषु नखक्षतं कृतवन्तः। यासां केशाः कृष्णवर्णाः कुञ्चिताश्च सन्ति। तथाविधं प्रियतमेनोपभुक्तं स्वकीयं गात्रमवेक्ष्य ताः हर्षिताः सत्य अधररञ्जनं कुर्वन्ति कूर्पासकं च परिदधति।

अन्वयः— नखक्षताङ्गी व्यालम्बिनीलललितालककुञ्चिताक्षी अन्या प्रियेण परिभुक्तं गात्रम् अवेक्ष्य हर्षान्विता विरचिताधरचारुशोभा (सती) कूर्पासकं परिदधाति।

व्याख्या— नखक्षताङ्गी= नखेन= करजेन, क्षतानि= भिन्नानि, अंगानि= अवय- वानि= यस्याःसा व्यालम्बिनीलललितालककुञ्चिताक्षी= व्यालम्बि= विशेषेण आ= समन्तात् लम्बते यत् तथाविधं, नीलम्= कृष्णवर्ण ललितम्= मनोज्ञं च अलकं= केशपाशो कुञ्चिते= कुटिले अक्षिणी= नेत्रे च यस्याः सा तथविधा, अन्या= अपरा, प्रियेण= प्रियतमेन, परिभुक्तम्= रतम्, गात्रम्= शरीरम्, अवेक्ष्य= विलोक्य, हर्षान्विता= प्रसन्ना, विरचिताधरचारुशोभा= विरचिता= कृता, अधरस्य= अधोभा- गस्यौष्ठस्य, चारु= मनोज्ञा, शोभा= चारुता, यया सा तथाविधा, कूर्पासकम्= कञ्चुकीम्, परिदधाति= धारणं करोति।

सहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके उपजातिवृत्तम् (२) सम्भोगशृङ्गारस्य वर्णनम्, (३) मध्यमसमासवती संघटना (४) वैदर्भी रीतिः (५) प्रसादमाधुर्याख्यौ गुणौ च सन्ति।

समासः— नखक्षताङ्गी= नखेन क्षतानि अङ्गानि यस्याः सा (ब० व्री०) व्यालम्बिनीलललितालककुञ्चिताक्षी= व्यालम्बिनश्च नीलाश्च ललिताश्च,= व्याल- म्बिनीलललिताः (द्वन्द्वः) तथाभूताश्च ते अलकाः व्यालम्बिनीलललितालकाः (कर्मधारयः) व्यालम्बिनीलललितालकाः आकुञ्चिते अक्षिणी च यस्याः सा= व्यालम्बिनीलललितालककुञ्चिताक्षी (ब० व्री०) विरचिताधरचारुशोभा= विरचिता अधरस्य चारु शोभा यया सा = (ब० व्री०)

हिन्दीशब्दार्थ— नखक्षताङ्गी= नख से जिसके अंग घायल हो गए हैं, व्यालम्बिनीलललितालककुञ्चिताक्षी= लटकने वाले नीले, सुन्दर बालों तथा कुटिल कटाक्षों वाली, अन्या= कोई दूसरी रमणी, प्रियेण= प्रियतम के द्वारा, परिभुक्तम्= उपभोग किए गए, गात्रम्= अपने शरीर को, अवेक्ष्य= देखकर, हर्षान्विता= प्रसन्न होकर, विरचिताधरचारुशोभा= अपने ओष्ठों को अच्छी तरह से रंग कर, कूर्पासकम्= चोली, परिदधाती= पहनती है।

उपस्थापन— इस श्लोक में महाकवि कालिदास उस नायिका का वर्णन कर रहे हैं जिसके प्रियतम ने रात्रि के समय उसके साथ रमण करते हुए उसके स्तनों पर नखक्षत कर दिया है। उसके केश लम्बे-लम्बे, काले तथा सुन्दर हैं। वह तिरछी निगाहों से देखतीं है। वह प्रियतम के द्वारा उपभुक्त अपने शरीर को देखकर प्रसन्न हो रही है, वह अपने ओष्ठों को विचित्र ढंग से तथा बहुत आकर्षक ढंग से रंगकर चोली पहन रही है।

भावार्थ— कामकेलि काल में जिसके अंग नखों से धायल हो गए है, वह लम्बे-लम्बे, काले तथा मनोज्ञ केशों एवं तिरछी निगाहों वाली नायिका प्रियतम के द्वारा उपभुक्त अपने शरीर को देखकर प्रसन्न होती हुई, अपने अधर को आकर्षक ढंग से रंग कर चोली पहन रही है।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में उपजाति वृत्त, (२) सम्भोग शृंगार का वर्णन (३) मध्यम समासवती संघटना (४) वैदर्भी रीति तथा (५) माधुर्य एवं प्रसाद गुणों के सद्भाव हैं।

अन्याश्चिरं सुरतकेलिपरिश्रमेण खेदं गताः प्रशिथिलीकृतगात्रयष्टयः।
संहृष्यमाणपुलकोरुपयोधरान्ता अभ्यञ्जनं विदधति प्रमदाः सुशोभाः।। १८।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके महाकविः कालिदासो तासां नायिकानां वर्णनं करोति याभिः रात्रौ स्वरमणेन साकं चिरकालपर्यन्तं रमणं कृतम्। सुरतजन्यपरिश्रमेण तासां शरीरं खिन्नमास्ते शरीररङ्गयष्टिश्च प्रशिथिला संजाता, तासां ऊरुषु पयोधरेषु च पुलको भवति। तथाविधाः सुन्दर्यः स्वनेत्रे ऽभ्यञ्जिते कुर्वन्ति।

अन्वय— सुरतकेलिपरिश्रमेण खेदं गताः प्रशिथिली कृत गात्रयष्टयः संहृष्यमाणपुलकोरुपयोधरान्ताः सुशोभाः अन्याः प्रमदाः चिरं अभ्यञ्जनं विदधति।

व्याख्या— सुरतकेलिपरिश्रमेण= सुरतस्य= रमणस्य केलिः= क्रीडा मनोरञ्जनमितिभावः तस्य परिश्रमेण, खेदंगताः= पूर्णतया श्रन्तिं गताः, प्रशिथिलीकृतगात्रयष्टयः= प्रकर्षेण शिथिला प्रशिथिला, न प्रशिथिला अप्रशिथिला, अप्ररिशिथिला= प्रशिथिला कृता इति प्रशिथिली कृता= श्लथा सम्पादिता गात्रयष्टिः= शरीरं यासां ताः, संहृष्यमाणपुलकोरुपयोधरान्ताः= संहृष्यमाणात्= आनन्दातिश- यानुभवात्। पुलकः= रोमोद्गमः उर्वो= नितम्बयोः, पयोधरयोः= स्तनयोः, अन्ते= अन्तिमभागे यासां ताः अन्याः= अपराः, सुशोभाः= मनोज्ञतमाः प्रमदाः= रमण्यः चिरं= दीर्घकालपर्यन्तम् अभ्यञ्जनम्= तैलाभ्यङ्गम्, विदधति= कुर्वन्ति।

साहित्यिक विशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके उपजातिवृत्तम् (२) सम्भोगशृङ्गार वर्णनम् (३) मध्यम समासवतीसंघटना (४) वैदर्भी रीति (५) माधुर्यप्रसादाख्यौ च गुणौ सन्ति।

समासः— सुरतकेलिपरिश्रमेण= सुरतस्य केलिः= सुरतकेलिः (ष० त० पु०) तस्य परिश्रमेण (ष० त० पु०) प्रशिथिलीकृतगात्रयष्टयः= प्रशिथिली कृता गात्रयष्टिः यासां ताः (ब० ब्री०) संहृष्यमाणपुलकोरुपयोधरान्ताः= संहृष्यमाणात् पुलकः ऊर्वोः पयोधरयोश्चान्ते यासां ताः (ब० ब्री०)

हिन्दी शब्दार्थ— सुरतकेलिपरिश्रमेण= कामक्रीडाजन्य परिश्रम के द्वारा, खेदं गताः= थकी हुई, प्रशिथिलीकृतगात्रयष्टयः= जिनका शरीर बिल्कुल श्लथ हो गया है, संहृष्यमाणपुलकोरुपयोधरान्ताः= आनन्दानुभव के कारण जिनके नितम्ब भाग तथा स्तनों में रोमाञ्च हो रहा है, इस प्रकार की; अन्याः= दूसरी, सुशोभाः= अत्यन्त सुन्दरी, प्रमदाः= रमणियाँ, चिरम्= दीर्घ काल तक, अभ्यञ्जनं विदधति= तैलमर्दन, कराती हैं।

उपस्थापन— इस श्लोक में महाकवि कालिदास उन सुन्दरी युवतियों का वर्णन कर रहे हैं जो हेमन्त ऋतु की रात्रियों में देर रात तक अपने रमणों के साथ रमण करती रहीं। उससे जिनका शरीर थक गया है और सारे अङ्ग शिथिल हो गये हैं। अनुभूत आनन्द को स्मरण करके जिनके नितम्बों तथा स्तनों के अग्रभाग में रोमाञ्च हो रहा है। इस प्रकार की सुन्दरियाँ प्रातः काल देर तक तैलमर्दन कराती हैं जिससे कि सुरत क्रीडा जन्य खेद समाप्त हो सके।

भावार्थ— सुरतक्रीडा जन्य परिश्रम के कारण श्रान्त जिनके सारे अंग शिथिल पड़ गए हैं, अनुभूत आनन्दानुभव के कारण जिनके नितम्बों तथा स्तनों में रोमाञ्च हो रहा है, इस तरह की दूसरी सुन्दरियाँ देर तक अपने शरीर में तेल लगाती हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में उपजाति छन्द, (२) सम्भोग शृंगार का वर्णन (३) मध्यम समास वाली संघटना (४) वैदर्भी रीति तथा (५) माधुर्य एव प्रसाद गुण के सद्भाव है।

बहुगुणरमणीयो योषितां चित्तहारी
परिणतबहुशालिव्याकुलग्रामसीमः।
सततमतिमनोज्ञः क्रौञ्चमालापरीतः
प्रदिशतु हिमयुक्तः काल एषः सुखं वः।।१६।।

इति महाकविकालिदासकृतौ ऋतुसंहारे हेमन्तवर्णनंनाम चतुर्थः सर्गः सम्पूर्णः।।४।।

संदर्भप्रसङ्गौ— हेमन्तवर्णनस्योपसंहारं कुर्वन् महाकविः कालिदासोऽस्मिञ्छ्लोके अस्यर्तोः बहूनां गुणानां निर्देशं करोति। तथाहि ऋतुरयं अनेकगुणसम्पन्नत्वादति रमणीयो वर्त्तते, अयं रमणीनां चित्तं हरति। सर्वत्र ग्रामेषु अनेक प्रकारकाः शालयः

परिपक्वाः साम्प्रतमुपलभ्यन्ते। अस्मिनृतौ क्रौञ्चपक्षिणां समूहः समुपलभ्यते एतादृशोऽयं कालः समेषां पाठकानां मङ्गलप्रदो भवतु।

अन्वयः— बहुगुणरमणीयः योषितां चित्तहारी परिणातबहुशालिव्याकुलग्रामसीमः सततम् अतिमनोज्ञः क्रौञ्चमालापरीतः हिमयुक्तः एषः कालः वः सुखं प्रदिशतु।

व्याख्या— बहुगुणरमणीयः= बहुभिः= अनेकैः, गुणैः रमणीयः= मनोहरः योषिताम्= नारीणाम्, चित्तहारी= चित्ताकर्षकः, परिणतबहुशालिव्याकुलग्रामसीमः परिणतैः= परिपक्वैः, बहुभिः= अनेकप्रकारकैः, शालिभिः= ब्रीहिभिः, व्याकुलः= परिपूर्णः, ग्रामाणाम् सीमा येनाऽसौ तथाविधः, सततम्= निरन्तरम्, अतिमनोज्ञः= अत्यन्तमनोहरः, क्रौञ्चमालापरितः= क्रौञ्चाणाम्= क्रौञ्चपक्षिणाम् मालया= समूहेन, परीतः= व्याप्तः, हिमयुक्तः= हिमेन= तुषारेण, युक्तः= समन्वितः, एषः= अयम्, कालः= समयः, वः= युष्मभ्यम्, सुखम्= आनन्दम्, प्रदिशतु= प्रददातु।

साहित्यिक विशेषताः- (१) अस्मिञ्छ्लोके मालिनी वृत्तम्। 'ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोके।' इति हि मालिनी लक्षणम्। (२) प्रसादाख्यो गुणः (३) अल्पसमासवती संघटना (४) वैदर्भी रीतिश्च सन्ति।

समासः— बहुगुणरमणीयः— बहुभिः गुणैः रमणीयो य असौ (ब० ब्री०) चितहारी- चितं हरति य असौ (ब० ब्री०) परिणतबहुशालिव्याकुलग्रामसीमः= परिणतैः बहुभिः, शालिभिः, व्याकुलः ग्रामसीमा यस्मिन् स (ब्र० ब्री०) अतिमनोज्ञः= मनोज्ञमतिक्रम्य वर्तते य असौ (अव्ययीभावगर्भितो ब० ब्री०) क्रौञ्चमालापरीतः= क्रौञ्चानाम् मालया परीतः यः सः (ब्र० ब्री०) हिमयुक्तः= हिमेन युक्तः (तृ० त०पु०)

हिन्दी शब्दार्थ— बहुगुणरमणीयः- अनेक गुणों से युक्त होने के कारण मनोहर, योषितां चित्तहारी= रमणियों के चित्त का हरण करने वाला, परिणतबहुशालिव्याकुल-ग्रामसीमः- जिसमें अनेक प्रकार के पके हुए धानों से गावों की सीमाएँ परिपूर्ण हो जाती हैं, सततम्= सदा, अतिमनोज्ञः= अत्यन्तमनोहर लगने वाला, क्रौञ्चमालापरीतः= क्रौञ्चपक्षियों के समूह से परिपूर्ण, हिमयुक्तः= तुषार से युक्त, एषः= यह, कालः= समय, वः= अपलोगों को, सुखम्= आनन्द, प्रदिशतु= प्रदान करे।।

उपस्थान— इस श्लोक में महाकवि कालिदास ने हेमन्त ऋतु के वर्णन का उपसंहार किया है। इस श्लोक में महाकवि ने बतलाया है कि यह काल अनेक गुणों से युक्त होने के कारण मनोहर तथा रमणियों के चित्त को आकर्षित करने वाला है। अनेक प्रकार के धान पक गए है। उन पके हुए धानों से ग्रामों की सीमाएँ भर गयी हैं। सर्वत्र पके हुए धान पड़े हैं सदा अत्यन्त मनोहर लगने वाले इस काल में क्रौञ्च पक्षियों के समूह भी भरे हुए हैं। ठंढक से युक्त यह काल आप समस्त पाठकों को आनन्द प्रदान करे।

भावार्थ— अनेक गुणों से युक्त होने के कारण मनोहर, रमणियों के चित को आकर्षित करने वाला, जिसमें पके हुए धानों से गावों क़ी सीमाएँ भर गयी हैं सदा मनोहर लगने वाले तथा क्रौञ्चपक्षियों से परिपूणं यह काल आप सबों को आनन्द प्रदान करे।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में मालिनी छन्द है। 'ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोके' यह मालिनी छन्द का लक्षण है। (२) इसमें वैदर्भी रीति है, (३) प्रसाद गुण तथा (४) अल्पसमास वाली संघटना है।

इस प्रकार महाकविकालिदासकृत ऋतुसंहार काव्य का हेमन्त वर्णन नामक चतुर्थ सर्ग की व्याख्या सम्पूर्ण हुई।। ४ ।।

पञ्चमः सर्गः
शिशिर ऋतु का वर्णन

प्ररूढशालीक्षुचयावृताक्षितिं क्वचित्स्थितक्रौञ्चनिनादराजितम्।
प्रकामकामं प्रमदाजनप्रियं वरोरु कालं शिशिराह्वयं शृणु।। १।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अनेन श्लोकेन द्वारा महाकविकालिदासनिवद्धो वक्ता स्वप्रियतमायाः समक्षं शिशिरर्तोः वर्णनमुपक्रमते। स वक्ति यदृतावस्मिन् काम अत्युत्कटो भवति। सर्वत्र पक्वः शालिसमूह एवावलोक्यते। स्थाने-स्थाने उपविष्टाः क्रौञ्चपक्षिणः कलरवं कुर्वन्ति। अत एवाऽयं प्रमदाजनेभ्योऽति प्रियः कालः समागतो वर्त्तते।

अन्वयः— वरोरु! प्ररूढशालीक्षुचयावतांक्षितिं क्वचित्स्थितक्रौञ्चनिनादराजितम् प्रमदाजनप्रियं प्रकामकामं शिशिराह्वयं कालं शृणु।

व्याख्या— वरोरु= वरौ ऊरू यस्याः सा तथाविधे प्ररुढ़शालीक्षचयावृताक्षितिम्= शालयश्च= धन्यानि च, इक्षवश्च= रसालाश्च= रक्षुरसालाः= प्ररुढाश्येमे शालीक्षवः= प्ररूढ़शालीक्षवः= तेषाम् चयः= समूहः, तेनावृता= परिगता चासौ क्षितिः= भूमिः, ताम् रुचिरम्, क्वाचित्= स्थानविशेषेषु स्थितक्रौञ्चनिनादराजितम्= स्थितानाम्= उपवि- ष्टानां क्रौञ्चानाम्= क्रौञ्चपक्षिणाम्, निनादैः= कूजनैः, राजितम्= सुशोभितम्, प्रमदाजनप्रियम्= प्रमदाजनेभ्यः= रमणीभ्यः, प्रियम्= स्नेहास्पदम् प्रकामकामम्= प्रकामः= यथेष्टम् कामःमदनावेशो यस्मिन् तथाविधम्, शिशिराह्वयम्= शिशिराभि- धानकम्, शृणु= श्रवणं कुरु।

साहित्यिकविशेषताः— अस्मिञ्छ्लोके (१) उपजाति वृत्तम्। उपेन्द्रवज्रापदसंगतानि यदीन्द्रवज्राचरणानि चस्युः। तदोपजातिः कथिता कवीन्द्रैः भेदाः भवन्तीह चतुर्दशास्याः। इत्युपजातेः लक्षणम्। (२) सम्भोगशृङ्गारविभाववर्णनम्, (३) शिशिरशोभायाः वर्णनम्, (४) अल्पसमासवती संघटना (५) वैदर्भी रीतिः (६) प्रसादाख्यो गुणश्च सन्ति।

समास— प्ररूढ़शालीक्षुचयावृतां= शालयश्च इक्षवः= शालीक्षवः (द्वन्द्वः) प्ररूढाश्चेमे शालीक्षवः= प्ररूढशालीक्षवः (कर्मधारयः) तेषां चयः= प्ररूढशालीक्षुचयः (ष० त०) मंनावृताया या सा ताम्= प्ररूढशालीक्षचयावृताम् (ब० ब्री०) स्थितक्रौञ्चनिनाद- राजितम्= स्थिताश्च ते क्रौञ्चाः= स्थितक्रौञ्चाः (कर्मधारयः) तेषां निनादः= स्थितक्रौञ्चनिनादः तेन राजित य असौ तथाविधम् (ब० ब्री०) प्रमदाजनप्रियम् प्रमदाजनेभ्यः प्रियः य असौ तथाविधम् (ब० ब्री०) प्रकामकामम्=

प्रकामः कामो यस्मिंस्तम् (ब० ब्री०) शिशिराह्वयम्= शिशिरः आह्वयो यस्य तम् (ब० ब्री०)

हिन्दी शब्दार्थ— वरोरु= हे सुन्दरजंघों वाली प्रियतमे! प्ररुढशाल्यंशुचयैः= पके हुए धानों की शोभा समूह से, मनोहरम्= मनोज्ञ, क्वचित्= कहीं-कहीं पर, स्थितक्रौञ्चनिनादराजितम्= बैठे हुए क्रौञ्च पक्षियों के कलरव से सुशोभित, प्रमदाजनप्रियम्= रमणियों को प्रिय लगने वाले, प्रकामकामम्= जिसमें काम का बहुत अधिक आवेश होता है, ऐसे शिशिराह्व्यम्= शिशिर नामक, कालम्= समय के विषय में, शृणु= सुनो।

उपस्थापन— इस श्लोक में शिशिर ऋतु का वर्णन प्रारम्भ करते हुए कवि निवद्ध वक्ता अपनी, प्रियतमा के समक्ष इस ऋतु की तीन विशेषताओं को उपन्यस्त करता है। (१) इस ऋतु में धान पक जाते हैं अतएव धानों की शोभा से यह ऋतु भरा हुआ है। (२) जलाशयों के समीप बैठे हुए क्रौञ्च पक्षी कलरव कर रहे हैं जो इस ऋतु की शोभा को और बढा देता है। (३) इस ऋतु में काम का वेग बढ़ जाता है अतएव यह ऋतु रमणियों के लिए अत्यन्त प्रिय है।

ये तीनों विशेषताएँ सम्भोग शृंगार के उपष्टम्भक स्वरूप ही हैं।

भावार्थ— प्रिये! पके हुए धान की कान्ति से परिपूर्ण, स्थान स्थान पर बैठे क्रौञ्च पक्षियों के कलरव से सुशोभित; काम को बढाने वाला होने के कारण रमणियों को अत्यन्त प्रिय, इस शिशिर ऋतु के विषय में सुनो।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में उपजाति वृत्त है (२) सम्भोग शृङ्गार के उद्दीपन विभावों का वर्णन है (३) अल्पसमास वाली संघटना है (४) वैदर्भी रीति है तथा (५) प्रसाद नामक गुण है।

निरूद्धवातायनमन्दिरोदरं हुताशनो भानुमतो गभस्तयः।
गुरूणि वासांस्यबलाः सयौवनाः प्रयान्ति कालेऽत्र जनस्य सेव्यताम्।। २।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ- अस्मिञ्छ्लोके कविनिवद्धो वक्ता स्वप्रियतमायाः समक्षं शिशिरस्य वर्णनं कुर्वन् पुरुषैः सेव्यमानानां वस्तूनां वर्णनं करोति। तानि च वस्तूनि अत्र पञ्चसंख्याकानि सन्त्युवर्णितानि। तथाहि (१) पिहितगवाक्षं भवनम् (२) अग्निः (३) सूर्यरश्मयः (३) गुरूणि वस्त्राणि (४) युवतयश्च साम्प्रतिके काले जनेभ्यः सेव्यतां गताः सन्ति। एतेषां समेषां वस्तूनां शिशिरे औष्ण्यप्रदत्वात्।

अन्वयः— अत्र काले निरूद्धवातायनमन्दिरोदरं, हुताशनः, भानुमतो गभस्तयः गुरूणि वासांसि, सयौवनाः अबलाः च जनस्य सेव्यतां प्रयान्ति।

व्याख्या— अत्र काले= अस्मिन् समये, निरुद्धवातायनमन्दिरोदरम्= निरुद्धानि= पिहितानि, वातायनानि= गवाक्षमार्गाः यस्याऽसौ तथाविधस्य, मन्दिरस्य= गृहस्य, उदरम्= आभ्यन्तरो भागः, हुताशनः= हुतमश्नातीति हि हुताशनशब्दस्य व्युत्पत्तिः, हुताशनः= अग्निः, भानुमतः= सूर्यस्य, गभस्तयः= रश्मयः, गुरूणिवस्त्राणि= स्थूलानि वासांसि सयौवनाः= यौवनने= युवावस्थया सहिताः अबलाः=

रमण्यश्च जनस्य= पुरुषस्य कृते, सेव्यताम्= सेवनीयताम्, यान्ति= प्राप्नुवन्ति। अस्मिन् शिशिरकाले एतेषामेव वस्तूनां सेवनं सुखप्रदं भवति पुरुषेभ्य इति भावः।

साहित्यिक विशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके उपजाति वृत्तम् (२) शिशिरे पुरुषेभ्यः सेवनीयानां वस्तूनां निर्देशः (३) सम्भोगशृङ्गारस्य वर्णनम् (४) अल्पसमासवती संघटना (५) वैदर्भी रीतिश्च।

समासः— निरुद्धवातायनमन्दिरोदरम् निरूद्धं वातायनं यस्याऽसौ तथाविधम्= (ब० ब्री०) निरुद्धवातायनं च तत् मन्दिरम् निरुद्धवातायनमन्दिरम् (कर्मधारयः) तस्योदरम्= निरुद्धवातायनमन्दिरोदरम् (ष० त० पु०)

हिन्दीशब्दार्थ— अत्र काले= इस समय, निरुद्धवातायनमन्दिरोदरम्= बन्द खिड़कियों वाले भवन का आभ्यन्तरभाग, हुताशनः= अग्नि, भानुमतः= सूर्य की, गभस्तयः= किरणें, गुरूणि= मोटे, वासांसि= वस्त्र तथा, सयौवनाः= जवान, अबलाः= रमणियाँ जनस्य= लोगों के लिए, सेव्यताम्= सेवनीय, प्रयान्ति= होती हैं।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिवद्ध वक्ता अपनी प्रियतमा के समक्ष शिशिर ऋतु का वर्णन करते हुए कहता है कि इस समय लोग अपने घरों की खिड़कियों के दरवाजों को बन्द रखते हैं। वे उसे खुला नहीं छोड़ते। वे आग तथा सूर्य की किरणों का सेवन करते हैं। इस समय चन्द्रमा की किरणें अच्छी नही लगतीं; अपितु सूर्य की ही किरणें सुखप्रद प्रतीत होती हैं। कामी पुरुष युवती स्त्रियों का सेवन करते हैं। इस तरह विगत ऋतुओं की अपेक्षा इस ऋतु में लोगों का स्वभाव ही बदल गया है। वे पतले वस्त्र को धारण न करके मोटे वस्त्रों को ही पहनते हैं, क्योंकि इस समय वैसे ही वस्त्र सुखप्रद प्रतीत होते हैं।

भावार्थ— इस समय लोग बन्द खिड़कियों वाले गृह, आग, सूर्य की किरणों, मोटे वस्त्र तथा युवती स्त्रियों का ही सेवन करते हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ- (१) इस श्लोक में उपजाति वृत्त है (२) जाड़े के दिनों में युवक पुरुषों के लिए सेवनीय वस्तुओं का वर्णन है (३) सम्भोग शृंगार के विभावों का वर्णन है, (४) अल्पसमासवती संघटना है (५) वैदर्भी रीति (६) तथा माधुर्य एवं प्रसाद नामक गुण हैं।

न चन्दनं चन्द्रमरीचिशीतलं न हर्म्यपृष्ठं शरदिन्दुनिर्मलम्।
न वायवः सान्द्रतुषारशीतला जनस्य चित्तं रमयन्ति साम्प्रतम्।। ३।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ- अस्मिञ्छ्लोके महाकविः कालिदासः शिशिरर्तौ परित्याज्यानां प्रतिकूलप्रतीयमानानां त्रयाणां वस्तूनां वर्णनं करोति। तानि च वस्तूनि सन्ति (१) चन्द्रमरीचिशीतलं चन्दनम्, (२) शरदिन्दुवन्निर्मलं हर्म्यपृष्ठतलम् (३) सान्द्रतुषार-शीतला वायवश्च।

अन्वयः— साम्प्रतं चन्द्रमरीचिशीतलं चन्दनं न, शरदिन्दुनिर्मलं हर्म्यपृष्ठं न, सान्द्रतुषारशीतलाः वायवः जनस्य चितम् न रमयन्ति।

व्याख्या— साम्प्रतम्= अस्मिन् शिशिरर्तौ, चन्द्रमरीचिशीतलम्- चन्द्रस्य=

इन्दोः, मरीचिभिः= चन्द्रिकाभिः शीतलम्= शीतलतां गतम्, अथवा चन्द्रमरीचिवत् शीतलम्, चन्दनम्= मलयजं न= नहि, शरदिन्दुनिर्मलम्= शरदः= शरत्कालस्य, इन्दुः= चन्द्रमाः, तद्वत् निर्मलम्= स्वच्छम् हर्म्यपृष्ठम्= प्रासादपृष्ठतलम् न= नहि, सान्द्रतुषारशीतलाः= सान्द्रम्= सघनञ्चेदम् तुषारम्= तुहिनम्, तुषारं तुहिनं हिमम् इत्यमरः तेन शीतलाः= शैत्यावहाः, वायवः= पवनाः, न= नहि, जनस्य= जनसमूहस्य, चित्तम्= अन्तः करणम्, ग्रीष्मकालवत् रमयन्ति= सुखयन्ति। अतएव ते साम्प्रतमेतेषां वस्तूनां परित्यागमेव कुर्वन्ति।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके उपजाति वृत्तम् (२) शिशिरर्तौ, परित्याज्यानां वस्तूनां वर्णनम् (३) उपमालंकारः (४) अल्पसमासवती संघटना (५) वैदर्भी रीतिः, (६) प्रसादाख्यो गुणश्च।।

समासः— चन्द्रमरीचिशीतलम्= चन्द्रस्य मरीचयः चन्द्रमरीचयः (ष० त० पु०) तद्वत्शीतलम्= चन्द्रमरीचिशीतलम् (उपमितः समासः) शरदिन्दुनिर्मलम्= शरदः इन्दुः शरदिन्दुः। (ष० त० पु०) तद्वन्निर्मलम्= शरदिन्दुनिर्मलम् (उपमितसमासः) हर्म्यपृष्ठम्= हर्म्यस्य पृष्ठम् (ष० त० पु) सान्द्रतुषारशीतलाः= सान्द्रं चेदं तुषरम्= सान्द्रतुषारम् (कर्मधारयः) तेन शीतलाः (तृ० त० पु०)

हिन्दीशब्दार्थ— साम्प्रतम्= इस समय, चन्द्रमरीचिशीतलम्= चन्द्रमा की किरणों के समान शीतल, चन्दनं= न तो चन्दन, शरदिन्दुनिर्मलम्= शरत् कालीन चन्द्रमा के समान स्वच्छ, हर्म्यपृष्ठं न= न तो भवनों के छत, सान्द्रतुषारशीतलाः= घनी बर्फ के समान ठंढी, वायवः= न तो हवाएँ, जनस्य= लोगों के, चित्तम्= अन्तःकरण को, रमयन्तिः= आकर्षित करती हैं।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिवद्ध वक्ता अपनी प्रियतमा को बतलाता है कि इस समय चन्द्रमा की किरणों के समान शीतल चन्दन का लेप अच्छा नहीं लगता है और न तो शरत् कालीन चन्द्रमा के समान स्वच्छ भवनों के छतों पर रात्रि में शयन करना ही सुखद प्रतीत होता। बहुत अधिक ठंढी-ठंढी हवाएँ भी इस समय सुखद नही प्रतीत होती हैं। इन सभी वस्तुओं से तो ग्रीष्म आदि ऋतुओं में सुख मिलता है, इस शिशिर ऋतु में ये वस्तुएँ लोगों के चित्ताकर्षण का कार्य नहीं कर पाती हैं।

भावार्थ— इस समय चन्द्रमा की किरणों के समान शीतल चन्दन, शरत् कालीन चन्द्रमा के समान स्वच्छ भवनों के छत तथा वर्फीली ठढी हवाएँ लोगों के चित्त का आकर्षण नहीं करती हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में उपजाति वृत्त (२) उपमालंकार (३) सम्भोग शृंगार के विभावों का वर्णन (४) अल्प समास वती संघटना (५) वैदर्भी रीति और (६) प्रसाद गुण के सद्भाव हैं।

तुषारसङ्घातनिपातशीतलाः शशाङ्कभाभिः शिशिरीकृताः पुनः।
विपाण्डुतारागणजिह्मभूषिताः जनस्य सेव्या न भवन्ति रात्रयः।। ४।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके कविनिवद्धो वक्ता स्वप्रियतमायाः समक्षं

शिशिरकालस्य वर्णनं कुर्वन् वक्ति यत् अस्मिन् काले कामिनो जनाः रात्रीणां सेवनं नहि कुर्वन्ति। यतः इदानी तुषारसमूहपातेन ताः अतीव शीतलाः भवन्ति, तासां शैत्यं वर्धते। अतएव स्वच्छाकाशे स्फुरिततारासमूहवन्धुरा अपि रात्रयः कामिजनानां कृते सेवनीया नहि भवन्ति।

अन्वयः— तुषारसङ्घातनिपातशीतलाः पुनः शशाङ्कभाभिः शिशिरीकृताः विपण्डुतारागणजिह्मभूषिताः रात्रयः जनस्य सेव्याः न भवन्ति।

व्याख्या— तुषारसंघातनिपातशीतलाः तुषाराणाम्= हिमानां यो हि संघातः= समूहः तस्य निपातेन= पतनेन शीतलाःशीतलतां गताः, पुनः= भूयः शशांकभाभिः= शशांकस्य= चन्द्रमसः, भाभिः= कान्तिभिः, शिशिरीकृताः= शीतलीकृताः, विपाण्डु-तारागणजिह्मभूषिताः विपाण्डूनाम्= पीतवर्णानाम्, ताराणाम्= नक्षत्राणां गणः= समूहः, तेन जिह्मतया= वक्रतया भूषिताः= समलंकृताः, रात्रयः= विभावर्यः जनस्य= पुरुषस्य सेव्याः= सेवनीयाः, न= नहि भवन्ति= जायन्ते। शिशिरकाले कश्चनापि पुरुषः रात्रौ गृहाद् वहिः नहि निर्गच्छतीतिभावः।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके उपजाति वृत्तम् (२) समासोक्तिर-लंकारः (३) मध्यमसमासवती संघटना (४) प्रसादाख्यो गुणः (५) वैदर्भी रीतिश्च सन्ति।

समासः— तुषारसंघात निपातशीतलाः= तुषारस्य संघातः= तुषारसंघातः (ष० त० पु०) तस्य निपातः= तुषारसंघातनिपातः (ष० त० पु०) तेन शीतलाः यास्ताः (ब० ब्री०) शशाङ्कभाभिः= शशाङ्कस्य भाभिः (ष० त० पु०) विपाण्डुतारागणजि-ह्मभूषिताः विपाण्डवः ताराः विपाण्डुताराः (कर्मधारयः) तासां गणः= विपाण्डुतारागणः (ष० त० पु०) तेन जिह्मम् भूषिताः यास्ताः (ब० ब्री०)

हिन्दीशब्दार्थ— तुषारसंघातनिपातशीतलाः= बर्फ समूह के गिरने से ठंढी पुनः= फिर, शशाङ्कभाभिः= चन्द्रमा की किरणों से, शिशिरीकृताः= और ठंढी बनायी गयी, विपाण्डुतारागणजिह्मभूषिताः= पीले तारों के समूहं से अत्यन्त आकर्षक ढंग से सजायी गयी, रात्रयः= रात्रियाँ, जनस्य= लोगों के लिए, सेव्याः= सेवनीय, न भवन्ति= नहीं होती हैं।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिवद्ध वक्ता अपनी प्रियतमा के समक्ष शिशिर ऋतु का वर्णन करते हुए कह रहा है कि यद्यपि इस समय की रातें पीले-पीले तारों के समूह से सजी रहती हैं, फिर भी कोई उन रात्रियों में घर से बाहर नहीं निकलता है। इसका कारण यह है कि एक तो बहुत अधिक ओस पड़ने के कारण रातें बहुत अधिक ठंढी रहती हैं और चन्द्रमा की शीतल किरणों के कारण उसकी ठंढी अपनी चरम सीमा पर पहुँच जाती है। अतएव अत्यन्त मनोहर भी ये रात्रियाँ मनोरञ्जन नहीं कर पाती हैं।

भावार्थ— तुषारपात के कारण शीतल तथा चन्द्रमा की किरणों से और ठंढी बनायी गयी तथा पीले तारों के समूह से अत्यन्त आकर्षक ढंग से सजी हुई भी रात्रियाँ लोगों के लिए इस समय सेवनीय नहीं बन पाती हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में उपजाति वृत्त (२) समासोक्ति

अलंकार (३) अल्प समासवती संघटना, (४) वैदर्भी रीति तथा (५) प्रसाद नामक गुण है।

गृहीतताम्बूलविलेपनस्रजः सुरासवामोदितवक्त्रपङ्कजाः।
प्रकामकालागुरुधूपवासितं विशन्ति शय्यागृहमुत्सुकाः स्त्रियः।। ५।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके कविनिवद्धो वक्ता स्वप्रियतमायाः समक्षं शिशिरर्तोः वर्णनं कुर्वन् वक्ति यत् साम्प्रतं कामिन्यः ताम्बूलसेवनं कुर्वन्ति, विलेपनीयद्रव्याणां लेपनं कुर्वन्ति, मालाधारणं च कुर्वन्ति। तासां मुखपंकजं सुरासवादिकानां सुगन्धिना सुगन्धितं भवति। एतादृशस्ताः कालागुरुधूपितशयनकक्षं सोत्साहं प्रविशन्ति।

अन्वयः— गृहीतताम्बूलविलेपनस्रजः सुरासवामोदितवक्त्रपङ्कजाः स्त्रियः प्रकाम-कालागुरुधूपवासितं शय्यागृहं उत्सुकाः विशन्ति।

व्याख्या— गृहीतताम्बूलविलेपनस्रजः= ताम्बूलञ्च= नागवल्लीदलञ्च, विले-पनञ्च= मृगमदादिकं च, स्रक् च= माला च, ताम्बूलविलेपनस्रजः गृहीताः= धारणं कृताः ताम्बूलविलेपनस्रजः याभिस्ताः सुखासवामोदितवक्त्रपंकजाः= सुखासवेन= आनन्दप्रदेन मधुपानेन, आमोदितम्= सुगन्धि वक्त्रपंकजम्= मुखकमलं यथेष्टम्, कालागुरोः= कृष्णागुरोः धूपेन, वासितम्= सुगन्धितं कृतम्, शय्यागृहम्= शयनकक्षम्, विशन्ति= प्रविशन्ति।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके उपजाति वृत्तम् (२) वक्त्रपङ्कजमिति पदे रूपकालङ्कारः (३) सम्भोगशृंगाराभिव्यक्तिः (४) मध्यसमासवती संघटना (५) वैदर्भी रीतिः (६) माधुर्यप्रसादाख्यौ गुणौ च सन्ति।।

समासः— गृहीतताम्बूलविलेपनस्रजः= ताम्बूलञ्च विलेपनञ्च स्र क्च= ता-म्बूविलेपनस्रजः (द्वन्द्वः) गृहीताः ताम्बूलविलेपनस्रजो याभिस्ताः= गृहीत-ताम्बूलविलेपनस्रजः। (ब० ब्री०) सुखासवामोदितवक्त्रपङ्कजाः= सुखश्चासौ आसवः सुखासवः (कर्मधारयः) सुखासवेन आमोदितं वक्त्रपङ्कजं यासां ताः= सुखासवामो-दितवक्त्रपङ्कजाः (ब० ब्री०) प्रकामकालागुरुधूपवासितं= कालागुरोः धूपम्= कालागुरु-धूपम् (ष० त० पु०) प्रकामं कालागुरुधूपेन वासितं यत् तत्= प्रकामकालागुरु-धूपवासितम् (ब० ब्री०) शय्यागृहम्= शय्यायाःगृहम् (ष० त० पु)।

हिन्दीशब्दार्थ— गृहीतताम्बूलविलेपनस्रजः= ताम्बूल, कस्तूरी आदि विलेपनद्रव्य तथा मालाधारण करने वाली, सुखासवामोदितवक्त्रपंकजाः= सुखप्रद मदिरा के गन्ध से सुगन्धित मुखकमल वाली, स्त्रियः= रमणियाँ, प्रकामकालागुरुधूपवासितम्= कालागुरु के धूप से खूब अच्छी तरह से सुगन्धित, शय्यागृहम्= शयन कक्ष में, उत्सुकाः= उत्सुक होकर विशन्ति= प्रवेश करती हैं।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिवद्ध वंक्ता शिशिर ऋतु का वर्णन करते हुए अपनी प्रियतमा से कहता है कि इस समय ताम्बूल, कस्तूरी आदि विलेपन द्रव्य तथा माला को धारण करने वाली तथा सुखप्रद मदिरा का पान करने के कारण

जिनका मुखकमल सुगन्धित है, इस प्रकार की रमणियाँ कालागुरु के धूप से खूब अच्छी तरह से सुगन्धित बनाये गये अपने शयन कक्ष में अपने पतियों के साथ रमण करने की उत्कण्ठा से उत्कण्ठित होकर प्रवेश कर रही हैं।

भावार्थ— पान, कस्तूरी आदि विलेपनद्रव्य तथ माला को धारण करने वाली सुखप्रद मदिरा की सुगन्धि से सुगन्धित मुख वाली रमणियाँ कालागुरु के धूप से अच्छी तरह से सुगन्धित शयनगृह में सोत्साह प्रवेश करती हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में उपजाति वृत्त (२) रूपकालङ्कार (३) सम्भोग शृंगार की अभिव्यक्ति (४) मध्यम समास वाली संघटना (५) वैदर्भी रीति एवं (६) माधुर्य तथा प्रसाद गुण के सद्भाव हैं।

कृतापराधान् बहुशोऽपि तर्जितान् सवेपथून् साध्वसलुप्तचेतसः।
निरीक्ष्य भर्तृन्सुरताभिलाषिणः स्त्रियोऽपराधान्समदा विसस्मरुः।। ६।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके महाकविः कालिदासः शिशिरर्तोः वर्णनं कुर्वन् वक्ति यत् साम्प्रतं प्रमदाः सुरताभिलाषिण्यः संजाताः। अतएव ताः बहुशः कृतापाराधान् लज्जितान् स्वपतीन् सुरताभिलाषिणः वीक्ष्य तेषामपराधं विस्मरन्ति।

अन्वयः— समदाः- स्त्रियः कृतापराधान् बहुशः तर्जितान् अपि सवेपथून् साध्वसलुप्तचेतसः भर्तृन् सुरताभिलाषिणः निरीक्ष्य अपराधान् विसस्मरुः।

व्याख्या— समदाः= मदेन सहिताः= मदाञ्चिताः, स्त्रियः= कामिन्यः, सुरताभिलाषिणः= सुरतम्= कामक्रीडाम्, अभिलषन्ति ये ते तथाविधान्, कृतापराधान्= कृतः= विहितः। अपराधः= परस्त्रीगमनादिरूपः यैस्तथाविधान्, बहुशः= अनेकधा, तर्जितान्= भर्त्सितान्, सवेपथून्= वेपथुना सहितान्= कम्पमानानित्यर्थः, साध्वसलुप्तचेतसः= साध्वसेन= ह्रिया, लुप्तानि= विलुप्तानि, चेतांसि= अन्तः करणानि येषां ते तथा विधान्, किं कर्तव्यविमूढानिति यावत् भर्तृन्= स्वपतीन्, वीक्ष्य= विलोक्य, तेषाम्, अपराधान्= विसस्मरुः= विस्मरणं चक्रुः।

साहित्यिक विशेषताः— (१) अस्मिन् श्लोके उपजाति वृत्तम् (२) सम्भोगशृंगार वर्णनम् (३) अल्पसमासवती वृत्तिः (४) माधुर्यप्रसादाख्यौ गुणौ, (५) वैदर्भी रीतिश्च सन्ति।

समासः— सुरताभिलाषिणः= सुरतस्य अभिलाषिणः (ष० त० पु०) कृतापराधान्= कृतः अपराधो यैस्ते तथाविधान् (ब० ब्री०) साध्वसलुप्तचेतसः= साध्वसेन लुप्तानि चेतांसि येषां ते तथाविधान् (ब० ब्री०)

हिन्दी शब्दार्थ— समदाः= मदमत स्त्रियः= स्त्रियाँ, कृतापराधान्= अपराधी बहुशः= बहुत अधिक, तर्जितान्= डाँटे गये, सवेपथून्= काँपते हुए, साध्वसलुप्तचेतसः= भय के कारण जो संज्ञा शून्य हो गए हैं; तथा सुरताभिलाषिणः= कामक्रीडा करना चाहने वाले, भर्तृन्= अपने पतियों को, निरीक्ष्य= देखकर अपराधान्= उनके अपराधों को; विसस्मरुः= भूल गयीं।

उपस्थापन— इस श्लोक में कवि निवद्ध वक्ता शिशिर ऋतु का वर्णन करते

हुए अपनी प्रियतमा से कहता है कि इस ऋतु में मदमत्त नारियाँ, बार-बार परस्त्री गमन आदि का अपराध करने वाले, तथा उस अपराध के कारण अपनी प्रियतमाओं के द्वारा बहुत अधिक डाँटे गये, भय के कारण काँपने वाले अपने पतियों को कामक्रीडा की अभिलाषा से युक्त देखकर उनके अपराधों को भूल जाती हैं और उनसे स्नेह करने लग जाती हैं।

भावार्थ– मदमत्त नारियाँ अपराध करने वाले, बहुत अधिक डाँटे गए भयभीत होने के करण निः संज्ञ एवं काँपने वाले अपने कामक्रीडाभिलाषी पतियों को देखकर उनके अपराधों को भूल जाती हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ– (१) इस श्लोक में उपजाति वृत्त (२) सम्भोग शृंगार का वर्णन (३) मध्यम समास वाली संघटना (४) वैदर्भी रीति एवं (५) माधुर्य एवं प्रसाद गुण के सद्भाव हैं।

प्रकामकामैर्युवभिः सुनिर्दयं निशासु दीर्घास्वभिरामिताश्चिरम्।
भ्रमन्ति मन्दं श्रमखेदितोरसः क्षपावसाने नवयौवनाः स्त्रियः।। ७।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ– अस्मिञ्छ्लोके कविनिवद्धो वक्ता स्वप्रियतमायाः समक्षं शिशिरर्तोः वर्णनं कुर्वन् वक्ति यदेतस्मिन् काले रात्र्यो दीर्घाः भवन्ति। तासु रात्रिषु कामुकाः पुरुषाः कामिनीभिः साकं दीर्घकालपर्यन्तं रमन्ते। तेन तासां हृदयेषु रतिश्रमो जायते। अतएव खेदखिन्नास्ताः प्रातः काले मन्दं-मन्दं सञ्चरन्ति।

अन्वय– दीर्घासु निशासु प्रकामकामैः युवभिः चिरम् सुनिर्दयम् अभिरामिताः श्रमखेदितोरसः नवयौवनाः स्त्रियः क्षपावसाने मन्दं भ्रमन्ति।

व्याख्या– प्रकामकामैः= प्रकामः= प्रकृष्टः अत्युत्कट इति भावः, कामः= कामवेगो येषां तैः युवभिः= युवकैः, दीर्घासु= आयतासु, निशासु= रत्रिषु सुनिर्दयम्= अतिशय निर्दयतापूर्वकम् अतिकर्कशमिति भावः, चिरम्= दीर्घकालपर्यन्तम्, अभिरामिताः= रमणंकृताः, नवयौवनाः= नवीनयौवनवत्यः श्रमखेदितोरसः= श्रमेण= रतिजन्यपरि- श्रमेण, खेदितम्= श्रान्तम् उरः= वक्षः स्थलं यासां तथाविधाः, स्त्रियः= नार्यः, क्षपावसने= क्षपायाः= रात्रेः, अवसाने= समाप्तौ प्रातः काले इत्यर्थः, मन्दम्= शनैः शनैः, भ्रमन्ति= भ्रमणं कुर्वन्ति।

साहित्यिकविशेषताः– (१) अस्मिञ्छ्लोके उपजाति वृत्तम्, (२) सम्भोगशृं- गारवर्णनम्, (३) अल्पसमासवती संघटना (४) वैदर्भी रीतिः (५) माधुर्यप्रसादाख्यौ गुणौ च सन्ति।

समासः– प्रकामकामैः= प्रकामः कामो येषां तैः (ब० ब्री०) नवयौवनाः= नवं यौवनं यासां ताः (ब० ब्री०) क्षपावसाने क्षपायाः अवसाने (ष० त० पु०)

हिन्दीशब्दार्थ– प्रकामकामैः= अत्यन्त उत्कटकाम के वेग वाले, युवभिः= युवकों द्वारा, दीर्घासु= लम्बी-लम्बी, निशासु= रात्रियों में, सुनिर्दयम्= अत्यन्त निर्दयतापूर्वक, चिरम्= दीर्घकाल तक, अभिरामिताः= रमण करायी गयीं, नवयौवनाः= नवीन युवतियाँ, श्रमखेदितोरसः= रतिजन्य श्रम से जिनका वक्षः स्थल

थक गया है ऐसी, स्त्रियः= स्त्रियाँ, क्षपावसाने= रात्रि के अन्त में,मन्दम्= शनैः शनैः; भ्रमन्ति= संचरण कर रही हैं।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिवद्ध वक्ता अपनी प्रियतमा के समक्ष शिशिर ऋतु का वर्णन करते हुए कहता है कि शिशिर ऋतु की रातें लम्बी होती हैं। इन रातों में अत्युत्कट काम के वेग वाले युवक-युवतियों के साथ दीर्घकाल तक रमण करते हैं। उससे उनका वक्षस्थल श्रान्त हो जाता है वे अत्यन्त थकान का अनुभव करती हैं। अतएव वे प्रातः काल, धीरे-धीरे अलसाई हुयी सञ्चरण करती हैं।

भावार्थ— अत्यन्त कामुक युवकों द्वारा लम्बी-लम्बी रातों में दीर्घकाल तक रमण करने से जिन युवतियाँ का वक्षःस्थल रतिजन्य श्रम से खिन्न हो जाता है, वे प्रातः काल में धीरे-धीरे सञ्चरण करती हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में उपजाति वृत्त, (२) सम्भोग शृंगार का वर्णन, (३) अल्प समास वाली संघटना, (४) वैदर्भी रीति और (५) माधुर्य तथा प्रसाद गुण विद्यमान हैं।

मनोज्ञकूर्पासकपीडितस्तनाः सरागकौशेयकभूषितोरवः।
निवेशितान्तः कुसुमैः शिरोरुहैर्विभूषयन्तीव हिमागमं स्त्रियः।। ८।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके कविनिवद्धो वक्ता स्वप्रियतमायाः समक्षं शिशिरर्तोः वर्णनमुपस्थापयन् वक्ति यदस्मिन् ऋतौ रमण्यः मनोज्ञान् कूर्पासकान्-धारयन्ति। तासां वक्षःस्थलं मनोज्ञेन क्षौमवस्त्रेण समलंकृतं भवति। ताः स्वकेशकलापम् कुसुमैः भूषयन्ति। एतेनाभाति यत् ताः हिमस्य स्वागतोत्सवं सम्मानयन्तीति।

अन्वयः— मनोज्ञकूर्पासकपीडितस्तनाः सरागकौशेयकभूषितोरवः स्त्रियः निवेशितान्तः कुसुमैः हिमागमं विभूषयन्ति इव।

व्याख्याः— मनोज्ञकूर्पासकपीडितस्तनाः= मनोज्ञेन= मनोहरेण, कूर्पासकेन= कञ्चुक्या, पीडितानि= परिमर्दितानि स्तनानि= वक्षोजानि यासां ताः= सराग कौशेयकभूषितोरवः= सरागेण= रंगरञ्जितेन कौशेयकेन= क्षौमवस्त्रेण, भूषितम्= समलंकृतम्, उरवः= कटिप्रदेशाः यासां ताः तथाविधाः, स्त्रियः= रमण्यः, निवेशितान्तः कुसुमैः शिरोरुहैः= निवेशितानि= प्रवेशितानिः, अन्तः= अन्तर्भागे, कुसुमानि= पुष्पाणि येषां तथाविधैः, शिरोरुहैः= केशकलापैः, हिमागमम्= शिशिरर्तोः आगमनम्, भूषयन्तीव= समलंकुर्वन्तीति मन्ये।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके उपजाति वृत्तम् (२) उत्प्रेक्षालंकारः (३) सम्भोगशृंगारविभाववर्णनम् (४) मध्यमसमासवती संघटना (५) वैदर्भी रीतिः (६) माधुर्यप्रसादाख्यौगुणौ च सन्ति।

समासः— मनोज्ञकूर्पासकपीडितस्तनाः= मनोज्ञश्चासौ कूर्पासकः= मनोज्ञकूर्पासकः (कर्मधारयः) तेन पीडितानि स्तनानि यासां ताः। सरागकौशेयकभूषितोरवः सरागश्चासौ कौशेयकः= सरागकौशेयकः (कर्मधारयः) तेन भूषितम् ऊरवः यासां

ताः (ब० ब्री०) निवेशितान्तःकुसुमैः= निवेशितानि अन्तः कुसुमानि येषां तैः (ब० ब्री०) हिमागमम= हिमस्य आगमम् (ष० त० पु०)

हिन्दी शब्दार्थ– मनोज्ञकूर्पासकपीडितस्तनाः= मनोहर चोली से जिनके स्तन कसे हुए हैं, सरागकौशेयकभूषितोरसः= रंगीन रेशमी वस्त्र से जिनका कटिप्रदेश सजा हुआ है। निवेशितान्तः कुसुमैः= जिनके भीतर फूल लगाये गए हैं, ऐसे शिरोरुहैः= बालों के द्वारा, स्त्रियः= स्त्रियाँ, हिमागमम्= शिशिर ऋतु के आगमन को भूषयन्तीव= मानों सजा रही हैं।

उपस्थापन– इस श्लोक में कविनिवद्ध वक्ता अपनी प्रियतमा के समक्ष शिशिर ऋतु का वर्णन करते हुए कहता है कि इस समय रमणियाँ मनोहर चोली से अपने स्तनों को बाँधती हैं। वे अपने कटिप्रदेश को रंगीन रेशमी वस्त्र से सजाती हैं तथा अपने बालों को सजाने के लिए उसके भीतर फूलों को लगाती हैं। उनका यह कार्य ऐसा लगता है कि मानो वे इस शिशिर ऋतु के आगमन की बेला पर उसका स्वागत करने के लिए इस तरह से अपने को सजाती हों।

भावार्थ– मनोहर चोली से अपने स्तनों को बाँधने वाली तथा रंगीन रेशमी साड़ी से अपने कटिप्रदेश को सजाने वाली रमणियाँ मानों अपने पुष्पों से सुशोभित केशपाश के द्वारा शिशिर ऋतु के आगमन को सजा रही हों।

साहित्यिक विशेषता– (१) इस श्लोक में उपजाति वृत्त (२) उत्प्रेक्षालंकार (३) सम्भोग शृंगार के विभावों का वर्णन, (४) वैदर्भी रीति (५) अल्पसामास वाली संघटना तथा (६) प्रसाद एवं माधुर्य गुण के सद्भाव हैं।

पयोधरैः कुंकुमरागपिञ्जरैः सुखोपसेव्यैर्नवयौवनोष्मभिः।
विलासिनीभिः परिपीडितोरसः स्वपन्ति शीतं परिभूय कामिनः।। ९।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ– अस्मिञ्छ्लोके महाकविः कालिदासो वर्णयति यत् अस्मिन् शिशिरर्तौ कामिपुरुषाः कामिनीनां स्तनानामालिङ्गनं कृत्वा शैत्यं तिरस्कृत्य सुखपूर्वकं शेरते। कामिनीनां स्तनानि कुंकुमरागेण पिङ्गतां गतानि, नवयौवनस्योष्मभिः समन्वितानि, सुखपूर्वकमुपभोग्यानि च सन्ति।

अन्वयः– कुंकुमरागपिञ्जरैः सुखोपसेव्यैः नवयौवनोष्मभिः पयोधरैः विलासिनीभिः परिपीडितोरसः कामिनः शीतं परिभूय स्वपन्ति।

व्याख्या– कुंकुमरागपिञ्जरैः= कुंकुमस्य रागेण= वर्णेन, पिञ्जरैः= पीतवर्णैः, सुखोपसेव्यैः= सुखेन= सुखपूर्वकम्, उपसेव्यैः= सेवनीयैः, नवयौवनोष्मभिः नवयौवनस्य= नवीनायाः युवावस्थायाः उष्मभिः पयोधरैः= स्तनैः साधनतां गतैः विलासिनीभिः= कामिनीभिः, परिपीडितोरसः= परिपीडितम्= आलिङ्गितम् उरः= वक्षःस्थलं, येषां ते तथा भूताः कामिनः= युवानः, शीतम्= शिशिरर्तोः शैत्यम्, परिभूय= अनादृत्य, स्वपन्ति= शयनं कुर्वन्ति। नापहीयतेऽनेन शीतकाले- नास्माकंककिंञ्चिदिति हि तेषां मनीषा।

साहित्यिकविशेषताः– (१) अस्मिञ्छ्लोके उपजाति वृत्तम् (२) सम्भोगशृंगार

वर्णनम् (३) अल्पसमासवती संघटना (४) वैदर्भी रीतिः (५) प्रसादमाधुर्याख्यौ गुणौ च सन्ति।

समासः— कुंकुमरागपिञ्जरैः= कुंकुमस्य रागः= कुंकुमरागः (ष० त० पु०) तेन पिञ्जरा ये ते तैः। (ब० व्री०) सुखोपसेव्यैः= सुखेन उपसेव्या ये ते तैः (ब० व्री०) नवयौवनोष्मभिः= नवयौवनस्योष्मावर्त्तते येषु ते तैः (ब० व्री०)

हिन्दी शब्दार्थ— कुंकुमरागपिञ्जरैः= कुंकुम के रंग से पीले बने हुए, सुखोपसेव्यैः= युवकों द्वारा सुख पूर्वक सेवन किए जाने योग्य, नवयौवनोष्मभिः= नवीन जवानी की गर्मी से युक्त, पयोधरैः= स्तनों वाली, विलासिनीभिः= कामिनियों द्वारा, परिपीडितोरसः= जिनके वक्षः स्थल आलिंगित हैं, इस प्रकार के, कामिनः= कामी पुरुष, शीतम्= ठंढी की, परिभूय= परवाह किये बिना, स्वपन्ति= सोते हैं।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिवद्ध वक्ता शिशिर ऋतु के वैभव का वर्णन करते हुए कहता है कि इस समय कामिनियाँ अपने स्तनों पर कुंकुम लगाती हैं, अतएव उनका स्तन पीला-पीला दिखता है। उनके स्तनों में चूँकि नवीन जवानी की गर्मी है, अतएव वे इस ऋतु में सुखपूर्वक उपभोग किए जाने योग्य हैं। अपने इस प्रकार के स्तनों के द्वारा कामिनियाँ कामी पुरुषों के वक्षःस्थल का आलिङ्गन किए रहती हैं, अतएव उनके स्तनों की गर्मी का अनुभव करते रहने के कारण कामी पुरुष सर्दी की परवाह किए बिना आराम से सोते हैं।

भावार्थ— कुंकुम के रंग से पीले तथा नवीन जवानी की गर्मी से युक्त होने के कारण सुखपूर्वक उपभोग करने योग्य स्तनों से कामिनियों द्वारा आलिंगित कामी पुरुष सर्दी की परवाह न करके सोते हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में उपजाति वृत्त (२) सम्भोग शृङ्गार का वर्णन (३) वैदर्भी रीति (४) अल्पसमास वाली संघटना तथा (५) माधुर्य एवं प्रसाद गुण के सद्भाव हैं।

सुगन्धिनिःश्वासविकम्पितोत्पलं मनोहरं कामरतिप्रबोधकम्।
निशासु हृष्टाः सह काभिभिः स्त्रियः पिबन्ति मद्यं मदनीयमुत्तमम्।।१०।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके कविनिवद्धो वक्ता स्वप्रियतमायाः सविधे शिशिरर्तोः वर्णनं कुर्वन् वक्ति यदस्मिनृतौ स्त्रियः रात्रिषु तथाविधस्य मदस्य पानं कुर्वन्ति यदुत्तमं मादकं भवति कामरतेश्च प्रबोधकम् भवति। ताः कामिभिः पुरुषैः साकं प्रसन्नाः सत्यः मदपानं कुर्वन्ति।

अन्वयः— सुगन्धिनिःश्वासविकम्पितोत्पलं मनोहरं कामरतिप्रबोधकम् उत्तमम् मदनीयं मद्यं स्त्रियः निशासु कामिमिः सह हृष्टाः पिबन्ति।

व्याख्या— स्त्रियः= कामिन्यः, निशासु= रत्रिषु कामिभिः सह= कमिपुरुषैः= साकम् हृष्टाः= प्रसन्नाः सत्यः, सुगन्धिनिःश्वासविकम्पितोत्पलम्= सुगन्धिना= सुगन्धयुक्तेन, निःश्वासेन,= निश्वासवायुना, विकम्पितम्= वेपितम्, उत्पलम्= नीलकमलं यस्य, स तादृशम् मनोहरम्= मनोज्ञम् कामरतिप्रबोधकम्= कामरतेः=

कामस्नेहस्य, प्रबोधकम्= उद्बोधकम् मदनीयम्= मदमत्तकरम्, उत्तमम्= उत्तम कोटिकम्, मद्यम्= आसवम्, पिबन्ति।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके उपजाति वृत्तम् (२) सम्भोगशृङ्गार वर्णनम् (३) कामिनीनां क्रियावर्णनम् (४) अल्पसमासवती संघटना (५) वैदर्भी रीतिः (६) माधुर्यप्रसादाख्यौ गुणौ च।

समासः— सुगन्धिनिःश्वासविकम्पितोत्पलम्= सुगन्धिश्चासौ निःश्वासः= सुगन्धिनिःश्वासः (कर्मधारयः) तेन विकम्पितम् उत्पलम् यस्य तत् (ब० ब्री०) कामरतिप्रबोधकम्= कामस्य रतिः कामरतिः (ष० त० पु०) तस्य प्रबोधकम् यत् तत् (ब० ब्री०)

हिन्दी शब्दार्थ— स्त्रियः= रमणियाँ, निशासु= रातों को, कामिभिः सह= कामी पुरुषों के साथ, हृष्टाः= प्रसन्न होकर, सुगन्धिनिःश्वासविकम्पितोत्पलम्= सुगन्धित निःश्वास से जिसमें पड़े हुए नीलकमल काँपते हैं, इस प्रकार का, मनोहरम्= मनोज्ञ, कामरतिप्रबोधकम्= काम की इच्छा को उद्दीप्त करने वाली, मदनीयम्= मदमत्त बना देने वाली, उत्तमम्= उत्तम कोटि की, मद्यम्= मदिरा को, पिबन्ति= पीती हैं।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिवद्ध वक्ता अपनी प्रियतमा के समक्ष शिशिर ऋतु का वर्णन करते हुए कह रहा है कि इस ऋतु में कामिनियाँ अपने पतियों के साथ प्रसन्न मन से उस उत्तम कोटि की मदिरा का पान करती हैं जो मदमत्त बना देने वाली होती है। उसके पीने से काम की इच्छा उद्दीप्त होती है। पत्नी एवं पति के श्वास से उस मदिरा में पड़े हुए नील कमल काँपते हैं। इस प्रकार की मनोहर मदिरा का वे पान करती हैं।

भावार्थ— रात्रि में रमणियाँ प्रसन्न मन से कामी पुरुषों के साथ उस उत्तम कोटि की तथा काम की इच्छाओं को बढाने वाली मनोहर मदिरा का पान करती हैं जिसमें पड़े हुए नील कमल उनकी सुगन्धित श्वास से काँपते हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में उपजाति वृत्त (२) सम्भोग शृंगार का वर्णन, (३) अल्प समास वाली संघटना (४) वैदर्भी रीति तथा (५) माधुर्य एवं प्रसाद गुण के सद्भाव हैं।

अपगतमदरागा योषिदेका प्रभाते
कृतनिबिडकुचाग्रा पत्युरालिङ्गनेन।
प्रियतमपरिभुक्तं वीक्षमाणा स्वदेहं
व्रजति शयनवासाद्वासमन्यद्धसन्ती।। ११।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके कविनिवद्धो वक्ता कस्याश्चन तथा विधायाः रमण्याः वर्णनं करोति यस्याः मदजन्यो नेत्ररक्तिमा समाप्तो वर्त्तते। प्रभातकाले प्रियतमेन तस्याः गाढालिङ्गनं कृतम्। सा च प्रियतमेनोपभुक्तं स्वकीयं शरीरं वीक्ष्य हसन्ती सती स्वशयनागारात् निस्सृत्य अन्यस्मिन् भवने प्रवेशं करोति।

अन्वयः— प्रभाते अपगतमदरागा पत्युः आलिङ्गनेन कृतनिबिडकुचाग्रा एका योषित् प्रियतमपरिभुक्तं स्वदेहं वीक्षमाणा हसन्ती शयनवासात् अन्यत् वासम् व्रजति।

व्याख्या— अपगतमदरागा अपगतः= समाप्तः मदस्य= मदमत्ततायाः रागः= रक्तिमा यस्याः सा तथाविधा, पत्युः= प्रियतमस्य, आलिङ्गनेन= गाढालिङ्गनेन= गाढालिङ्गनकरणेन कृतनिविडकुचाग्रा= कृतम्= विहितं, निविडम्= अविरलम् कुचयोः= स्तनयोः अग्रम्= अग्रभागो यस्याः सा एतादृशी, एका= कचित्, योषित्= रमणी प्रभाते= प्रातःकाले, स्वदेहम्= स्वकीयं शरीरम्, प्रियतमपरिभुक्तम्= प्रियतमेन= स्वकान्तेन, परिभुक्तम्= उपभुक्तम्, वीक्षमाणा= अवलोकयन्ती, हसन्ती= हासं कुर्वन्ती, शयनवासात्= शयनकक्षात्, अन्यत्= भिन्नम्, वासम्= कक्षम्, व्रजति= याति।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके उपजाति वृत्तम् (२) सम्भोग शृङ्गारात्मकं वर्णनम् (३) अल्पसमासवती संघटना (४) वैदर्भी रीतिः (५) माधुर्यप्रसादाख्यौ गुणौ च सन्ति।

समासः— अपगतमदरागा- मदस्य रागः= मदरागः (ष० त० पु०) अपगतो मदरागो यस्याः सा (ब० ब्री०) कृतनिविडकुचाग्रा- कृतं निविडं कुचयोः अग्रं यस्याः सा (ब० ब्री०) प्रियतमपरिभुक्तम्- प्रियतमेन परिभुक्तःय असौ तम् (ब० ब्री०) शयनवासात्- शयनस्य वासात् (प० त० पु०)

हिन्दीशब्दार्थ— अपगतमदरागा= जिसका मदजन्य राग (आँखों की लालिमा) समाप्त हो गया है, पत्युः= प्रियतम के, आलिङ्गनेन= अलिङ्गन करने के कारण, कृतनिबिडकुचाग्रा= जिसके स्तनों के अग्रभाग विलकुल सटे हुए हैं, ऐसी एका=एक, योषित्= रमणी, प्रभाते= प्रातः काल में, प्रियतमपरिभुक्तम्= प्रियतम के द्वारा उपभुक्त, स्वदेहम्= अपने शरीर को, वीक्षमाणा= देखती हुई और, हसन्ती= हँसती हुई, शयनवासात्= शयन कक्ष से निकल कर, अन्यत्= दूसरे, वासम्= गृह में, व्रजति= जा रही है।

उपस्थापन— इस श्लोक में शिशिर ऋतु के वर्णन के प्रसङ्ग में कविनिवद्ध वक्ता अपनी प्रियतमा को बतलाता है कि एक ऐसी रमणी जिसकी मदिरे की नशा समाप्त हो गयी है, तथा प्रियतम ने उसका इस तरह से गाढालिङ्गन कर रखा है कि उसके स्तनों के अग्रभाग विल्कुल सट गए हैं, वह प्रातः काल में प्रियतम के द्वारा उपभुक्त अपने शरीर को देखकर हँसती हुई, अपने शयनागार से निकलकर दूसरे कमरे में प्रवेश कर रही है।

भावार्थ— प्रियतम के गाढालिङ्गन के कारण जिसके स्तनों के अग्रभाग विल्कुल सट गए हैं, तथा जिसकी आँखों से मद की लाली समाप्त हो गयी है, वह प्रातः काल में प्रियतम के द्वारा उपभुक्त अपने शरीर को देखकर हँसती हुई शयनागार से निकल कर दूसरे भवन में प्रवेश कर रही है।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में उपजाति वृत्त (२) सम्भोग

शृंगारात्मक वर्णन, (३) अल्प समासवाली संघटना (४) वैदर्भी रीति तथा (५) माधुर्य एवं प्रसाद गुण के सद्भाव हैं।

अगुरुसुरभिधूपामोदितं केशपाशं
गलितकुसुममालं कुञ्चिताग्रम्।
त्यजति गुरुनितम्बा निम्नमध्यावसाना
उषसि शयनमन्या कामिनी चारुशोभा।।१२।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके महाकविः कालिदासः मालिनीवृत्तेन द्वारा एकस्याः तथा विधायाः नायिकाया वर्णनमुपस्थापयति यात्यन्तसुन्दरी वर्त्तते। तस्याः मध्यभागो कृशो नितम्बौ च गुरू वर्तेते। सा अगुरुधूपामोदेन सुगन्धितं गलितं कुसुममालं कुन्तलकलापं वितन्वती शयनं परित्यजति प्रातः काले।

अन्वयः— अगुरुसुरभिधूपामोदितं गलितकुसुममालं कुञ्चिताग्रम् केशपाशं वहन्ती गुरुनितम्बा निम्नमध्यावसाना चारुशोभा अन्या कामिनी उषसि शयनम् त्यजति।

व्याख्या— चारुशोभा= चारु= मनोज्ञा शोभा= सौन्दर्यं यस्याः सा तथाविधा निम्नमध्यावसाना= निम्नः= कृशः, मध्यस्य= मध्यभागस्य, अवसानः= अन्तिमो भागो यस्याःसा तथाविधा, कृशकटिप्रदेशवतीति भावः। गुरुनितम्बा= गुरू= पृथुलौ नितम्बौ= जघनौ यस्याः सा तथाविधा, अन्या= काचित्, कामिनी= रमणी, उषसि= प्रातः काले, अगुरुसुरभिधूपामोदितम्= अगुरोः= कालागुरोः, सुरभिणा= सुगन्धितेन, धूपेन, आमोदितम्= सुगन्धितं कृतम् यत तत्। गलितकुसुममालम्= गलिता= पतिता, कुसुमानाम्= माला= स्रक् यस्य तथाविधम्, कुञ्चिताग्रम्= कुञ्चितम्= वक्रतां गतम्, अग्रम्= अग्रभागो यस्य तथाविधम्, केशपाशम्= कुन्तलकलापम्, वहन्ती= धारयन्ती= शयनम्= शय्याम्, त्यजति= जहाति।

साहित्यिक विशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके सन्ति मालिनी वृत्तम्। 'ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोके' इति हि मालिनीलक्षणम्। (२) सम्भोगशृङ्गारानुभाववर्णनम् (३) अल्पसमासवती संघटना (४) वैदर्भी रीतिः (५) माधुर्य प्रसादाख्यौ गुणौ च।

समासः— चारुशोभा= चारुशोभा यस्याः सा तथाविधा (ब० ब्री०) निम्नमध्यावासना= निम्नः मध्यस्यावसानो यस्याः सा (ब० ब्री०) गुरुनितम्बा- गुरु नितम्बौ यस्याः सा (ब० ब्री०) अगुरुसुरभिधूपामोदितम्= सुरभिश्चासौ धूपः= सुरभिधूपः (कर्मधारयः) अगुरोः सुरभिधूपः (ष० त० पु) तेन आमोदितो य आसौ तथाविधम् (ब० ब्री०) गलितकुसुममालम्= कुसुमानाम् माला= कुसुममाला (ष० त० पु०) गलिता कुसुममाला यस्य तम् (ब० ब्री०) कुञ्चिताग्रम्= कुञ्चितमग्रं यस्य तम् (ब० ब्री०)

हिन्दी शब्दार्थ— चारुशोभा= सुन्दरशोभावाली, निम्नमध्यावसाना= पतली कमर वाली, गुरुनितम्बा= मोटी जंघो, वाली, अन्या= कोई कामिनी, रमणी= उषसि= प्रातःकाल में, अगुरुसुरभिधूपामोदितम्= अगुरु के सुगन्धित धूप से सुगन्धित बनाये गए, गलितकुसुममालम्= जिसके फूलों की माला गिर पड़ी है, कुञ्चिताग्रम्= तथा

जिसका आगे का भाग घुंघराला है, इस प्रकार के, केशपाशम्= अपने केशपाश को वहन्ती= धारण करती हुई, शयनं त्यजति= शय्या त्याग रही है।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिवद्ध वक्ता एक ऐसी रमणी का वर्णन कर रहा है जो प्रातः काल में जग रही है, वह अत्यन्त सुन्दरी है। उसकी कमर पतली है और जंघे मोटे हैं। उसके बाल काले और घुंघराले हैं। उसके बाल अगुरु के सुगन्धित धूप से सुगन्धित हैं और रात्रि में सोने के कारण उसके बालों में गूंथी गयी पुष्पों की माला गिर चुकी है। वह इस प्रकार अपने बालों को पकड़कर उठ रही है।

भावार्थ— कोई परम सुन्दरी जिसकी कमर पतली तथा जंघे मोटे हैं प्रातः काल में उसके अगरु की धूप से सुगन्धित घुंघराले बालों से पुष्पों की माला गिर पड़ी है वह बालों को धारण करती हुई जग रही है।

साहित्यिक विशेषताएँ— इस श्लोक में मालिनी छन्द है, (२) स्वभावोक्ति अलंकार है, (३) सम्भोग शृंगार के अनुभवों का वर्णन है, (४) वैदर्भी रीति है (५) अल्पसमास वाली संघटना है तथा (६) माधुर्य एवं प्रसाद नामक गुण हैं।

कनककमलकान्तैः सद्य चारुताम्राधरोष्ठैः
श्रवणतटनिषक्तैः पाटलोपान्तनेत्रैः।
उषसि वदनबिम्बैरंससंसक्तकेशैः
श्रिय इव गृहमध्ये संस्थिता योषितोऽद्य।। १३।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके कविनिवद्धो वक्ता स्वप्रियतमायाः समक्षं शिशिरर्तोः वर्णनं कुर्वन् वक्ति यत् साम्प्रतं कामिन्यः गृहलक्ष्म्य इवाभान्ति। तासां तथाविधा शोभा साधनत्रयेण समृद्धा संजाता। तथाहि (१) तासां कनककमलकान्तं बिम्बाफल वद्रक्तवर्णेन अधरेण चसमन्वितम् सत् मुखमण्डलम् अतीव मनोज्ञमास्ते (२) तासामायतानि नेत्राण्यतीव मनोज्ञानि सन्ति (३) स्कन्धेषु संसक्ताः केशा अपि तासां शोभां वर्द्धयन्ति।

अन्वयः— अद्य चारुताम्राधरौष्ठैः कनककमलकान्तैः वदनबिम्बैः (तथा) श्रवणतटनिषक्तैः पाटलोपान्तनेत्रैः (च) अंससंसक्तकेशैः योषितः उषसि गृहमध्ये श्रिय इव संस्थिताः।

व्याख्या— अद्य= इदानीं, योषितः= रमण्यः ताम्राश्चेमे अधरोष्ठाः= रक्तवर्णाः अधो दन्तच्छदाः= ताम्राधरोष्ठाः तौः चाखः= मनोहराश्चेमे= ताम्राधरोष्ठाः= चारुताम्राधरोष्ठाः तैः कनकक- मलकान्तैः= कनकस्य=सुवर्णस्य यानि कमलानि= पंकजानि, तानीव कान्तिर्येषां तथाभूतैः= जलेन प्रक्षालितैः, कर्णयोः, तटे= प्रान्तभागे निषक्तानि संलग्नानि यानि तैः, तथाभूतैः, पाटलोपान्तनेत्रैः= पाटलः= रक्तवर्ण, उपान्तः= अन्तिमो भागो येषां तथाभूतैः नेत्रैः= नयनैः, अंससंसक्तकेशैः= अंसे= स्कन्धप्रदेशे, संसक्ताः= संलग्ना ये तथाभूतैः केशैः= कुन्तलकलापैश्च, श्रिय इव= लक्ष्म्यो यथा, संस्थिताः= संप्रतिष्ठिताः संजाता इति भावः।

साहित्यिक विशेषताः— (१) अस्मिन् श्लोके मालिनीवृत्तम् (२) उपमालंकारः

योषितां श्रिया सह साम्यवर्णनात् (३) अल्पसमासवती संघटना (४) प्रसादाख्यो गुणः (५) वैदर्भी रीतिश्च।

समासः— गृहमध्ये =गृहाणां मध्ये (ष० त०पु०) कनककमलकान्तैः- कनकस्य कमलानि= कनककमलानि (ष० त० पु०) तद्वत् कान्तिर्येषां ते तथाभूतैः (उपमित समासगर्भिता बहुब्रीहिः) श्रवणतट- निषक्तैः= श्रवणयोः तटम्= श्रवणतटम् (ष० त० पु०) तत्र निषक्तानि यानि तानि तैः (ब० ब्री०) पाटलोपान्तनेत्रैः- पाटलानि उपान्तानि येषां तानि तथाभूतैः नेत्रैः (ब० ब्री०) अंससंसक्तकेशैः- अंसे संसक्ताः= अंससंसक्ताः (स० त० पु०) अंससंसक्ताश्चते केशाः तैः= (कर्मधारयः)

हिन्दीशब्दार्थ— अद्य= इस समय, योषितः= रमणियाँ, चारुताम्राधरोष्ठैः= मनोहर लाल-लाल अधरों द्वारा, कनककमलकान्तैः= सुवर्ण निर्मित कमल के समान, मनोहर, वदनबिम्बैः= मुखमण्डल के द्वारा, श्रवणतटनिषक्तैः= कानों पर्यन्त फैले हुए, पाटलोपान्तनेत्रैः= जिनके अन्तिम भाग लाल हैं ऐसे नेत्रों के द्वारा तथा, अंससंसक्तकेशैः= कन्धों पर लटके हुए बालों के द्वारा, श्रियः इव संस्थिताः= लक्ष्मी की तरह सुशोभित होती हैं।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिवद्ध वक्ता अपनी प्रियतमा के समक्ष शिशिर ऋतु का वर्णन करते हुए कहता है कि इस समय प्रातः काल में गृहों के भीतर विद्यमान रमणियों की शोभा लक्ष्मी के समान लगती है। उनकी इस प्रकार की शोभा की समृद्धि तीन साधनों से हो रही है। (१) उनके मुख मण्डल सुवर्ण निर्मित कमल के समान गौरवर्ण के हैं तथा उठते ही उठते जल से धोए गए हैं। (२) उनकी बड़ी-बड़ी तथा जिनके कोने लाल-लाल हैं ऐसी आँखें कानों तक फैली हुई हैं। (३) काले घुंघराले केश कंधों पर गिरे हुए हैं। इन तीनों साधनों से उनकी शोभा और समृद्ध हो रही है।

भावार्थ— इस शिशिर ऋतु में रमणियाँ प्रातः काल में गृहों के भीतर सुवर्ण निर्मित कमल के समान तथा लाल-लाल मनोहर अधरोष्ठ से युक्त मुखमण्डल, जिनके किनारे कुछ लाल हैं ऐसे कानपर्यन्त फैले हुए नेत्रों तथा कंधों पर लटके हुए केशों के द्वारा लक्ष्मी के समान सुशोभित होती हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में मालिनी छन्द है, (२) उपमालङ्कार है, (३) सम्भोग श्रृंगार के आलम्बन विभव का वर्णन है, (४) अल्पसमास वाली संघटना है, (५) वैदर्भी रीति है तथा (६) प्रसाद एवं माधुर्य गुण हैं।

पृथुजघनभरार्ताः किंचिदानम्रमध्याः
स्तनभरपरिखेदान्मन्दमन्दं व्रजन्त्यः।
सुरतसमयवेशं नैशमाशु प्रहाय
दधति दिवसयोग्यं वेशमन्यास्तरुण्यः।। १४।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके कविनिवद्धो वक्ता तासां रमणीनां वर्णनं करोति यासां स्तनेऽतीव पृथुले स्तः मध्यभागश्चातीवक्षीणो वर्त्तते, स्तनभरेण परिखिन्नाः

ताः मन्दं मन्दं सञ्चरन्ति। प्रातः काले ताः सुखक्रीडाऽनुकूलं नैशं परिधानं विहाय दिवसयोग्यं वेशं स्वीकुर्वन्ति।

अन्वय– पृथुजघनभरार्ताः किचित् आनम्रमध्याः स्तनभरपरिखेदात् मन्दमन्दं व्रजन्त्यः अन्याः तरुण्यः नैशं सुरतसमयवेशं आशु प्रहाय दिवसयोग्यं वेशं दधति।

व्याख्या– पृथुजधनभरार्ताः= पृथ्वोः= स्थूलयोः जघनयोः= नितम्बयोः, भरेण= भारेण, आर्ताः= प्रपीड्यमानाः, किञ्चित्= ईषत्, आनम्रमध्याः= आनम्रः= विनतः मध्यः= मध्यभागो यासां तथाविधाः, स्तनभरपरिखेदात्= स्तनयोः= पयोधरयोः, भरस्य= भारस्य, परिखेदात्= श्रमात्, मन्दमन्दम्= शनैः शनैः= सञ्चरन्त्यः= सञ्चरणं कुर्वन्त्यः, त्वरितं गन्तुमक्षमा इति भावः। अन्याः= काश्चन, तरुण्यः= रमण्यः, नैशम्= रात्रिकालीनम्, सुरतसमयवेशम्= सुरतसमयस्य= कामक्रीडा-कालस्य, वेशम्= नेपथ्यम्। आशु= शीघ्रम्, प्रहाय= परित्यज्य, दिवसयोग्यम्= दिने धारण्योग्यम्, वेशम्= नेपथ्यम्, दधति= धारयन्ति।

साहित्यिकविशेषताः– (१) अस्मिञ्छ्लोके मालिनी वृत्तम् (२) सम्भोगशृङ्गारात्मकं वर्णनम् (३) अतिशयोक्तिरलंकारः (४) अल्पसमासवती संघटना (५) वैदर्भी रीतिः (६) माधुर्यप्रसादाख्यौ गुणौ च सन्ति।

समासः– पृथुजघनभरार्ताः= पृथू च तौ जघनौ पृथुजघनौ (कर्मधारयः) तयोः भरः= पृथुजघनभरः (ष० त० पु०) तेन आर्ताः यास्ताः (ब० व्री०) किञ्चिदानम्रमध्याः– किञ्चित् आनम्रो मध्यो यासां ताः (ब० व्री०) स्तनभरपरिखेदात्= स्तनयोः भरः= स्तनभरः (ष० त० पु) तस्य परिखेदात् (ष० त० पु) सुरतसमयवेशम्–सुरतस्य समयः= सुरतसमयः (ष० त० पु) तस्य वेशम् (ष० त० पु०) दिवसयोग्यम्–दिवसस्य योग्यम् (ष० त० पु०)

हिन्दी शब्दार्थ– पृथुजघनभरार्ताः= मोटी जंघों के भार से पीडित, किञ्चिदानम्रमध्यः– जिनका कटिप्रदेश थोड़ा सा झुक सा गया है, स्तनभरपरिखेदात्– स्तनों के भार से खिन्नता के कारण, मन्दमन्दम्= धीरे-धीरे चलने वाली, अन्याः= तरुण्यः= दूसरी युवतियाँ, नैशम्= रात्रि के, सुरतसमयवेशम्= कामक्रीडा कालीन वेश को, आशु= शीघ्र, प्रहाय= त्यागकर, दिवसयोग्यम्= दिन में पहनने योग्य, वेशम्= वेश को, परिदधति= धारण करती हैं।

उपस्थापन– इस श्लोक में कविनिवद्ध वक्ता अपनी प्रियतमा के समक्ष शिशिर कालीन शोभा का वर्णन करते हुए कहता है कि इस समय कुछ तरुणियाँ जो अपनी मोटी जंघाओं के भार से पीडित हैं तथा जिनकी पतली कमर कुछ झुकी हुई सी है वे अपने स्तनों के भार से खिन्न होकर धीरे-धीरे चलती हैं। वे प्रातः काल की बेला में रात्रि के समय काम-क्रीडा के समय धारण किए जाने वाले वेश का शीघ्र परित्याग करके दिन के अनुकूल वेश को धारण करती हैं।

भावार्थ– मोटी जंधों के भार से पीडित, थोड़ी झुकी हुई कमर वाली तथा स्तन के भार से खिन्न कुछ युवतियाँ रात में कामक्रीड़ा काल में धारण किए जाने वाले वेश का परित्याग करके शीघ्र ही दिन के अनुकूल वेश को धारण करती हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में मालिनी वृत्त है, (२) अतिशयोक्तिअलंकार है (३) सम्भोग शृंगारात्मकवर्णन है (४) अल्पसमास वाली संघटना है (५) वैदर्भी रीति है तथा (६) माधुर्य एवं प्रसाद नामक गुण हैं।

नखपदचितभागांन्वीक्षमाणाः स्तनाग्रानधरकिसलयाग्रं दन्तभिन्नं स्पृशन्त्यः।
अभिमतरतवेषं नन्दयन्त्यस्तरुण्यः सवितुरुदयकाले भूषयन्त्याननानि।। १५।।

सदंर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके कविनिवद्धो वक्ता स्वप्रियतमायाः समक्षं शिशिरर्तोः वर्णनं कुर्वन् वक्ति यत् साम्प्रतम् युवतयः प्रातः काले उत्थाय रात्रौ प्रियतमेन रमणकाले स्तनयोः कृतं नखक्षतं ओष्ठेषु कृतं दन्तक्षतं चावलोक्य स्वानुभूतं सुखं स्मारं-स्मारं हृष्यन्ति मुहुर्मुहुः मण्डितं च कुर्वन्ति स्वमुखकमलम्।

अन्वयः— नखपदचितभागान् स्तनाग्रान् वीक्षमाणाः दन्तभिन्नं अधरकिसलयाग्रं स्पृशन्त्यः अभिमतरतवेषं नन्दयन्त्यः तरुण्यः सवितुः उदयकाले आननानि भूषयन्ति।

व्याख्या— तरुण्यः= रमण्यः, नखपदचितभागान्= नखपदैः= नखरैःचिह्नितैः भागान्= अचितान्= स्वाङ्गान्, स्तनाग्रान्= स्तनयोः कुचयोः, अग्रान्= अग्रभागान् चूचुकमिति यावत् वीक्षमाणाः= अवलोकयन्त्यः, दन्तभिन्नम्= दन्तैः= दद्भिः, भिन्नम्= खण्डितम्= अधरकिसलयाग्रम्= अधरकिसलयस्य= अधरपल्लवस्य, अग्रम्= अग्रभागम्, स्पृशन्त्यः= स्पर्शं कुर्वन्त्यः, रतवेषम्= अभिमतश्चासौ रतस्य= रमरणस्य, योहि वेषः= नेपथ्यम् नन्दयन्त्य= प्रशंसयन्त्यः सत्यः सवितुः=सूर्यस्य, उदयकाले= उदयस्य समये आननानि= मुखानि, भूषयन्ति= समलंकुर्वन्ति।

सहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके सन्ति मालिनी वृत्तम् (२) सम्भोगशृङ्गारात्मकं वर्णनम् (३) रूपकालंकारः (४) अल्पसमासवती संघटना, (५) वैदर्भी रीतिः (६) माधुर्यप्रसादाख्यौ गुणौ च।

समासः— नखपदचितभागान्= नखपदैः अचितो भागो येषां तान् (ब० ब्री०) स्तनाग्रान्स्तनयोः अग्रम्= स्तनाग्रम् तान् (ष० त० पु०) दन्तभिन्नम् दन्तैः भिन्नम् (तृ० त० पु०) अधरकिसलयाग्रम्= अधर एव किसलयः तस्याग्रम् (ष० त० पु०) अभिमतरतवेषम्= रतस्य वेषः= रतवेषः (ष० त०) अभिमतश्चासौ रतवेषः= अभिमततवेषः= (कर्मधारयः) तम् (ब० ब्री०)

हिन्दी शब्दार्थ— तरुण्यः= युवतियाँ, नखपदचितभागान्= जो भाग नखक्षतों से भरे हुए हैं,ऐसे = स्तनाग्रान्= स्तनों के अग्रभाग को, वीक्षमाणाः= देखती हुई, दन्तभिन्नम्= दाँतो से काटे गये, अधरकिसलयाग्रम्= अधरकिसलय के अग्रभाग को, स्पृशन्त्यः= सहलाती हुई, इस अभिमतरतवेषम्= रमणानुकूलवेष दन्तक्षतादि को, नन्दयन्त्यः = सराहती हुई, सवितुरुदयकाले= सूर्योदय के समय, आननानि= अपने मुखड़े को भूषयन्ति= अलंकृत करती हैं।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिवद्धवक्ता उन युवतियों का वर्णन करता है जिन सबों के रमणों ने रमण काल में उनके स्तनों पर नखक्षत तथा ओष्ठों पर दन्तक्षत कर दिया है। वे उठकर अपने स्तनों के नखक्षत को देखती हैं और ओष्ठों

के दन्तक्षत को धीरे-धीरे सहलाती हैं। किन्तु अपने पतियों के द्वारा किए गये इस कार्य को बुरा न मानकर वे इस कार्य की सराहना करती हैं और सूर्योदय की बेला में वे अपने मुखमण्डल को सजाती हैं।

भावार्थ— युवतियाँ नखक्षत से चिह्नित अपने स्तनाग्र को देखती हैं और दन्तक्षत से घायल अधरों को सहलाती हैं। अच्छा लगने वाले इस दन्तक्षत तथा नखक्षत की सराहना करती हुयी वे सूर्योदयकाल में अपने मुखमण्डल को सजाती हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में उपजाति छन्द है (२) रूपकालंकार है (३) सम्भोगश्रृंगारात्मक वर्णन है (४) अल्पसमास वाली संघटना है (५) वैदर्भी रीति है और (६) माधुर्य एवं प्रसाद गुण हैं।

प्रचुरगुडविकारः स्वादु शालीक्षुरम्यः प्रबलसुरतकेलिर्जातकंदर्पदर्पः।
प्रियजनरहितानां चित्तसंतापहेतुः शिशिरसमय एष श्रेयसे वोऽस्तु नित्यम्।। १६।।

इति महाकविकालिदासकृतौ ऋतुसंहारे शिशिरवर्णनं नाम पञ्चमः सर्गः सम्पूर्णः

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अनेन श्लोकेन द्वारा महाकविः कालिदासः शिशिरर्तुवर्णनस्योपसहारं करोति। अस्मिञ्छ्लोके सः अस्यर्तोः केषाञ्चिद् वैशिष्ट्यानां वर्णनमुपस्थापयति। अस्मिनृतौ अनेकप्रकारकगुडविकाराः, इक्षुकाण्डाश्च जायन्ते। इदानीं कामावेगस्यात्यन्तोत्कटत्वात् रमणीजनप्रियो भवत्ययमृतुः। कण्ठाश्लेषप्रणयिजनविरहितानां जनानां कृते तु ऋतुरयमतीव कष्टप्रदो भवति।

अन्वयः— प्रचुरगुडविकारः स्वादुशालीक्षुरम्यः प्रबलसुरतकेलिः जातकंदर्पदर्पः प्रियजनरहितानां चित्तसंतापहेतुः एषः शिशिरसमयः नित्यं वः श्रेयसे अस्तु।

व्याख्या— प्रचुरगुडविकारः= प्रचुरः= अत्यधिकः, गुडस्य विकारो यस्मिन् तथा विधः, अस्यर्तोः इक्षुरसादिकानां तज्जन्यमिष्टान्नानां चोत्पत्तेः कालत्वात्। स्वादुशा- लीक्षुरम्यः= शालिश्च इक्षुश्च शालीक्षू स्वादू-शालीक्षू= स्वादुशालीक्षू ताभ्यां रम्यः= इक्षुदण्डैश्चमनोहरः, प्रबलसुरतकेलिः= प्रवला= प्रकृष्टा अत्युकटा इति यावत् सुरतकेलिः= कामक्रीडा यस्मिन्नसौ तथाविधः। जातकन्दर्पदर्पःजातः= उत्पन्नः= कन्दर्पस्य= कामस्य, दर्पः= अभिमानो यस्मिन्नऽसौ तथाविधः प्रियजनरहितानाम्= प्रियजनैः= कण्ठाश्लेषप्रणयिभिः जनैः रहितानाम्= विरहितानां चित्तसन्तापहेतुः= चित्तस्य= अन्तःकरणस्य, सन्तापस्य हेतुः= कारणतां गतः सततम्= श्रेयसे= कल्याणाय अस्तु= भवतु।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके मालिनीवृत्तम् (२) शिशिरर्तोः वैशिष्ट्यस्य वर्णनम् (३) अल्पसमासवती संघटना (४) वैदर्भी रीतिः (५) प्रसादगुणश्च सन्ति।

समासः— प्रचुरगुडविकारः- गुडस्य विकारः= गुडविकारः (ष० त० पु०) प्रचुरः गुडविकारो यस्मिन् सः (ब्र० ब्री०) स्वादुशालीक्षुरम्यः= शालिश्च इक्षुश्च= शालीक्षू (द्वन्द्वः) स्वादू च तौ शालिक्षू= स्वादुशालीक्षू (कर्मधारयः) ताभ्यां रम्यो य असौ

स्वादुशालीक्षुरम्यः (ब० ब्री०) प्रियजनरहितानाम्= प्रियश्चासौ जनः प्रियजनः (कर्मधारयः) तैः रहितानाम् (तृ० त० पु०) चित्तसंतापहेतुः- चित्तस्य संतापः = चित्तसंतापः (ष० त० पु) तस्य हेतुः (ष० त० पु०) शिशिरसमयः= शिशिरस्य समयः= शिशिरसमयः (ष० त० पु०)

हिन्दी शब्दार्थ– प्रचुर गुडविकारः= बहुत अधिक गुड के विकरों वाला, स्वादुशालीक्षुरम्यः= स्वादयुक्त धान तथा ईख से मनोहर, प्रबलसुरतकेलिः= कामक्रीडा के प्रावल्य से, प्रियजनरहितानाम्= अपने प्रियजनों से रहित लोगों के लिए, चित्तसन्तापहेतुः= उनके अन्तः करण को संतप्त करने वाला, एषः= यह, शिशिरसमयः= शिशिर ऋतु का समय, वः= आप सबों के लिए, नित्यम्= सदा, श्रेयसे अस्तु= कल्याणकारी होए।

उपस्थापन– इस श्लोक के द्वारा महाकवि कालिदास शिशिर ऋतु के वर्णन का उपसंहार करते हुए कहते हैं कि इस ऋतु में अनेक प्रकार के गुड के विकार उत्पन्न हो जाते हैं। यह ऋतु स्वांद युक्त धान तथा ईख से मनोहर लगता है। इस ऋतु में कामक्रीडा का आवेश अत्यन्त उत्कट हो जाता है और काम का अभिमान बढ जाता है। जिन लोगों के सन्निकट में उनके प्रियजन नहीं हैं, इस ऋतु में उनके मन में सन्ताप उत्पन्न हो जाता है। अतएव वियोगियों के लिए यह ऋतु दुःखप्रद है। इस प्रकार का यह ऋतु आप सबों को कल्याण प्रदान करे।

भावार्थ– अनेक प्रकार के गुड के विकारोंसे युक्त स्वादिष्ट धान तथा ईख से मनोहर लगने वाला, कामक्रीडा के प्राबल्य से युक्त प्रियजनों से रहित लोगों के मन को सन्तप्त करने वाला यह शिशिर ऋतु आप सबों का कल्याण करे।

साहित्यिक विशेषताएँ– (१) इस श्लोक में मालिनी वृत्त है (२) शिशिर ऋतु की विशेषताओं का वर्णन है, (३) इसमें वैदर्भी रीति है, (४) प्रसाद नामक गुण है तथा (५) अल्पसमास वाली संघटना है।

इस तरह महाकवि कालिदासकृत 'ऋतुसंहार' काव्य के शिशिरवर्णन नामक पाञ्चवे सर्ग की शिवप्रसाद द्विवेदी कृत व्याख्या सम्पूर्ण हुई।

षष्ठः सर्गः
वसन्त ऋतु का वर्णन

प्रफुल्लचूताङ्कुरतीक्ष्णसायको: द्विरेफमालाविलसद्धनुर्गुणः।
मनांसि भेत्तुं सुरतप्रसङ्गिनां वसन्तयोद्धा समुपागतः प्रिये।। १।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अनेन श्लोकेन कविनिबद्धो वक्ता स्वप्रियतमायाः समक्षं वसन्तर्तोः वर्णनं योद्धा रूपेण करोति। अस्य योद्धुः चूताङ्कुरा एव बाणाः, भ्रमराणां पंक्तिरेव प्रत्यञ्चा, कामिनां मनांसि एव लक्ष्यम्।

अन्वयः– प्रिये प्रफुल्लचूतांकुरतीक्ष्णसायकः द्विरेफमालाविलसद्धनुर्गुणः बसन्त-योद्धा सुरतप्रसंगिनां मनांसि भेत्तुम् समुपागतः।

व्याख्या— प्रिये= हे प्रियतमे ! प्रफुल्लचूताङ्कुरतीक्ष्णसायकः= प्रफुल्लाः= विकसिताः, चूताङ्कुराः= आम्रमञ्जर्यः एव तीक्ष्णाः= अतीवतीव्राः, सायकाः= बाणाः यस्य सः तथाविधः, द्विरेफमालाविलसद्धनुर्गुणः= द्विरेफाणाम्= भ्रमराणाम्, माला= समूह एव विलसन्= सुशोभनः, धनुषः= कार्मुकस्य, गुणः= प्रत्यञ्चा यस्य सः तथाविधः, वसन्तयोद्धा= वसन्त एव योद्धा= वसन्तर्तुरेव भटः सुरतप्रसंगिनाम्= सुरते= कामक्रीडायां प्रसंगः= आसक्तिः येषां तथाविधानां जनानाम्, मनांसि= अन्तःकरणानि, भेत्तुम्= वेधनार्थम् समुपागतः= समागतो वर्त्तते।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके उपजातिः वृत्तम् (२) रूपकालंकारः (३) प्रसादाख्यो गुणः (४) अल्पसमासवती संघटना (५) वैदर्भी रीतिश्च सन्ति।।

समासः– प्रफुल्लचूताङ्कुरतीक्ष्णसायकः= प्रफुल्लश्चासौ चूतांकुरः= प्रफुल्लचू-तांकुरः (कर्मधारयः) प्रफुल्लचूतांकुर एव तीक्ष्णः सायको यस्याऽसौ तथाविधः (ब० ब्री०) द्विरेफमालाविलसद्धनुर्गुणःद्विरेफाणां माला= द्विरेफमाला (ष० त० पु०) ध ानुषो गुणः= धनुर्गुणः= (ष० त० पु०) द्विरेफमालैव विलसन् धनुर्गुणो यस्याऽसौ तथाविधः। (ब० ब्री०) सुरतप्रसंगिनाम्= सुरतस्य प्रसङ्गिनाम् (ष० त० पु०)

हिन्दीशब्दार्थ— प्रिये= हे प्रियतमे, प्रफुल्लचूताङ्कुरतीक्ष्णसायकः= विकसित आम्रमञ्जरियाँ ही जिसके तीव्र बाण हैं, द्विरेफमालाविलसद्धनुर्गुणः= भ्रमर पंक्तिरूपी धनुष की प्रत्यञ्चा जिसकी सुशोभित हो रही है, इस प्रकार का वसन्तयोद्धा= वसन्त रूपी योद्धा, सुरतप्रसंगिनाम्= कामक्रीडा की इच्छा वालों के, मनांसि= मनों का, भेत्तुम्= वेधन करने के लिए समुपागतः= आ गया है।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिबद्ध वक्ता अपनी प्रियतमा के समक्ष वसन्त ऋतु का वर्णन एक योद्धा के रूप में करते हुए कहता है कि इस वसन्त ऋतु

रूपी योद्धा के खिली हुई आम्र मञ्जरी ही तीक्ष्ण बाण हैं। भ्रमरपंक्ति ही उसके धनुष् की प्रत्यञ्चा है। वह कामक्रीडा में आसक्ति रखने वाले लोगों के मन का वेधन करने के लिए आ गया है।

भावार्थ— प्रिये ! विकसित आम्रमञ्जरी रूपी तीक्ष्ण बाणों वाला तथा भ्रमरपंक्ति रूपी धनुष् की प्रत्यञ्चा वाला यह वसन्त रूपी योद्धा कामियों के मन का वेधन करने के लिए आ गया है।

साहित्यिकविशेषताएँ— (१) इस श्लोक में उपजाति वृत्त है (२) साङ्गरूपकालंकार है, (३) सम्भोगशृंगारात्मक वर्णन है (४) वैदर्भीरीति है (५) मध्यमसमासवती संघटना है (६) माधुर्य एवं प्रसाद नामक गुण हैं।

द्रुमाः सुपुष्पाः सलिलं सपद्मं स्त्रियः सकामाः पवनः सुगन्धिः।
सुखाः प्रदोषा दिवसाश्च रम्याः सर्वं प्रिये चारुतरं वसन्ते।। २।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके कविनिबद्धो वक्ता स्वप्रियतमायाः समक्षं वसन्तर्तोः वर्णनं कुर्वन् वक्ति यत् साम्प्रतं सर्वत्र मनोज्ञताया एवानुभूतिः जायते। वृक्षाः विकसिताः सन्ति, कमलानि विकसितानि सरस्सु शोभन्ते, रमणीषु कामवृद्धिः प्रजायते, सुगन्धिर्वाति वायुः, सायंकालः सुखप्रद आभाति, दिवसाः रमणीयाः सन्ति। अतएव सर्वत्र चारुतैव जायते।

अन्वयः— प्रिये ! वसन्ते द्रुमाः सुपुष्पाः, सलिलं सपद्मं, स्त्रियः सकामाः, पवनः सुगन्धिः प्रदोषाः सुखाः दिवसाश्च रम्याः सर्वं चारुतरं भवतीति शेषः।

व्याख्या— प्रिये= प्रियतमे, वसन्ते= वसन्तर्तौ, द्रुमाः= वृक्षाः, सुपुष्पाः= सुन्दरोपुष्पसमन्विताः, सलिलम्= जलम्, सपद्मम्= कमलसमन्वितम्, स्त्रियः= रमण्यः, सकामाः= कामुक्यः= सञ्जाताः, पवनः= वायुः, सुगुन्धिः= सौगन्ध्य समन्वितः, प्रदोषाः= सायंकालाः, सुखाः= सुखप्रदाः दिवसाश्च= दिनानि च, रम्याः= मनोज्ञाः सन्ति। इत्थं सर्वम्= अखिलानि वस्तूनि, चारुतरम्= मनोहरतरम् सञ्जातम् इति शेषः।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके उपजातिवृत्तम् (२) शैङ्गारिक-विभावानां वर्णनम् (३) समासरहिता संघटना (४) प्रसादमाधुर्याख्यौ गुणौ (५) वैदर्भीरीतिश्च सन्ति।।

हिन्दीशब्दार्थ— प्रिये= हे प्रियतमे, वसन्ते= वसन्त ऋतु में, द्रुमाः= वृक्ष सुपुष्पाः= सुन्दर पुष्पों से युक्त हैं, सलिलम्= जल, सपद्मम्= कमल से युक्त है। स्त्रियः= स्त्रियाँ, सकामाः= काम की भावना से युक्त हैं, पवनः= वायु, सुगन्धिः= सुगन्ध से युक्त हैं, प्रदोषाः= सन्ध्याकाल, सुखाः= सुखप्रद हैं, च= और, दिवसाः= दिन, रम्याः= मनोहर हैं इस तरह, सर्वम्= सब कुछ, चारुतरम्= अधिक मनोहर हैं।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिबद्ध वक्ता अपनी प्रियतमा के समक्ष वसन्त ऋतु का वर्णन करते हुए कहता है कि इस वसन्त ऋतु में वृक्ष सुन्दर पुष्पों

से परिपूर्ण हो गए हैं, सरोवरों के जल में कमल खिल गए हैं, स्त्रियों में काम की भावना भर गयी है, सुगन्धित वायु चल रही है, सन्ध्या काल का समय सुखप्रद हो गया है और दिन मनोहर लगने लगा है। इस तरह सब कुछ अधिक मनोहर लगने लगा है।

भावार्थ— प्रिये वसन्त ऋतु में वृक्ष सुन्दर पुष्पों से, जल कमलों से, स्त्रियाँ काम की भावना से, और वायु सुगन्धि से परिपूर्ण है। सन्ध्याएँ सुखप्रद एवं दिन मनोज्ञ हो गए हैं। इस तरह सब कुछ अधिक अच्छा लगने लगा है।

साहित्यिकविशेषताएँ— (१) इस श्लोक में उपजाति वृत्त है (२) वसन्तऋतु की विशेषताओं का स्वाभाविक वर्णन होने से स्वभावोक्ति अलंकार है (३) श्रैंगारिक विभावों का वर्णन है (४) समासरहित संघटना है (५) माधुर्य एवं प्रसाद नामक गुणों का सद्भाव है तथा (६) वैदर्भी रीति है।

ईषत् तुषारैः कृतशीतहर्म्यः सुवासितं चारुशिरश्च चम्पकैः।
कुर्वन्ति नार्योऽपि वसन्तकाले स्तनं सहारं कुसुमैर्मनोहरैः।। ३।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके कविनिवद्धो वक्ता स्वप्रियतमां वक्ति यत् साम्प्रतं प्रासादपृष्ठम् अत्यल्पैः पतमानैः तुषारैः शीतं कृतं भवति। चम्पकपुष्पैः नार्यः स्वशिरांसि सुवासितानि कुर्वन्ति, ताः मनोहरैः कुसुमैः स्तनम् सहारं च सम्पादयन्ति।

अन्वयः— वसन्तकाले ईषत् तुषारैः कृतशीतहर्म्यः, चारुशिरश्च चम्पकैः सुवासितं (कृतम्) नार्योऽपि मनोहरैः कुसुमैः स्तनं सहारं कुर्वन्ति।

व्याख्या— वसन्तकाले= वसन्तर्तोः समये, ईषत्= अत्यल्पैः तुषारैः= तुहिनैः कृतशीतहर्म्यः= कृतः= विहितः शीतः= शैत्यगुणसम्पन्नो हर्म्यः= प्रासादपृष्ठम्। च= किञ्च, चारुशिरः= चारु= मनोज्ञं चेदं शिरः= मूर्धा, चम्पकैः= चम्पकस्य पुष्पैः सुवासितम्= सौगन्ध्यसम्पन्नं कृतम्, नार्योऽपि= स्त्रियोऽपि मनोहरैः= मनोज्ञैः वसन्तकाले उद्भूतैः कुसुमैः= पुष्पैः, स्तनम्= पयोधरम्, सहारम्= हारेण समन्वितं, कुर्वन्ति= सम्पादयन्ति।

साहित्यिकविशेषताः— अस्मिञ्छ्लोके सन्ति (१) उपजातिवृत्तम्, (२) शैङ्गारिकं वर्णनम्, (३) अल्पसमासवती संघटना (४) वैदर्भी रीतिः (५) माधुर्यप्रसादाख्यौ गुणौ च।

समासः— ईषत्तुषारैः- ईषच्चेदं तुषारं तैः (कर्मधारयः) कृतशीतहर्म्यः= कृतश्चाऽसौ शीतो हर्म्यः (कर्मधारयः) चारुशिरः- चारु चेदं शिरः (कर्मधारयः) वसन्तकाले= वसन्तस्य काले (ष० त० पु०)।

हिन्दीशब्दार्थ— वसन्तकाले= वसन्त ऋतु में, ईषत्तुषारैः= थोड़ी सी ओस से, कृतशीतहर्म्यः= छतों का तल ठंढा हो जाता है। च= और, चारुशिरः= मनोहर सिर, चम्पकैः= चम्पा के फूलों से, सुवासितम्= सुगन्धित बना दिया गया है, नार्योऽपि= रमणियाँ भी, मनोहरैः कुसुमैः= मनोहर पुष्पों के द्वारा, स्तनम्= स्तन को, सहारम्= हार से युक्त, कुर्वन्ति= बनाती हैं।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिबद्ध वक्ता अपनी प्रियतमा के समक्ष वसन्त ऋतु का वर्णन करते हुए कहता है कि, इस समय ओस बहुत कम पड़ने लग गयी हे। उससे केवल छतें ठंढी हो जाती है। स्त्रियाँ अपने मनोहर शिर को चम्पक के पुष्पों से सुवासित करती हैं। वे सुन्दर-सुन्दर फूलों की माला बनाकर अपने स्तनों को हार से युक्त बना देती हैं।

भावार्थ— इस समय थोड़ी ओस से छतें ठंढ़ी हो जाती हैं। रमणियाँ अपने मनोज्ञ सिर को चम्पा के फूलों से सुगन्धित बनाती हैं और मनोहर फूलों से अपने स्तनों को हार से युक्त बनाती हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ— इस श्लोक में (१) उपजाति नामक छन्द है, (२) श्रृङ्गारिक वर्णन हैं (३) वैदर्भी रीति है (४) माधुर्य एवं प्रसाद गुण हैं और (५) अल्पसमासों वाली संघटना है।

वापीजलानां मणिमेखलानां शशाङ्कभासां प्रमदाजनानाम्।
चूतद्रुमाणां कुसुमान्वितानां ददाति सौभाग्यमयं वसन्तः।। ४।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके कविनिबद्धो वक्ता स्वप्रियतमां वक्ति यत् अस्य वसन्तर्तोः आगमनेन वाप्याः जलानां कामिनीनां मणिखचितानां मेखलानां ज्योत्स्नायाः, कामिनीनां, मञ्जरीसमन्वितानाम् आम्रवृक्षाणाञ्च शोभातिशयं जायते।

अन्वयः— अयं वसन्तः वापीजलानां मणिमेखलानां शशाङ्कभासां प्रमदाजनानां कुसुमान्वितानां चूतद्रुमाणां सौभाग्यं ददाति।

व्याख्या— अयम्= एषः, वसन्तः= वसन्तकालः वापीजलानाम्= गृहदीर्घिकायाः सलिलानाम्, मणिमेखलानाम्= मणेः मेखलानाम्= मणिखचितानां रशनानां, शशाङ्क— भासाम्= शशांकस्य= चन्द्रमसः, भासाम्= ज्योत्स्नाम्, प्रमदाजनाम्= रमणीनाम् कुसुमान्वितानाम्= कुसुमैः= मञ्जरीभिः, अन्वितानां= समन्वितानाम्, चूतद्रुमाणाम्= चूतस्य= रसालस्य, द्रुमाणाम्= वृक्षाणाम्, सौभाग्यम् ददाति= शोभातिशयवर्धनं करोति।

साहित्यिकविशेषताः— अस्मिञ्छ्लोके सन्ति (१) उपजाति वृत्तम् (२) श्रैङ्गारिकानां विभावानां वर्णनम् (३) वसन्तवैभववर्णनम् (४) वैदर्भी रीतिः (५) अल्पसमासवती संघटना (६) माधुर्यप्रसादाख्यौ गुणौ च।

समासः— वापीजलानाम्= वाप्याः जलानि= वापीजलानि तेषाम् (ष० त० पु०) मणिमेखलानाम्= मणेः मेखलानाम्= (ष० त० पु०) शशाङ्कभासाम्= शशाङ्कस्य भासाम् (ष० त० पु०) कुसुमान्वितानाम्-कुसुमैः अन्वितानाम् (तृ० त० पु०) चूतद्रुमाणाम्- चूतस्य द्रुमाणाम् (ष० त० पु०)

हिन्दीशब्दार्थ— अयम्= यह, वसन्तः= वसन्त ऋतु, वापीजलानाम्= बावली के जलों, मणिमेखलानाम्= मणि खचित मेखलाओं, शशाङ्कभासाम्= चन्द्रमा की किरणों, प्रमदाजनानाम्= रमणियों, तथा कुसुमान्वितानाम्= मञ्जरी से युक्त, चूतद्रुमाणाम्= आम के वृक्षों को सौभाग्यं ददाति= शोभातिशय्य प्रदान करता है।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिवद्ध वक्ता अपनी प्रियतमा से वसन्त का वर्णन करते हुए कह रहा है कि इस वसन्त ऋतु के आने से बावली के जल का महत्त्व बढ गया है। रमणियों के द्वारा धारण किए गए मणिजटित मेखलाओं का भी सौन्दर्य बढ़ गया है। चन्द्रमा की चाँदनी मानो और अधिक प्रिय लगने लगी है तथा कामिनियों का सौन्दर्य और अधिक प्रतीत होने लगा है; इसी तरह मञ्जरी से युक्त आम के पेड़ों की भी सौभाग्य श्री इस ऋतु में अधिक समृद्ध हो गयी है।

भावार्थ— यह वसन्त ऋतु वापी के जल को, मणिमय करधनी को, चन्द्रमा की किरणों को, कामिनियों को तथा मञ्जरी से युक्त आम के पेड़ों को सोभाग्य श्री प्रदान करता है।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में उपजाति वृत्त है, (२) वासन्तिक ऐश्वर्य का वर्णन है (३) शैंगारिक विभावों का वर्णन है (४) अल्पसमासवती संघटना है (५) माधुर्य एवं प्रसाद गुण का सद्भाव है तथा (६) वैदर्भी रीति है।

कुसुम्भरागारुणितैर्दुकूलैर्नितम्बबिम्बानि विलासिनीनाम्।
तन्वंशुकैः कुकुंमरागगौरैरलंक्रियन्ते स्तनमण्डलानि।। ५।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके कविनिवद्धो वक्ता स्वप्रियतमायाः समक्षं वसन्तस्य वैभववर्णनमुपस्थापयन् वक्ति यत् साम्प्रतं रमण्यः कुसुम्भरागेण रञ्जितैः दुकूलैः स्वनितम्बमण्डलं समलंकुर्वन्ति, स्तनमण्डलञ्च कुंकुमरागरञ्जितैः रक्त वस्त्रैश्च समलंकुर्वन्ति।

अन्वयः— विलासिनीनाम् नितम्बबिम्बानि कुसुम्भरागारुणितैः दुकूलैः स्तनमण्ड- लानि कुंकुमरागगौरैः तन्वंशुकैः अलंक्रियन्ते।

व्याख्या— विलासिनीनाम्= कामिनीनाम् नितम्बबिम्बानि= श्रोणीमण्डलानि, कुसुम्भरागारुणितैः= कुसुम्भस्य= महारजनस्य रागेण, अरुणितैः= रञ्जितैः दुकूलैः= वस्त्रैः, स्तनमण्डलानानि च= पयोधरमण्डलानि च, कुंकुमरागगौरैः= कुंकुमस्य= कश्मीरजन्मनः, रागेण= वर्णेन गौरैः= गौरवर्णैः, तन्वंशुकैः= सूक्ष्मवस्त्रैः अलंक्रियन्ते= सुशोभितानि क्रियन्ते। अयमाशयो यत् साम्प्रतं कामिन्यः रक्तवर्णां शार्टीं केसरवर्णां कञ्चुकीं च परिदधति।

साहित्यिकविशेषताः— अस्मिञ्छ्लोके सन्ति (१) उपजातिवृत्तम् (२) कामिनीनां वसन्तर्तोः परिधानवर्णनम् (३) सम्भोगशृङ्गारविभाव वर्णनम् (४) अल्पसमासवती संघटना (५) वैदर्भी रीतिः (६) माधुर्यप्रसादाख्यौ गुणौ च।

समासः— नितम्बबिम्बानि- नितम्बयोः विम्बानि (ष० त० पु०) कुसुम्भरागा- रुणितैः- कुसुम्भस्य रागः= कुसुम्भरागः (ष० त० पु०) तेन अरुणितैः (तृ० त० पु०) स्तनमण्डलानि- स्तनयोः मण्डलानि। (ष० त० पु०) कुंकुमरागगौरैः= कुंकुमस्य रागः= कुंकुमरागः (ष० त० पु०) तेन गौरैः (तृ त० पु०) तन्वंशुकैः- तनु च तदंशुकम् तैः (कर्मधारयः)

हिन्दीशब्दार्थ— विलासिनीनाम्= कामिनियों के, नितम्बबिम्बानि= श्रोणीमण्डल,

कुसुम्भरागारुणितैः= कुसुम्भ के रंग से लाल रंग में रंगे हुए, दुकूलैः= वस्त्रों से तथा स्तनमण्डलानि= स्तनमण्डल, कुंकुमरागगौरैः= कुंकुम के रंग में रंगे हुए केसरिया रंग के, तन्वंशुकैः= महीन वस्त्रों से, अलंक्रियन्ते= अलंकृत किये जाते हैं।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिवद्ध वक्ता अपनी प्रियतमा के समक्ष वसन्त ऋतु का वर्णन करते हुए कहता है कि इस समय कामिनियाँ कुसुम्भ के द्वारा रंगी हुई साड़ी के द्वारा अपने नितम्ब मण्डल को अलंकृत करती हैं तथा केसर के रंग में रंगे हुए वस्त्रों से वे अपने स्तनों को अलंकृत करती हैं।

भावार्थ— इस समय नारियाँ लाल रंग की साड़ी तथा केसरिया रंग की चोली पहनती हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ— इस श्लोक में (१) उपजाति वृत्त है (२) कामिनियों के वासन्तिक परिधान का वर्णन है (३) श्रृंगारिक विभाव का वर्णन है (४) वैदर्भी रीति है (५) अल्पसमासवती संघटना है तथा (६) माधुर्य एवं प्रसाद नामक गुणों का सद्भाव है।

कर्णेषु योग्यं नवकर्णिकारं चलेषु नीलेष्वलकेष्वशोकम्।
पुष्पं च फुल्लं नवमल्लिकायाः प्रयाति कान्तिं प्रमदाजनानाम्।। ६।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके कविनिवद्धो वक्ता स्वप्रियतमायाः समक्षं वासन्तिकसुषमायाः वर्णनमुपस्थापयन् वक्ति यत् साम्प्रतं रमण्यः कर्णयोः नवं कर्णिकारं दधति कृष्णकुन्तलकलापेषु च अशोकपुष्पं नवमल्लिकायाविकसितं पुष्पं धारयन्ति।

अन्वयः— प्रमदाजनानाम् कर्णेषु योग्यं नवकर्णिकारं चलेषु नीलेषु अलकेषु अशोकं नवमल्लिकायाः फुल्लं पुष्पञ्च कान्तिम् प्रयाति।

व्याख्या— प्रमदाजनस्य= कामिनीसमूहस्य कर्णेषु= श्रोत्रेषु योग्यम्= अनुकूलं, नवकर्णिकारम्= नवीनं कर्णिकारस्य पुष्पम्, चलेषु= चञ्चलेषु, नीलेषु= कृष्णवर्णेषु, अलकेषु= कुन्तलेषु, अशोकम्= अशोकपुष्पम्, वसन्ते अशोकवृक्षस्य विकसितः त्वात्। च= किञ्च फुल्लम्= विकसितम् नवमल्लिकायाः= भूपद्याः पुष्पम्= कुसुमम् कान्तिं= शोभाम्, प्रयाति= प्राप्नोति।

साहित्यिकविशेषताः— अस्मिञ्छ्लोके सन्ति (१) उपजातिवृत्तम् (२) कामिनीनां वासन्तिकालंकारद्वयस्य वर्णनम् (३) सम्भोगश्रृंगारविभावस्य वर्णनम् (४) अल्पसमासवती संघटना (५) वैदर्भी रीतिः (६) माधुर्यप्रसादाख्यौ गुणौ च।

समासः— नवकर्णिकारम्= नवश्चासौ कर्णिकारः तम् (कर्मधारयः)

हिन्दीशब्दार्थ— प्रमदाजनानाम्= रमणियों के, कर्णेषु= कानों में, योग्यम्= उचित, नवकर्णिकारम्= नवीन कनैल का फूल, तथा चलेषु= चंचल, नीलेषु= काले-काले, अलकेषु= बालों में, अशोकम्= अशोक के फूल तथा नवमल्लिकायाः= चमेली के, फुल्लम्= विकसित, पुष्पञ्च= फूल भी, कान्तिं प्रयाति= सुशोभित होता है।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिवद्ध वक्ता अपनी प्रियतमा के समक्ष

वासन्तिक सुषमा का वर्णन करते हुए कहता है कि इस समय रमणियाँ अपने कानों का अलंकरण कनेर के पुष्पों से तथा अपने काले घुंघराले केशों का अलंकरण अशोक पुष्पों तथा विकसित चमेली के पुष्पों से करते हैं। इस वर्णन के माध्यम से कवि इस बात को भी स्पष्ट करता है कि वसन्त ऋतु में कर्णिकार, अशोक तथा चमेली के पुष्प विकसित होने लगते हैं।

भावार्थ— इस समय युवतियाँ अपने कानों को नवीन कर्णिकार पुष्पों से तथा चञ्चल एवं काले बालों को अशोक एवं चमेली के पुष्पों से सजाती हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ— इस श्लोक में (१) उपजातिवृत्त है, (२) श्रैङ्गारिक वर्णन है (३) युवतियों के वासन्तिक अलंकारों का वर्णन है (४) अल्पसमासवती संघटना है, (५) वैदर्भी रीति है तथा (६) माधुर्य एवं प्रसाद नामक गुण हैं।

स्तनेषु हाराः सितचन्दनार्द्रा भुजेषु सङ्गं वलयाङ्गदानि।
प्रयान्त्यनङ्गातुरमानसानां नितम्बिनीनां जघनेषु काञ्च्यः।। ७।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके कविनिबद्धो वक्ता वासन्तिकैश्वर्यं स्वप्रियतमायाः समक्षं वर्णयन् वक्ति यत् साम्प्रतं कामातुराः कामिन्यः स्तनेषु हारधारणं कुर्वन्ति, करेषु वलयं जघनेषु च मेखलाम्।

अन्वयः— अनङ्गातुरमानसानां कामिनीनां स्तनेषु सितचन्द्रनार्द्राः हाराः संगं प्रयान्ति, भुजेषु वलयाङ्गदानि संगं प्रयान्ति जघनेषु च काञ्च्यः संगं प्रयान्ति।

व्याख्या— अनङ्गातुरमानसानाम्= अनङ्गेन= कामेन, आतुरम्= व्याकुलम्, मानसम्= अन्तःकरणं यासां तथाविधानाम्, नितम्बिनीनाम्= विलासिनीनां नितम्बप्रधानानां, स्तनेषु= पयोधरेषु सितचन्दनार्द्रा= सितेन= धवलेन, चन्दनेन= मलयजेन आर्द्राः= संसिक्ताः हाराः= कलापाः संगम्= संयोगं प्राप्नुवन्ति= यान्ति। वलयाङ्गदानि= वलयानि च= कङ्कणानि च, अङ्गदानि च= भुजदण्डाख्यानि भूषणानि च, जघनेषु= नितम्बेषु, काञ्च्यः= मेखलाः, च सङ्गम्= युक्ततां, प्रयान्ति= प्राप्नुवन्ति।

साहित्यिकविशेषताः— अस्मिञ्छ्लोके सन्ति (१) उपजातिवृत्तम् (२) कामिनीनांभूषणवर्णनम् (३) श्रैंगारिकविभावानामुपस्थापनम्, (४) अल्पसमासवती संघटना (५) वैदर्भी रीतिः (६) माधुर्यप्रसादाख्यौ गुणौ च।

समासः— अनङ्गातुरमानसानाम्= अनङ्गेन आतुरं मानसं यासां तथाविधानाम् (ब० ब्री०)। सितचन्दनार्द्राः- सितञ्च तत् चन्दनम् सितचन्दनम् (कर्मधारयः) तेन आर्द्राः। वलयाङ्गदानि= वलयानि चाङ्गदानि च (द्वन्द्वः)।

हिन्दीशब्दार्थ— अनङ्गातुरमानसानाम्= जिनका मन काम के आवेश के कारण व्याकुल है, उन नितम्बिनीनाम्= कामिनियों के, स्तनेषु= स्तनों पर, सितचन्दनार्द्राः= उजले चन्दन से संसिक्त, हाराः= हार, भुजेषु= बाहों में, वलयाङ्गदानि= भुजदण्ड और कंगन, जघनेषु= और नितम्बों पर, काञ्च्यः= करधनी, संङ्ग प्रयान्ति= सुशोभित होते हैं।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिवद्ध वक्ता अपनी प्रियतमा के समक्ष

वसन्त ऋतु का वर्णन करते हुए कहता है कि इस समय कामिनियाँ अपने स्तनों को मलय चन्दन में धोए गए उजले-उजले हारों से, भुजाओं को कंगन से तथा भुजदण्ड नामक अलंकारों से एवं नितम्ब भाग को करधनी से अलंकृत करती हैं। अनङ्गातुरमानसानां पद का प्रयोग करके कवि यह अभिव्यक्त करना चाहते हैं कि यह ऋतु ही ऐसा है कि इसमें रमणियों का मन काम की भावना से व्याकुल हो जाया करता है।

भावार्थ— कामाकुल मन वाली विलासिनियाँ इस समय अपने स्तनों को हारों से, हाथों को कंगन तथा भुजदण्ड से तथा नितम्बभाग को काञ्चीकलाप से सजाती हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ— इस श्लोक में (१) उपजाति छन्द है, (२) कामिनियों के अलंकार विशेष का वर्णन है, (३) श्रृङ्गारिक विभावों का उपस्थापन है (४) वैदर्भी रीति है, (५) अल्प समास वाली संघटना है तथा (६) माधुर्य एवं प्रसाद गुण हैं।

सपत्रलेखेषु विलासिनीनां वक्त्रेषु हेमाम्बुरुहोपमेषु।
रत्नान्तरे मौक्तिकसङ्गरम्यः स्वेदागमो विस्तरतामुपैति।। ८।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके कविनिबद्धो वक्ता कामिनीनां मुखमण्डलस्य वर्णनं कुर्वन् वक्ति यत् तासां मुखानि स्वर्णिमकमलवदत्यन्ताकर्षकाणि सन्ति। तासां मुखेषु कस्तूरीकेसरचन्दनादिद्रव्यैः पत्रलेखनं सौन्दर्यवर्धनाय क्रियते। तदात्वे तासां मुखेषु मुक्ताफलवदतिरम्यः स्वेदागमः रत्नांतरेषु सौन्दर्यातिशयं धत्ते।

अन्वयः— स्वेदागमः सपत्रलेखेषु हेमाम्बुरुहोपमेषु वक्त्रेषु रत्नान्तरे मौक्तिकसङ्गरम्यः विलासिनीनां विस्तरतामुपैति।।

व्याख्याः— विलासिनीनाम्= विलासप्रियाणां कामिनीनाम् सपत्रलेखेषु= पत्रलेखसमन्वितेषु हेमाम्बुरुहोपमेषु= अम्भसि रोहतीति अम्भोरुहम् हेम्नः= सुवर्णस्य अम्भोरुहम्= तेन सह उपमा येषां तथाविधेषु, वक्त्रेषु= मुखेषु, स्वेदागमः= स्वेदस्य= घर्मोदकस्य आगमः= उत्पत्तिः, रत्नान्तरे= रत्नानाम्= हीरकादिकानाम्, अन्तरे= मध्ये, मौक्तिकसङ्गरम्यः= मुक्तफलवदति मनोहरः, विस्तरतामुपैति= शोभातिशयमाप्नोति।

साहित्यिकविशेषताः— अस्मिञ्छ्लोके सन्ति (१) उपजातिवृत्तम् (२) कामिनीनां मुखमण्डलस्य मनोज्ञं वर्णनम्, (३) श्रृङ्गारिकविभावानां वर्णनम् (४) उपमालंकारः (५) अल्पसमासवती संघटना (६) माधुर्यप्रसादाख्यौ गुणौ (७) वैदर्भी रीतिश्च।

समासः— हेमाम्बुरुहोपमेषु= हेम्न अम्बुरुहम्= हेमाम्बुरुहम् (ष० त० पु०) तेन सहोपमा येषां तेषु (ब० ब्री०)। स्वेदागमः- स्वेदस्य आगमः (ष० त० पु०)। रत्नान्तरे= रत्नानाम् अन्तरे (ष० त० पु०)। मौक्तिकसङ्गरम्यः- मौक्तिकस्य सङ्गः= मौक्तिकसंगः (ष० त० पु०) तेन रम्यः= मौक्तिकसंगरम्यः (ष० त० पु०)।

हिन्दीशब्दार्थ— विलासिनीनाम्= रमणियों के, सपत्रलेखेषु= पत्रलेख से

युक्त, हेमाम्बुरुहोपमेषु= स्वर्णिम कमल के समान, वक्त्रेषु= मुख पर, रत्नांतरे= रत्नों के बीच, मौतिकसंगरम्यः= मोती के समान अच्छा लगने वाला, स्वेदागमः= पसीने की बूँदें, विस्तरतामुपैति= अत्यन्त शोभा को धारण करती हैं।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिवद्ध वक्ता अपनी प्रियतमा के समक्ष वासन्तिक सौन्दर्य का वर्णन करते हुए कहता है कि इस समय कामिनियों के सुवर्ण कमल के समान अत्यन्त मनोहर मुखमण्डल पर, उनके सौन्दर्य श्री की वृद्धि के लिए कस्तूरी, केसर तथा चन्दन आदि द्रव्यों से पत्रलेख का निर्माण उनकी सखियाँ करती है। उस समय उन कामिनियों के मुखड़े पर जब पसीने की बूँदें निकल आती हैं तो वे देखने में इतना सुन्दर लगती हैं, जैसे अनेक रत्नों के बीच में कोई मोती विद्यमान हो। इस श्लोक के 'मौक्तिकसंगरम्यः' तथा 'हेमाम्बुरुहोपमेषु' इन पदों में उपमालंकार है। 'हेमाम्बुरुहपमेषु' पद के द्वारा मुखकी गौरवर्णता की समता स्वर्णिम कमल से बतलायी गयी है तथा 'मौक्तिकसंगरम्यः' पद से यह बतलाया गया है कि पत्रलेख सम्पन्न मुखड़े पर निकला हुआ पसीना इनके रत्नों के बीच में विद्यमान मोती की मनियाँ के समान सुशोभित होता है।

भावार्थ— रमणियों के पत्रलेख से युक्त स्वर्णिम कमल के समान मुखड़े पर निकला हुआ पसीना रत्नों के बीच में विद्यमान मोती के समान सुशोभित होता है।

साहित्यिक विशेषताएँ— इस श्लोक में (१) उपजातिवृत्त है, (२) रमणियों के मुखमण्डल का मनोज्ञ वर्णन है, (३) श्रैंगारिक विभावों का वर्णन है (४) उपमालङ्कार है, (५) वैदर्भी रीति है, (६) अल्पसमासवती संघटना है, और (७) माधुर्य एवं प्रसाद नामक गुण विद्यमान हैं।

उच्छ्वासयन्त्यः श्लथबन्धनानि गात्राणि कंदर्पसमाकुलानि।
समीपवर्तिष्वधुनाप्रियेषु समुत्सुका एव भवन्ति नार्यः।। ९।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके कविनिवद्धो वक्ता स्वप्रियतमायाः समक्षं वासन्तिकस्य वैभवस्य वर्णनं कुर्वन् वक्ति यत् साम्प्रतं ताः स्त्रियः यासां सविधे तासां पतयः सन्ति ताः सदा कामाकुलाः सत्यः तेषां सहवासं कामयन्ते।

अन्वयः— अधूना प्रियेषु समीपवर्तिषु नार्यः कन्दर्पसमाकुलानि श्लथबन्धनानि गात्राणि उच्छ्वासयन्त्यः समुत्सुकाः एव भवन्ति।

व्याख्या— अधूना= इदानीम्, प्रियेषु= प्रियतमेषु, समीपवर्तिषु= सविधे विद्यमानेषु, नार्यः= रमण्यः, कन्दर्पसमाकुलानि= कन्दर्पेण= कामेन, समाकुलानि= व्याकुलानि, श्लथबन्धनानि= शिथिलं, बधनम् येषां तथाविधानि गात्राणि= शरीराणि, उच्छ्वासयन्त्यः= निःश्वासयन्त्यः, समुत्सुकाः= सोत्कण्ठिताः एव भवन्ति= जायन्ते।

साहित्यिकविशेषताः— अस्मिञ्छ्लोके सन्ति (१) उपजातिवृत्तम् (२) नारीणां मनोदशायाः वर्णनम् (३) सम्भोगशृङ्गारात्मकं वर्णनम् (४) अल्पसमासवती संघटना (५) वैदर्भी रीतिः (६) माधुर्यप्रसादाख्यौ गुणौ च।

समासः— कन्दर्पसमाकुलानि= कन्दर्पेण समाकुलानि यानि तानि (ब० ब्री०) श्लथबन्धनानि= श्लथं बन्धनं येषां तानि (ब० ब्री०)

हिन्दीशब्दार्थ— अधुना= इस समय, प्रियेषु= पतियों के, समीपवर्तिषु= सन्निकट में विद्यमान रहने पर, नार्यः= रमणियाँ, कन्दर्पसमाकुलानि= काम वासना से व्याकुल, श्लथबन्धनानि= शिथिल बन्धन वाले, गात्राणि= शरीरों को, उच्छ्वासयन्त्यः= उल्लसित होती हुई, समुत्सुका एव भवन्ति= उत्कण्ठित होती हैं।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिवद्ध वक्ता अपनी प्रियतमा के समक्ष वासन्तिक वैभव का वर्णन करते हुए कहता है कि इस समय वे रमणियाँ जिनके सन्निकट में उनके प्रियतम रहते हैं, वे कामाकुल तथा शिथिल बन्धन वाले अपने शरीर को उल्लसित करती रहती हैं तथा सदा उत्कण्ठित होती रहती हैं।

भावार्थ— इस समय रमणियाँ अपने प्रियतम के सन्निकट रहने पर सदा उत्कण्ठित रहती हैं। उनके शरीरों के बन्धन श्लथ बने रहते हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में उपजातिवृत्त है, (२) श्रृङ्गारिक वर्णन है, (३) अल्पसमास वाली संघटना है (४) वैदर्भी रीति है (५) माधुर्य तथा प्रसाद नामक गुण हैं।

तनूनि पाण्डूनि मदालसानि मुहुर्मुहुर्जृम्भणतत्पराणि।
अंगान्यनङ्गः प्रमदाजनस्य करोति लावण्यससंभ्रमाणि।। १०।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके कविनिवद्धो वक्ता वासन्तिकस्य वैभवस्य स्वप्रियतमायाः समक्षं वर्णनमुपस्थापयन् वक्ति यत् साम्प्रतं कामस्यातीव वेगो वर्त्तते। अतएव सः सुन्दरीणां शरीराणि कार्श्यान्वितानि पाण्डुवर्णानि, असकृद्जृम्भण तत्पराणि लावण्यमयानि च करोति।

अन्वयः— अनङ्गः प्रमदाजनस्य अङ्गानि तनूनि पाण्डूनि मदालसानि मुहुर्मुहुः जृम्भणतत्पराणि लावण्य-ससम्भ्रमाणि करोति।

व्याख्या— अनङ्गः= कामदेवः, प्रमदाजनस्य= कामिनीसमूहस्य, अङ्गानि= अवयवानि, तनूनि= कृशानि, पाण्डूनि= पाण्डुवर्णानि, समन्थराणि= सालसानि, मुहुर्मुहुः= असकृत् जृम्भणतत्पराणि= जृम्भणकर्मपरायणानि, लावण्यससम्भ्रमाणि= लावण्येन= सौन्दर्येण, ससम्भ्रमाणि= सम्भ्रमयुक्तानि- विलासयुक्तानीति भावः, करोति= सम्पादयति।

साहित्यिकविशेषताः— अस्मिञ्छ्लोके सन्ति (१) उपजातिवृत्तम् (२) शृंगारिकं वर्णनम् (३) अल्पसमासवती वृत्तिः (४) वैदर्भीरीतिः (५) माधुर्यप्रसादाख्यौ गुणौ च।

समासः— जृम्भणतत्पराणि- जृम्भणे तत्पराणि यानि तानि (ब० ब्री०) लावण्यससम्भ्रमाणि- लावण्यस्य ससम्भ्रमाणि यानि तानि। (ब० ब्री०)

हिन्दीशब्दार्थ— अनङ्गः= कामदेव, प्रमदाजनस्य= रमणियों के अङ्गानि= अंगों को, तनूनि= कृश, पाण्डूनि= पीले, मदालसानि= आलस्य युक्त, मुहुर्मुहुः=

बारम्बार, जृम्भणतत्पराणि= जम्भाई लेने वाला, लावण्य ससम्भ्रमाणि= सौन्दर्य के विलास से युक्त, करोति= बना दे रहा है।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिवद्ध वक्ता अपनी प्रियतमा के समक्ष वासन्तिक वैभव का वर्णन करते हुए कहता है कि इस समय काम अत्यन्त प्रबल हो गया है। अतएव वह सुन्दरियों के शरीर में निम्नांकित विकारों को उत्पन्न कर दे रहा है। उनके अङ्ग दुबले-पतले हो रहे हैं, शरीर पीला हो रहा है, उनका शरीर अलसाया रहता है। वे बार-बार जम्भाई लेती हैं तथा उनका शरीर सौन्दर्यमय विलासों से युक्त प्रतीत होता है।

भावार्थ— इस समय कामदेव कामिनियों के शरीर को दुबला-पतला, पीला, आलस्य युक्त, बार-बार जम्भाई लेने वाला तथा सौन्दर्य के विलास से सम्पन्न बना देता है।

साहित्यिक विशेषताएँ— इस श्लोक में उपजाति वृत्त है (२) सुन्दरियों के शरीर में होने वाले कामजन्य विकारों का वर्णन है (३) श्रैङ्गारिक विभावों का वर्णन है (४) अल्पसमास वाली संघटना है (५) माधुर्य एवं प्रसाद गुण हैं तथा (६) वैदर्भी रीति हैं।

छायां जनः समभिवांछति पादपानां, नक्तं तथेच्छति पुनः किरणं सुधांशोः।
हर्म्यं प्रयाति शयितुं सुखशीतलं च कान्तां च गाढमुपगूहति शीतलत्वात्।। ११।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके कविनिवद्धो वक्ता स्वप्रियतमायाः समक्षं वासन्तिकं वैभवं वर्णयन् एकस्यैव कामस्यानेकधोल्लेखं करोति। स वक्ति यदेक एवानङ्गः कामिनीनां नेत्रेषु लोलः 'कपोलेषु पीतवर्णः, स्तनेषु कठिनः, कटितटेषु कृशः, नितम्बेषु पीनश्च प्रतीयते।

अन्वयः— अद्य अनङ्गः स्त्रीणां मदिरालसेषु, नेत्रेषु लोलः, गण्डेषु पाण्डुः, स्तनेषु कठिनः मध्येषु निम्नः, जघनेषु पीनः (इत्थम्) बहुधा स्थितः।

व्याख्या— अद्य= इदानीम्, अनङ्गः= कामदेवः, स्त्रीणाम्= नारीणाम्, मदिरालसे= मादकेषु सालसेषु च नेत्रेषु= अक्षिषु, लोलः= चञ्चलः सन् तिष्ठति। गण्डेषु= कपोलेषु, पाण्डुः= पीतवर्णः, स्तनेषु= पयोधरेषु, कठिनः= काठिन्यवान्, मध्येषु= कटितटेषु निम्नः= कृशतां गतः, जघनेषु= नितम्बेषु, पीनः= पृथुलः इत्थम् बहुधा= अनेन प्रकारेण, स्थितः= संस्थितः, वर्त्तते इति शेषः।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके सन्ति उपजातिवृत्तम् (२) दीपकालंकारः एकस्यैव कामस्यानेकधोल्लेखात् (३) श्रैङ्गारिकं वर्णनम् (४) समासरहिता संघटना (५) वैदर्भी रीतिः (६) माधुर्यप्रसादाख्यौ च गुणौ।

समासः— मदिरालसेषु= मदिराणि च अलसानि च तेषु= मदिरालसेषु (द्वन्द्वः समासः)।

हिन्दीशब्दार्थ— अद्य= इस समय, अनङ्ग= कामदेव, स्त्रीणाम्= स्त्रियों के मदिरालसेषु= मादक एवं अलसायी, नेत्रेषु= आँखो में, लोलः= चञ्चल, गण्डेषु=

गालों में, पाण्डुः= पीला, स्तनेषु= स्तनों में, कठिनः= कठोर, मध्येषु= कमर में, निम्नः= कृश तथा जघनेषु= जंघों में, पीनः= मोटा इस तरह से अकेला ही, बहुधा= अनेक रूपों में, स्थितः= विद्यमान है।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिवद्ध वक्ता अपनी प्रियतमा के समक्ष वासन्तिक वैभव का वर्णन करते हुए कहता है कि इस वसन्त ऋतु में अकेला ही कामदेव रमणियों के भिन्न-भिन्न अंगों में भिन्न-भिन्न रूप से स्थित है। रमणियों के नेत्रों में वह चंचलता रूप से स्थित है तो उनकी गालों में जो पीलापन दिखायी देता है, वह भी काम का ही एक रूप है। वह उनके स्तनों में कठोरता रूप से स्थित है तो कमर में कृशता के रूप में। वह रमणियों के जंघों में मोटापा के रूप में स्थित है। ये सभी रूप काम के ही हैं। इसीलिए रमणियों के उपर्युक्त अंगों के उपर्युक्त वैशिष्ट्य युवजन हृदय सम्मोहक हो जाते हैं।

भावार्थ— आज कामदेव रमणियों की आँखों में चंचलता, गालों में पीलापन, स्तनों में कठोरता, कमर में पतलापन और जंघों में मोटापन बनकर स्थित है।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में उपजाति छन्द है (२) दीपकालंकार है (३) श्रृंगारिक विभावों का वर्णन है। (४) समासरहित संघटना है और (५) माधुर्य एवं प्रसाद नामक गुण हैं।

नेत्रेषु लालो मदिरालसेषु गण्डेषु पाण्डुः कठिनः स्तनेषु।
मध्येषु निम्नो जघनेषु पीनः स्त्रीणामनङ्गो बहुधा स्थितोऽद्य।। १२।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके कविनिवद्धो वक्ता स्वप्रियतमायाः सविधे वासन्तिकं वैभवं वर्णयन् वक्ति यत् साम्प्रतं सर्वो हि कामिलोकः सविधे छायां कामयते, रात्रौ च चन्द्रमसो जयोत्स्नां कामयते। सः सुखपूर्वकं शयितुं हर्म्योपरि प्रयाति, कान्तां च गाढमालिङ्गति।

अन्वयः— जनः पादपानां छाया समभिवांछति तथा नक्तं पुनः सुधांशोः किरणं इच्छति, सुखशीतलं च शयितुं हर्म्यं प्रयाति, शीतलत्वात् कान्तां च गाढमुपगूहति।

व्याख्या— जनः= सर्वो हि कामिलोकः, पादपानाम्= वृक्षाणां छायाम्= प्रतिबिम्बम् समभिवांछति= कामयते, तथा= तेनैव प्रकारेण, नक्तम्= रात्रौ, पुनः= भूयः, सुधांशोः= चन्द्रमसः, किरणम्= ज्योत्सनां, इच्छति= कामयते। सुखशीतलं च= सुखदं शैत्यप्रदं च शयितुम्= शयनं कर्तुं, हर्म्यम्= प्रासादपृष्ठोपरि प्रयाति= गच्छति, शीतलत्वात्= शैत्यत्वात्, कान्ताम्= प्रियतमां च, उपगूहति= गाढमालिङ्गति।

साहित्यिकविशेषताः— अस्मिञ्छ्लोके सन्ति (१) उपजातिवृत्तम् (२) सम्भोगश्रृंगारात्मकं वर्णनम्, (३) समासरहिता संघटना (४) वैदर्भीरीतिः (५) माधुर्यप्रसादाख्यौ च गुणौ।

हिन्दी शब्दार्थ— जनः= सम्पूर्ण कामी समूह, पादपानाम्= वृक्षों की, छायाम्= छाया को, समभिवाञ्छति= चाहता है। तथा= और, नक्तं पुनः= रात्रि में भी, सुधांशोः= चन्द्रमा की, किरणम्= चाँदनी, इच्छति= प्राप्त करना चाहता है,

सुखशीतलम्= सुखप्रद तथा शीतल, शयितुम्= शयन करने के लिए, हर्म्यम्= छत पर- प्रयाति= जाता है। शीतलत्वात्= ठंढी होने के कारण, कान्तां च= अपनी प्रियतमा का, गाढम् उपगूहति= गाढालिङ्गन करता है।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिविद्ध वक्ता अपनी प्रियतमा के समक्ष वासन्तिक वैभव का वर्णन करते हुए कहता है कि इस वसन्त ऋतु में अब कुछ-कुछ गर्मी अनुभूत होने लगी है। किसी को ठंढी से भय नहीं होता। सब लोग अब वृक्षों की छाया में बैठना चाहते हैं तथा रात्रि में भी वे चाँदनी का आनन्द लेना चाहते हैं। जिससे कि सोते समय सुखप्रद ठंढी का अनुभव हो इसलिए लोग छत पर सोने के लिए जाते हैं और इस समय कान्ता का आलिङ्गन शैत्यप्रद होता है अतएव वे उसका गाढालिङ्गन करते हैं।

भावार्थ— सब लोग दिन में वृक्षों की छाया प्राप्त करना चाहते हैं और रात्रि में चन्द्रमा की चाँदनी को प्राप्त करना चाहते हैं। सुखप्रद शीतलता प्राप्त करने के लिए वे लोग छत पर सोने जाते हैं और शीतल होने के कारण अपनी प्रियतमा का गाढ आलिङ्गन करते हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में उपजाति छन्द है, (२) सम्भोगशृङ्गार का वर्णन है, (३) समास रहित संघटना है (४) वैदर्भी रीति है और (५) प्रसाद तथा माधुर्य नामक गुण हैं।

अङ्गानि निद्रालसविभ्रमाणि वाक्यानि किंचिन्मदिरालसानि।
भ्रूक्षेपजिह्मानि च वीक्षितानि चकार कामः प्रमदाजनानाम्।। १३ ।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके कविनिवद्धो वक्ता एकस्यैव कामस्य कामिनीषु बह्वीनां क्रियाणां वर्णनं करोति। सः तासामङ्गानि निद्रालसमयानि करोति, तासां वचांसि मदलसितानि करोति विलोकनं च तासां भ्रूविक्षेपयुक्तं करोति।

अन्वयः— कामः प्रमदाजनानां अङ्गानि निद्रालसविभ्रमाणि वाक्यानि किञ्चित् मदिरालसानि वीक्षितानि च भ्रूक्षेपजिह्मानि चकार।

व्याख्याः— कामः= अनङ्गः प्रमदाजनानाम्= कामिनीनाम्, अङ्गानि= शरीरावयवानि, निद्रालसविभ्रमाणि= निद्रायाः= गुडाकायाः, आलस्यस्य च विभ्रमः विलासो यत्र तथाविधानि चकार= कृतवान्। सः तासां वाक्यानि= वचांसि, किञ्चित्= ईषत् मदिरालसानि= वासनामयानि चकार, च= किञ्च वीक्षितानि= विलोकनानि विक्षेपजिह्मानि= भ्रूविक्षेपेण= कटाक्षपातेन, जिह्मितानि= वक्राणि, चकार= कृतवान्।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके सन्ति (१) उपजाति वृत्तम्, (२) क्रियादीपकालंकारः (३) श्रैंगारिकविभावानां वर्णनम् (४) अल्पसमासवती संघटना, (५) वैदर्भी रीतिः (६) माधुर्यप्रसादाख्यौ गुणौ च।

समासः— प्रमदाजनानाम्प्रमदाश्चते जनाः तेषाम्- (कर्मधारयः) निद्रालसविभ्रमाणि= न्रिदा च अलसं च= निद्रालसे (द्वन्द्वः) तयोः विभ्रमाणि येषु तानि (ब० व्री०) मदिरालसानि=आलस्यंविद्यते ऽस्मिन्निति अलसम्, मदिरया अलसम्=मदिरालालसम्

(कर्मधारयः) तथाभूतानि यानि तानि (ब० ब्री०) (द्वन्द्वः) तौ विद्येते येषु तानि= मदलालसानि (ब० ब्री०)- भ्रूक्षेपजिह्मानि= भ्रूक्षेपेण जिह्मानि यानि तानि। (ब० ब्री०)

हिन्दीशब्दार्थ— कामः= कामदेव, प्रमदाजनानाम्= विलासिनियों के, अङ्गानि= अंगों को, निद्रालसविभ्रमाणि= निद्रा तथा आलस्य के विलास से युक्त, वाक्यानि= वचनों को, किञ्चित्= कुछ मदिरालसानि= मद एवं लालसा से युक्त बना दिया है। वीक्षितानि च= और दृष्टि को भ्रूक्षेपजिह्मानि= कटाक्षपात के कारण वक्र चकार= बना दिया है।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिवद्ध वक्ता, अपनी प्रियतमा के समक्ष वासन्तिक वैभव का वर्णन करते हुए कहता है कि इस ऋतु में कामदेव ने कामिनियों के भिन्न-भिन्न प्रकार की क्रियाओं में भिन्न-भिन्न प्रकार का विकार उत्पन्न कर दिया है। उसने उनके अङ्गों को निद्रा तथा आलस्य के विभ्रमों से परिपूर्ण बना दिया है। उनके वाक्यों को कुछ मद तथा लालसा से युक्त बना दिया है तथा उनके नेत्रों को कटाक्षपात के कारण कुछ तिरछा बना दिया है। अर्थात् कामासक्त होने के कारण उनके अंगों में निद्रा और आलस्य भर गया है। उनके वाक्य कुछ चाटुकारिता पूर्ण होने लगे हैं तथा वे तिरछी नजरों से देखने लग गयी हैं।

भावार्थ— कामदेव ने कामिनियों के अंगों को निद्रा तथा आलस्य के विभ्रमों से युक्त, वाक्यों को चाटुकारिता पूर्ण तथा देखने की क्रिया को वक्र बना दिया है।

साहित्यिकविशेषताएँ— (१) इस श्लोक में उपजाति छन्द है, (२) क्रियादीपकालंकार है (३) श्रैंगारिक वर्णन है (४) अल्पसमास वाली संघटना है (५) माधुर्य एवं प्रसाद नामक गुण हैं तथा (६) वैदर्भीरीति है।

प्रियङ्गुकालीयककुङ्कुमाक्तं स्तनेषु गौरेषु विलासिनीभिः।
आलिप्यते चन्दनमङ्गनाभिर्मदालसाभिर्मृगनाभियुक्तम्।। १४।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके कविनिवद्धो वक्ता स्वप्रियतमायाः समक्षं वासन्तिकं वैभवं वर्णयन् वक्ति यत् वसन्ते ऋतौ कामिन्यः स्वस्तनेषु प्रियङ्गुकालीयक-कस्तूरीमिश्रितस्य चन्दनस्य विलेपनं कुर्वन्ति।

अन्वयः— विलासिनीभिः मदालसाभिः अङ्गनाभिः गौरेषु स्तनेषु प्रिङ्गुका-लीयककुङ्कुमाक्तम् मृगनाभियुक्तम् चन्दनं आलिप्यते।

व्याख्याः— विलासिनीभिः= कामिनीभिः, मदालसानि= मदेन= कामदेवेन अलसाभिः आलस्यवतीभिः अङ्गनाभिः= स्त्रीभिः, गौरेषु= गौरवर्णेषु स्तनेषु= पयोधरेषु प्रियङ्गुकालीयककुंकुमाक्तम्= प्रियंगुश्च= कालीयकञ्च= कुकुमञ्च= काश्मीरकञ्च एभिः आक्तम्= रञ्जितम्, मृगानाभियुक्तम्= कस्तूरीद्रव्यसंयुक्तं चन्दनम्=, आलिप्यते= विलेपनं क्रियते।

साहित्यिकविशेषताः— (१) अस्मिञ्छ्लोके सन्ति उपजातिवृत्तम् (२) कामिनीनां वक्षोजेषु विलेपनद्रव्यस्य निर्देशः (३) श्रैङ्गारिकविभाववर्णनम् (४) वैदर्भी रीतिः (५) माधुर्यप्रसादाख्यौ गुणौ (६) अल्पसमासवती संघटना च।

समासः— मदालसाभिः= मदेन अलसा या स्ताभिः (ब० ब्री०)। प्रियङ्गुकालीयककुंकुमानि (द्वन्द्वः) तै आक्तम् यत् तत् (ब० ब्री०)। मृगनाभियुक्तम्= मृगनाभ्या युक्तम् (तृ० त० पु०)।

हिन्दीशब्दार्थ— विलासिनीभिः= विलास प्रिय, मदालसाभिः= मद से आलस्य युवत, अङ्गनाभिः= कामिनियों द्वारा, गौरेषु= गोर-गोरे, स्तनेषु= स्तनों पर, प्रियङ्गुकालीयककुंकुमाक्तम्= प्रियङ्गु, कालीयक तथा कुंकुम से रंगे हुए तथा, मृगनाभियुक्तम= कस्तूरी से युक्त, चन्दनम्= चन्दन, आलिप्यते= लेपा जाता है।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिवद्ध वक्ता अपनी प्रियतमा से कहता है कि इस वसन्त ऋतु में अपने गोरे-गोरे स्तनों पर कामिनियाँ उस चन्दन का लेप करती हैं, जो चन्दन, प्रियङ्गु, कालीयक तथा कुंकुम के रंग से रंगा हुआ तथा कस्तूरी से युक्त होता है।

भावार्थ— मदोन्मत्त विलासिनी स्त्रियाँ अपने गोर-गोरे स्तनों पर उस चन्दन का लेप करती हैं जो प्रियङ्गु, कालीयक तथा कुंकुंम के रंग से रंगा होता है तथा कस्तूरी मिश्रित होता है।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में उपजाति वृत्त है (२) कामिनियों के वक्षोज पर लगाए जाने वाले लेप का वर्णन है (३) श्रैंगारिक विभावों का वर्णन है (४) अल्पसमास वाली संघटना है (५) वैदर्भीरीति है तथा (६) माधुर्य एवं प्रसाद नामक गुण हैं।

गुरूणि वासांसि विहाय तूर्णं तनूनि लाक्षारसरञ्जितानि।
सुगन्धिकालागुरुधूपितानि धत्ते जनः काममदालसाङ्गः।। १५ ।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके कविनिवद्धो वक्ता स्वप्रियतमां वक्ति यत् साम्प्रतं समेषां युवकानामङ्गानि काममदेन आलस्ययुक्तानि संजातानि। अत-एव ते सर्वे एव स्वशरीरात् स्थूलानि वस्त्राणि अवतार्य सूक्ष्माणि वस्त्राणि परिदधति।

अन्वयः— काममदालसाङ्गः जनः तूर्णं गुरूणि वासांसि विहाय लाक्षारसरञ्जितानि सुगन्धिकालागुरुधूपितानि तनूनि (वासांसि) धत्ते।

व्याख्या— अलसानि= आलस्येन युक्तानि अङ्गानि यस्याऽसौ तथाविधः, जनः= पुरुषः, तूर्णम्= शीघ्रम्-गुरूणि= गौरव गुण युक्तानि, वासांसि= वस्त्रणि, विहाय= परित्यज्य लाक्षारसरञ्जितानि= लाक्षायाः= जतोः, रसेन= सारेण, रञ्जितानि, सुगन्धिकालागुरुधूपितानि= सुगन्धिना= सौगन्ध्ययुक्तेन, कालागुरुणा धूपितानि= वासितानि तनूनि= सूक्ष्माणि वासांसि= वस्त्राणि, धत्ते= धारणं करोति।

साहित्यिकविशेषताः— अस्मिञ्छ्लोके सन्ति (१) उपजातिवृत्तम्, (२) श्रैङ्गारिकं वर्णनम् (३) माधुर्यप्रसादाख्यौ गुणौ (४) अल्पसमासवती संघटना (५) वैदर्भी रीतिश्च।

समासः— काममदालसाङ्गः= कामस्य मदः= ऋष० त० पु०) तेन अलसानि अङ्गानि यस्याऽसौ तथाविधः (ब० ब्री०) लाक्षारस रञ्जितानि= लाक्षायाः रसः

(ष० त०पु०) तेन रञ्जितानि यानि तानि (ब० ब्री०)। सुगन्धिकालागुरुधूपितानि= सुगन्धिश्चासौ कालागुरुः= सुगन्धिकालागुरुः(कर्मधारयः) तेन धूपितानि यानि तानि (ब० ब्री०)

हिन्दीशब्दार्थ– काममदालसाङ्गः= काम के मद से आलस्य युक्त अङ्गों वाला, जनः= व्यक्ति, तूर्णम्= शीघ्र गुरूणि= मोटे, वासांसि= वस्त्रों को, विहाय= त्यागकर, लाक्षारसरञ्जितानि= लाह के रस से रङ्गे गये तथा सुगन्धिकालागुरुधूपितानि= सुगन्धित काले अगुरु के धूप से सुगन्धित बनाए गए, तनूनि= पतले, वासांसि= वस्त्रों को धत्ते-धारण करता है।

उपस्थापन– इस श्लोक में कविनिवद्ध वक्ता अपनी प्रियतमा को वासन्तिक वैभव बतलाते हुए कहता है कि इस वसन्त की बेला में युवकों के अंग काम के मद से आलस्य युक्त हो गये हैं। वे शिशिर में पहनने योग्य मोटे कपड़ों को पहनना बन्द कर दिये हैं। वे ऐसे लाल रंग के वस्त्रों को पहनने लगे हैं जो वस्त्र लाह के रस में रंगे गये हैं तथा लाल अगुरु के धूप से सुवासित बनाए गए हैं।

'लाक्षारसरञ्जितानि' पद के द्वारा महाकवि ने इस बात को स्पष्ट कर दिया है कि प्राचीन काल में कपड़े को लाल रंग का बनाने के लिए उसे लाह रंग में रंगा जाता था उसे सुवासित करने के लिए काले अगुरु के धूप से सुवासित किया जाता था। इस अर्थ को महाकवि ने 'सुगन्धिकालागुरुधूपितानि' पद से अभिव्यक्त किया है।

भावार्थ– काम के मद से आलसी बना हुआ व्यक्ति मोटे वस्त्रों को उतार कर लाक्षारस में रंगे गए तथा काले अगुरु के धूप से सुवासित लाल रंग के महीन वस्त्र को धारण करता है।

साहित्यिक विशेषताएँ– (१) इस श्लोक में उपजाति वृत्त है, (२) श्रैंगारिक वर्णन है, (३) माधुर्य एवं प्रसाद गुण हैं, (४) अल्पसमास वाली संघटना है (५) तथा वैदर्भी रीति है।

पुंस्कोकिलश्चूतरसासवेन मत्तः प्रियां चुम्बति रागहृष्टः।
कूजद्द्विरेफोऽप्ययमम्बुजस्थः प्रियं प्रियायाः प्रकरोति चाटु।। १६ ।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ– अस्मिञ्छ्लोके कविनिवद्धो वक्ता वासन्तिकं वैभवं वर्णयन् वक्ति स्वप्रियतमां यत् साम्प्रतं सर्वत्र कामस्यैव साम्राज्यमवलोक्यते। तिर्यञ्चोऽपि स्वप्रियतमायाः चाटुकाराः सञ्जाताः। पुंस्कोकिलः स्वप्रियतमां चुम्बति भ्रमरोऽपि स्वप्रियतमायाः कर्णे किमपि शनैः कलं रौति।

अन्वयः– चूतरसासवेन मत्तः रागहृष्टः पुंस्कोकिलः प्रियां चुम्बति अयं अम्बुजस्थःद्विरेफः अपि कूजद् प्रियायाः प्रियं चाटु प्रकरोति।

व्याख्याः– चूतरसासवेन= चूतस्य, आम्रस्य, रसः= मञ्जरी स एव आसवः= मदिरा तेन हेतुना मत्तः= मदमत्तः, रागहृष्टः= रागेण= अनुरागेण= प्रेम्णा, हृष्टः= प्रसन्नः पुंस्कोकिलः= पुमान् पिकः, प्रियाम्= स्वप्रियतमां, चुम्बति। अम्बुजस्थः=

कमलोपरि स्थितः द्विरेफः= भ्रमरः, अपि कूजद्= गुञ्जनं कुर्वन् प्रियायाः= भ्रमर्याः, प्रियम्= मनोह्लादकम्, चाटु= चाटुकारितां प्रकरोति तामनुकूलयितुम्।

साहित्यिकविशेषताः— अस्मिञ्छ्लोके सन्ति (१) उपजातिवृत्तम् (२) सम्भोगशृंगाररसाभासः रसस्यास्य तिर्यग्गतत्वात् (३) अल्पसमासवती संघटना (४) वैदर्भी रीतिः (५) माधुर्यप्रसादाख्यौ च गुणौ।

समासः— चूतरसासवेन= चूतस्य रसः= चूतरसः (ष० त० पु०) तस्यासवेन= चूतरसासवेन (ष० त० पु०)। रागहृष्टः= रागेण हृष्टः (तृ त० पु०)। पुंस्कोकिलः- पुमांश्चासौ कोकिलः (कर्मधारयः) द्विरेफः- द्वौरेफौ यस्मिन् सः (ब० ब्री०)

हिन्दीशब्दार्थ— चूतरसासवेन= आम्रमञ्जरी के रस की मदिरा से, मत्तः= मदमत्त, रागहृष्टः= अनुराग जन्य प्रसन्नता पूर्वक, पुंस्कोकिलः= नर कोकिल, प्रियाम्= मादा कोयल का, चुम्बति= चुम्बन करता है। अयम्= यह, अम्बुजस्थः= कमल पर बैठा हुआ, द्विरेफः अपि= भौंरो भी, कुजद्= गुनगुनाता हुआ, प्रियायाः= भ्रमरी की, चाटुप्रकरोति= चाटुकारिता करता है।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिवद्ध वक्ता वसन्त ऋतु के वैभव का वर्णन करता हुआ अपनी प्रियतमा को बतलाता है कि इस वसन्त ऋतु में सम्पूर्ण वातावरण काम की मादकता से परिपूर्ण हो गया है। उसके परिणामस्वरूप पशुपक्षियों में काम का प्रबल प्रभाव दिखायी देता है। यह पुंस्कोकिल आम्रमञ्जरी के रस जन्य मदिरा को पीकर मदमत्त हो गया है और मादा कोयल का चुम्बन कर रहा है। कमल के ऊपर बैठा हुआ यह भौंरा भी भ्रमरी को अच्छी लगनी वाली चाटुकारिता उसके कानों के पास कर रहा है।

भावार्थ— आम्र के रसरूपी आसव का पान करके मदमत्त पुंस्कोकिल अपनी प्रियतमा का चुम्बन कर रहा है तथा कमल पर बैठा हुआ यह भौंरा अपनी प्रियतमा की चाटुकारिता करता है।

साहित्यिकविशेषताएँ— (१) इस श्लोक में उपजाति वृत्त है (२) सम्भोग शृङ्गार रसाभास है, क्योंकि रस का आश्रय तिर्यग् योनि का जीव है (३) अल्पसमासवती संघटना है (४) माधुर्य एवं प्रसाद नामक गुण हैं और (५) वैदभी रीति है।

ताम्रप्रवालास्तवकावनम्राश्चूतद्रुमाः पुष्पितचारुशाखाः।
कुर्वन्ति कामं पवनावधूताः पर्युत्सुकं मानसमङ्गनानाम्।। १७।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके कविनिवद्धो वक्ता वसन्ततर्तोः सौन्दर्यविशेषं मादकतां चोपवर्णयन् स्वप्रियतमां वक्ति यत् साम्प्रतं आम्रस्य वृक्षेषु नवकिसलयाः उद्भूतास्सन्ति तेषां गुच्छेन विनताः मञ्जरी सनाथिताः, पवनकम्पिताश्च आम्रवृक्षाः सुन्दरीणां मानसानि समुत्सुकानि विदधति।

अन्वयः— ताम्रप्रवालास्तवकावनम्राः पुष्पितचारुशाखाः पवनावधूताः अङ्गनानां मानसं कामं पर्युत्सुकं कुर्वन्ति।

व्याख्याः— ताम्रप्रवालस्तवकावनम्राः= ताम्रः= ईषद्रक्तवर्णाः ये हि प्रवालाः= किसलयाः तेन अवनम्राः= विनताः येते तथाविधाः, पुष्पितचारुशाखाः= पुष्पिताः= विकसिताः चारवः= मनोज्ञाः शाखाः येषां ते तथाविधाः, पवनावधूताः= पवनेन= वायुना, अवधूताः= कम्पिताः, चूतद्रूमाः= चूतानाम्= आम्राणाम्, द्रुमाः= वृक्षाः, अङ्गनानाम्= कामिनीनाम् मानसम्= अन्तःकरणम्, प्रकामम्= अत्यधिकम्, पर्युत्सुकम्= अत्युत्कण्ठितम्, कुर्वन्ति।

साहित्यिकविशेषताः— अस्मिञ्छ्लोके सन्ति- (१) उपजातिवृत्तम् (२) सम्भोगश्रृंगारविभाववर्णनम् (३) मध्यमसमासवती संघटना (४) वैदर्भी रीतिः (५) माधुर्यप्रसादाख्यौ गुणौ च।

हिन्दी शब्दार्थ— ताम्रप्रवालास्तवकावनम्रा= लाल-लाल निकले हुए किसलयों के गुच्छों से झुके हुए, पुष्पितचारुशाखाः= जिनकी मनोहर शाखाएँ विकसित हो गयी हैं, तथा पवनावधूताः= वायु से कँपाये गए, चूतद्रुमाः= आम के वृक्ष, अङ्गनानाम्= सुन्दरियों के, मानसम्= अन्तःकरण को, प्रकाभम्= अत्यन्त, पर्युत्सुकम्= उत्कण्ठित, कुर्वन्तिं= बना देते हैं।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिवद्ध वक्ता वासन्तिक शोभा का वर्णन करते हुए अपनी प्रियतमा से कहता है कि इस समय वासन्तिक चारुत्व का साम्राज्य बना हुआ है। आम के पेड़ों में लाल-लाल पल्लवों के गुच्छ निकल आए हैं। उनके भार से वृक्ष झुक गए हैं। सभी डालियाँ मञ्जरियों से परिपूर्ण हो गयी हैं। वायु वृक्षों को अपने झोंकों से कँपा देती है। इस तरह के आम के वृक्षों को देखकर कामिनियों का अन्तःकरण अत्यन्त उत्कण्ठित हो जाता है।

भावार्थ— लाल-लाल किसलयों के गुच्छों से झुके हुए, खिली हुई शाखाओं वाले एवं वायु से कँपाए गए आम के वृक्षों को देखकर सुन्दरियों का अन्तःकरण अत्यन्त उत्कण्ठित हो जाता है।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में उपजाति वृत्त है (२) सम्भोगश्रृंगार के विभावों का वर्णन है (३) मध्यम समास वाली संघटना है (४) वैदर्भी रीति है (५) तथा माधुर्य एवं प्रसाद नामक गुण हैं।

आमूलतो विद्रुमरागताम्रं सपल्लवाः पुष्पचयं दधानाः।
कुर्वन्त्यशोका हृदयं सशोकं निरीक्ष्यमाणा नवयौवनानाम्।। १८ ।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके कविनिवद्धो वक्ता स्वपिग्रतमायाः समक्षं वासन्तिकं वैभवमुपवर्णयन् वक्ति यत् साम्प्रतं अशोकवृक्ष आमूलचूडः रक्तवर्णैः मनोज्ञैः किसलयैः परिपूर्णो जातः। पुष्पाणि च तत्र विकसितानि सन्ति। तथाविधमशोकं वीक्ष्य वियोगिन्यो नवयुवतयः विप्रयोगदुःखेन आक्रान्तमानसाः सत्यो विषीदन्ति।

अन्वयः— आमूलतः विद्रुमरागताम्रं पुष्पचयं दधानाः सपल्लवाः अशोकाः निरीक्ष्यमाणाः नवयौवनानाम् हृदयं सशोकम् कुर्वन्ति।

व्याख्याः— आमूलतः= मूलत एव चूडापर्यन्तम्, विद्रुमरागताम्रं= विद्रुमस्य=

प्रवालस्य रागवत्= रक्तिमावत् ताम्रम्= रक्तवर्णम्, पुष्पचयम्= पुष्पाणाम्= कुसुमानां चयम्= समूहम्, दधानाः= धारयन्तः, सपल्लवाः= पल्लवेन सहिताः अशोकाः= रक्ताशोकवृक्षाः, निरीक्ष्यमाणाः= अवलोक्यमानाः, नवयौवनानाम्= नवम्= नवीनं यौवनम्= युवावस्था यासां तथाविधानाम् प्रोषितपतिकानाम् युवतीनाम् हृदयम्= अन्तःकरणम्, सशोकम्= उत्प्रासितम्, कुर्वन्ति= सम्पादयन्ति।

तथाविधान् रक्ताशोकस्य वृक्षान् विलोक्यानुभूय च कालस्य मादकतां ताः समुत्कण्ठिताः भवन्ति।

साहित्यिकविशेषताः— अस्मिञ्छ्लोके सन्ति (१) उपजातिवृत्तम्, (२) उपमालंकारः (३) श्रैंगारिकविभावानां वर्णनम् (४) अल्पसमासवती संघटना (५) वैदर्भी रीतिः (६) माधुर्यप्रसादाख्यौ च गुणौ।

समासः— विद्रुमरागताम्रम्= विद्रुनस्यरागः= विद्रुमरागः (ष० त० पु०) तद्वत् ताम्रम् (उपमितः समासः)। पुष्पचयम्= पुष्पाणां चयः= पुष्पचयः तम् (ष० त० पु०)। नवयौवनानाम्- नवं यौवनं यासाम् तासाम् (ब० व्री०)

हिन्दी शब्दार्थ— आमूलतः= आमूल-चूड ऊपर से नीचे तक, विद्रुमरागतम्राम्= मूँगे की लालिमा के समान लाल-लाल, पुष्पपचयम्= पुष्प समूह को, दधानाः= धारण करने वाले, सपल्लवाः= पल्लवों से युक्त, अशोकाः= अशोकवृक्ष, निरीक्ष्यमाणाः= देखे जाते हुए, नवयौवनानाम्= नवीन जवानी वाली प्रोषितपतिका-वियोगिनियों के, हृदयम्= अन्तःकरण को, सशोकम्= पति के विप्रयोग जन्य कष्ट से युक्त, कुर्वन्ति= बना देते हैं।

उपस्थापन— इस श्लोक्के में कविनिवद्ध वक्ता अपनी प्रियतमा के समक्ष वासन्तिक वैभव का वर्णन करते हुए कहता है कि इस ऋतु में अशोक के वृक्षों में लाल-लाल पुष्प एवं पल्लव निकल आए हैं। वे आमूलचूड विकसित एवं पल्लवित हो गए है। इन वृक्षों को देखकर प्रायः सब लोगों के मन में प्रसन्नता तो होती है, किन्तु वे युवतियाँ जिनके प्रियतम उनके पास नहीं हैं, जो प्रोषित-पतिका हैं, वे उन अशोकवृक्षों को देखकर दुःखाक्रान्त हो जाती हैं। उनका मन विप्रयोग जन्य वेदना से भर जाता है।

भावार्थ— आमूलचूड लाल-लाल पुष्पों एवं पल्लवों से भरे अशोक वृक्षों को देखकर नवयुवती वियोगिनी कामिनियों का मन शोक से भर जाता है।

साहित्यिकविशेषताएँ— (१) इस श्लोक में उपजाति छन्द है (२) श्रैङ्गारिक अनुभाव एवं विभावों का वर्णन है (३) वैदर्भी रीति है (४) माधुर्य और प्रसाद नामक गुण हैं तथा (५) अल्पसमासों वाली संघटना है।

मत्तद्विरेफपरिचुम्बितचारुपुष्पाः मन्दानिलाकुलितनम्रमृदुप्रवालाः।
कुर्वन्ति कामिमनसां सहसोत्सुकत्वं बालातिमुक्तलतिकाः समवेक्ष्यमाणाः।।१९।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके कविनिवद्धोवक्ता स्वप्रियतमायाः समक्षं वासन्तिकस्य वैभवस्य वर्णनं कुर्वन् वक्ति यत् सम्प्रति आम्रवृक्षास्तु मञ्जरिताः

सन्ति। आम्रमञ्जरीणां सततं मदमत्ताः द्विरेफाः चुम्बनं कुर्वन्ति। मन्दं मन्दं प्रचलन् वायुः आम्रमञ्जरीं आन्दोलितां करोति। आम्रमञ्जरीं तथाविधां विलोक्य कामिनां मनस्सु कोऽपि अनिर्वचनीयो भावो जायते।

अन्वयः— मत्तद्विरेफपरिचुम्बितचारुपुष्पाः मन्दानिलाकुलितनम्रमृदुप्रवालाः बालातिमुक्तलतिकाः समवेक्ष्यमाणाः सहसा कामिमनसां उत्सुकत्वं कुर्वन्ति।

व्याख्या— मत्तद्विरेफपरिचुम्बितचारुपुष्पाः= मत्तैः= मदमत्तैः, द्विरेफैः= भ्रमरैःपरिचुम्बितानि= पीयमानपरागाणि चारूणि= रुचिराणि, पुष्पाणि= कुसुमानि यासां ताः, मन्दानिलाकुलितनम्रमृदुप्रवालाः= मन्देन= शनैः शनैः प्रचलता, अनिलेन= वायुना, आकुलिताः= उद्वेजिताः मृदवः= सुकुमाराः, प्रवालाः= पल्लवाः यासां ताः तथाभूताः, बालातिमुक्तलतिकाः बालम्= बालभावमतिमुक्तं= परित्यक्तं याभिस्ताः तथाविधा लतिकाः= लताः ताः समवेक्ष्यमाणाः= अवलोक्यमानाः अतर्कितरूपेण, कामिमनसाम्= मदनावेगसमन्वितं, मनो येषां तथाविधानाम्, पुरुषाणां उत्सुकत्वम्= समुत्कण्ठितत्वं, कुर्वन्ति= सम्पादयन्ति।

साहित्यिकविशेषताः— अस्मिञ्छ्लोके सन्ति (१) उपजातिवृत्तम्, (२) आम्रकलिकायाम् नायिकात्वप्रतीतेः जायमानत्वात् समासोक्तिः अलंकारः, (३) शृङ्गाररसाभासः (४) गुणीभूतव्यंग्यकाव्यता (५) मध्यमसमासवती संघटना (६) वैदर्भीरीतिः (७) माधुर्यप्रसादाख्यौ च गुणौ।

समासः— मत्तद्विरेफपरिचुम्बितचारुपुष्पाः= मत्तश्चासौ द्विरेफः= मत्तद्विरेफः (कर्मधारयः) तैः परिचुम्बितानि चारूणि पुष्पाणि यासां ताः। (ब० ब्री०)। मन्दानिलाकुलितनम्रमृदुप्रवालाः= मन्दश्चासौ अनिलः= मन्दानिलः (कर्मधारयः) तेन आकुलिताः नम्राः प्रवाला यासां ताः (ब० ब्री०)। बालातिमुक्तलतिकाः= बालम् अतिमुक्तंतयाभिस्तथाभूताः लतिकाः (बहुब्रीहि गर्भितः कर्मधारयः) कामिमनसाम्= कामि मनो येषां तेषां कामिमनसाम् (ब० ब्री०)

हिन्दीशब्दार्थ— मत्तद्विरेफपरिचुम्बितचारुपुष्पाः= जिनके मनोहर पुष्पों का मदमत्त भौंरे चुम्बन कर रहे हैं, मन्दानिलाकुलितनम्रमृदुप्रवालाः= जिनके झुके हुए तथा कोमल किसलयों को मन्द मन्द चलती हुई वायु कँपा रही है, बालातिमुक्तलतिकाः= तसग लताएँ समवेक्ष्यमाणाः= देखने मात्र से ही, सहसा= अचानक, कामिमनसाम्= कामी पुरुषों के मन में भी उत्सुकत्वं कुर्वन्ति= उत्सुकता उत्पन्न कर देती है।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिवद्ध वक्ता अपनी प्रियतमा के समक्ष वासन्तिक सौन्दर्य का वर्णन करते हुए कहता है कि इस समय तरुणलताओं उस पर भौंरे मँडरा रहे हैं। जिस तरह कोई नायक अपनी नायिका का चुम्बन करता है, उसी तरह से भौरा रूपी नायक आम्रपुष्प-रूपी मनोहर नायिका का चुम्बन कर रहा है। धीरे-धीरे चलती हुई हवा आम के कोमल तथा मनोहर पल्लवों को कँपा रही है। इस प्रकार की नवीन आम्रमञ्जरी को देखकर कामी पुरुषों के मन में एक उत्कण्ठा का भाव भर जाता है।

भावार्थ— उन्मत्त भ्रमरों के द्वारा परिचुम्बित पुष्पों वाली तथा मन्द पवन के झोंकों द्वारा कँपाये गये विनम्र कोमल किसलयों वाली तरुणलताएँ कामी पुरुषों के मन को उत्सुक बना देती है।

साहित्यिकविशेषताएँ— (१) इस श्लोक में उपजाति वृत्त है, (२) समासोक्ति अलंकार है, (३) शृंगाररस भास है, (४) गुणीभूतव्यंग्य काव्यता है, (५) मध्यम समास वाली संघटना है, (६) वैदर्भी रीति है तथा (७) प्रसाद एवं मांधुर्य नामक गुण हैं।

कान्तामुखद्युतिजुषामपि चोद्गतानां शोभां परां कुरबकद्रुममञ्जरीणाम्।
दृष्ट्वा प्रिये सहृदयस्य भवेन्न कस्य कंदर्पबाणपतनव्यथितं हि चेतः।। २०।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके कविनिवद्धो वक्ता स्वप्रियतमायाः समक्षं वसन्तर्तोः वैभवमुपस्थापयन् वक्ति यदृतावस्मिन् कुरबकवृक्षो हि विकसितो भवति। तस्य मञ्जरीं वीक्ष्य समेषां सचेतसां पुरुषाणां मनांसि कामव्यथितानि भवन्ति।

अन्वयः— अपि च= किञ्च, प्रिये= प्रियतमे, कान्तामुखद्युतिजुषाम्= कान्तायाः= कामिन्याः मुखस्य= वदनमण्डलस्य द्युतिम्= कान्तिम्, जुषन्ते= सेवन्ते यास्ताः तासाम्, उद्गतानां= उद्भूतानाम्, कुरबकमञ्जरीणाम्= कुरबकवृक्षमञ्जरीणां, पराम्= अत्युत्कृष्टाम्, शोभाम्= सौन्दर्यम्, दृष्ट्वा= वीक्ष्य, कस्य सहृदयस्य= सहृदयपुरुषस्य, चेतः= अन्तःकरणं, कदर्पबाणपतनव्यथितम्= कन्दर्पस्य= कामस्य, बाणस्य= शरस्य, पतनेन= व्यथितम्= दुखितम्, न= नहि, भवेत्= जायेत।

साहित्यिकविशेषताः— अस्मिञ्छ्लोके सन्ति (१) उपजातिवृत्तम्, (२) शृंगाररसाभासः (३) अल्पसमासवती संघटना (४) वैदर्भी रीतिः (५) माधुर्यप्रसादाख्यौ गुणौ च।

समासः— कान्तामुखद्युतिजुषाम्- कान्तायाः मुखम्= कान्तामुखम् (ष० त० पु०) तस्य द्युतिं जुषन्ते ये ते तेषाम् (ब० ब्री०) कुरबकद्रुममञ्जरीणाम्= कुरबकस्य द्रुमाः= कुरबकद्रुमाः (ष० त० पु०) तेषां मञ्जरीणाम् (ष० त० पु०) कन्दर्पबाणपतनव्यथितम्- कन्दर्पस्य बाणाः= कन्दर्पबाणाः (ष० त० पु०) तेषां पतनम्= कन्दर्पबाणपतनम् (ष० त० पु०) तेन व्यथितम्= कन्दर्पबाणयतनव्यथितम् (तृ त० पु०)

हिन्दीशब्दार्थ— अपि च= और, प्रिये= प्रियतमे, कान्तामुखद्युतिजुषाम्= कान्ता के मुख की कान्ति के समान कान्ति वाली, उद्गतानाम्= उत्पन्न, कुरबकद्रुममञ्जरीणाम्= कुरबकवृक्ष की मञ्जरियों की, पराम्= अत्युत्कृष्ट, शोभाम्= शोभा को, दृष्ट्वा= देखकर, कस्य= किस, सहृदयस्य= सहृदय पुरुष का, चेतः= अन्तःकरण, कन्दर्पबाणपतनव्यथितम्= काम के बाणों के पड़ने से दुखी, नहि= नहीं, भवेत्= होयेगा ?

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिवद्ध वक्ता अपनी प्रियतमा के समक्ष वसन्त ऋतु के सौन्दर्य का वर्णन करते हुए कहता है कि इस ऋतु में कुरबक वृक्ष

की मञ्जरियाँ निकल आयी हैं। उनकी शोभा प्रियतमा के मुख की शोभा के समान गौरवर्ण की है। उन मञ्जरियों को देखकर सहृदयों के अन्तःकरण में काम के आवेग का सञ्चार हो जाता है और काम के बाणों के लगने से उनका अन्तःकरण व्यथित होने लगतां है।

भावार्थ— प्रिये ! सुन्दरियों के मुख की शोभा के समान शोभावाले उगी हुयी मंजरियों से युक्त कुरबक वृक्ष की शोभा को देखकर किस सहृदय पुरुष का अन्तःकरण काम के बाणों के लगने से व्यथित नहीं होता ?

साहित्यिकविशेषताएँ— (१) इस श्लोक में उपजाति छन्द है (२) सम्भोगशृङ्गाररसाभास है (३) उपमालंकार है (४) अल्पसमासों वाली संघटना है (५) माधुर्य एवं प्रसाद नामक गुण हैं, तथा (६) वैदर्भी रीति है।

आदीप्तवह्विसदृशैर्मरुतावधूतैः सर्वत्र किंशुकवनैः कुसुमावनम्रैः।
सद्यो वसन्तसमयेन हि समाचितेयं रक्तांशुका नववधूरिव भाति भूमिः।। २१।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके कविनिवद्धो वक्ता वासन्तिकस्य सौन्दर्यस्य वर्णनमुपस्थापयन् स्वप्रियतमां वक्ति यत् साम्प्रतं वनेषु पलाशवृक्षाः विकसिताः सन्ति। यदा वाति वायुः तदा किंशुकस्य रक्तवर्णानि पुष्पाणि पृथिव्यां पतन्ति। तैरचिता भूमिः रक्तांशुकायाः नव बध्वाः साम्यं धत्ते।

व्याख्या— सद्यः= सपदि, वसन्तसमयेन= वसन्ततर्तुना हि आदीप्तव-ह्निसदृशैः= अदीप्तः= पूर्णरूपेण प्रज्ज्वलितः यो हि वह्निः= अग्निः, तस्य सदृशैः= समानैः, मरुतावधूतैः= मरुतेन= वायुना, अवधूतैः= कम्पितैः, कुसुमावनम्रैः= कुसुमैः= पुष्पैः अवनम्रै= अवनतैः, किंशुकवनैः= पलाशवनैः समचिता= परिपूर्णा, इयम्= एषा, भूमिः= भूः रक्तांशुका= रक्तम्= रक्तवर्णम् अरुणमिति यावत् अंशुकम्= वस्त्रं यस्याः सा तथाविधा, नववधूरिव= नवोढेव भाति= शोभतेतराम्।।

साहित्यिकविशेषताः— अस्मिञ्छ्लोके सन्ति (१) उपजाति वृत्तम् (२) उपमालंकारः (३) शृंगाररसाभासः (४) अल्पसमासवती संघटना (५) माधुर्यप्रसादाख्यौ गुणौ (६) वैदर्भी रीतिश्च।

समासः— वसन्तसमयेन= वसन्तस्य समयेन (ष० त० पु०) रक्तांशुका= रक्तमंशुकं यस्याः सा (ब० ब्री०) किंशुकवनैः= किंशुकस्य वनैः (ष० त० पु०) मरुतावधूतेः= मरुतेन अवधूतैः (तृ० त० पु०) कुसुमावनम्रैः= कुसुमैः अवनम्रा ये ते तैः (ब० ब्री०) किंशुकवनैः= किंशुकस्य वनैः (ष० त० पु०) रक्तांशुका= रक्तम् अंशुकं यस्याः सा (ब० ब्री०)

हिन्दीशब्दार्थ— सद्यः= शीघ्र, वसन्तसमयेन= वसन्त ऋतु में, हि-तो, आदीप्तव- ह्निसदृशैः= पूर्णरूप से प्रज्ज्वलित अग्नि के समान, मरुतावधूतैः= वायु के द्वारा कँपाए गये, कुसुमावनम्रैः= फूलों से झुके हुए, किंशुकवनैः= पलाश के वनों से, समचिता= परिपूर्ण इयम्= यह, भूमिः= पृथ्वी, रक्तांशुका= लालवस्त्र पहने हुई, नववधू इव= नवीन वधू के समन, भाति= प्रतीत होती है।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिवद्ध वक्ता अपनी प्रियतमा के समक्ष पलाश वृक्षों से परिपूर्ण वन का वर्णन करते हुए कहता है कि इस वसन्त ऋतु में पलाश के वन विकसित हो गए हैं। उनके पुष्पों की शोभा पूर्ण रूप से प्रदीप्त अग्नि के समन लाल-लाल है। पलाश पुष्पों से परिपूर्ण यह पृथ्वी इस तरह प्रतीत होती है जिस तरह कोई लाल वस्त्रों को पहने हुई नवोढा बधू मनोहर प्रतीत होती है।

भावार्थ— इस वसन्त, ऋतु में पूर्ण रूप से प्रदीप्ति अग्नि के समान, वायु से कँपाये गये तथा पुष्पों के भार से झुके हुए पलाश के वन से परिपूर्ण यह भूमि लाल-लाल वस्त्र पहने नवोढा बधू के समान प्रतीत होती है।

साहित्यिकविशेषताएँ— (१) इस श्लोक में वसन्ततिलका छन्द है। (२) उपमालंकार है (३) शृङ्गाररसाभास है (४) अल्पसमास वाली संघटना है (५) वैदर्भी रीति है (६) और माधुर्य एवं प्रसाद नामक गुण हैं।

किं किंशुकैः शुकमुखच्छविभिर्न भिन्नं कि कर्णिकारकुसुमैर्न कृतं न दग्धम्।
यत्कोकिलः पुनरयं मधुरैर्वचोभि र्यूनां मनः सुवदनानिहितं निहन्ति।।२२।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके कविनिवद्धो वक्ता स्वप्रियतमां वक्ति यत् साम्प्रतम् वनेषु किंशुकवृक्षस्य कर्णिकारवृक्षस्य च शोभाऽतिवर्त्तते। शुकमुखछवियुक्तं किंशुकपुष्पम् विलोक्य यूनां मनः सुन्दरीमुखछविविच्छित्तिविशेषं परिजहाति। तत्र न रमते। कर्णिकारवृक्षेषूपविष्टाः मधुरं रवं कुर्वन्त्यः कोकिलाः कामिनां मनो दग्धं कुर्वन्ति, तत्र कामोत्कण्ठां समुत्पाद्य।

अन्वयः— सुवदनानिहितं यूनां मनः शुकमुखच्छविभिः किंशुकैः किं न भिन्नम् कर्णिकारकुसुमैः कि दग्धं न कृतम् ? यत्पुनः अयं कोकिलः मधुरैः वचोभिः (मनः) निहन्ति।

व्याख्या— सुवदनानिहितम्= सुष्ठु वदनम्= मुखं यस्याः सा तथाविधायां निहितम्= आसक्तम्, यूनाम्= युवकानाम्, मनः= अन्तःकरणम्, शुकमुखच्छविभिः= शुकमुखस्य= कीरमुखस्य, छविरिवछदिः= कान्तिः येषां तथाविधैः किंशुकैः= पलाशैः, न= नहि, भिन्नं= विदीर्णं किम् ? अपितु विदीर्णमेव किंशुकपुष्पस्यापि कान्तेः कान्तामुखवदतिस्पृहणीयत्वात्। कर्णिकारकुसुमैः= कर्णिकारस्य पुष्पैः यूनां मनः दग्धम्= संतप्तम्, न= नहि कृतम् किम्, अपितु कृतमेव, यत् पुनः= भूयः अयम्= एषः, कोकिलः= कलकण्ठः मधुरैः= श्रवणमनोहरैः, वचोभिः= कूजनैः मनः निहन्ति= व्यथयति।

साहित्यिकविशेषताः— अस्मिञ्छ्लोके सन्ति (१) वसन्ततिलकावृत्तम् (२) उपमालंकारः (३) सम्भोगशृङ्गारविभाववर्णनम् (४) अल्पसमासवती संघटना (५) वैदर्भीरीतिः (६) प्रसादगुणश्च।

समासः— सुवदनानिहितम्= सुवदनायां निहितम् (स० त० पु०) शुकमुखच्छविभिः= शुकस्यमुखम्= शुकमुखम् (ष० त० पु०) तस्य छविरिव छविर्येषां तैः (उपमितः समासः) कर्णिकारकुसुमैः- कर्णिकारस्य कुसुमैः (ष० त० पु०)

हिन्दीशब्दार्थ— सुवदनानिहितम्= सुमुखी सुन्दरी में आसक्त, यूनाम्= युवकों के, मनः= अन्तःकरण को, शुकमुखच्छविभिः= शुक पक्षी के मुख के समान कान्ति वाले, किंशुकैः= पलाश पुष्पों के द्वारा, नभिन्नं किम्= विदीर्ण नहीं किया गया है क्या ? कर्णिकारकुसुमैः= कर्णिकार के पुष्पों के द्वारा युवकों का मन, दग्धं न कृतम् किंनु= क्या संतप्त नहीं किया गया ? यत्पुनः= जो कि, अयम्= यह, कोकिलः= कोयल के, मधुरैः= मधुर, वचोभिः= कूजन के द्वारा, निहन्ति= युवकों के मन को, व्यथित किया जा रहा है।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिवद्ध वक्ता अपनी प्रियतमा के समक्ष वसन्त की सुषमा का वर्णन करते हुए कह रहा है कि अभी तक तो युवकों का मन सुन्दरी के मुखमण्डल के सौन्दर्य पान में लगा रहता था; किन्तु इस वसन्त ऋतु में जब वह उस पलाश पुष्प को देखता है जिसकी कान्ति शुकमुख की कान्ति के समान है, तो उसका मन इसे भी देखकर ललच जाता है, क्योंकि इसका भी सौन्दर्य तो कान्ता के मुख के समान चित्ताह्लादक है। इस तरह कर्णिकार के वृक्षपर बैठी हुई उसके पुष्पों के बीच से जो कोयल कूक रही है, उसकी श्रवण मनोहर वाणी को सुनकर तथा कर्णिकार पुष्पों को देखकर युवकों का मन काम की पीडा से संतप्त हो उठता है।

भावार्थ— सुन्दरी के मुखमण्डल में आसक्त युवकों का मन शुक पक्षी के मुख के समान कान्तिवाले पलाश पुष्पों को देखकर विदीर्ण हो जाता है मधुर ध्वनि वाली कोयल की ध्वनि तथा कर्णिकार पुष्प की छटा से युवकों का मन व्यथित होता है।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में वसन्ततिलका छन्द है, (२) उपमालंकार है (३) सम्भोगशृंगार के विभावों का वर्णन है। (४) इसमें अल्पसमासों वाली संघटना है (५) वैदर्भी रीति है तथा (६) प्रसाद नामक गुण है।

पुंस्कोकिलैःकलवचोभिरुपात्तहर्षैः कूजद्भिरुन्मदकलानि वचांसि भृङ्गैः।
लज्जान्वितं सविनयं हृदयं क्षणेन पर्याकुलं कुलगृहेऽपि कृतं वधूनाम्।। २३।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके कविनिवद्धो वक्ता स्वप्रियतमायाः समक्षं वासन्तिकं सौष्ठवं समुपस्थापयन् वक्ति, यत् सम्प्रतं सर्वत्र आम्रवनेषु कोकिलो मधुरं रवं करोति, किञ्च पुष्पेषु भ्रमराः गुञ्जनं कुर्वन्ति तेषां मनोज्ञं कामोद्वेगोद्भासकं रवं श्रुत्वा कुलवधूनामपि मनस्सु समुत्पद्यते सहसा कामोत्कण्ठा।

अन्वयः— उपात्तहर्षैः कलवचोभिः पुंस्कोकिलैः, उन्मदकलानि वचांसि कूजद्भिः भृङ्गैः कुलगृहेऽपि वधूनां लज्जान्वितं सविनयं हृदयं क्षणेन पर्याकुलं कृतम्।

व्याख्या— उपात्तहर्षैः= वसन्ततोंः कोकिलानां प्रसादकत्वात् सम्प्राप्तमहामोदैः, कलवचोभिः= कलानि= मनोहराणि वचांसि= कलरवा येषां तथाविधैः, पुंस्कोकिलैः= पिकैः, उन्मदकलानि= उन्मदानि= उन्मादकानि, कलानि= अव्यक्तानि मनोहारणि च वचांसि= वचनानि, कूजद्धिः=, गुञ्जनं कुर्वद्भिः, भृङ्गैः= भ्रमरैः कुलगृहेऽपि=

कुलीनानां भवनेऽपि, वधूनाम्= कुलवधूनां, लज्जान्वितम्= ह्रिया समन्वितं, सविनयम्= नम्रतान्वितम्, हृदयम्= अन्तःकरणम्, क्षणेन= सहसा पर्याकुलम्= व्याकुलम्, कृतम्= सम्पादितम्।

साहित्यिकविशेषताः— अस्मिञ्छ्लोके सन्ति (१) वसन्ततिलकावृत्तम् (२) श्रैङ्गारिकानां विभावाव्यभिचारिणां वर्णनम् (३) अल्पसमाससमन्विता संघटना (४) वैदर्भी रीतिः (५) माधुर्यप्रसादाख्यौ गुणौ च।

समासः— उपात्तहर्षैः- उपात्तो हर्षो यस्ते तैः (ब० व्री०) उन्मदकलानि- उन्मदानि कलानि च यानि तानि तैः (ब० व्री०) लज्जान्वितम्- लज्जया अन्वितम् (तृ० त० पु०)

हिन्दीशब्दार्थ— उपात्तहर्षैः= प्रसन्न, कलवचोभिः= मनोहर वाणियों से, पुंस्कोकिलैः- नर कोकिलों द्वारा, उन्मदकलानि= उन्मादक तथा मनोहर एवं अव्यक्त, कूजद्भिः= गुञ्जन करने वाले, भृङ्गैः= भ्रमरों द्वारा, कुलगृहेऽपि= कुलीनपुरुषों के गृह में भी, वधूनाम्= कुलाङ्गनाओं के, लज्जान्वितम्= लज्जा से युक्त तथा सविनयम्= नम्रता से युक्त, हृदयम्= अन्तःकरण को, क्षणेन= सहसा पर्याकुलं कृतम्= व्याकुल बना दिया गया है।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिवद्ध वक्ता अपनी प्रेयसी के समक्ष वसन्त ऋतु के सौन्दर्य का वर्णन उपस्थापित करते हुए कह रहा है कि इस समय अमराइयों में कोयल बोल रही हैं तथा भौंरे गुञ्जन कर रहे हैं। इस ऋतु के ये दोनों साधन अत्यन्त उन्मादक हैं। इन दोनों के कारण विनम्र तथा सर्वदा लज्जा रूपी भूषण से भूषित रहने वाली कुलबधुओं का भी अन्तःकरण कामावेश के कारण पीडित हो रहा है।

इस श्लोक के माध्यम से यह भी स्पष्ट किया गया है कि वसन्त ऋतु में कोयल तथा भौंरों के मन में हर्ष भर जाता है। वे इस उन्मादक वातावरण में मधुर एवं मादक ध्वनि करने लग जाते हैं।

भावार्थ— हर्षित तथा मधुर ध्वनि करने वाली कोयल एवं उत्कट मदयुक्त गुञ्जन करने वाले भौंरों के कारण कुलीन गृहों की लज्जा तथा विनम्र कुलीन बधुओं का भी मन व्याकुल हो गया है।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में वसन्ततिलका छन्द है (२) श्रैंगारिक विभावों तथा सञ्चारी भावों का वर्णन है (३) अल्पसमासों वाली संघटना है (४) वैदर्भी रीति है और (५) माधुर्य एवं प्रसाद नामक गुण हैं।

आकम्पयन् कुसुमिताःसहकारशाखाः विस्तारयन्परभृतस्य वचांसि दिक्षु।
वायुर्विवाति हृदयानि हरन्नराणां नीहारपातविगमात्सुभगे वसन्ते।। २४।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके कविनिवद्धो वक्ता वासन्तिकस्य सौष्ठवस्य वर्णनं कुर्वन्, स्वप्रियतमां वक्ति यत् साम्प्रतं शिशिरर्तोः विगमात् हिमापातो न जायते। वायुः सुखदः सञ्जातः। साम्प्रतं सः कुसुमिताः आम्रवृक्षशाखाः कम्पयन्

कोकिलस्य मधुरं रवं दिक्षु विस्तारयन् युवजनानां हृदयं स्वायत्तीकुर्वन् मन्दं वाति।

अन्वयः— वसन्ते नीहारपातविगमात् सुभगः वायुः कुसुमिताः सहकारशाखाः आकम्पयन् परभृतस्य वचांसि दिक्षु विस्तारयन् नराणां हृदयानि हरन् विवाति।

व्याख्या— वसन्ते= वसन्ततौं= निहारपातविगमात्= निहारपातस्यतौं= तुषारपातस्य विगमात् समाप्तेः, सुभगः= मनोनुकूलः, वायुः= पवनः, कुसुमिताः= विकसिताः, सहकारशाखाः= सहकारस्य= आम्रस्य, शाखाः, आकम्पयन्= पूर्णरूपेण कम्पयन्, परभृतस्य= कोकिलस्य, वचांसि= कलरवम्, दिक्षु= दिशासु, विस्तारयन्= प्रसारयन्, नराणाम्= युवकानाम् हृदयानि= अन्तःकरणानि, हरन्= मुष्णन्, विवाति= प्रवहति।

समासः— नीहारपातविगमात्- नीहारस्य पातः= निहारपातः (ष० त० पु०) तस्य विगमात् नीहारपातविगमात् (ष० त० पु०) सहकारशाखाः- सहकारस्य शाखाः= ष० त० पु०)

साहित्यिकविशेषताः— अस्मिञ्छ्लोके सन्ति (१) वसन्ततिलकावृत्तम् (२) श्रैंगारिकानां विभावानां वर्णनम् (३) अल्पसमासवती संघटना (४) वैदर्भी रीतिः (५) माधुर्यप्रसादाख्यौ गुणौ च।

हिन्दीशब्दार्थ— वसन्ते= वसन्त ऋतु में, निहारपातविगमात्= तुषारपात के समाप्त हो जाने के कारण, सुभगः= सुन्दर, वायुः= हवा, कुसुमिताः=विकसित सहाकारशाखाः= आम की शाखाओं को, आकम्पयन्= कँपाती हुयी, परभृतस्य= कोयल की, वचांसि= ध्वनि को, दिक्षु= दिशाओं में, विस्तारयन= फैलाती हुयी, नराणाम्= युवक मनुष्यों के, हृदयम्= हृदय को, हरन्= चुराती हुयी, विबाति= बह रही हैं।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिवद्ध वक्ता वसन्त ऋतु की वायु की सकल जन मादकता का उपस्थापन करते हुए अपनी, प्रियतमा को बतला रहा है कि अब तुषारपात का समय समाप्त हो गया है। इस वसन्त ऋतु में चलने वाली वायु स्पर्श मनोहर है। यह वायु विकसित आम्रवृक्षों की शाखाओं को कँपा देती है। इसके साथ ही वसन्त ऋतु की सहकारिणी कोयल की आवाज को दूर-दूर तक पहुँचाने का भी काम किया करती है। यह वायु युवक पुरुषों के अन्तःकरण को चुरा लेने का काम करती है। अर्थात् युवक पुरुषों के लिए यह वायु अत्यन्त प्रिय है। इस तरह वासन्तिक वायु की इस श्लोक में तीन प्रकार की विशेषताओं का उल्लेख किया गया है। हवा सुभगत्व, आम्रशाखाकम्पनकरत्व तथा युवजनहृदयहारित्व इन तीन गुणों से विशिष्ट है।

भावार्थ— वसन्त ऋतु के समाप्त हो जाने के कारण, सुन्दर हवा विकसित आम की डालियों को कँपाती हुयी, कोयल की ध्वनि को दूर तक पहुँचाती हुई तथा युवकों के हृदय को चुराती हुयी बह रही है।

साहित्यिकविशेषताएँ— (१) इस श्लोक में वसन्ततिलका छन्द है (२) श्रैंगारिक

विभाव का वर्णन है (३) अल्पसमास वाली संघटना है, (४) वैदर्भी रीति है तथा (५) माधुर्य एवं प्रसाद नामक गुण हैं।

कुन्दैः सविभ्रमवधूहसितावदातैरुद्‌योतितान्युपवनानि मनोहराणि।
चित्तं मुनेरपि हरन्ति निवृत्तरागं प्रागेव रागमलिनानि मनांसि यूनाम्।। २५।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके कविनिवद्धो वक्ता वसन्ततौं विकसितानां कुन्द पुष्पाणां शोभायाः, तस्याः सकलजनचित्तस्य विकारकरत्वस्य च स्वप्रियतमायाः समक्षमुपस्थापयन् वक्ति यत् इदानी सर्वत्र वने कौन्दानि पुष्पाणि विकसितानि सन्ति। तेषां स्वच्छावदातां सुषमां दर्शं-दर्शं मुनीनामपि मनस्सु जायते रागविशेषः का कथा कन्दर्पदर्पमलिनीकृतमानसानां युवकानां हृदयस्य ?

अन्वयः— सविभ्रमवधूहसितावदातैः कुन्दैः उद्योतितानि मनोहराणि उपवनानि मुनेः अपि निवृत्तरागं चित्तं हरन्ति यूनां रागमलिनानि मनांसि तु प्रागेव।

व्याख्या— सविभ्रमवधूहसितावदातैः= सविभ्रमायाः= विलाससौख्यसमन्वितायाः बध्वाः= रमण्याः, हसितमिव= हासमिव, अवदातैः= धवलैः, कुन्दैः= माघ्यपुष्पैः, उद्योतितानि= प्रकाशितानि, मनोहराणि= मनोज्ञानि, उपवनानि= उद्यानानि, मुनेः= मननशीलस्य तत्त्वपरायणस्य, वीतरागस्यापि, निवृत्तरागम्= निवृत्तः= अपाकृतः रागः= अनुरागः= यस्मात् तथाविधम्, चित्तम्= अन्तःकरणम्, हरन्ति= समाकर्षन्ति, यूनाम्= युवकानाम्, रागमलिनानि= रागेण= अनुरागेण, मलिनानि= आविलानि, मनांसि= अन्तःकरणानि तु प्रागेव= पूर्वमेव।

साहित्यिकविशेषताः— अस्मिञ्छ्लोके सन्ति (१) वसन्ततिलकावृत्तम् (२) उपमालंकारः (३) शृङ्गारिकानुभाववर्णनम्, (४) अल्पसमासा संघटना (५) वैदर्भी रीतिः (६) माधुर्यप्रसादाख्यौ गुणौ च।

समासः— सविभ्रमबधूहसितावदातैः- सविभ्रमा चाऽसौ बधू= सविभ्रमवधू (कर्मधारयः) तस्याः हसितम्= सविभ्रमबधूहसितम् (ष० त० पु०) दवदवदातैः (उपमितसमासः)। निवृत्तरागम्= निवृत्तोरागो यस्मात् तथाविधम् (ब० ब्री०)। रागमलिनानि= रागेण मलिनानि (तृ० त० पु०)

हिन्दीशब्दार्थ— सविभ्रमबधूहसितावदातैः= विलासवती, रमणी की हँसी के समान उजले-उजले, कुन्दैः= कुन्द पुष्पों के द्वारा, उद्योतितानि= प्रकाशित, मनोहराणि= मनोज्ञ, उपवनानि= उपवन, मुनेः= मुनिजनों के, अपि= भी, निवृत्त-रागम्= रागरहित, चित्तम,= अन्तःकरण को, हरन्ति= आकृष्ट कर लेते हैं, यूनाम्= युवकों के, रागमलिनानि= रागानुराग आदि की वासना से मलिन बने हुए, मनांसि= मनों को तो, प्रागेव= पहले ही वे चुरा लिये थे।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिवद्ध वक्ता वसन्त ऋतु में विकसित कुन्द पुष्पों की शोभा का वर्णन करते हुए अपनी प्रियतमा से कहता है कि जिस तरह किसी विलासवती रमणी की हँसी उजली होती है उसी तरह उपवनों में खिले हुए कुन्द पुष्पों की छटा भी उजली-उजली है। साहित्यशास्त्रकारों ने हँसी का वर्ण

उजला बतलाया है। इन विकसित कुन्द पुष्पों से उपवन प्रकाशित तथा अत्यन्त मनोज्ञ दिखने लगे हैं। इन उपवनों को देखकर मुनियों का भी विरागी मन सहसा आकृष्ट हो जाता है। युवकों का मन तो अनुराग की वासना से मलिन रहता ही है। उनके मनों को तो इन उपवनों ने पहले ही आकृष्ट कर लिया था।

रागमलिनानि पद के द्वारा इस बात को सूचित किया गया है कि राग रजोगुण तथा तमोगुण से जन्य विकार है। जिस तरह से रज (धूलि) किसी स्वच्छ वस्तु को भी मलिन बना देता है, उसी तरह से राग भी युवकों के मन को मलिन बना देता है। मुनियों का मन तो राग से रहित होता है, अतएव वह स्वच्छ होता है।

भावार्थ– विलासवती रमणी की हँसी के समान धवल कुन्द पुष्पों के द्वारा प्रकाशित मनोहर उपवन, मुनियों के राग रहित भी अन्तःकरण को आकृष्ट कर लेते हैं राग से मलिन बने हुए युवकों के मन को तो पहले ही।

साहित्यिकविशेषताएँ– (१) इस श्लोक में वसन्त तिलकाछन्द है (२) उपमालंकार है (३) श्रृंगारिक अनुभावों का वर्णन है (४) वैदर्भी रीति है, (५) अल्पसमास वाली संघटना है तथा (६) माधुर्य एवं प्रसाद नामक गुण हैं।

आलम्बिहेमरसनाः स्तनसक्तहाराः कंदर्पदर्पशिथिलीकृतगात्रयष्टयः।
मासे मधौ मधुरकोकिलभृङ्गनादैर्नार्या हरन्ति हृदयं प्रसभं नराणाम्।। २६।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ– अस्मिञ्छ्लोके कविनिबद्धो वक्ता वसन्तौ नारीणामलंकरणं वर्णयन् तासां सहसा युवजनहृदयहारित्वमुपश्लोकयति। स वक्ति यत् साम्प्रतं रमण्यः कटिप्रदेशे सुवर्णमेखलाः स्तनेषु च हारान् धारयन्ति। कोकिलानां भृंगाणां च नादं श्रुत्वा तासां गात्रं कन्दर्पावेशेन शिथिलीकृतं भवति। इत्थं भूताः ताः सहसैव यूनां मनांसि समाकर्षन्ति।

अन्वयः– मधौ मासे आलम्बिहेमरसनाः स्तनसक्तहाराः कन्दर्पदर्पशिथिलीकृतगात्रयष्ट्यः नार्यः मधुरकोकिलभृङ्गनादैः नराणाम् हृदयम् प्रसभम् हरिन्त।

व्याख्या– मधौ मासे= वसन्तर्तौ आलम्बिहेमरसनाः आलम्बिनः= लम्बमानाः कटिप्रदेशे, हेम्नः= स्तनयोः= सुवर्णस्य, रसनाः= काञ्चीकलापा यासां ताः तथाविधाः पयोधरयोः सक्तः= संलग्नः, हारः= मुक्ताकलापो यासां तथाविधाः, कन्दर्पदर्पशिथिलीकृतगात्रयष्ट्यः= कन्दर्पस्य= कामदेवस्य, दर्पेण= स्वप्राबल्याभिमानेन, शिथिलीकृताः= श्लथीकृताः गात्रयष्टयो यासां तथाविधाः, नार्यः= रमण्यः, मधुरकोकिलभृङ्गनादैः= मधुरा= श्रोत्रपेयाः, कोकिलानाम्= परभृतानाम्, भृङ्गाणाम्= भ्रमराणां ये नादाः= ध्वनयः गुञ्जनस्वरूपाः तैः, नराणाम्= पुरुषाणाम्, हृदयम्= अन्तःकरणं, प्रसभम्= हठात्, हरन्ति= समाकर्षन्ति।

साहित्यिकविशेषताः– अस्मिञ्छ्लोके सन्ति (१) वसन्ततिलकावृत्तम् (२) सम्भोगश्रृंगारस्य विभावानां वर्णनम् (३) वैदर्भीरीतिः (४) अल्पसमासा संघटना (५) माधुर्यप्रसादाख्यौ गुणौ च।

समासः– आलम्बिहेरसनाः– हेम्नः रसनाः= हेमरसनाः (ष० त० पु०)

आलम्बिनो हेमरसनाः यासां ताः (ब० ब्री०) स्तनसक्तहाराः- स्तनयोः सक्तो हारो यासां ताः (ब० ब्री०) कन्दर्पदर्पशिथिलीकृतगात्रयष्ट्यः- कन्दर्पस्य दर्पः= कन्दर्पदर्पः कन्दर्पदर्पेण शिथिलीकृताः गात्रयष्ट्यो यासां ताः तथाविधाः। (ब० ब्री०)। मधुरकोकिलभृंगनादैः- कोकिलाश्च भृङ्गाश्च= कोकिलभृङ्गाः (द्वन्द्वः) तेषां नाः (ष० त० पु०) मधुराश्च ते कोकिलाभृङ्गनादाः तैः (कर्मधारयः)

हिन्दीशब्दार्थः— मधौ मासे= वसन्त ऋतु में, आलम्बिहेमरसनाः= जिनकी स्वर्ण रचित करधनी लटक रही है, स्तनसक्तहाराः= जो अपने स्तनों पर हार धारण किए हुई हैं; कन्दर्पदर्पशिथिलीकृतगात्रयष्ट्यः- कामदेव के वेग के कारण जिनका शरीर शिथिल हो गया है, इस प्रकार की, नार्यः= रमणियाँ, मधुरकोकिलभृङ्गनादैः- कोयल तथा भौंरों की मधुर ध्वनि के द्वारा, नराणाम्= पुरुषों के, हृदयम्= अन्तःकरण को, प्रसभम्= हठात्, हरन्ति= आकर्षित कर लेती हैं।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिवद्ध वक्ता वासन्तिक सौष्ठव का वर्णन करते हुए अपनी प्रियतमा से कह रहा है कि इस ऋतु में रमणियाँ अपने कटि प्रदेश में सुवर्ण निर्मित काञ्चीकलाप को धारण करती हैं तथा अपने स्तनों पर स्वच्छ मोती की माला धारण करती हैं। इस ऋतु में काम का आवेश अत्यधिक होने के कारण रमणियों के शरीर का बन्धन शिथिल हो गया है। इस प्रकार की रमणियाँ कोयल तथा भ्रमरों की कूजन तथा गुञ्जन की ध्वनि को सुनती हुई, कामी पुरुषों के अन्तःकरण हो हठात् अपनी ओर आकृष्ट कर लेती हैं।

इस श्लोक में वक्ता ने सम्भोग शृंगार के आलम्बन तथा उद्दीपन दोनों प्रकार के विभावों का निर्देश किया है। सम्भोग शृङ्गार के आलम्बन विभाव रमणियाँ तथा उद्दीपन विभाव कोकिल एवं भृङ्गों की ध्वनि एवं रमणियों का मनोहर अलंकार है।

भावार्थ— वसन्त ऋतु में कटिप्रदेश में लटकती हुई सुवर्ण की मेखला तथा स्तनों पर मोती की माला धारण करने वाली तथा कामावेश के कारण जिनके शरीर शिथिल हो गए हैं, इस प्रकार की रमणियाँ कोयल तथा भौंरे की मधुर ध्वनि को सुनती हुई पुरुषों के अन्तःकरण को हठात् हर लेती हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में वसन्ततिलकावृत्त है, (२) सम्भोगशृंगार के उद्दीपन तथा आलम्बन विभावों का वर्णन है (३) वैदर्भी रीति है, (४) अल्पसमासों वाली संघटना है तथा (५) माधुर्य एवं प्रसाद नामक गुण हैं।

नानामनोज्ञकुसुमद्रुमभूषितान्तान्हृष्टान्यपुष्टनिनदाकुलसानुदेशान्।
शैलेयजालपरिणद्धशिलातलान्तानृदृष्ट्वा जनः क्षितिभृतो मुदमेति सर्वः।। २७।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके कविनिवद्धो वक्ता, वासन्तिकं सौष्ठवं स्वप्रियतमायाः समक्षमुपस्थापयन् वक्ति यत् साम्प्रतं तेषां पर्वतानामवलोकनमात्रेण सर्वे जनाः सम्प्राप्तानन्दाः भवन्ति येषां पर्वतानां प्रान्त भागाः मनोरमपुष्पवृक्षैः सुशोभिताः, कोकिलानां कूजनेन शब्दायमानाः मनःशिलायाः पाषणतलेन च व्याप्ताः सन्ति।

अन्वयः— सर्वो जनः नानामनोज्ञकुसुमद्रुमभूषितान्तान् हृष्टान्यपुष्टनिनदाकुलसानुदेशान् शैलेयजालपरिणद्धशिलातलान्तान् दृष्ट्वा मुदमेति।

व्याख्या— सर्वो जनः= सकलो लोकः, नानामनोज्ञकुसुमद्रुमभूषितान्तान्= नानाभिः= अनेकैः, मनोज्ञैः= मनोहरैः, कुसुमानाम्= पुष्पाणां द्रुमैः= वृक्षैः भूषिताः= समलंकृताः, अन्ताः= प्रान्तभागाः येषां तान्,- हृष्टान्यपुष्टनिनदाकुलसानुदेशान्= हृष्टाः= संजातहर्षा ये अन्यपुष्टाः= परभृताः तेषां निनदैः= ध्वनिभिः आकुलाः= परिगताः, सानुदेशाः= प्रस्थप्रदेशा येषां ते तथाभूतान् शैलेयजालपरिणद्धशिलातलान्तान्= शैलेयस्य= प्रस्थपुष्पस्य मनः शिलाया इत्यर्थः, जालेन= समूहेन, परिणद्धान्:= परितो व्याप्ताः शिलातलान्तान्= पाषाणतलान्तान् क्षितिभृतः= पर्वतान् दृष्ट्वा= वीक्ष्य, मुदमेति= मोमोदते।

साहित्यिकविशेषताः— अस्मिन् श्लोके सन्ति (१) वसन्ततिलकावृत्तम्, (२) पर्वतस्य मनोज्ञं वर्णनम् (३) सम्भोगश्रृङ्गारविभाववर्णनम्, (४) मध्यमसमासा संघटना (५) पाञ्चाली रीतिः। (६) माधुर्यगुणश्च।

समासः— नानामनोज्ञकुसुमद्रुमभूषितान्तान्= नाना च तानि मनोज्ञानि कुसमानि= नानामनोज्ञकुसुमानि (कर्मधारयः) तेषां द्रुमाः= नानामनोज्ञकुसुमद्रुमाः= (ष० त० पु०) नानामनोज्ञकुसुमद्रुमैः भूषिता अन्ता येषां तान् (ब० ब्री०) हृष्टान्यपुष्टनिनदाकुलसानुदेशान्= हृष्टा ये अन्यपुष्टाः= हृष्टान्यपुष्टाः (कर्मधारयः) तेषां निनदः= हृष्टान्यपुष्टनिनदः (ष० त० पु०) तेन आकुलः सानुदेशो येषां तान् (ब० ब्री०)। शैलेयजालपरिणद्धशिलातलान्तान्= शैलेयानां जालः (ष० त० पु०) तेन परिणद्धान्: शिलातलान्तान्।

हिन्दीशब्दार्थ— सर्वः जनः= सभी लोग, नानामनोज्ञकुसुमद्रुमभूषितान्तान्= अनेक मनोहर फूलों के वृक्षों से जिनके प्रान्तभाग समलंकृत हैं, हृष्टान्यपुष्टनिनदाकुलसानुदेशान्= प्रसन्न कोयलों की ध्वनि से जिनके शिखर व्याप्त हैं, शैलेयजालपरिणद्धशिलातलान्तान्= मैनशिल के जाल से व्याप्त पाषाणतल सेव्याप्त क्षितिभृतः= पर्वतों को, दृष्ट्वा= देखकर, मुदमेति= आनन्दित होते हैं।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिवद्धवक्ता वासन्तिक वैभव के प्रसङ्ग में अपनी प्रियतमा को बतलाता है कि इस समय जिन पर्वतों के प्रान्त भाग अनेक प्रकार के मनोहर फूलों के वृक्षों से समलंकृत हैं, इस वसन्त ऋतु के आ जाने से प्रसन्न रहने वाली कोयलों की मधुर ध्वनि से जिनके शिखर व्याप्त हैं तथा मैनशिल के जाल से जिनके पाषाण तल से व्याप्त हैं उन पर्वतों के देखकर सभी लोगों का मन प्रसन्न हो जाता है। इस श्लोक में वक्ता ने पर्वतों की तीन विशेषताओं का उल्लेख किया है। (१) पर्वतों के प्रान्तभाग अनेक प्रकार के मनोहर पुष्पों के वृक्षों से भूषित हैं (२) उन पुष्प वृक्षों पर रहने वाली कोयलों की मधुर ध्वनि से पर्वतों के शिखर गुञ्जित हो रहे हैं। (३) मैनशिल के जाल से उन पर्वतों के पाषाणतल परिव्याप्त हैं। इस प्रकार के पर्वतों का अवलोकन बड़ा ही आनन्दप्रद होता है।

भावार्थ— अनेक प्रकार के मनोज्ञ पुष्पों के वृक्षों से भूषित प्रान्त भाग वाले, प्रसन्न कोयलों की ध्वनि से व्याप्त शिखरवाले तथा मैनशिल के जाल से व्याप्त पाषाण तल वाले पर्वतों को देखकर सब लोग प्रसन्न होते हैं।

साहित्यिकविशेषताएँ— (१) इस श्लोक में वसन्ततिलका छन्द है (२) श्रैङ्गारिक विभावों का वर्णन है (३) वैदर्भी रीति है (४) मध्यमसमास वाली संघटना है तथा (५) माधुर्य एवं प्रसाद नामक गुण हैं।

नेत्रेनिमीलयति रोदिति याति शोकं घ्राणं करेण विरुणद्धि विरौति चोच्चैः।
कान्तावियोगपरिखेदितचित्तवृत्तिः दृष्ट्वाध्वगः कुसुमितान्सहकारवृक्षान्।। २८।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके कविनिबद्धो वक्ता वासन्तिकं वैभवमुपश्लोकयन् स्वप्रियतमां वक्ति यत् साम्प्रतं कालस्यात्युन्मादकत्वात्, कामसन्तापसम्बर्द्धकत्वाच्च पथिकःपुरुषः स्वप्रियतमाया विप्रयोगवैयाकुलीमनुभूय, विप्रलम्भशृंगारोचितां विविधां चेष्टां करोति।

अन्वयः— कान्तावियोगपरिखेदितचित्तवृत्तिः अध्वगः कुसुमितान् सहकारवृक्षान् दृष्ट्वा नेत्रे निमीलयति, रोदिति, शोकं याति, करेण घ्राणं विरुणद्धि, उच्चैः विरौति च।

व्याख्या— कान्तावियोगपरिखेदितचित्तवृत्तिः= कान्तायाः= प्रियतमायाः वियोगेन= विप्रयोगेन, परिखेदिता= तुदिता, चित्तवृत्तिः= अन्तःकरणस्य वृत्तिर्यस्याऽसौ तथाविधः, अध्वगः= पथिकपुरुषः, कुसुमितान्= विकसितान्, सहकारवृक्षान्= सहकारस्य= आम्रस्य, वृक्षान्= द्रुमान्, दृष्ट्वा= विलोक्य, नेत्रे= नयने, निमीलयति= पिधत्ते, रोदिति= क्रन्दति, शोकं याति= दुःखितान्तःकरणो भवति, करेण= हस्तेन, घ्राणाम्= नासिकाम् विरुणद्धि= पिधत्ते उच्चैः= तारस्वरेण, विरौति= क्रन्दनं करोति च।

साहित्यिकविशेषताः— अस्मिञ्छ्लोके (१) वसन्ततिलकावृत्तम्, (२) विप्रयोग-शृङ्गारानुभाववर्णनम् (३) अल्पसमासवती संघटना (४) वैदर्भी रीतिः (५) माधुर्यप्रसादाख्यौ गुणौ च।

समासः— कान्तावियोगपरिखेदितचित्तवृत्तिः= कान्तायाः वियोगः= कान्तावियोगः (ष० त० पु०) तेन परिखेदित्ताचित्तवृत्तिर्यस्याऽसौ तथाविधः (ब० ब्री०) सहकारवृक्षान्= सहकारस्य वृक्षान् (ष० त० पु०)

हिन्दीशब्दार्थः— कान्तावियोगपरिखेदितचित्तवृत्तिः= अपनी प्रियतमा के वियोग के कारण जिसका अन्तःकरण पूर्णरूप से खिन्न है, इस प्रकार का, अध्वगः= पथिक, कुसुमितान्= विकसित, सहकारवृक्षान्= आम के वृक्षों को, दृष्ट्वा= देखकर, नेत्रे= अपनी आँखों को, निमीलयति= बन्द कर लेता है, विरौती= रोने लगता है, शोकं याति= शोक करता है, करेण= हाथ से, घ्राणं= अपनी नाक को, विरुणद्धि= बन्द करता है, तथा उच्चैः= जोर-जोर से, विरौति= चिल्लाने लगता है।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिबद्धवक्ता अपनी प्रियतमा को बतलाता है

कि इस वसन्त ऋतु में सबसे अधिक बुरी हालत अपनी प्रियतमा के वियोग से खिन्न चित्तवृत्ति वाले परदेशियों की है। वे इस ऋतु में भी अपनी प्रियतमा को अपने सन्निकट नहीं देखकर बड़े दुखी होते हैं। वे जब विकसित आम के वृक्षों को देखते हैं, तो विप्रयोगातिरेक के कारण रोने लगते हैं, आँखें बन्द कर लेते हैं, शोक करते हैं और हाथ से अपनी नाक को बन्द करके जोर-जोर से रोने लगते हैं।

इस श्लोक में वक्ता ने वियोगी परदेशियों की विभिन्न चेष्टाओं का वर्णन किया है।

भावार्थ— प्रियतमा के वियोग में उदास रहने वाले पथिक विकसित आम के वृक्षों को देखकर अपनी आँखें बन्द कर लेते हैं, शोक करते हैं तथा हाथ से नाक बन्द करके जोर-जोरे से रोने लगते हैं।

साहित्यिकविशेषताएँ— (१) इस श्लोक में वसन्ततिलका छन्द है (२) विप्रलम्भ शृङ्गार रस है (३) वियोगियों की विभिन्न चेष्टाओं का वर्णन है (४) वैदर्भी रीति है (५) माधुर्य एवं प्रसाद नामक गुण हैं तथा (६) अल्पसमास वाली संघटना है।

समदमधुकराणाम् कोकिलानां च नादैः
कुसुमितसहकारैः कर्णिकारैश्च रम्यः।
इषुभिरिव सुतीक्ष्णैर्मानसं मानिनीनां
तुदति कुसुममासो मन्मथोद्दीपनाय।। २९।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके कविनिवद्धो वक्ता स्वप्रियतमां प्रति वसन्तस्य तीक्ष्णानां बाणानां वर्णनं करोति। ते च बाणाः आम्रमञ्जरीकर्णिकारपुष्पस्वरूपाः सन्ति मदमत्तानां कोकिलानां मधुकराणां च कूजनगूंजने तस्य बाणस्वरूपे स्तः। एभिः तीक्ष्णबाणैः कामिनीनां मनः भृशं पीडयति वसन्तर्तुः तत्र कामोद्वेजनाय।

अन्वयः— कुसुमितसहकारैः कर्णिकारैश्च रम्यः कुसुममासः सुतीक्ष्णैः इषुभिः इव समदमधुकराणां कोकिलानां च नादैः मन्मथोद्दीपनाय मानिनीनाम् मानसम् तुदति।

व्याख्या— कुसुमितसहकारैः= कुसुमिताः= विकसिताश्च ते सहकाराः= आम्रवृक्षाः तैः, कर्णिकारैः= कर्णिकारवृक्षैश्च रम्यः= मनोरमः, कुसुममासः= वसन्तर्तुः, सुतीक्ष्णैः= अतीव तीक्ष्णैः इषुभिः= बाणैः इव= सदृशम्, समदमधुकराणाम्= समदाः= मदमत्ताः ये मधुकराः= भ्रमराः तेषाम्, कोकिलानाञ्च= पिकानाञ्च, नादैः= ध्वनिभिः, मन्मथोद्दीपनाय= कामसंवर्द्धनाय, मानिनीनाम्= मानवतीनाम्, रमणीनां मानसम्= अन्तःकरणम्, तुदति= पीडयति।

साहित्यिकविशेषताः— अस्मिञ्छ्लोके सन्ति (१) मलिनी छन्दः। "ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोके।" इतीदं मालिनी लक्षणम् (२) उपमालंकारः (३) सम्भोगशृंगाररसः (४) माधुर्यप्रसादाख्यौ गुणौ (५) वैदर्भी रीतिः (६) अल्पसमासा संघटना च।

समासः— कुसुमितसहकारैः= कुसुमिताश्च ते सहकाराः तैः (कर्मधारयः) कुसुममासः= कुसुमानां मासः (ष० त० पु०) समदमधुकराणाम्= समदाश्च ते

मधुकराः तेषाम् (कर्मधारयः) मन्मथोद्दीपद्नाय= मन्मथस्य उद्दीपनाय (ष० त० पु०)

हिन्दीशब्दार्थ— कुसमितसहकारैः= विकसित आमों,= तथा, कर्णिकारैः= कर्णिकारों के द्वारा, रम्यः= मनोहर बना हुआ, कुसुममासः= वसन्त ऋतु, सुतीक्ष्णैः= अत्यन्ततीव्र; इषुभिः इव= बाणों के समान, समदमधुकराणाम्= मदमत्त भौंरे, च= और कोकिलानाम्= कोयलों के, नादैः= ध्वनियों से, मन्मथोद्दीपनाय= कामदेव को उद्दीप्त करने के लिए, मानिनीनाम्= मानवती रमणियों के, मानसम्= अन्तःकरण को, तुदति= पीडित करता है।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिवद्ध वक्ता अपनी कामिनी के समक्ष वसन्त ऋतु का वर्णन एक योद्धा के समान करता है। जिस तरह कोई योद्धा बाणों से अपने लक्ष्य का भेदन करता है, उसकी तरह यह वसन्त ऋतु रूपी योद्धा अपने तीक्ष्ण बाणों से मानवती रमणियों के मन रूपी लक्ष्य को इसलिए अत्यन्त पीडित करता है कि उनके मन में काम का आवेश बढ जाए और वे अपने मन का परित्याग करके अपने पतियों के साथ काम क्रीड़ा का अनुभव करें।

यह वसन्त ऋतु आम्र वृक्षों तथा कर्णिकार वृक्षों से मनोहर बना हुआ है, क्योंकि इस ऋतु में ये दोनों प्रकार के वृक्ष विकसित हो गये हैं। आम्र वृक्षों पर निवास करने वाले कोकिल के कूजन तथा कर्णिकार मञ्जरी के प्रेमी मदमत्त भ्रमरों का गुञ्जन, ये दोनों ही वसन्त ऋतु रूपी योद्धा के बाण हैं। इन दोनों प्रकार की ध्वनियों को सुनकर मानवती रमणियों का मन पीडित होने लगता है। उनके मन में काम का विकार उत्पन्न हो जाता है, और वे अपने मान का त्याग कर देती हैं।

भावार्थ— विकसित आम तथा कर्णिकार से मनोहर लगने वाला वसन्त रूपी योद्धा तीक्ष्ण बाणों के समान मदमत्त भौंरों के गुञ्जन तथा कोयल की कूजन के द्वारा मानवती रमणियों के मन में काम के विकार को उत्पन्न करने के लिए उनके मन को पीडित कर रहा है।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में मालिनी छन्द है (२) रूपक एवं उपमा अलंकार है (३) सम्भोग शृंगार रस है (४) अल्पसमास वाली संघटना है (५) वैदर्भी रीति है (६) माधुर्य एवं प्रसाद नामक गुण हैं।

रुचिरकनककांन्तीन्मुञ्चतः पुष्पराशीन्
मृदुपवनविधूतान् पुष्पिताँश्चूतवृक्षान्।
अभिमुखममिवीक्ष्य क्षामदेहोऽपि मार्गे
मदनशरनिघातैः मोहमेतिप्रवासी।। ३०।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके कविनिवद्धो वक्ता स्वप्रियतमायाः समक्षं वसन्ततोंः वर्णनप्रसङ्गेन वक्ति यत् साम्प्रतम् पथिकानां दशातीव चिन्तानीया वर्त्तते। इदानीं आम्रवृक्षाः विकसिताः सन्ति। मन्दं मन्दं वाति वायुः। वायुनावेपित आम्रवृक्षः

स्वर्णकान्तीन् पुष्पराशीन् मुञ्चति। तथाविधानाम्रवृक्षान् वीक्ष्य क्षामशरीरः पान्थः मुर्छितो भवति।

अन्वयः— क्षामदेहोऽपि, प्रवासी रुचिरकनकान्तीन् पुष्पराशीन् मुञ्चतः, मृदुपवनविधूतान् पुष्पितान् चूतवृक्षान् अभिमुखम् मदनशरनिघातैः मोहमेति।

व्याख्या— क्षामदेहोऽपि= क्षामः, दुर्बलः देहोऽपि= शरीरोऽपि, प्रवासी= परदेशनिवासी, रुचिरकनककान्तीन्= रुचिरस्य= मनोज्ञस्य, कनकस्य= सुवर्णस्य, कान्तिरिवकान्तिः= छविर्येषां तथाभूतान्, पुष्पराशीन्= पुष्पाणाम्= कुसुमानां, राशीन्, समूहान्, मुञ्चतः= परित्यजतः, मृदुपवनविधूतान्= मृदूना= कोमलेन पवनेन= वायुना, विधूता ये ते तान्, पुष्पितान्= विकसितान्, चूतवृक्षान्= चूतस्य= रसालस्य, वृक्षान्= तरून्, अभिमुखम्= सम्मुखम्, अभिवीक्ष्य= विलोक्य, मदनशरनिघातैः= मदनस्य= कामस्य, ये शराः= बाणाः तेषां निघातैः= प्रहारैः, मोहमेति= मूर्छितो भवति।

साहित्यिकविशेषताः— अस्मिञ्छ्लोके सन्ति (१) मालिनीवृत्तम् (२) अतिशयोक्त्युपमालंकारौ (३) विप्रलम्भशृंगारवर्णनम् (४) वैदर्भी रीतिः (५) अल्पसमासा संघटना (६) माधुर्यप्रसादाख्यौ च गुणौ।

समासः— क्षामदेहः= क्षामोदेहोयस्याऽसौ तथाविधः (ब० ब्री०)। रुचिरकनककान्तीनुरुचिरं चेदं कनकम् (कर्मधारयः) तस्य कान्तिरिव कातिर्येषां तथाविधान् (ब० ब्री०)। पुष्पराशीन्= पुष्पाणां राशिः तान् (ष० त० पु०)। मृदुपवनविधूतान्= मृदुश्चासौ पवनः= मृदुपवनः (कर्मधारयः) तेन विधूताः ये ते तान् (ब० ब्री०) चूतवृक्षान्= चूतस्य वृक्षाः तान् (ष० त० पु०)। अभिमुखम्= मुखम् अभि (अव्ययीभावः) मदनशरनिघातैः= मदनस्य शराः= मदनशराः (ष० त० पु०) तस्य निघातैः (ष० त० पु०)

हिन्दीशब्दार्थ— क्षामदेहोऽपि= दुर्बलशरीरवाला भी, प्रवासी= परदेशी रुचिरकनककान्तीन्= मनोहर सुवर्ण कान्ति के सदृश कान्ति वाले, पुष्पराशीन्= पुष्प समूहों को, मुञ्चतः= गिराने वाले, मृदुपवनविधूतान्= कोमल स्पर्शवाली वायु के द्वारा कँपाये गये। पुष्पितान्= विकसित, चूतवृक्षान्= आम के वृक्षों को, अभिमुखम्= अपने समक्ष, अभिवीक्ष्य= देखकर, मदनशरनिघातैः= काम के बाणों के प्रहारों से, मोहमेति= मूर्छित हो जाता है।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिवद्ध वक्ता उस परदेशी पुरुष का वर्णन कर रहा है जिसका शरीर अपनी प्रियतमा के विप्रयोग के कारण दुबला-पतला हो गया है। वह अपने समक्ष जब उन आम्रवृक्षों को देखता है जिनकी कान्ति मनोहर सुवर्ण की कान्ति के समान पीली-पीली है। धीरे-धीरे चलने वाली वायु के द्वारा कँपाये जाने के कारण जिनसे पुष्प समूह गिर रहे हैं। जो आम्र के वृक्ष पूर्ण रूप से विकसित हो गये हैं। ऐसे आम्रवृक्षों को देखते ही उस पर काम के बाणों का प्रहार होने लग जाता है। जिस तरह बाणों के प्रहार से कोई भी वीर मूर्छित हो जाता है, उसी प्रकार से काम के बाणों के प्रहार से वह पथिक भी मूर्छित हो जाता है।

भावार्थ— दुबला-पतला शरीर वाला परदेशी पथिक मार्ग में मन्द-मन्द पवन के झोंके से हिलते हुए सुन्दर सुनहरी मञ्जरियों को गिराने वाले विकसित आम्रवृक्षों को देखकर काम बाणों के प्रहार से मूर्छित हो जाता है।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में मालिनी छन्द है (२) विप्रलम्भ शृङ्गारात्मक वर्णन है (३) उपमालंकार है (४) वैदर्भी रीति है (५) माधुर्य एवं प्रसाद नामक गुण हैं तथा (६) अल्पसमासों वाली संघटना है।

परभृतकलगीतै ह्र्लादिभिः सद्वचांसि,
स्मितदशनमयूखान् कुन्दपुष्पप्रभाभिः।
करकिसलयकान्तिं पल्लवैर्विद्रुमाभैः,
उपहसति वसन्तःकामिनीनामिदानीम्।। ३१।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके कविनिवद्धो वक्ता वासन्तिकं सौन्दर्यमुपवर्णयन् स्वप्रियतमां वक्ति यत् साम्प्रतं वसन्तः कामिनीनां त्रेधोपहासं करोति। सः कोकिलकलगीतैः तासां मनोज्ञानि वचांस्युपहसति, कुन्दपुष्पाणां धवलकान्तिभिः तासां मन्दस्मितकान्तिमुपहसति, रक्तवर्णैर्मनोज्ञैः पल्लवैः तासां करकिसलयकान्तिमुपहसति च।

अन्वयः— इदानीम् वसन्तः कामिनीनाम् सद्वचांसि ह्लादिभिः परभृतकलगीतैः, कुन्दपुष्पप्रभाभिः (तासां) स्मितदशनमयूखान्, विद्रुमाभैः, पल्लवैः करकिसलयकान्तिम् उपहसति।

व्याख्या— इदानीम्= अस्मिन् समये, वसन्तः = वसन्तर्तुः, कामिनीनाम्= रमणीनाम्, सद्वचांसि= मनोज्ञानि श्रोत्रपेयानि वचनानि, ह्लादिभिः= आह्लादजनकैः, परभृतकलगीतैः= परभृतानाम्= कलकण्ठानाम् कलगीतैः= मनोहरैः रवैः, उपहसतीति योज्यम्, कुन्दपुष्पप्रभाभिः= कुन्दपुष्पाणाम्= माघ्यकुसुमानामवदातैः, प्रभाभिः= कान्तिभिः, सः तासां स्मितदशनमयूखान्= स्मितस्य= ईषद् हसनस्य ये दशनानाम्= दन्तानाम्, मयूखाः= कान्तयः, तानुपहसति, विद्रुमाभैः= विद्रुमस्य आभा इव आभा येषां तैः, पल्लवैः= किसलयैः, तासां सः= करकिसलयकान्तिम् करकिसलयानाम्= हस्तपल्लवानाम्, कान्तिम्= शोभामुपहसति च।

साहित्यिकविशेषताः— अस्मिञ्छ्लोके सन्ति (१) मालिनी छन्दः (२) रूपकोपमेऽलंकारौ (३) सम्भोगशृङ्गारविभाववर्णनम् (४) अल्पसमासा संघटना (५) माधुर्यप्रसादाख्यौ च गुणौ।

समासः— सद्वचांसि= सन्ति च तानि वचांसि (कर्मधारयः) परभृतकलगीतैः परभृतानाम् कलगीतैः (ष० त० पु०) कुन्दपुष्पप्रभाभिःकुन्दस्य पुष्पाणि= कुन्दपुष्पाणि (ष० त० पु०) तेषां प्रभाभिः= कुन्दपुष्पप्रभाभिः= ष० त० पु०) स्मितदशनमयूखान्- दशनानाम् मयूखाः= दशनमयूखाः (ष० त० पु०) स्मितस्य दशनमयूखाः तान् (ब० व्री०) विद्रुमाभैः= विद्रुमस्य आभा इवाभा येषां तैः (उपमित समासः) करकिसलयकान्तिम्= करकिसलयानाम् कान्तिम् (ष० त० पु०)

हिन्दी शब्दार्थ— इदानीम्= इस समय, वसन्तः= वसन्त ऋतु, कामिनीनाम्= रमणियों के, सद्वचांसि= मनोहर वाणी का, ह्लादिभिःपरभृतकलगीतैः= कोयल की मनोहर ध्वनि के द्वारा, उपहास करता है, कुन्दपुष्पप्रभाभिः= कुन्द पुष्प की कान्ति के द्वारा वह उनके, स्मितदशनमयूखान्= मन्दमुसुकान के समय निकलने वाली उनके दाँतों की कान्ति का उपहास करता है तथा विद्रुमाभैः= मूँगे के समान लाल-लाल कान्ति वाले, पल्लवैः= पल्लवों के द्वारा, करकिसलयकान्तिम्= करपल्लव की कान्ति का, उपहसति= उपहास करता है।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिवद्ध वक्ता अपनी प्रियतमा से वसन्त ऋतु के सौन्दर्य का वर्णन करते हुए कहता है कि इस समय वसन्त ऋतु अपने तीन प्रकार के साधनों के द्वारा रमणियों की तीन मनोहर वस्तुओं का उपहास कर रहा है। वह रमणियों की मीठी-मीठी श्रोत्रपेय बातों का उपहास कोयल की सुरीली तथा सुन्दर लगने वाली कूजन की ध्वनि के द्वारा कर रहा है। रमणियाँ जब मुस्काती हैं तो उनके उजले-उजले दाँतों की कान्ति भी बड़ी मनोहर लगती है, किन्तु उसका उपहास वह अपने कुन्द पुष्पों की स्वच्छ कान्ति के द्वारा कर रहा है। इस तरह कामिनियों के कर किसलय की शोभा भी अत्यन्त आकर्षक होती है, उसका उपहास वह मूगों के समान लाल-लाल नवीन पल्लवों के द्वारा कर रहा है। इस तरह इस वसन्त ऋतु की शोभा अत्यन्त मनोहर प्रतीत होती है।

भावार्थ— इस समय कामिनियों की मधुरवाणी का उपहास कोयल की मनोहर ध्वनि के द्वारा, उनके मन्द मुसुकान कालिक दाँतों की कान्ति का उपहास कुन्द पुष्प की कान्ति के द्वारा तथा उनके करकिसलय की कान्ति का उपहास मूँगे के समान लाल-लाल नवपल्लवों के द्वारा कर रहा है।

साहित्यिक विशेषताएँ— (१) इस श्लोक में मालिनी छन्द है (२) उपमा तथा रूपक अलंकार हैं (३) सम्भोगशृङ्गार के विभावों का वर्णन है, (४) वैदर्भी रीति है, (५) अल्पसमास वाली संघटना है तथा (६) माधुर्य एवं प्रसाद गुण हैं।

कनककमलकान्तैराननैः पाण्डुगण्डै
रुपरि निहितहारैश्चन्दनार्द्रैः स्तनान्तैः,।
मदजनितविलासैर्दृष्टिपातैर्मुनीन्द्रान्,
स्तनभरनतनार्यःकामयन्ति प्रशान्तान्।।३२।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके कविनिवद्धो वक्ता स्वप्रियतमां वक्ति यत् साम्प्रतं स्वभावतः शान्तस्वभावा अपि मुनय अस्यां मादकबेलायां सुन्दरीणां सौर्न्यावशेषमलङ्कार विशेषं च विलोक्य कामाविष्टमानसाः भवन्तीति।

अन्वयः- स्तनभरनतनार्यः कनककमलकान्तैः आननैः, पाण्डुगण्डैः, उपरि-निहितहारैः चन्दनार्द्रैः स्तनान्तैः, मदजनितविलासैः दृष्टिपातैश्च प्रशान्तान् मुनीन्द्रान् कामयन्ति।

व्याख्या— स्तनभरनतनार्यः= स्तनयोः= कुचयोः, भरेण= भारेण, नताः=

विनम्राः याः नार्यः= रमण्यः, कनककमलकान्तैः= कनकस्य= सुवर्णस्य, यानि कमलानि= पद्मानि, तद्वत् कान्तैः= मनोहरैः, आननैः= मुखमण्डलैः पाण्डुगण्डैः= पीतवर्णैः कपोलैः, उपरिनिहितहारैः= उपरि= ऊर्ध्वभागे, निहिताः= स्थापिताः, हाराः= मुक्तामालाः येषां तैः, चन्दनार्द्रैः= चन्दनेन= मलयजेन, आर्द्रैः= क्लीन्नैः, स्तनान्तैः= स्तनयोः= पयोधरयोः, अन्तैः= प्रान्तभागैः, मदजनितविलासैः= मदेन= कामदर्पेण, जनिताः= उत्पन्नाः विभ्रमाः येषां तथाभूतैः, दृष्टिपातैः= कटाक्षपातैः, प्रशान्तान्= शान्तस्वभावान्, प्रशमितकामवेगानिति भावः, मुनीन्द्रान् मुनीन् कामयन्ति= कामेच्छा सम्पन्नान् कुर्वन्ति।

साहित्यिकविशेषताः— अस्मिंश्छ्लोके सन्ति (१) मालिनी वृत्तम् (२) श्रैङ्गारिकं वर्णनम् (३) उपमालंकारः (४) मध्यमसमासा संघटना (५) वैदर्भी रीतिः (६) माधुर्यप्रसादाख्यौ च गुणौ।

समासः— स्तनभरनतनार्यः= स्तनयोः भरः= स्तनभरः (ष० त० पु०) तेन नताः नार्यः स्तनभरनतनार्यः (ष० त० पु०) कनककमलकान्तैः कनकस्य कमलानि= कनककमलानि (ष० त० पु०) तद्वत्कान्तैः कनककमलकान्तैः (उपमितसमासः)। पाण्डुगण्डानि- पाण्डूनि च तानि गण्डानि (कर्मधारयः)। उपरिनिहितहारैः= उपरि निहिताः हाराः येषां ते तैः (ब० ब्री०) स्तनान्तैः- स्तनयोः अन्तैः (ष० त० पु०) मदजनितविलासैः- मदेन जनिताः= मदजनिताः, तथा भूताः ये विलासाः तैः= (कर्मधारयः) दृष्टिपातैः= दृष्टेः पातः तैः (ष० त० पु०)

हिन्दीशब्दार्थ— स्तनभरनतनार्यः= अपने स्तनों के भार से झुकी हुई नारियाँ, कनककमलकान्तैः- सुवर्ण कमल के समान मनोहर, आननैः= अपने मुखमण्डलों से, पाण्डुगण्डैः= अपने गोरे-गोरे गालों से, उपरिनिहितहारैः= जिनके ऊपर मोतियों की माला विन्यस्त है, ऐसे चन्दनार्द्रैः= चन्दन से आर्द्र बने हुए, स्तनान्तैः= अपने स्तनों के प्रान्तभाग के द्वारा, मदजिनतविलासैः= मद से उत्पन्न विलासों से युक्त, दृष्टिपातैः= कटाक्षपातों के द्वारा, प्रशान्तान्= अपनी इन्द्रियों को वश में रखने वाले, मुनीन्द्रान्= मुनीन्द्रों को, कामयन्ति= काम की भावना से युक्त बना देती हैं।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिवद्ध वक्ता अपनी प्रियतमा के समक्ष वासन्तिक सौष्ठव का वर्णन करते हुए कहता है कि, रमणियाँ जो अपने विशाल स्तनों के भार से झुकी हुई प्रतीत होती हैं, उनके सौन्दर्य-विशेष, तथा हाव-भावों को देखकर तत्त्व के मनन में सदा लगे रहने वाले बड़े-बड़े मुनिजन भी काम की भावना से युक्त हो जाते हैं। उनके भी मन में काम की वासना जागृत हो जाती है। सुवर्ण से निर्मित कमल के समान मनोहर रमणियों का मुखमण्डल उनके पीले-पीले गाल, जिनके ऊपर उन सबों ने मोती की माला पहन रखा है तथा जिनके प्रान्त भाग चन्दन के लेप से लिप्त है, इस प्रकार के युवतियों के स्तन तथा मदजनित विलास से युक्त उनके कटाक्षपात ये सबके सब मुनियों के भी मन में कामोद्रेक के साधन बन गए हैं।

भावार्थ— स्तनों के भार से झुकी हुई नारियाँ अपने सुवर्ण कमल के सदृश मुखमण्डल, गोरे-गोरे गाल, मोती की माला से समलंकृत तथा चन्दन के लेप से युक्त स्तनों के प्रान्त भाग एवं मदजन्य विलास से युक्त कटाक्षपात के द्वारा स्वभावतःशान्त मुनीन्द्रों के भी मन में काम की भावना उत्पन्न कर देती हैं।

साहित्यिकविशेषताएँ— (१) इस श्लोक में मालिनी वृत्त है (२) संभोग-शृंगारात्मक वर्णन है (२) उपमालंकार है (४) वैदर्भी रीति है (५) मध्यमसमासवती संघटना है तथा (६) माधुर्य एवं प्रसाद नामक गुण हैं।

मधुसुरभिमुखाब्जं लोचने लोध्रताम्रे,
नवकुरबकपूर्णः केशपाशो मनोज्ञः।
गुरुतरकुचयुग्मं श्रोणिबिम्बं तथैव,
न भवति किमिदानीं योषितां मन्मथाय।।३३।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके कविनिबद्धो वक्ता वसन्तसौष्ठवस्य वर्णनस्य प्रसङ्गेन स्वप्रियतमां वक्ति यत् साम्प्रतं योषितां आसवसुरभितं मुखकमलं लोध्र-पुष्पवद्रक्तवर्णे नेत्रे, नवीनैः कुरबक, पुष्पैः सज्जितः केशपाशः, पृथुलं स्तनद्वयं श्रोणिबिम्बं च सर्वाणीमानि वस्तूनि पुरुषेषु सद्यः कामविकारं जनयितुं समर्थानि भवन्ति।

अन्वयः—योषितां मधुसुरभिमुखाब्जम्, लोध्रताम्रे लोचने, नवकुरबकपूर्णः मनोज्ञः केशपाशः, गुरुतरं कुचयुग्मं, तथैव श्रोणिबिम्बं, इदानीं मन्मथाय न भवति किम्?

व्याख्या— योषिताम्= रमणीनाम्, मधुसुरभिमुखाब्जम् मुखमेव= वदनमेव, अब्जम्= कमलम्= मधुना= आसवेन, सुरभि= सुगन्धितम्, मधुसुरभि चेदं मुखाब्जम्= मधुसुरभिमुखाब्जम्= आसवसौगन्ध्यसमन्वितं मुखकमलम्। लोध्रताम्रे= लोध्र पुष्पवद्रक्ते, लोचने= नेत्रे, नवकुरबकपूर्णः= नवेन= नवीनेन कुरबकेन= कुरबकपुष्पेण, पूर्णः= समलंकृतः, मनोज्ञः= मनोहरः केशपाशः= कुन्तलकलापः गुरुतरकुचयुग्मम्= गुरुतरयोः= अधिकभारयुक्तयोः, कुचयोः= स्तनयोः, युग्मम्= द्वयम् तथैव= तथाविधं गुरुतरमेव, श्रोणिबिम्बम्= कटितटम् इदानीम्= साम्प्रतम्, मन्मथाय= कामोद्वेगाय, न= नहि भवति किम्= जायते वा? जयत एवेति भावः।

साहित्यिकविशेषताः— अस्मिञ्छ्लोके सन्ति (१) मालिनी वृत्तम् (२) सम्भोग-शृंगाररसोऽभिव्यंग्यः, (३) वैदर्भी रीतिः (४) अल्पसमासवती संघटना (५) माधुर्यप्रसादाख्यौ गुणौ (६) रूपकालंकारः (७) उपमालंकारश्च।

समासः— मधुसुरभि= मधुना सुरभि= मधुसुरभि (तृ० त० पु०) लोध्रताम्रे= (उपमितः समासः) नवकुरबकपूर्णः= नवश्चासौ कुरबकः= नवकुरबक (कर्मधारयः) तेन पूर्ण= नवकुरबकपूर्णः (तृ० त० पु०) गुरुतरकुचयुग्मम्= कुचयोर्युग्मम्= कुचयुग्मम् (स० त० पु०) गुरुतरञ्चेदं कुचयुग्मम्= गुरुतरकुचयुग्मम् (कर्मधारयः)

हिन्दीशब्दार्थ— योषिताम्= रमणियों के, मधुसुरभि= मदिरा की सुगन्ध से सुंगन्धित, मुखाब्जम्= मुखकमल, लोध्रताम्रे= लोघ्रपुष्प के समान रक्त वर्ण के, लोचने= नेत्र, नवकुरबकपूर्णः= नवीन, कुरबक के फूलों से सजाया गया, मनोज्ञः=

मनोहर, केशपाशः= केशपाश, गुरुतरकुचयुग्मम्= अधिक भारी दोनों स्तन, तथैव= उसी तरह से विस्तृत एवं भारी, श्रोणिबिम्बम्= जंघायें इदानीम्= इस वसन्त ऋतु में, मन्मथाय न भवति किम्= कामोद्दीपन में समर्थ नहीं होते हैं क्या ? अवश्य होते हैं।

उपस्थापन- इस श्लोक में कविनिवद्ध वक्ता अपनी प्रियतमा के समक्ष वसन्त ऋतु के वैभव का वर्णन करते हुए कहता है कि इस वसन्त ऋतु में रमणियाँ मदिरापान करती हैं, अतएव उनका मुखकमल, मदिरा की सुगन्धि से सुगन्धित रहता है। उनके नेत्र मदपान करने के कारण लोध्रपुष्प के समान रक्तवर्ण के हैं। वे अपने मनोहर केशपाश को कुरबक के पुष्पों से सजाती हैं उनके स्तन तथा जंघे भारी तथा बड़े-बड़े हैं। इन सवों के द्वारा अत्यधिक कामोद्दीपन होता है।

भावार्थ– रमणियों के मदिरा की सुगन्धित से सुगन्धित मुखकमल, लोध्रपुष्प के समान रक्तवर्ण के दोनों नेत्र, नवीन कुरबक के पुष्पों से सजाये गये मनोहर केशपाश तथा भारी स्तनमण्डल एवं जंघे ये सभी कामोद्दीपन में समर्थ नहीं हैं क्या?

साहित्यिकविशेषताएँ– इस श्लोक में (१) मालिनी छन्द है (२) वैदर्भी रीति है (३) रूपक एंव उपमालंकार हैं (४) माधुर्य एवं प्रसाद गुण हैं तथा (५) अल्पसमासवती संघटना का सद्भाव है।

आकम्पितानि हृदयानि मनस्विनीनां वातैः प्रफुल्लसहकारकृताधिवासैः।
उत्कूजितैः परभृतस्य मदाकुलस्य श्रोत्रप्रियैः मधुकरस्य च गीतनादैः।।३४।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ– अस्मिञ्छ्लोके कविनिवद्धो वक्ता स्वप्रेयस्याः समक्षं वसन्तर्तोः वैभवं वर्णयन् वक्ति यत् साम्प्रतम् आम्रवृक्षाः विकसिताः सन्ति। आम्रमञ्जरी-सौगन्ध्यसमन्वितेन गुञ्जनध्वनिना मनस्विनीनां नायिकानां मानो भवति सहसा अपाकृतः।

अन्वयः– प्रफुल्लसहकारकृताधिवासैः वातैः, मदाकुलस्य परभृतस्य उत्कूजितैः च मधुकरस्य श्रोत्रप्रियैः गीतनादैः मनस्विनीनां हृदयानि आकम्पितानि (भवन्तीति शेषः)।

व्याख्या– प्रफुल्लः= विकसितश्चासौ सहकारः= आम्रवृक्षः, तत्र कृताधिवासैः= कृतनिवासैः, वातैः= पवनैः, मदाकुलस्य= मदमत्तस्य, परभृतस्य= कोकिलस्य, उत्कूजितैः= कूजनैः, मधुकरस्य= भ्रमरस्य, श्रोत्रपेयैः= श्रवणमधुरैः गीतनादैः= गुञ्जनैः च मनस्विनीनाम्= मानवतीनां रमणीनाम्, हृदयानि= अन्तःकरणानि, कम्पितानि= वेपितानि भवन्तीति भावः।

साहित्यिकविशेषताः– अस्मिञ्छ्लोके सन्ति (१) वसन्ततिलकावृत्तम् (२) सम्भोगशृङ्गारस्योद्दपीनविभावानां वर्णनम् (३) माधुर्यप्रसादाख्यौ गुणौ (४) वैदर्भी रीतिः (५) अल्पसमासवती संघटना च।

समासः– प्रफुल्लसहकारकृताधिवासैः= प्रफुल्लश्चासौ सहकारः= प्रफुल्लस-

हकारः (कर्मधारयः) तत्र कृत अधिवासो यैस्तैः (ब० ब्री०)। मदाकुलस्य= मदेन आकुलस्य (ष० त० पु०)। श्रोत्रपेयैः= श्रोत्राभ्यां पेयैः (तृ० त० पु०)।

हिन्दीशब्दार्थ— प्रफुल्लसहकारकृताधिवासैः= विकसित आम्रवृक्ष में निवास करने वाले, वातैः= हवाओं, मदाकुलस्य= मदमत्त, परभृतस्य= कोकिल के, उत्कूजनैः= कूजनों से तथा मधुकरस्य= भौरे के, श्रोत्रपेयैः= सुनने में मधुर, गीतनादैः= गुञ्जनध्वनि के द्वारा, मनस्विनीनाम्= मानवती रमणियों के, हृदयानि= अन्तकरण, आकम्पितानि= काँपने लगे हैं।

उपस्थापन— इस श्लोक में कविनिवद्ध वक्ता अपनी प्रियतमा के समक्ष वसन्त ऋतु के वैभव का वर्णन करते हुए कहता है कि इस समय विकसित आम्र वृक्षों की मञ्जरियों की सुगन्धि लेकर चलने के कारण हवा अत्यन्त मादक बन गयी है, मदमस्त कोयल जोर-जोर से कूजने लगी है, तथा भौंरे मधुर-मधुर गुञ्जन ध्वनि करने लगे हैं। इन तीनों कारणों से उन रमणियों का हृदय काँपने लगा है जो अपने पतियों से मान किये हुई हैं। उनको इस बात का भय लगने लगा कि अब इस मादक वेला में हमारा मान सुरक्षित नहीं रह सकता है।

भावार्थ— विकसित आम्रवृक्षों में रहने वाली हवाओं, मदमत्त कोयल की जोर-जोर से कूजन तथा भौंरे की मधुर गुञ्जन ध्वनि से मानवती रमणियों का हृदय काँपने लगा है।

साहित्यिक विशेषताएँ— इस श्लोक में (१) वसन्ततिलका छन्द है (२) सम्भोगशृंगार के उद्दीपन विभावों का वर्णन है (३) माधुर्य तथा प्रसाद गुण हैं (४) वैदर्भी रीति तथा (५) अल्पसमासवती संघटना के सद्भाव हैं।

रम्यः प्रदोषसमयः स्फुटचन्द्रभासः
पुंस्कोकिलस्य विरुतं पवनः सुगन्धिः।
मत्तालियूथविरुतं, निशि सीधुपानं
सर्वं रसायनमिदं कुसुमायुधस्य।। ३५ ।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके कविनिवद्धो वक्ता तेषां षण्णां साधनानां वर्णनं स्वप्रियतमायाः समक्षं करोति यैः साधनैः वसन्ततौं कामाग्निरुद्दीप्तो भवति। तानि च साधनानि सन्ति क्रमशः (१) मनोज्ञा प्रदोषबेला, (२) स्फीतालोकवती ज्योत्स्ना, (३) कोकिलस्य कूजनम्, (४) सौगन्ध्यसमन्वितो वायुः (५) मदमत्तालिवृन्दगुञ्जनम् (६) रात्रावासवपानञ्च। यथौषधानां सेवनेन नैरुज्यं वर्धते तथैवैतेषां साधनानां सेवनेन कामाग्निरुच्छिखो भवति।

अन्वयः— रम्यः प्रदोषसमयः, स्फुटचन्द्रभासः, पुंस्कोकिलस्य विरुतं, सुगन्धिः पवनः, मत्तालियूथविरुतं निशि सीधुपानम् इदं सर्वं कुसुमायुधस्य रसायनम्।।

व्याख्या— रम्यः= मनोज्ञः, प्रदोषसमयः= सायंकालस्य बेला, स्फुटचन्द्रभासः = स्फुटः= विशद इतिभावः, चन्द्रस्य= शशिनः भासः,= प्रकाशः, पुंस्कोकिलस्य= परभृतस्य, विरुतम्= कूजनम्, सुगन्धिः= सौगन्ध्यसमन्वितः, पवनः= वायुः, मत्तालि-

यूथविरुतम्= मत्तस्य= मदमत्तस्य, अलियूथस्य= भ्रमरसमूहस्य, विरुतम्= गुञ्जन-ध्वनिः, निशि= रात्रौ, सीधुपानम्= आसवपानम्, इदम्= एतत्, सर्वम्= निखिलम्, कुसुमायुधस्य= कामदेवस्य, रसायनम्= पुष्टिवर्द्धनम्।

साहित्यिकविशेषताः— अस्मिञ्छ्लोके सन्ति (१) वसन्ततिलकावृत्तम (२) सम्भोगशृङ्गारस्य विभावादिकानां वर्णनम् (३) माधुर्यप्रसादाख्यौ गुणौ (४) वैदर्भी रीतिः (५) अल्पसमासवती संघटना च।

समासः— प्रदोषसमया= प्रदोषस्य समयः। (ष० त० पु०)। स्फुटचन्द्रभासः= चन्द्र स्यभासः (कर्मधारयः)। पुंस्कोकिलस्य= पुमांश्चासौ कोकिलः तस्य (कर्मधारयः)। मत्तालियूथविरुतम्= मतश्चासौ अलियूथः मत्तालियूथः (कर्मधारयः) तस्य विरुतम् (ष० त० पु०)।

हिन्दी शब्दार्थ— रम्यः प्रदोषसमयः= मनोहर सायं काल की बेला, स्फुटचन्द्रभासः= धवल चाँदनी, पुंस्कोकिलस्य= नर कोयल की, विरुतम्= कूजन ध्वनि, सुगन्धिः= सुगन्धित, पवनः= वायु, मत्तालियूथविरुतम्= मदमस्त भौंरों की गुञ्जन की ध्वनि, निशि= रात्रि में, सीधुपानम्= मदिरा का पान, इदम्= यह, सर्वम्= सब कुछ, कुसुमायुधस्य= कामदेव के लिए, रसायनम्= रसायन है।

उपस्थापनऽ इस श्लोक में कविनिवद्ध वक्ता अपनी प्रियतमा के समक्ष उन छह साधनों का वर्णन कर रहा है जिन साधनों के सेवन से कामदेव की पुष्टि होती है। वे साधन हैं- (१) सायंकाल की मनोहर एवं मादक बेला, (२) स्वच्छ चाँदनी (३) नर कोयल की कूजन की ध्वनि, (४) सुगन्धित वायु (५) मदमत्तभ्रमर समूह की गुञ्जन ध्वनि तथा (६) रात्रि में आसव का पान। ये सभी वस्तुएँ कामदेव के लिए रसायन का काम करती हैं। जिस तरह रसायन के सेवन से आरोग्य की वृद्धि होती है, उसी तरह से उपर्युक्त साधनों को अपनाने से कामदेव की वृद्धि होती है।

भावार्थ— मनोहर सायंकाल की बेला, स्वच्छ चाँदनी, नर कोयल की कूजन ध्वनि, सुगन्धित वायु, मदमत्त भौंरों की गुञ्जन ध्वनि, तथा रात्रि में मदिरा का सेवन, ये सब कामदेव के लिए रसायन हैं।

साहित्यिकविशेषताएँ— इस श्लोक में (१) वसन्ततिलका छन्द है, (२) सम्भोगशृंगार के विभावों के वर्णन है (३) अल्पसमास वाली संघटना (४) वैदर्भी रीति तथा (५) माधुर्य व प्रसाद नामक गुणों के सद्भाव है।

रक्ताशोकविकल्पिताधरमधुर्मत्तद्विरेफस्वनः,
कुन्दापीडविशुद्धदन्तनिकरः प्रोत्फुल्लपद्माननः।।
चूतामोदसुगन्धिमन्दपवनः शृंगारदीक्षागुरुः,
कल्पान्तं मदनप्रियो दिशतु वः पुष्पागमो मङ्गलम्।। ३६ ।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— अस्मिञ्छ्लोके महाकविः कालिदासो वसन्तर्तोः वैभववर्णनस्य प्रसङ्गेन ग्रन्थान्ते, मङ्गलमाचरन् वसन्तर्तोः मानवीकरणं कुर्वन् तस्य सप्तविशेषणान्युपस्थापयति। तद्यथा- रक्ताशोकमाधुर्यमेवास्य वसन्तस्याधरमाधुर्यम्, मदमत्त-

भ्रमरगुञ्जनमेवास्य स्वनः, कुन्दपंक्तिरेवास्यदन्तसमूहः, विकसितानि कमलान्येवास्य मुखमण्डलम्, सहकार मञ्जरीसौगन्ध्यमिश्रितो वायुरेवास्य वायुः, शृङ्गाररसस्यायं दीक्षादानपटुः, किञ्चायं कामप्रियो वर्त्तते। एतादृशोऽयमृतुः सर्वेषां वो मङ्गलं प्रदिशतु।

अन्वयः— रक्तशोकविकल्पिताधरमधुः मत्तद्विरेफस्वनः, कुन्दापीडः विशुद्ध-दन्तनिकरः, प्रोत्फुल्लद्मानन:, चूतामोदसुगन्धिमन्दपवनः, शृंगारदीक्षागुरुः, मदनप्रियः, पुष्पागमो वः कल्पान्तं मङ्गलं दिशतु।

व्याख्या— रक्ताशोकविकल्पिताधरमधुः= रक्तः= रक्तवर्णो यः अशोकः= अशोकपादपः, तेन विकल्पितः= प्रतिस्पर्द्धितः, अधरमधुः= नायिकाधरोष्ठमाधुर्यं येन सः, मत्तद्विरेफस्वनः= मत्तानाम्= मदमत्तानाम्, द्विरेफाणाम्= भ्रमराणाम्, स्वनः= गुञ्जनध्वनिर्यस्मिन् सः तथाविधः, कुन्दापीडविशुद्धदन्तनिकरः= कुन्दानाम्= माघ्यपुष्पाणाम्, यो हि आपीडः= समूहः, सो हि दन्तानाम्= द्विजानाम् निकरः= समूहो यस्याऽसौ तथाविधः, प्रोत्फुल्लपद्मानननः= प्रोत्फुल्लानि= विकसितानि, पद्मानि= कमलानि एव आननम्= मुखमण्डलं यस्याऽसौ तथाविधः, चूतामोदसुग-न्धिमन्दपवनः= चूतानाम्= आम्राणाम् यो हि आमोदः= सौगन्ध्यम्, तेन सुगन्धिः= सुगन्धितः, मन्दः= मन्दगतिश्च पवनः= वायुः यस्मिन् सः, शृङ्गाररदीक्षागुरुः= शृंगारस्य= शृङ्गारसस्य, दीक्षायाम्= उपदेशकरणे, गुरुः= उपदेशकः। मदनप्रियः= मदनस्य= कामदेवस्य, प्रियः= प्रियतम एतादृश पुष्पाणाम्= कुसुमानामागमः= विकासो यस्मिन्नसौ तथाविधौ वसन्तर्बुः, वः= युष्मभ्यम्, कल्पान्तम्= कल्पस्या-न्तिमकालपर्यन्तम्, मङ्गलम्= कल्याणम्, प्रदिशतु= प्रददातु।।

साहित्यिकविशेषताः— अस्मिञ्छ्लोके सन्ति (१) शार्दूलविक्रीडितम् वृत्तम्। 'सूर्याश्वैर्मसजस्ततः सगुरवः शार्दूलविक्रीडितम्' इति हि शार्दूलविक्रीडि= वृत्तस्य लक्षणम्। (२) शृङ्गाररसस्योद्दीपनविभावानां वर्णनम् (३) वसन्तर्तोः मानवीकरणम् (४) वैदर्भी रीतिः (५) माधुर्याख्यो गुणः (६) मध्यमसमासवती संघटना च।

समासः— रक्ताशोकविकल्पिताधरमधुः= रक्तश्चासावशोकः= रक्ताशोकः (कर्मधारयः) रक्ताशोकेन विकल्पितः अधरमधु येनाऽसौ तथाविधः। (ब० ब्री०)। मत्तद्विरेफस्वनः= मत्तद्विरेफस्य स्वन एव स्वनो यस्याऽसौ तथाविधः (ब० ब्री०)। कुन्दापीडविशुद्धदन्तनिकरः= कुन्दानाम् आपीडः= कुन्दापीडः (ष० त० पु०) कुन्दापीड एव विशुद्धदन्तनिकरो यस्याऽसौ तथाविधः (ब० ब्री०) प्रोत्फुल्लपद्माननः= प्रोत्फुल्लानि पद्मानि एव आननं यस्य सः (ब० ब्री०)। चूतामोदसुगन्धिमन्दपवनः= चूतस्यामोदः (तृ० त० पु०) तेन सुगन्धिः मन्दः पवनो यस्य सः (ब० ब्री०) शृंगारदीक्षागुरुः= शृंगारस्य दीक्षा= शृंगारदीक्षा (ष० त० पु०) तत्र गुरुः शृंगारदीक्षांगुरुः (स० त० पु०)।

हिन्दीशब्दार्थ— रक्ताशोकविकल्पिताधरमधुः= लाल अशोक के माधुर्य द्वारा नायिका के अधरों के स्वाद को तिरस्कृत करने वाला, मत्तद्विरेफस्वनः= मदमत्त भौंरों की गुञ्जन ही जिसकी ध्वनि है। कुन्दापीडविशुद्धदन्तनिकरः= कुन्दपुष्पों की पंक्ति ही जिसके चमकते हुए दाँत समूह हैं, प्रोत्फुल्लपद्माननः= विकसित कमल

ही जिसका मुखमण्डल है, चूतामोदसुगन्धिमन्दपवनः= आम्रमञ्जरी की सुगन्धि से सुगन्धित तथा मन्द पवन वाला, शृंगारदीक्षागुरुः= शृंगाररस की दीक्षा देने में गुरु की भूमिका निभाने वाला, मदनप्रियः= कामदेव का मित्र, पुष्पागमः= वसन्त ऋतु, वः= आपलोगों को, कल्पान्तम्= कल्पान्त पर्यन्त, मङ्गलम्= कल्याण प्रदिशतु= प्रदान करे।

उपस्थापन— इस श्लोक में महाकवि कालिदास ग्रन्थान्त मङ्गल करते हुए बतलाते हैं कि वसन्त ऋतु में विकसित रक्ताशोक की लालिमा रमणियों के अधरोष्ठ के माधुर्य को भी तिरस्कृत कर रही है, इस ऋतु में मदमत्त भौंरों के गुञ्जन की ध्वनि सुनायी देती है, वही इस वसन्त ऋतु की मधुर ध्वनि है। विकसित कुन्द पुष्पों की उजली पंक्ति ही वसन्त पुरुष के विशुद्ध दन्तसमुदाय हैं। विकसित कमल ही उसका मुखमण्डल है। वसन्त ऋतु में आम्रमञ्जरियों की सुगन्धि से सम्पन्न मन्द-मन्द चलने वाली वायु सभी युवक-युवतियों के अन्तःकरण में शृंगार रस का उपदेश देती है। यह ऋतु कामदेव को अत्यन्त प्रिय है। इस प्रकार का यह ऋतु आप सभी पाठकों को कल्प पर्यन्त स्थायी मङ्गल प्रदान करे।

भावार्थ— रक्ताशोक के द्वारा रमणियों के माधुर्य को तिरस्कृत करने वाला, मदमत्तभ्रमरध्वनियों वाला, कुन्दपंक्ति ही जिसके चमकते दाँत समूह हैं, विकसित कमल ही जिसका मुखमण्डल है, इस प्रकार का आम्रमञ्जरी के सुगन्ध से युक्त जिसकी मन्द वायु शृंगार रस का उपदेश देती है; वह कामदेव को प्रिय वसन्त ऋतु आप सभी लोगों को कल्पान्त स्थायी मङ्गल प्रदान करे।।

साहित्यिक विशेषताएँ— इस श्लोक में (१) शार्दूलविक्रीडित छन्द है। 'सूर्याश्वैर्मसजस्ततः सगुरवः शार्दूलविक्रीडितम्।' यह शार्दूलविक्रीडित छन्द का लक्षण है। (२) वैदर्भी रीति है। (३) अल्पसमासवती संघटना है। (४) माधुर्य गुण है तथा (५) शृंगार रस के उद्दीपन विभावों के वर्णन का सद्भाव है।

मलयपवनविद्धः कोकिलालापरम्यः
सुरभिमधुनिषेकाल्लब्धगन्धप्रबन्धः।
विविधमधुपयूथैर्वेष्ट्यमानः समन्ताद्
भवतु तव वसन्तः श्रेष्ठकालःसुखाय।। ३८।।

सन्दर्भप्रसङ्गौ— ग्रन्थान्तमङ्गलस्य द्वितीयेऽस्मिञ्छ्लोके महाकविः कालिदासः वसन्तर्तोः चत्वारि विशेषणान्युपस्थापयति। स वक्ति यत् ऋतुरयं मलयपवनेन युक्तः, कोकिलालापसम्पन्नः सुगन्धितपरागसौगन्ध्यप्रचुरः अलिकुलैश्चाकुलो विद्यते। एतादृशोऽयमृतुः भवतां समेषां सहृदयानां सौख्यप्रदो भवतु।

अन्वयः— मलयपवनविद्धः कोकिलालापरम्यः, सुरभिमधुनिषेकाल्लब्ध-गन्धप्रबन्धः विविधमधुपयूथैः समन्ताद् वेष्ट्यमानः वसन्तः तव श्रेष्ठकालः भवतु।।

व्याख्या— मलयपवनविद्धः= मलयस्य= मलयाचलस्य, पवनेन= वायुना, विद्धः= संयुक्तः, कोकिलालापरम्यः= कोकिलस्य= परभृतस्य, आलापेन= ध्वनिना,

रम्यः= मनोज्ञः, सुरभिमधुनिषेकात्= सुरभेः= सुगन्धितस्य, मधोः= आसवस्य, निषेकात्= सेचनात् लब्धगन्धप्रबन्धः= लब्धः= प्राप्तः, गन्धस्य= सुगन्धेः प्रबन्धः= समूहो येनाऽसौ तथाविधः, विविधमधुपयूथैः= विविधानाम्= अनेकेषाम्, मधुपानाम्= भ्रमराणाम्, यूथैः= समूहैः, समन्तात्= सर्वतः, वेष्ट्यमानः= आवेष्टितः, वसन्तः= वसन्तर्तुः, तव= भवतः, श्रेष्ठकालः= उत्कृष्टः समयः, भवतु= भवतात्।

साहित्यिकविशेषताः— अस्मिञ्छ्लोके सन्ति (१) मालिनी छन्दः 'ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोके' इति हि मालिनीलक्षणम्। (२) मध्यमसमासवती संघटना (३) वैदर्भी रीतिः (४) प्रसादाख्यो गुणश्च।

समासः— मलयपवनविद्धः= मलयस्य पवनः (ष० त० पु०) तेन विद्धः (तृ० त० पु०)। कोकिलालापरम्यः= कोकिलस्य आलापः= कोकिलालापः (ष० त० पु०) तेन रम्यः (तृ० त० पु०)। सुरभिमधुनिषेकात्। सुरभिचेदं मधु= सुरभिमधु (कर्मधारयः) तस्य निषेकात् (ष० त० पु०) लब्धगन्धप्रबन्धः= लब्धः गन्धस्य प्रबन्धो येन सः (ब० ब्री०)। विविधमधुपयूथैः= मधुपानां यूथः= मधुपयूथः (ष० त० पु०) विविधश्चासौ मधुपयूथः तैः (कर्मधारयः)

हिन्दीशब्दार्थ— मलयपवनविद्धः= मलय पवन से युक्त, कोकिलालापरम्यः= कोयल की कूजन से मनोहर लगने वाला, सुरभिमधुनिषेकात्= सुगन्धित मदिरा के सेवन के कारण, विविधमधुपयूथैः= भौंरों के अनेक समूहों द्वारा, समन्तात्= चारों ओर से, वेष्ट्यमानः= घिरा हुआ, वसन्तः= वसन्त ऋतु, तव= आप के लिए, सुखाय= आनन्द देने के लिए श्रेष्ठकालः= श्रेष्ठकाल, भवतु= होए।

उपस्थापन— इस श्लोक में महाकवि कालिदास वसन्त ऋतु के वर्णन का उपसंहार करते हुए कहते हैं कि इस ऋतु में मलयाचल की शीतल, मन्द, सुगन्ध वायु चलती है, उस वायु से युक्त है यह ऋतु। कोयल की कुहू-कुहू की ध्वनि से यह ऋतु अत्यन्त मनोहर लगती है। सुगन्धित मधु के निषेक के कारण चारो ओर सुगन्धि फैलती रहती है, तथा इस ऋतु में भौंरों का अनेक समूह चारो ओर फैल जाता है। इस प्रकार का यह वसन्त ऋतु तुम्हें उत्तम सुख प्रदान करने वाला समय बने।

भावार्थ— इस श्लोक में (१) मालिनी छन्द है। 'ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोके' यह मालिनी छन्द का लक्षण है। (२) इसमें वैदर्भी रीति (३) माधुर्य गुण एवं (४) अल्पसमासवती संघटना के सद्भाव हैं।

आम्रीमञ्जुलमञ्जरी वरशरः सत्किंशुकं यद्धनुः
ज्या यस्यालिकुलं कलङ्करहितं छत्रं सितांशुः सितम्।
मत्तेभो मलयानिलः परभृता यद्वन्दिनो लोकजित्,
सोऽयं वो वितरीतरीतु वितनुर्भद्रं वसन्तान्वितः।। ३८।।

इति महाकविकालिदासविरचिते ऋतुसंहारकाव्ये वसन्तवर्णनं नाम षष्ठः सर्गः सम्पूर्णः

सन्दर्भप्रसङ्गौ— वसन्तर्तोः वर्णनस्योपसंहारं, कुर्वन् महाकविः कालिदासो

मङ्गलाचरणस्यान्तिमे श्लोके कामदेवस्य वैशिष्ट्योपस्थापनपुरस्सरं तस्मान्मङ्गलं कामयते।

अन्वयः— यस्य आम्री मञ्जुलमञ्जरी वरशरः सत्किंशुकं यद्धनुः, यस्य अलिकुलं ज्या, सितांशुः यस्य कलङ्करहितं सितं छत्रम्, मलयानिलः यस्य मत्तेभः, परभृताः यद्वन्दिनः वसन्तान्वितः यः वितनुः लोकजित् सोऽयं वः भद्रं वितरीतरीतु।

व्याख्या— यस्य= कामदेवस्य, आम्री= आम्रसम्बन्धिनी, मञ्जुलमञ्जरी= मनोज्ञा मञ्जरी, वरशरः= श्रेष्ठो बाणः, सत्किशुंकम्= विकसितं किंशुकपुष्पम्, यद्धनुः= यस्य कामदेवस्य कार्मुकम्ः, यस्य= कामदेवस्य अलिकुलम्= भ्रमरसमूहः, ज्या= धनुषो गुणः, सिताशुः= चन्द्रमाः यस्य कामदेवस्य, सितम्= धवलवर्णम्, कलङ्करहितम्= निष्कलङ्कम्, छत्रम्= आतपत्रम्, मलयानिलः= मलयजो वायुः, यस्य मत्तेभः= मदमत्तो हस्ती, परभृताः= कोकिलाः यस्य कामदेवस्य, वन्दिनः= वन्दनकर्तारः, वसन्तान्वितः= वसन्तेन साहितः यः वितनुः= शरीररहितः सोऽयं कामदेवः वः= युष्मभ्यम्, भद्रम्= कल्याणम्, वितरीतरीतु= प्रददातु।

साहित्यिकविशेषताः— अस्मिञ्छ्लोके सन्ति (१) शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् (२) श्रैंगारिकं वर्णनम् (३) वैदर्भी रीतिः (४) अल्पसमासवती संघटना (५) माधुर्यप्रसादाख्यौ च गुणौ।

समासः— मञ्जुलमञ्जरी= मञ्जुला चासौ मञ्जरी (कर्मधारयः) कलङ्केन रहितम् (तृ० त० पु०)। सितांशु= सिताः अंशवो यस्याऽसौ तथाविधः (ब० ब्री०)। मत्तेभः- मत्तश्चासौ इभः (कर्मधारयः)। वसन्तान्वितः- वसन्तेन अन्वितः (तृ० त० पु०)

हिन्दीशब्दार्थ— यस्य= जिस कामदेव का, आम्री= आम की, मञ्जुलमञ्जरी= मनोहर मञ्जरी, वरशरः= श्रेष्ठ बाण है, सत्किंशुकम्= सुन्दर किंशुक का पुष्प, यद्धनुः= जिसका धनुष है, अलिकुलम्= भ्रमर समूह, यस्य= जिस कामदेव का, ज्या= धनुष की डोरी है। सितांशुः= चन्द्रमा यस्य= जिसका, सितम्= श्वेत वर्ण का, छत्रम्= छत्र है। मलयानिलः= मलयाचल की वायु, यस्य= जिसका मत्तेभः= मदमस्त हाथी है, परभृताः= कोयल, यद्वन्दिनः= जिसके वन्दी जन हैं, यः= जो, वसन्तान्वितः= वसन्त ऋतु के साथ रहने वाला, वितनुः= शरीर रहित कामदेव, लोकजित्= सम्पूर्ण संसार पर विजय प्राप्त करने वाला है, सोऽयम्= वही, वः= आप लोगों को, भद्रम्= कल्याण, वितरीतरीतु= प्रदान करे।

उपस्थापन— इस श्लोक के माध्यम से वसन्त वर्णन तथा ग्रन्थान्त मंगल का उपसंहार करते हुए महाकवि कालिदास बतलाते हैं कि वसन्तसखा तथा शरीर रहित कामदेव आप लोगों का कल्याण करे, जिसका आम की मनोहर मञ्जरी ही श्रेष्ठ बाण है, विकसित पलाश पुष्प ही जिसका धनुष् है, भ्रमर समूह ही जिसके धनुष की डोरी है, कोयल ही जिसके वन्दीजन हैं तथा स्वयं जो सम्पूर्ण जगत् को जित लेने वाला है।

भावार्थ— आम्रमञ्जरी ही जिसका श्रेष्णबाण, विकसित पलाश पुष्प धनुष्

भ्रमर समूह ही धनुष् की डोरी, चन्द्रमा उजला छत्र, मलयनिल मदमत्त हाथी, कोयल बन्दीजन, वसन्त के साथ रहने वाला तथा शरीर रहित जो संसार पर विजय प्राप्त करने वाला है, वह कामदेव आपका मङ्गल करे।।

साहित्यिकविशेषताएँ— इस श्लोक में (१) शार्दूलविक्रीडित छन्द (२) वैदर्भी रीति, (३) अल्पसमासवती संघटना तथा (४) माधुर्य एवं प्रसादगुण के सद्भाव हैं।

इस तरह महाकवि कालिदास प्रणीत ऋतुसंहार काव्य के वसन्त वर्णन नामक षष्ठ सर्ग की शिवप्रसाद द्विवेदी कृत व्याख्या सम्पूर्ण हुई।

ऋतुसंहारम्
(श्लोकानुक्रमणिका)

अ	सर्ग	श्लो०	पृ०
अगरुसुरभिधूपा	५	१२	१७३
अङ्गानि निद्रालस	६	१३	१९५
अन्या प्रकामसुरत	४	१५	१५१
अन्या प्रियेण परि	४	१७	१५४
अन्याश्चिरं सुरत	४	१८	१५६
अपगतमदरागा	५	११	१७२
अभीक्ष्णमुच्चैर्ध्वनता	२	१०	५५
असह्यवातोद्धत	१	१०	१३
असितनयनलक्ष्मीं	३	२६	१२७
आ			
आकम्पयन्कुसुमिताः	६	२४	२१०
आकम्पयन्फलभरा	३	१०	१०२
आकम्पितानि हृदयाति	६	३४	२२५
आदीप्तवह्नि सदृशैः	६	२१	२०५
आमूलतो विद्रुम	६	१८	२०१
आम्रीमञ्जुलमञ्जरी	६	३८	२३२
आलम्बिहेमरसनाः	६	२६	२१३
ई			
ईषत्तुषारैः कृत	६	३	१८३
उ			
उच्छ्वासयन्तयः श्लथ	६	९	१९१
क			
कदम्बसर्जार्जुन	२	१७	६५
कनककमलकान्तैः	५	१३	१७५
कनककमलकान्तैः	६	३२	२२२
कमलवनचिताम्बुः	१	२८	४०
करकमलमनोज्ञाः	३	२३	१२२

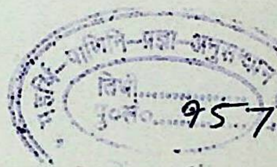
कर्णेषुयोग्य नव	६	६	१८७
कह्लारपद्मकुमुदानि	३	१५	११०
काचिद् विभूषयति	४	१४	१५०
काञ्चीगुणैः काञ्चन	४	४	१३७
कान्तामुखद्युतिजुषा	६	२०	२०४
कारण्डवानन	३	८	९८
कालागुरुप्रचुर	२	२२	७२
काशांशुका विकच	३	१	८६
काशैर्महीशिशिर	३	२	८८
किं किंशुकैः शुकमुख	६	२२	२०७
कुन्दैः सविभ्रमवधू	६	२५	२११
कुवलयदलनीलैः	२	२३	७३
कुसुम्भरागारुणितैः	६	५	१८६
कृतापराधान् बहुशो	५	६	१६६
केशान्नितान्तघन	३	१९	११६
ग			
गजगवयमृगेन्द्रा	१	२७	३८
गात्राणि कालीयक	४	५	१३८
गुरूणि वासांसि	६	१५	१९७
गृहीतताम्बूलविले	५	५	१६४
च			
चञ्चन्मनोज्ञशफरी	३	३	९०
छ			
छायां जनः समभि	६	१२	१९४
ज			
जलभरविनतानां	२	२७	८२
ज्वलति पवनवृद्धः	१	२५	३५
त			
तडिल्लताशक्र	२	२०	६९
तनूनि पाण्डूनि	६	१०	१९२
ताम्रप्रवालस्तबका	६	१७	२००
तारागणप्रवर	३	७	९६
तुषारसंघातनिपात	५	४	१६३
तृणोत्करैरुद्गत	२	७८	५२
तृषाकुलैश्चातक	२	३	४६

तृषामहत्या हृत	१	१४	१६
द			
दधति वरकुचाग्रै	२	२६	७६
दन्तच्छदैः सव्रण	४	१३	१४६
दिवसरकरमयूखै	३	२४	१२५
द्रुमाः सुपुष्पा	६	२	१८२
न			
नखपदचितभागान्	५	१५	१७८
न चन्दनं चन्द्र	५	३	१६२
न बाहुयुग्मेषु	४	३	१३४
नवजलकणसङ्गा	२	२७	८०
नवप्रवालोद्गम	४	१	१३३
नष्टं धनुर्वलभिदो	३	१२	१०५
नानामनोज्ञकुसुम	६	२७	२१४
नितम्वविम्वैः	१	४	५
नितान्तनीलोत्पल	२	२	४४
नितान्तलाक्षा	१	५	६
निपातयन्त्यः परितः	२	७	५१
निर्माल्यदामपरि	४	१६	१५३
निरुद्धवातायन	५	२	१६०
निशाः शशाङ्क	१	२	३
नृत्यप्रयोगरहिता	३	१३	१०६
नेत्रे निमीलयति	६	२७	२१६
नेत्रेषु लोलो मदिरा	६	११	१६३
नेत्रोत्सवो हृदय	३	६	१००
प			
पटुतरदवदाहो	१	२२	३०
पयोधराश्चन्दन	१	६	८
पयोधरैः कुङ्कुम	५	९	१६९
पयोधरैर्भीमगभीर	२	११	५६
परभृतकलगीतै	६	३१	२२०
पाकं व्रजन्ती हिम	४	११	१४६
पीनस्तनोरः स्थल	४	७	१४१
पुंस्कोकिलश्चूत	६	१६	१९९
पुंस्कोकिलैः कल	६	२३	२०८

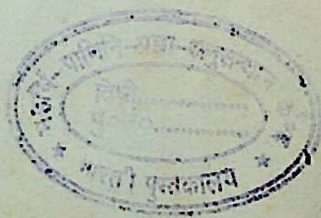


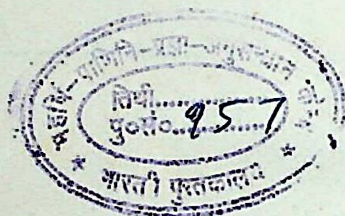
पुष्पासवामोद	४	१२	१४७
पृथुजघनभरार्ताः	५	१४	१७६
प्रकामकामैर्युवभिः	५	७	१६७
प्रचण्डसूर्यः	१	१	१८२
प्रफुल्लनीलोत्पल	४	६	१४३
प्रभिन्नवैदूर्यनिभै	२	५	४८
प्रभूतशालिप्रसवैः	४	८	१४२
प्रियङ्गुकालीयक	६	१४	१६६
प्ररूढशाल्यंशुचयैः	५	१	१५६
ब			
बलाहकाश्चाशनि	२	४	४७
बहुगुणरमणीयो	४	१६	१५७
बहुगुणरमणीयः	२	२६	८३
बहुतर इव जातः	१	२६	३७
भ			
भिन्नाञ्जनप्रचय	३	५	६३
म			
मत्तद्विरेफपरि	६	१६	२०३
मधुसुरभिमुखा	६	३३	२२४
मनोज्ञकूर्पासक	५	८	१६८
मनोहरैः कुङ्कुम	४	२	१३४
मन्दानिलाकुलित	३	६	६५
मलयपवनविद्धः	६	३७	२३०
मार्गं समीक्ष्याति	४	१०	१४५
मालाः कदम्बनव	२	२१	७१
मुदित इव कदम्बै	२	२४	७५
मृगाः प्रचण्डातप	१	११	१४
र			
रक्ताशोकविकल्पिता	६	३६	२२८
रतिश्रमक्षाम	४	६	१३६
रम्यः प्रदोषसमयः	६	३५	२२७
रविप्रभोद्विग्न	१	२०	२७
रवेर्मयूखैरभि	१	१३	१८
रुचिरकनककान्तीन्	६	३०	२१६
व			

रुचिरकनककान्तीन्	६	३०	२१६
व			
वनद्विपानां नव	२	१५	६२
वहन्ति वर्षन्ति	२	१६	६८
वापीजलानां मणि	६	४	१८४
विकचकमलवक्त्रा	३	२८	१३०
विकचनवकुसुम्भ	१	२४	३४
विपत्रपुष्पां नलिनीं	२	१४	६१
विपाण्डुरं कीटरज	२	१३	५६
विलोचनेन्दीवर	२	१२	५८
विलोलनेत्रोत्पल	२	६	५४
विवस्वता तीक्ष्ण	१	१८	३५
विशुष्ककण्ठाहृत्	१	१५	२०
व्योम क्वचिद्रजत	३	४	६२
श			
शरदि कुमुदसङ्गाद्	३	२२	१२१
शिरसि बकुलमालां	२	२५	७७
शिरोरुहैः श्रोणि	२	१८	६७
शेफालिका कुसुम	३	१४	१०८
श्वसिति विहगवर्गः	१	२३	३२
श्यामा लताः कुसुम	३	१८	११४
स			
सचन्दनाम्बु	१	८	१०
सदा मनोज्ञं स्वन	२	६	५०
सपत्रलेखेषु विलासि	६	८	१८६
सफेनलोलायत	१	२१	२६
सभद्रमुस्तं परि	१	१७	२३
समदमधुकराणां	६	२६	२१७
समुद्गमस्वेद	१	७	६
समुद्धृताशेष	१	१६	२६
सम्पन्नशालिनिचया	३	१६	१११
सविभ्रमैः सस्मित	१	१२	१६
ससीकराम्भोधर	२	१	४२
सितेषु हर्म्येषु	१	६	१२
सितोत्पलाभाम्बुद	२	१६	६४



सुगन्धिनिःश्वास	५	१०	१७१
सुरतरसविलासाः	३	२४	१२४
सुवासितं हर्म्य	१	३	४
सोन्मादहंसमिथुनैः	३	११	१०३
स्तनेषु हाराः सित	६	७	१८८
स्त्रीणां विहाय	३	२७	१२६
स्फुटकुमुदचितानां	३	२१	११६
ह			
हंसैर्जिता सुललिता	३	१७	११३
हारैः सचन्दनरसैः	३	२०	११७
हुताग्निकल्पैः सवितुः	१	१६	२२





छूट

99 रु. में

और भी बहुत कुछ

रविवार खुला है

टक

...को मुंबई बुलाया है। गायक मंडली का आरोप है कि आमिर ने उन्हें पूरा मेहनताना नहीं दिया। मध्य प्रदेश के रायसेन जिले के बड़वाई गांव में रहने वोल माध्यमिक पाठशाला के शिक्षक गया प्रसाद प्रजापति ने यह गीत सखी सैयां तो खूब ही कमाल है, महंगाई डायन खात जात है लिखा है और अपनी मंडली केसाथ गाया भी है। यह गाना तब चर्चा में आया, जब विपक्षी दलों ने महंगाई के मसले पर केंद्र सरकार को घेरने के लिये इसके इस्तेमाल की गुजारिश करते हुए प्रसारण अधिकार खरीदने की बात की, लेकिन आमिर ने इंकार कर दिया था। प्रजापति ने बताया कि यहां पर लोगशूटिंग के लिये आए थे। हम अपनी मंडली के साथ यह गाना गाते थे ज़िसे उन्होंने फिल्म में इस्तेमाल करने की बात कही। हमे बताया गया कि आमिर खान की फिल्म है जिसमें तुम्हारा गाना इस्तेमाल होगा। हमें क्या एतराज हो सकता था। उन्होंने बताया कि हमें और 11 गायकों को प्रतिगायक 100 रुपये के हिसाब से कुल 1100 रुपये दिये गये। हमे लगता है कि एक गीतकार को जो रकम मिलनी चाहिये,

मुंबई जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि हम बताया गया कि आमिर ने मुंबई मिलने बुलाय है। पहले 11 जुलाई को जाना था लेकि टिकट नहीं मिल सका। अब हम आ पहुंच रहे हैं। देखते हैं कि आमिर क्य कहते हैं। हमें उम्मीद है कि वह ह वाजिब मेहनताना देंगे। उन्होंने बता कि उनकी मंडली में 11 सदस्य हैं 3 11 लाख रुपये सभी आपस में ब लेंगे। छह करोड़ की लागत से ब पीपली लाइव के अधिकांश हिस्से शूटिंग बड़वाई गांव में ही हुई है। ग से जूझ रहे इस गांव के लोग नुव चौक पर मंडली के रुप में गा बज अपना मनोरंजन करते हैं। प्रजाप कहा कि फिल्म की यूनिट यहां तो उन्हें गांव और अपने फन को प मिलने की उम्मीद बंधी थी। फि लोक गीतकार और गायक को श्रेय नहीं देने का यह नया मसर है। इससे पहले गीतकार प्रसून पर आरोप लगा था कि उन्होंने 6 के मशहूर गीत ससुराल गें को छत्तीसगढ़ के कवि गंगारा के गीत सास गारी देते ननद मु

रुपये पर कारोबार गिरावट में आ गया है।

भारी मात्रा में विस्फोटक - झांसी, 13जुलाई-वार्ता। ...क कोतवाली क्षेत्र में विस्फोटकों से भरे पार्सल से हड़कम्प ...धीक्षक नगर जगदीश सिंह के अनुसार कांग्रेसी नेता डा. ... हाइवे में कल देर रात विस्फोटकों से भरा कोरियर आया। ...यनामाइट जिलेटिन की छड़ें आदि विस्फोटक पाये गए हैं।

...से क्षुब्ध भारी संख्या में सपा कार्यकर्ताओं ने आज यहां भारी पुलिस बल को धता बताते हुए रेलवे स्टेशन से जुलूस निकाला तथा स्व. सरजू पांडेय पार्क में धरना दिया व सभा की। सैकड़ों सपा कार्यकर्ता दिन में लगभग 11 बजे रेलवे स्टेशन से सांसद राधेमोहन सिंह के नेतृत्व में सपा जिंदाबाद, मुलायम सिंह जिंदाबाद, विद्युत विभाग मुर्दाबाद का नारा लगाते स्व. सरजू पांडेय पार्क पहुंचे। स्व. सरजू पांडेय पार्क में वक्ताओं ने विद्युत दुर्व्यवस्था तथा अधिकारियों के उपेक्षात्मक रवैये की कड़े शब्दों में निंदा की। दोपहर लगभग दो बजे हजारों की संख्या में सपा कार्यकर्ता स्व. सरजू पांडेय पार्क से आमघाट कालोनी स्थित विद्युत विभाग के कार्यालय की ओर नारेबाजी ...था कि वे विद्युत कार्यालय जाकर अधिकारियों का घेराव करेंगे। प्रशासन ने सपा कार्यकर्ताओं को विद्युत विभाग जाने से रोकने के लिये जगह-जगह भारी पुलिस फोर्स तैनात की थी। लेकिन सपा कार्यकर्ता पुलिस फोर्स को धता बताते विद्युत विभाग कार्यालय की ओर कूच कर गये। जुलूस में पूर्व सांसद जगदीश कुशवाहा, पूर्व विधायक कैलाश यादव आदि भी शामिल रहे। आश्चर्य की यह बात रही कि यहीं के प्रदेश महासचिव ओमप्रकाश सिंह व विधायक शादाब फातिमा जुलूस व धरना स्थल पर कहीं दिखायी नहीं दिये।

काशी सर्राफा

चांदी (999 टी) 28725 प्रति किलोग्राम, सिक्का 40008 प्रति सैकड़ा, सोना स्टैण्डर्ड 18647 प्रति 10 ग्राम।

• श्रीनगर, 13जुलाई-वार्ता। पवित्र अमरनाथ यात्रा के दौरान एक और श्रद्धालु की मौत हो जाने से इस यात्रा में मरने वालों की संख्या 12 हो गयी है। बालताल नियंत्रण कक्ष के एक अधिकारी ने बताया शशि भूषण नाम के यात्री की दिल का दौरा पड़ने से मौत हुई। वह उत्तर प्रदेश के शहीद नगर का रहने वाला था।

...में आतंकवादी घटना से इन्कार नहीं किया जा सकता। मंत्री पर हुए हमले के बाद इलाहाबाद के सभी बाजार बंद करा दिये गये थे और पुलिस ने अपराधियों को पकड़ने के लिये पूरे शहर की घेराबंदी कर दी थी। श्री नन्दी उद्योगपति हैं और इलाहाबाद दक्षिण से 2007 में विधायक चुने गये थे।

मां ने अपनी दो मासूम बच्चियों को जलाया जिन्दा

रामपुर, 13जुलाई-वार्ता। उत्तर प्रदेश के रामपुर में रोज रोज के गृहकलह से आजिज मां ने आज अपनी दो मासूम बच्चियों को जिन्दा जला दिया। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक रमित शर्मा ने बताया कि महिला ने दो और चार वर्ष की अपनी मासूम बच्चियों को जिन्दा जला दिया। प्राथमिक जांच के अनुसार इसके पीछे कारण गृहकलह बताया जा रहा है। श्री शर्मा ने बताया कि मामले की जांच की जा रही है।

आमिर खान असली जीवन में बने महंगाई डायन

11 गायकों को दिया मात्र 1100 मेहनताना